ধর্মজীবনু।

নত্যক্ত্যপ্রকর্প, পূজাপ্রকরণ, মুদ্রা ४৪ সাসনপ্রকরণ, স্তবকর্চপ্রকরণ ও শোচাশোচ প্রস্তৃতি বহুবিধ নিত্যামুগ্রাম-সংবলিত।

でものの人

্র্ট্র থকপ্রবর

ত্রীনরেন্দ্র কৃষ্ণ শিরোমণি

সঙ্কলিত।

্বিতীয় সংস্করণ ৷

কলিকাত

২১ নং নন্দকুমার ছেইবার ২য় লেন 'কাজিয়া-যাত্রে'' শীশরচক কিন্দ্রবর্তী খার। মৃতিক ও একানিত।

१ के कि १ ८००६

Acc No 21457

প্রকাশকের নিবেদন।

নিত্য- ক্রিয়ামুঠানের জন্ম ধর্ম-জীবনের ন্যায় একখানি পুস্তকের মভাব ছিল কি না, প্রকৃত ধর্মপথাবলম্বী ব্যক্তিমাত্রেই ইহা সহজে পেলকি করিতে পারেন। আমি সেচ্ছাপ্রণোদিত হইয়া এই ত্র প্রকাশে সাহসী হই নাই। কতিপর বিখ্যাত পণ্ডিক হোদয় বাজারের পারিপাট্য বিহীন, ভ্রমপূর্ণ পুস্তক পাঠে রেক্ত হইয়া, প্রণালী-বিভিদ্ধ করিয়া একখানি নিত্যকর্মের স্তক প্রকাশ করিতে আদেশ দেন। আমি তাঁহাদিগেরই াাদেশে এই পুস্তক প্রকাশে সাহসী হইয়া অল সাধারণ সমক্ষেই। প্রকাশ করিলাম। জানি না, কতদ্র ক্রহকার্য্য ইইয়াছি। বে প্রণালী বিশুদ্ধ করিবার জন্মপুস্তক-খানিকে চারিটি প্রকরণে বভক্ত করা ইইয়াছে; —নিত্যক্রতাপ্রকরণ, পূজাপ্রকরণ, মুদ্রা ও স্থাসনপ্রকরণ এবং স্তবক্রচপ্রকরণ। এতজ্ঞির একটি পরিশিষ্ট প্রদন্ত হইয়াছে, তাহাতে নিত্য নৈ মিকিক ক্রিয়ের জন্ম বছবিধ বিষয়ের উল্লেখ আছে।

এক্ষণে ধর্ম-জীবনের স্থায় পুস্তক প্রচারে সাধারণের উপকার ইবে কিনা, তাহা স্থধ্মনিষ্ঠ মহাস্মগণই বলিতে পারেন। কাল-বশে অস্মদ্দেশে কর্ম্মকাণ্ড একবারে লুপ্তপ্রায়! বিজাতীয় ভাষা-াক্ষা,বিজাতীয় আচার-ব্যবহার অমুকরণ করিয়া,বিজাতীয়গণের মধ্যে স্থ্যাতি-সম্মান লাভ করিতে সকলেই ব্যস্ত। বর্ণাভি-ধানী দ্বিজাতিগণও আর্য্য মনীষিগণ-প্রদ্শিত পথ হইতে বিচ্যুত ইইতেছেন। প্যান-যোগাদি উচ্চ অংকরে কর্মকাণ্ডের কথা দ্ধে

[2]

ধাকুক, হয় তো নিত্যকর্মের মধ্যে সন্ধ্যাবন্দনাদি পর্য্যন্ত অনেকেই জ্ঞাত নহেন। এক্ষণে এই পুস্তকের সাহায্যে যদি একজন মাত্র হিন্দুসন্তান আচারবান্ হইয়া পূর্ব্বপুরুষগণের আচরিত ক্রিয়া-কম্বেত হন, তবে আমার শ্রম ও অর্থব্যয় সফল জ্ঞান করিব।

বড় হুঃথে ছুই একটি কথা বলিতে বাধ্য হইলাম। অস্মদেশে পাঠকবর্গের মধ্যে অনেকেই আগলের আদর না করিয়া নকলে আদর করিয়া থাকেন। পুস্তক-অভ্যন্তরন্থ বিষয়াবলীর ন্যুনাধিক: বা শুদ্ধি অশুদ্ধির প্রতি দৃষ্টিপাত না করিয়া, কেবল পুস্তকের নামটি মাত্র ঠিক থাকিলে এবং মুল্যের হ্রাস দেখিলেই পাঠকবর্গ সেই পুস্তক ক্রয় করিতে ব্যস্ত হন। কিন্তু পুস্তক ক্রয় করিবার পূর্ব্বেই তাঁহারা একবার একটু স্থির-চিন্তে ভাবিয়া দেখিবেন,সেই প্রেই প্রস্তাশক বা বিক্রেত্গণ কোথা হইতে কিরপে স্থলভ মুল্যে পুস্তক দিয়া নিজাম-ধর্ম্ম পালন করেন।

বিনীত

শ্রীশরচ্চন্দ্র শর্মা।

স্ভীপত্র।

নিত্যক্বত্যপ্রকরণ।

| বিষয় | পৃষ্ঠা | বিষয় | ٠.٤. |
|----------------------------------|--------|---|------------|
| প্রাতঃকৃত্য। | ₹. | যভুৰ্বেদীগণের ও শৃজের | পৃষ্ঠা |
| রাত্রির শেষবামার্দ্ধ অর্থাৎ ৪॥•ট | N | जर्भगविधि जर्भगविधि | |
| হইতে ৬টার মধ্যে কর্ত্তব্য | | अटबनोग्न जर्शनिक्ष | 45 |
| | 5 | | ૭၃ |
| তান্ত্ৰিকবিধি | • | সন্ধার সাধারণবিধি | 9 9 |
| চৌরগ্রেশমন্ত্র | 8 | मायटननीय मक्ताविधि | 98 |
| পৃথিবী-নমস্কার | ¢ | যজ্ববিদীয় সন্ধ্যাবিধি | e > |
| মলমূত্রতা পবিধি | ** | ঝনেগায় সন্ধানিধি | 46 |
| শৌচবিধি | • | ব গ ব জ | 10 |
| পাদকালনবিধি | ۲ | ভান্ত্ৰিকসন্ধ্যা ও তৰ্পণ | 98 |
| শিখাবন্ধন ও আচমন | ٥ | পূর্ <u>ক</u> াৡকৃত্য। | |
| म स्थापन विधि | " | | |
| প্রাত:স্থান ও আচমনবিধি | >> | প্রথমধামার্দ্ধকৃত্য ; ৬—৭॥০টা | 46 |
| ্তাপ্তিক আচমন, বৈঞ্ব আচমন) | 30 | দিতীয়নামার্দ্ধকৃতা; ৭॥০—১টা | |
| ঙান্ত্ৰিকস্নান | 26 | ত্তীয় যামাধ্ৰকতা ; ১—১০∥০টা | |
| বস্ত্রপরিধান | | চতুর্থ-নামার্ক্ককতা; ১০॥০—১২টা | b • |
| ভিলকধারণ | >9 | মধ্যাহকত্য। | |
| | 7. | | |
| তিল কধারণস্থান | 17 | >२हो इंडेटड >॥• होत्र भर्त्या कर्त्रवा | 44 |
| তিলকজ্ব য় | ,, | নিত্যধোষ | ४ २ |
| শিবপূজাবিষয়ে তিলক | 166 | रेवधानव वा (मवन्छ | b 8 |
| শক্তিপ্জাবিষয়ে তিলক | " | বলি বা ভূত্যজ | ьœ |
| বৈষ্ণবত্তি লক | - 1 | Tables | b 9 |
| তৰ্পণখ্যবস্থা 🚜 | | নিত্যশ্রাদ্ধ | |
| সামবেদীয় তপ্ৰবিধি | - 1 | গোগাসদান | 37 br ' |
| | (| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | |

ধৰ্ম্ম-জীধন।

| वि षग्न | পৃষ্ঠা | विस् त्र | পৃ! |
|-----------------------------|--------|--------------------------------|-------------|
| ভোক্তন | bb | ভাষ্ৰভক্ৰ | 34 . |
| অভক] | ۶۰ | অপরাহ্বকৃত্য। | |
| দিনবিশেষে অভক্ষ্য | 52 | ষষ্ঠ ও সপ্তম্বামাৰ্দ্ধকৃত্য | • |
| জ লপানবিধি | 25 | অষ্ট্রম্যামার্দ্ধকৃত্য | ** |
| ৰৎ ক্তশোধন | 17 | শায়াহুকুত ্য | 28 |
| ৰাং সশোধন | 17 | রাত্রিকত্য। | |
| মুক্তাৰোধন | " | প্রথমগামকুতা ; ৬টা হইতে ৯টা | 47 |
| অন্নাদিনিবেদন ও ভোজনপ্রণালী | e 6 | দ্বিতীয়ধামক্বতা; ১টা হইতে ১২ট | গ " |
| পভূষভ্যাগ | 86 | ভৃতীয়ধামাদিকুত্য (শয়নবিধি) | 24 |
| ভোঞ্নাস্তে আচমন | 96 | দারোপগ্যন | >> |

পূজাপ্রকরণ।

| বিষয় | গৃঙা | বিষয় | পৃষ্ঠা |
|-----------------------------|------|---------------------|--------|
| পাথিবশিবলিগপ্জা | >.>> | গণেশ পূজা | >-6 |
| লিজ ি 19বিধি | *7 | ফুৰ্য্যপু জা | >09 |
| উপবেশন ও আসন-নিয়ম | 305 | বিসুপ্ জা |) o b |
| স্বস্থিবাচন | 17 | ৰিংপ্জা | " |
| সামাতাব্য | > 8 | জয়হৰ্গাপূজা | 17 |
| জল গুদ্ধি | 72 | করশুদ্ধি | 17 |
| অ াসনশুদ্ধি | 73 | ভূতগুদ্ধি | >.> |
| বিদ্বাপসারণ | >•4 | মাতৃকাভাস | >>• |
| গন্ধাদির অর্চনা | ۵۰6 | প্রাণায়াম | >>6 |
| শারায়ণাণির অর্চ্চনা | >•७ | প্রাণঞ্জ িষ্ঠা | 19 |
| গণেশাদিপূজা | " | অঞ্জাস | >>0 |

| | সূচীপ | ত্র। | ول | |
|----------------------|--------|------------------------------|--------|--|
| বিষয় | পৃষ্ঠা | বিষয় | পৃষ্ঠা | |
| করস্থাস | 230 | গুরুপূ ত্র া | 252 | |
| अस्ता क्रिकाम | 17 | গুরুধান | >44 | |
| ব্যাপ কন্তাস | ,, | স্ত্রীগুরুধ্যান | 17 | |
| धान | 37 | মানসগুরুপূজা | 17 | |
| মানসপূজা | 228 | গুরুপুজায় করাক্ষ্যাস | 250 | |
| বিশেষার্থ। | 17 | ,, অঙ্গপ্তাস | * | |
| পুনধ্যান ও আবাহন | 276 | "প্জা | 258 | |
| <u>ৰি</u> বলিক্সমাপন | 221 | গুরুণংক্তিনমস্কার ও জপবিসর্জ | र्वम " | |
| পূৰা | 33 | গুরুপ্রণাম | , 17 | |
| অন্তমূর্ত্তিপূজা | 32F | গুরুপাছ কাপ্ জা | 256 | |
| জপ ও জপবিসর্জ্ঞন | 225 | কুণ্ডলিনীপূ ৰা | 11 | |
| প্রণাম | 17 | শালগ্রামশিলায় নারায়ণপুজা | 253 | |
| আগ্রদমর্পণ | 34. | শালগ্ৰাময়ান | * | |
| ক্ষমাপ্ৰাৰ্থনা | 25. | পঞ্চেবতাপ্ জা | 77 | |
| বিসৰ্জ্জন | " | মূলপূজ! | 10 | |
| বাণলিক্ষে শিবপৃত্ধা | 252 | জপবিসর্জন ও প্রণাম | 344 | |

আসন ও মুদ্রাপ্রকরণ।

| বিষয় | পৃষ্ঠা | বি যয় | পৃষ্ঠা |
|---------------------|--------|--------------------|--------|
| আসনবিধি। | | ম ৎস্তাসন | 200 |
| দাজিংশধিধ আসনের নাম | 200 | গুপ্তাসন | *** |
| সিশ্বাসন | 202 | পশ্চিমোক্তানাসন | 19 |
| পল্লাসন | >04 | মৎস্থোদন | * |
| ভজাসন | 77 | cগারক্ষাস ন | >08 |
| মৃতাদন | 200 | উৎকটাসন | 19 |

| 10 | ধৰ্ম-জীবন | ١ |
|----|-----------|---|
| | | |

| 10 | • • | | |
|------------------------|--------|--------------------------------|--------|
| Comm | পৃষ্ঠা | বিষয় | পৃষ্ঠা |
| বিষয় | > 68 | উদানমুদ্রা | 28• |
| বোগাসন | 206 | ব্যানমূজা | 11 |
| মৃক্তাদন | | অঙ্গম্ডা | 17 |
| বজ্ঞাসন | 17 | তত্ত্বমূদ্রা | 282 |
| স্বৃত্তিকাসন | " | ধেন্ত্ৰমূক্ৰা | 77 |
| সিংহাসন | 204 | নারাচমূদ্রা | 11 |
| পোমুখাদন | " | | 17 |
| বীরাসন | ** | লোলিহামুদ্রা | \$8¢ |
| ধহুরাসন | 209 | 1 | 17 |
| মুদ্রাবিধি। | | প্রার্থনামূলা | >80 |
| মহামূড়া | 201 | | * |
| ৰহাবন্ধ | 204 | | 17 |
| বেচরী মূস্তা | 37 | স্লিধাপনীমূড়া | |
| পৰমূদ্ৰা | 20 | 1 | ** |
| পু ष्णग्रहा | 37 | সন্মূপীকরণীমূতা | " |
| ध्नमूजा ७ मीनमूजा | * | মৎসমূদ্রা | 17 |
| · · | 27 | গালিনীমূজা | 28 |
| নৈবেতামূজা | 58 | অবগুঠনমূদ্রা | 17 |
| প্রাণমূজা | , | , সংহারমূজা | 11 |
| অপান্মুলা ও স্মান্মুলা | - | | |
| | | | |

স্তবকবচপ্রকরণ।

| ख्र्यप्य प्राप्त | | | |
|---------------------------------|--------|-----------------------|--------|
| | পৃষ্ঠা | বিষয় | পৃষ্ঠা |
| বিষয় | | হিমালয়কৃত শিবস্তোত্ৰ | >65 |
| বান্মীকি ক্ত পদাষ্টকভো জ | • | মহিন্নস্ভোত্ত | 240 |
| শ্ৰীমচ্ছক্ষরাচার্ব্যবিরচিত | | | >6. |
| গঙ্গান্তোত্ত | 286 | শিৰকৰচ | 9 |
| অনুপূৰ্ণান্তো ত | 28A | কপূৰিণ্ডোত কালীকৰচ | 248 |
| অস্পূর্ণাকবচ | 34.0 | कानोक बर्ग | |
| au Tur. | | | |

| | সূচীপ | 1/0 | | | |
|---------------------------|------------------|--------------------------|-------------|--|--|
| ्विस ग्न | পৃষ্ঠা | বিষয় | পৃষ্ঠা | | |
| গুৰুস্থোত্ৰ | >+4 | শ্বারিস্তোত | ૨ •૧ | | |
| গুৰুক বচ | 366 | রুদ্রকবচ | 4.6 | | |
| <u>ত্ত্</u> ৰীগুৰুস্তোত্ৰ | 36 F | বাণ লিঙ্গ ন্তোত্ৰ | 43. | | |
| ন্ত্রীগুরুক বচ | 769 | বটু কভৈরবস্তোত্ত | 474 | | |
| ৰাণীশ্তোত্ৰ | >1> | ন বগ্ৰ হস্তোত্ত | 2>9 | | |
| সরস্বতীক বচ | ১৭৩ | নবগ্ৰহক ১ চ | 424 | | |
| মহালক্ষীভো ত্ৰ | ১৭৬ | জগনাথন্তোত্ত | 425 | | |
| লক্ষী ক বচ | 395 | ষঠীস্তোত্র | २२ • | | |
| ভবাগ্যষ্টক | 362 | ম ন সাস্তোত্র | २२२ | | |
| হুৰ্গাকৰচ | " | স্ৰ্যেত | २२७ | | |
| মঙ্গলচণ্ডিকান্তোত্ৰ | 228 | স্গ্যকব5 | 258 | | |
| वश्नाभूशीरका ज | 244 | রা বাস্তো ত্র | २२ ৫ | | |
| স গনীভোত্ত | 249 | রাধাক ব চ | २२ ० | | |
| ভারাভোত্র | 256 | গোপালস্ভোত্র | २३३ | | |
| ারা কবচ | 220 | কুণ্ড লিনীন্তোত্র | २० • | | |
| ্ৰণীভোত্ৰ | 294 | কুণ্ডলিনীকবচ | २०১ | | |
| এ কিফরে।ত্র | ७ ५८ | শীতলান্তোত্ৰ | २०७ | | |
| ঞ্জিফ কবচ | c a¢ | অপরাঞ্চিতান্তোত্র | २०१ | | |
| নুসিংহক ৰচ | २०५ | গায়ত্রীকবচ | 482 | | |
| এ রামচন্দ্রস্থোত্র | >00 | গায়ত্ৰীশাপোদ্ধার | २ 8२ | | |
| <u>লী</u> রামকবচ | २०८ | | | | |
| পরিশিষ্ট। | | | | | |
| দেব | पिरोत धान, | প্রণাম ও মন্ত্রাদি। | | | |
| বিষয় | পূঞ্চা | বিষয় | পৃষ্ঠা | | |
| গণেশ বিষ্ণু | ₹80 | কৃষ্ণ | ₹88 | | |
| 145 | " | গোপাল | | | |

। প ধৰ্ম-জীবন।

| বিষয় | পৃষ্ঠা | বিষয় | পৃ |
|---|------------------------|--|--|
| বালগোপাল | ₹88 | দক্ষিণকালিকা | 21 |
| স্থ্য | ₹8¢ | ভারা | २६ |
| রাব | " | বোড়শী | ** |
| বাণ <i>লিঙ্গ</i> | ₹8७ | ভূবনেশ্বরী | ** |
| অগ্নি | " | ভৈৱবী | 201 |
| শাৰ্কণ্ডেয় | ,, | ছিন্নমন্ত) | ** |
| ৰক্ষা | ,, | ধূনাৰতী | २¢ ' |
| ৰাল্বদেব | 289 | বগলামুখী | ** |
| কাৰ্ত্তিক | " | মাত্রী | 200 |
| কুবের | " | क भना | 17 |
| ছ ৰ্গা | 97 | इन् यान् | 19 |
| ≖রপূর্ণা | ₹8≯ | रे ख | 269 |
| সরস্বতী | 11 | পরুড় | 17 |
| (ঐ পুষ্পাঞ্চলি) | 29 | বিবিধ বিষয়। | |
| ল ন্দ্ৰী | ₹ α • | সাগরসক্ষমসান | 202 |
| (ঐ পুপাঞ্জলি) | 11 | বন্মপুত্রমান | 26. |
| | | | |
| बर्छी | - 19 | নন্দাস্থান | " |
| ষষ্ঠী মনসা | · " | নন্দাসান বাৰুণীস্থান | " ২৬১ |
| | | | * |
| মনসা | ২ 65 | বারণীস্থাৰ | |
| মনসা মঙ্গলচণ্ডী | ?e> | বাকুণীস্নান (মহামহাবাকুণী, মহাবাকুণী) | , 19 |
| মনসা মঙ্গলচণ্ডী জগদ্ধাত্ৰী | 7 6 5 | বাকণীসাৰ (মহামহাবাকণী, মহাবাকণী) দশহরাসাৰ | , 11 |
| মনসা মঙ্গলচণ্ডী অপদাত্তী গঙ্গা | ? 6 2 | বাকণীসাদ (মহামহাবাকণী, মহাবাকণী) দশহরাসাদ গ্রহণসাদ | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| মনসা মক্তলচণ্ডী অগন্ধাত্তী গঙ্গা রাধিকা | 262 " 262 269 | বাক্ষণীসাৰ (মহামহাবাক্ষণী, মহাবাক্ষণী) দশহরাসাৰ গ্রহণসান (চূড়ামণিযোগ) | " ?& \$ |
| মনসা মঙ্গলচণ্ডী অগন্ধাত্তী গঙ্গা রাধিকা দীতা | ? & > " " ? & ? ? & ? | বাকণীসাদ (মহামহাবাকণী, মহাবাকণী) দশহরাসাদ গ্রহণসাদ (চূড়ামণিযোগ) অর্দ্ধোদয়সাদ | " ? & : " ? & |

| · विषय | পৃষ্ঠা | বিষয় | পৃষ্ঠা |
|---|-------------|-------------------------------|------------|
| াবরাত্রিকৃত্য | 266 | দশোপচার-ক্সব্য | २१७ |
| ঐ স্থান ও অ র্থামন্ত্রাদি) | २७७ | পক্ষোপ চার | 19 |
| মতু (ই"তুপ্ৰা) | 269 | যক্তোপবীতগ্রন্থিপালী | 10 |
| লাত্বিতীয়ায় অনুদানমন্ত্র | * | যক্তোপবীতধারণবিধি | २18 |
| পুষ্পচয়নবিধি | " | ৰজ্ঞোপৰীতপ্ৰমাৰ | 10 |
| नेविक्रभूष्भ | २७४ | যজ্ঞোপৰীভযাৰ্জ্ঞন-দ্ৰব্য | 296 |
| ्रमनोठव्रन-अनानो | " | ৰজোপৰীতমাৰ্জ্বনপ্ৰণালী | ** |
| टू ल मो हस्र न स्त | • | (मरअमिक्शअगानी | " |
| ष्ट्रंजनोठग्रत्न निविक्षपिन | ,, | দেবতাভেদে প্রদক্ষিণের | |
| বিশ্বপত্ৰচয়নমন্ত্ৰ | ,, | প্রকারভেদ | ** |
| ৰৰপত্ৰচয়ন-প্ৰণালী | 19 | नष्टेठळापर्यत् कनशान | 17 |
| বিৰপত্ৰচয়নে নিধিদ্ধদিন | 243 | শান্তি | 216 |
| म्सी हरू नथानी | 10 | স্ভায়ন (তুলসী দেওয়া) | 19 |
| ত্লসীরকে জল দিবার মন্ত্র | 30 | হরিরলুট প্রদান | 216 |
| অধ্পব্যক্ষ জলদান-মন্ত্ৰ | | আকাশপ্রদীপদানমন্ত্র | 212 |
| বিষ্ণুচরণাযুতধারণ-মন্ত্র | 19 | उद्या मान | 18 |
| বিপ্রপাদোদকধারণ-মন্ত্র | * | ভূতচতুৰ্দশী | " |
| কুজাক্ষসং স্কারবিধি | * | অশোকাইমীতে অশোককলি | কা- |
| ক্ৰাক্ষণারণমন্ত্ৰ | 21. | পানমন্ত্ৰ | 44. |
| ভিন্ন ভিন্ন অঙ্গে রুক্রাক্ষধারণের | | ঘটোৎসর্গ ণদ্ধ ি | 19 |
| সং ৰ্ য়া | 19 | যবাদিদ্রবে)র অভাবে প্রতিবি | वि २४२ |
| তুলদীমালাসংস্কার | 19 | (पर्व्यात्र चाराहनामित | |
| नौत्राचन अंगानी | ₹ 15 | निरंबधविधि | , |
| ভোগ ও শীতল দেওয়া | ** | অমুবাচীতে নিবিদ্ধকর্ম | • |
| ট পচার | *12 | সংবার পক্ষে কুশ ও তিল | |
| যাড়দোপঢ়ার-জব্য | 79 | বাবহারের নিবিশ্বতা | * |

| বিষয় | পৃষ্ঠা | विषग्र | পৃষ্ঠা |
|------------------------------------|-------------|---------------------------|--------------------|
| পযুৰ্যবিত কুশ ও শিবমুভিকা- | | মুমূর্ কৃত্য। | |
| अहरणंत्र निविक्षणिन | 444 | বৈভরণী | 443 |
| প্রণামবিধি | 30 | অন্ত্যেষ্টিক্রিয়াপদ্ধতি | 4>> |
| व्यगारम निरंबधियि | 440 | গঙ্গাৰলে অন্থিকেপ | ₹>8 |
| चःननगरितत्र खवा | 5 F8 | কুশপু ত্তলিদাহ | 969 |
| ८वाङ्मनाटनत्र खवा | * | স্পিণ্ডাদিবিচার | २३७ |
| বজ্ঞভয়শান্তিমন্ত্র | 19 | স পিণ্ডান্তশোচ | 19 |
| ब धू भर्क | 19 | চাতৃৰ্বৰ্ণাশেচ | २२१ |
| পঞ্গব্য | 19 | নারীবিষয়কান্তশোচ | 3 |
| १क्षत्रारमाथनमञ् | 444 | বালিকাদিমরণাশোচ | 424 |
| শঞ্ামৃত ' | 19 | সত্য:শোচ | << >> |
| পঞ্বৰ্ণ গু'ড়ি | 33 | গৰ্ভস্ৰাবাণ োচ | 19 |
| পঞ্চপল্ল ব | २৮७ | অঙ্গাম্প শ্রবান্তশৌচ | 4 |
| পঞ্চশস্ত | 17 | ৰ ণ্ডাশেচ | 11 |
| পঞ্চরত্ন | 19 | মৃত্যুবিশেষাশোচ | 9 •₹ |
| শঞ্কৰায় - | 99 | শবাস্থ্যনাগ্ৰশেচ | 0•0 |
| সৰ্কৌষ্ | 23 | অশোচসক্ষরব্যবস্থা | 19 |
| মহৌৰধি | 11 | অশোচমধ্যে কর্ত্তব্যতা | 30€ |
| হ বিষ্যান্ন | ** | দাহাধিকার | 006 |
| অক্ষের পক্ষে উ প বাসে অত্কর | १२४१ | প্রকপিওদান | 0.F |
| জ পরহস্ত | * | नीत्रकोत्रमान | @>• |
| ক্ষোরকর্ম | 266 | প্রায়শ্চিত্তবিধি | 0)) |

সূচীপত্র সম্পূর্ণ।

ধৰ্ম্ম-জীবন।

নিত্যকৃত্যপ্রকরণ।

等的病系

প্রাতঃকৃত্য। *

(রাত্রির শেষ-যামার্ক অর্থাৎ ৪॥•টা হইতে ৬টার মধ্যে কর্ত্তবা)

ব্রান্ধ্যমূহুর্ত্তে † শ্য্যা হইতে গাজোখান পূর্ব্বক শ্যার উপর উপবিষ্ট থাকিরাই উদ্মুখ বা পূর্বমুখ হইরা নিম্মলিখিত শ্লোক ক্যুটি পাঠ করিবে।

- * প্রাঃশারণীয় বিষয়চিন্তন, মানসগুরুপ্তা, মানসক্ত লিনাপ্তা, চৌর-গণেশমন্ত্রজপ, গুরুপাত্তাপ্তা, গুরুপাত্তাগ্রেজানুপাঠ, দৈনিক ধর্ম ও তদ-বিরোধী অর্থাবনাদি-চিন্তন, পৃথিবীনমন্তার, মলম্ত্রতাগি, শৌচাচরণ, আচ-মন, দন্তধাবন, প্রাতঃশ্লান, ভিলক্ষারণ তপ্র ও প্রাতঃস্কা। এই কয়েকটি ক্রিয়া প্রাতঃক্ত্যের অন্তর্গত।
- † সাধারণতঃ অংহারাজকে আট ভাগ করিলে তাহার এক এক ভাগকে যাম বা প্রহর বলা যায়। প্রহরের অর্ধিংশকেই প্রহরার্দ্ধ বা যামার্দ্ধ কহে। যামার্দ্ধ ধরিয়াই নিতাক্রিয়ান্ত্র্গানের বি'র নির্দ্ধিট হইয়াছে। এক এক যামার্দ্ধ দেড় ঘটিকার সমান: দিবার প্রথম্যামার্দ্ধ (দেশভেদে সূর্য্যাদ্যের সময়ের ক্রিকং কিকিং বিভিন্ন তা থাকিলেও সাধারণতঃ অপ্রাদ্দেশে) ১টা হইতে ৭॥০টা এবং রাজির শেন্যামার্দ্ধ ৪॥০টা হইতে ৬টা পরা গিয়া থাকে. ফল কথা, রাজির পের প্রহরের নাম রাক্রিয়ামূহ্র্ভ এবং তাহারই শেষার্দ্ধের নাম রাজির শেষ-

ধর্ম জীবন।

প্রভাতে যঃ শরেন্নিত্যং হুর্গা হুর্গাক্ষরদয়ম। আপদন্তস্য নগুন্তি তমঃ সূর্য্যোদয়ে যথা॥ ব্রন্ধা মুরারিস্ত্রিপুরাস্তকারী, ভাকুঃ শশী ভূমিস্থতো বুধশ্চ। গুরুশ্চ শুক্রঃ শনী-রাহ্-কেতৃ, কুর্বস্তু সর্বে মম স্থপ্রভাতম। কালী তারা মহাবিছা ধোড়ণী ভুবনেশ্বরী। ভৈরবী ছিন্নমস্তাচ বিক্ষা ধুমাবতী তথা। বগলা সিদ্ধবিত্যা চ মাতঙ্গী কমলাত্মিকা। এতা দশ মহাবিজাঃ দিদ্ধবিজাঃ প্রকীর্দ্ধিতাঃ॥ অহল্যা দ্রৌপদী কম্বী তারা মন্দোদরী তথা। পঞ্চ কন্যাঃ স্মরেরিত্যং মহাপাতকনাশন্য॥ পুণ্যশ্লোকো নলো রাজা পুণ্যশ্লোকো যুাইষ্টিরঃ। পুণ্য রোকা চ বৈদেহী পুণ্য রোকো জনার্দনঃ ॥ কর্কোটকসা নাগসা দময়স্তা নলসা চ। ঋতুপর্ণসা রাজর্ষেঃ কীর্ত্তনং কলিনাশনম॥ কার্ত্তবীর্য্যার্জ্বনো নাম রাজা বাহুসহস্রভুৎ। যোহস্ত সংকীর্ত্তয়েশ্লাম কল্যমুখার মানবঃ। ন তদ্য বিত্তনাশঃ দ্যাৎ নষ্টঞ্চ লভতে পুনঃ॥

যামার্দ্ধ। রাত্তির ঐ শেষবামার ৪॥ টা হইতে ৬টার মধেটে (সূর্যোদয়ের পূর্বে) প্রাতঃকৃত্য সমাপন করা কর্ত্ব। রাত্তির শেষ যামে আক্ষামূহর্তেই যে শ্যাত্যাগ করিবে, পিতামহও তাহার বিধি নির্দেশ করিয়া গিয়াছেন, যথা— রাত্তেশ্চ প্রথমে যামে মূহর্তো যস্তৃতীয়কঃ। স ব্যক্ষা ইতি বিধাাতো বিহিতঃ সংপ্রবোধনে ॥

আহং দেবো ন চান্ডোহস্মি ব্রক্ষৈবাহং ন শোকভাক্।
সচিচ্বানন্দরপোহহং নিত্যমুক্তঃ স্বভাববান্॥
লোকেশ চৈতন্তময়াধিদেব,

শ্রীকান্ত বিষ্ণো ভবদাজ্ঞরৈব।
প্রাতঃ সমুখায় তব প্রিয়ার্থং,
সংসার্যাত্রামন্থবর্ত্তমিষ্যে॥
জানামি ধর্ম্মং ন চ মে প্রবৃত্তিজানাম্যধর্ম্মং ন চ মে নিরৃত্তিঃ।
দ্বয়া হৃষ্যীকেশ হৃদিস্থিতেন.

যথা নিযুক্তোহস্মি তথা করোমি ॥
প্রাতঃ প্রভৃতি সারাস্তঃশারাদি প্রাতরস্ততঃ।
য২ করোমি জগত্যর্থে তদস্ত তব পূজনম্ ॥
ক্রৈলোক্যরক্ষাধিময়ে স্থরেশি,
শ্রীপার্কাত স্করণাক্তরৈব।
প্রাতঃ সমুখায় তব প্রিয়ার্থং,

এই শ্লোক-কয়েকটি পাঠান্তে তান্ত্রিকী বিধি পালন করিতে হয়; কিন্তু অদীক্ষিত ব্যক্তি বা স্ত্রীজাতির পক্ষে ঐ নিয়ম নহে; তাহারা কেবল উপরিলিখিত শ্লোককয়টিমাত্র পাঠ করিবে।

সংসার্যাত্রামন্ত্রবর্ত্তয়িষ্টে॥

তান্ত্রিকবিধি যথা--রাত্রিবাস-পরিত্যাগান্তে শয্যার উপর উপবেশন পূর্ব্বক উদল্পুথ বা পূর্ব্বমূথ হইয়া "ওঁ কুলরক্ষেভ্যো নমঃ" এই বাক্যে প্রণাম করিবে। পরে পদ্মাসনে * উপবিষ্ট হইয়া শিরঃ-স্থিত সহস্রদলকমলান্তর্গত গুরুদেবের ধ্যান, মানস-পূজা, তাঁহার

^{*} পুলাসনের বিধি আসনপ্রকরণে লিখিও আছে।

স্তব কবচাদিপাঠ, নমস্কার,কুণ্ডলিনীর মানস-পূজা প্রভৃতি সম্পাদন করিতে হয়। * তৎপরে চৌরগণেশমন্ত্র জপ করিবে। যথা---

চৌরগণেশমন্ত্র।

হৃদয়ে হস্তহাপন পূর্ব্বক "ক্রে" মন্ত্র দশবার জপ করিয়া, দিক্ষিণনেত্র, বামনেত্র, দক্ষিণকর্ম ও বামকর্মে "হাঁ হাঁ" দশ দশবার; দক্ষিণ-নাসিকায় ও বাম-নাসিকায় "হুঁ হুঁ" দশ দশবার; মুথে "হ্রীঁ হ্রীঁ হ্রীঁ হ্রীঁ শেশ দশবার; নাভিতে "হুনী" দশবার; লিক্ষে "হে্সীঃ" দশবার; গুহে "ব্লুং" দশবার এবং ক্রমধ্যে "হুঁ" দশবার জপ করিবে। † তৎপরে (পূজাপ্রকরণের লিখিত) যথা-নিয়মে গুরুপাত্কাপূজা ও গুরুপাত্কাস্তোত্রপাঠ করিতে হয়।

অনস্তর দিবাভাগে কি কি কর্ম্মের অন্তুষ্ঠান করিবে, ধর্ম্মের অবিরোধভাবে কি কি অর্পসাধন করিতে হইবে, এবং ধ্যার্থের অবিরোধে কি কি কামসাধন করিতে হইবে, ভাষ্য চিন্তা করিবে।

- ত গুরুপ্লা-নযস্কারাদি ও কুওলিনাপ্রা এবং গুরুপাহকাপ্রা প্রা-প্রকরণে আর ভবাদি ভবকবচপ্রকরণে দুইবা।
- † কেছ কেছ ''কাঠিবাঁধ্যাৰ্জ্জনো নাম'' এই লোকে প্ৰান্ত পাঠের প্র ''ওঁ কুলবুক্কেভো নমঃ'' মলে প্রণামান্তে গুরুধ্যান, গুরুপ্জা; কুওলিনীপূজা ও চৌরগণেশমল জপ করিয়া ''শ্রহং দেবোন চান্যোহ্সি'' ইত্যাদি আবশিষ্ট ক্ষোককয়টি পাঠের এবং তৎপরে গুরুপাত্কাপূজার ব্যবস্থা দিয়া থাকেন।
 - ‡ এ বিষয়ে শাস্ত্রে লিখিত আছে,—

প্রবৃদ্ধন্দিন্তমেদ্ধর্মনর্যকান্তাবিরোধিনন্। অপীড়য়া তয়োঃ কান্যমূভয়োরপি চিন্তয়েৎ ॥

এরপ চিন্তা করার তাৎপর্য্য এই যে, ইহা ধারা অভ্যরঃ: স্কুষ্ণে সংর্গুণ সংবর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

পৃথিবী-নমস্কার।

তৎপরে প্রথিবীকে প্রণাম করিতে হয়। যথা—
সমুদ্রমেখলে দেবি পর্ব্বতন্তনমগুলে।
বিষ্ণুপত্মি নমস্তত্যং পাদপ্রশং ক্ষমস্ব মে ॥
এই মন্ত্র পাঠ করিয়া "প্রিয়দক্তায়ে ভূবে নমঃ" এই বলিয়া
পৃথিবীকে প্রণাম করিবে।

অনস্তর পুরুষ প্রথমে দক্ষিণচরণ ও ফ্রীঞাতি বামচরণ ভূতলে নিক্ষেপ পূর্বক গৃহ হইতে বিনিজ্ঞান্ত হইবে এবং সর্বাগ্রে বহি, বেদজ্ঞ ব্রাহ্মণ, গো, যাজিক ও ভাগাবতা নারা, ইহাঁদিগকে দর্শন করিয়া পরে অন্তের মুখাবলোকন করিবে। স্থরা, পাপী-লোক, ছিল্লনাসিক, ভাগাহান। রমণী বা নগ্রব্যক্তিকে প্রভাতে দর্শন করিবে না।

মলমূত্রত্যাগবিধি।

তদনস্তর বাদস্থানের দক্ষিণপশ্চিম-কোণে মলমূত্রত্যাগার্থ স্থাননিরূপণ করিয়। তথার মলমূত্রত্যাগ করিবে। যদি প্রামে বাদ হয়, তাহা হইলে বাদস্থানের দেড়শত হস্ত দূরে এবং নগরে বাদ হইলে তাহার চতুগুণ দূরে মলমূত্রত্যাগ করিবে। দিবা-ভাগে ও সন্ধ্যাদ্বরে উদল্পুথ হইয়। এবং রাত্রিকালে দক্ষিণাস্থ হইয়। মলমূত্রত্যাগ করিতে হয়; তৎকালে মৌনভাবে অবস্থান করিবে। অত্যন্ত বেগ না হইলে সন্ধিসময়ে মলমূত্রত্যাগ করিবে না। মলমূত্রত্যাগকালে বামহস্ত বার। অগুদর দূর্রূপে ধারণ করিয়া থাকিবে; কিন্তু জলপাত্র হস্ত দারা স্পর্ণ করিবে না। ঐ সময়ে জৃত্তা (হাইতোলা) ও ক্ষুৎ (হাঁচি) দেওয়াও নিধিদ্ধ। মলমূত্রত্যাগ-

কালে উত্তরীয়বস্ত্র থাকিলে ব্রাহ্মণেরা যজোপবীত মালার জায় পর্চ-দেশে রাখিবেন; উত্তরীয়বস্ত্র না থাকিলে কর্ণে যজ্ঞোপবীত ধারণ করিতে হয়। মলমূত্রত্যাগকালে নদী বা জ্যোতিষ্কমণ্ডল দর্শন করিবে না, উদ্ধাষ ত্যাগ করিবে না এবং নিষ্ঠীবন (থুথু) क्लिट ना। र्या, हज, वाश, तोका, (प्रवानश, (गा, (प्रवा), ব্রাহ্মণ, গুরু, ফ্রীজাতি, ইহাদের অভিমুখে মলমূত্রত্যাগ করিতে নাই। জুতা বা খড়ম ধারণ করিয়া মলমূত্রত্যাগ করাও নিধিক; তৎকালে আকাশে বা কোন দিকে দৃষ্টিপাত করিবে না। দণ্ডার-মান অবস্থায় বা গমন করিতে করিতেও মলমূত্রত্যাগ নিধিদ্ধ। গোব্রজ, বল্মীক, ভস্ম, পথ, পর্ব্বত, চিতা, নদীতীর, জীবযুক্ত পর্ত্ত, জীর্ণদেবালয়, জল, চ্যাভূমি এই সমস্ত স্থানে মলমূত্রত্যাগ করিবে না। রাত্রিকালে চৌরব্যাঘাদি-ভীতিসকুল স্থানে,অন্ধকারা-রত স্থানে বা রক্ষাদির ছায়ারত স্থানে মলমূত্রত্যাগ করিতে হইলে বিধিবিহিত দিও নিরূপণের আবশ্যক নাই; তদবস্থায় যে দিকে ইচ্ছা, মলমূত্রত্যাগ করিতে পার। যায়। এই প্রকারে মলমূত্রত্যাগ করিরা অণ্ডবয় দুচ্রূপে ধারণ পূর্ব্বক মলত্যাগস্থল হইতে উঠিয়া শৌচক্রিল। করিবে।

শোচাবাধ । *

মলণুত্রত্যাগ করির। শৌচ করিতে হয়। মনুগুশরীরে দ্বাদ-শটি মল বিভামান ; —বসা, শুক্ত, রক্তা, মজ্জা, মূত্র, বিষ্ঠা, কর্ণমল,

^{&#}x27; শৌচ দ্বিধ ;—বাহ ও আভ্যন্তর। মৃত্তিকা, জল ইঙাাদি দারা জ্রিকে বাহ্য এবং মানস্ত্রিকে আভ্যন্তর বলে। যাবৎ মানস্থাচি শিক্ষা মাহর, তাবৎ বাহ্যশৌচ কর্ত্য

নথ, শ্লেমা, অশ্ৰু, দূনিক (পিঁচুটি) ও স্বেদ। এই দ্বাদশটির মধ্যে প্রথমোক্ত ছয়টির শুদ্ধিবিধানার্থ জল ও মৃত্তিকা এবং শেষোক্ত ছয়টির শুদ্ধিবিধানার্থ কেবলমাত্র জল আবশ্রক। দিবাতাগে ও সন্ধিকালে উদল্পুথে এবং রাত্রিকালে দক্ষিণাস্যে মৌনভাবে শৌচক্রিয়া করিবে।

শৌচক্রিয়ার্থ বল্লীকোদ্ধত, মৃষিকোদ্ধত, জলগর্ভস্ক, অন্তের শৌচাবশিষ্ট, গৃহলেপনযোগ্য, প্রাণিবিশিষ্ট, কর্দ্ধমযুক্ত ও হলোৎ-খাত মৃত্তিকা গ্রহণ করিতে নাই। তর্জনী, মধ্যমা ও অনামা এই তিনটি অঙ্গুলীর পর্বত্রর পূর্ণ হইতে পারে, এতৎপরিমিত মৃত্তিকা শৌচার্থ গ্রহণ করিবে।

বামহস্তে মৃত্তিকা লইয়া শিগ্নে একবার, গুফে তিনবার, বামকরে দশবার এবং পুনরার ত্ই হস্তে সাতবার করিয়া মৃত্তিকা দিবে। মতান্তরে এইরূপ নির্দিষ্ট আছে যে, লিঙ্গে একবার, মলদেশে তিনবার, বামকরের তলদেশে দশবার, বামহস্তপৃষ্ঠে ছয়বার এবং পরে উত্য হস্তে সাতবার করিয়া মৃত্তিকা লেপন করিবে। ইহাতে গ্র্নিফ দূর না হইলে, যতক্ষণ গ্রন্থ পুনঃ মৃত্তিকালেপন করিবে। তৎপরে জল দারা গ্রেত করিতে হয়। মতান্তরে শিগ্নে একবার, গুফে পাঁচবার, বামহস্তে দশবার, ত্ই হস্তে সাতবার, প্রতি পদে একবার এবং পরে ত্ই হাতে তিন তিনবার মৃত্তিকা দিবে।

যথানিয়মে মৃত্তিকা দিয়া জল দারা ধৌত করিতে হয়। জল-পাত্তের অভাবে যদি জলাশয়ের জল দারা ধৌত করিতে হয়, তাহা হইলে জলাশয়ের তীরস্থ একহস্ত-পরিমিত স্থান পরিত্যাগ পূর্বাল অর্থাং বিশ্বং জলে নামিয়া জলশৌচ কারবে। এং প্রকারে জলশোচ করিয়া তৃণাদি দারা নখাভ্যস্তরগত মৃত্তিকাদি ধীরে ধীরে অপসারিত করিবে। তৎপরে প্রতি পদে তিন তিন-বার মৃত্তিকা দিয়া ধৌত করিবে।

কেবল মৃত্রত্যাগের পর শিশ্বে একবার, বামহন্তে তিনবার, ছুই হস্তে ছুইবার এবং প্রতি পদে এক একবার মৃত্তিকা দিয়া জল দারা ধৌত করিবে।

অন্তুপনীত বিপ্রবালক, স্ত্রীজাতি ও শৃদ্র, ইহাদের পক্ষে শৌচের কোনরূপ সংখ্যা নির্দিষ্ট নাই; যতক্ষণ তুর্গন্ধ দূর না হয়, তাবং পুনঃ পুনঃ মৃত্তিকালেপন পূর্বক ধৌত করিয়া ফেলিবে।

যে ব্যক্তি পীড়িত অথবা পথিক, সে যথাসম্ভব শৌচক্রিয়া করিবে এবং রাত্রিকালে কোন বাধাবশতঃ সম্পূর্ণ শৌচক্রিয়ার অক্ষম হইলে ঐরপ যথাসম্ভব শৌচক্রিয়া করিতে পারে; কিপ্ত সামর্থ্য থাকিতে নিরম-ভঙ্গ করিতে পারিবে না। কেং কেং বলেন, এইরপ নিরম গৃহীর পক্ষেই নিন্দিষ্ট; প্রক্ষচারা প্রভৃতি অবশিষ্ট আশ্রমিগণের পক্ষে উত্তরোভর ইহার বিশুণ ব্যবস্থের। রাত্রিকালে দিবাশোচের অর্দ্ধেক করিতে হয়; রোগ হইলে তদর্দ্ধ, পথিকের পক্ষে তাহারও অর্দ্ধ এবং নারীজ্ঞাতির পক্ষে তাহারও অর্দ্ধ ব্যবস্থেয়। এই প্রকার নিরমে শৌচক্রিয়া করিয়া বসনপ্রক্ষালনাস্তে পাদ ধোত করিবে।

পাদকালনবিধি।

সামবেদীয় ব্রাহ্মণেরা পশ্চিমাস্য বা পূর্কাস্য হইয়া বসিয়া প্রথমে "সব্যং পাদমবনেনিজে" এই বলিয়া বামপাদ, পরে "দক্ষিণং পাদমবনেনিজে" এই বলিয়া দক্ষিণপাদ প্রক্ষালন করিবে। যফুর্কেদীয়েরা ঐক্লপ মল্লে প্রথমে দক্ষিণপাদ, পরে বামপাদ খোত করিবে; কিন্তু যদি শূদ্রে পাদপ্রক্ষালন করিয়া দেয়, তবে প্রথমে বামপাদ প্রক্ষালন করিতে হইবে। দৈবক্রিয়ায় উত্তরমূখ ও পিতৃকর্মে দক্ষিণমূখ হইয়া পাদক্ষালন ব্যবস্থা। অন-স্তর ব্রাক্ষণেরা পৃষ্ঠলম্বিত বা কর্ণলম্বিত যজ্ঞস্ত্র যথাবৎ গলদেশে ধারণ করিবেন। পাদক্ষালনাস্তে শিখা-বন্ধন করিতে হয়।

শিখাবন্ধন ও আচমন।

গায়ত্রী উচ্চারণ পূর্বক আড়াই পাক দিয়া শিখা ও জ্টিকা বন্ধন করাই ব্রাহ্মণের কর্ত্তবা। স্ত্রীজাতি ও শৃদ্রেরা নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়িয়া শিখা-বন্ধন করিবে। যথা—

> ব্ৰহ্মবাণীসহস্ৰাণি শিববাণীশতানি চ। বিষ্ণোৰ্গামসহফ্ৰেণ শিখাবন্ধং করোম্যহম্॥ *

এই মন্ত্রে শিখাবন্ধন পূর্বক চক্ষুদ্রি ধৌত করিয়া আচমন করিবে। † তৎপরে দন্তধাবন করিতে হয়।

দন্তধাবনবিধি।

মুখবিশুদ্ধার্থ দন্তধাবন না করিয়া আচান্ত হইলেও অশুচি বলিয়া গণনীয় হইতে হয়; স্মৃতরাং দন্তধাবন নিতান্ত আবশ্যক।

শিখামোচনের মন্ত্র যথা –

ওঁ পচ্ছস্ত সকলা দেবা ত্রন্ধবিষ্ণুমহেশবাঃ। ভিঠত্বভাচলা লক্ষীঃ শিখামুক্তং করোমাহম্॥

দ এ সময়ের আচমন সামাত কুলিমাত্র। প্রকৃত আচমনবিধি পরে ধথাস্থানে লিপিত আছে। কেছ কেছ শৌচাতে, দন্তধাবনের পূর্বে ধথাবিধি ছইবার প্রকৃত আচমন করার ব্যবস্থাদেন। মতান্তরে মলমূত্রভ্যাপের পূর্বে ছইবার আচমন করার বিধি আছে। শ্রাদ্ধাহ, জন্মদিন, বিবাহদিবস, উপনয়নদিন, ব্রত ও উপবাসাদি এবং পঞ্চপর্বে অর্থাৎ চতুর্দ্নী, অন্থমী, অমাবস্থা, পূর্ণিমা
ও সংক্রান্তি এই সমস্ত দিনে দস্তধাবন নিষিদ্ধ। অজীর্ণাদি স্থলেও
দস্তধাবন করিবে না। নিষিদ্ধদিনে ভন্ম বা মৃত্তিকা দ্বারা মুখশোধন করিতে হয় অথবা দাদশগণ্ডুষ জল দ্বারা বিনামন্ত্রে মুখপ্রস্কালন করিবে। খদির, কদম্ব, করঞ্জ, তিস্তিড়ী, ভুমুর, আকন্দ,
বিশ্ব, অপামার্গ, নিম্ব, আত্র, বট, বংশত্বক্, এই সমস্ত কার্চের যে
কোন একটি দ্বারা দস্তধাবন করিবে। সামবেদীয়েরা অন্তাস্থলী
এবং অন্তান্ত-বেদীয়গণ দ্বাদশান্ত্র্লীপরিমিত দস্তকান্ঠ ব্যবহার
করিবে। দস্তকান্ঠ কনিন্ঠার অগ্রভাগবৎ স্থুল ও ত্ব্সমন্থিত হইবে
এবং উহার অগ্রভাগ দলিত করিয়া লইবে। নিম্নলিথিত মন্ত্র
দৃইটি পাঠ পূর্বেক দস্তধাবন করিবে।

ওঁ অন্নাভায় ব্যুহদ্ধং সোমো রাজায়নাগমৎ।
স মে মুখং প্রমাক্ষ্যতে যশসা চ তগেন চ॥ >॥
আায়ুর্বলং যশো বর্চঃ প্রজাঃ পশুবস্নি চ।
বিদ্ধা প্রজাঞ্চ মেধাঞ্চ ড্রো ধেহি বনস্পতে॥ ২॥

দক্ষিণ-হস্তের অনামা ও কনিষ্ঠাস্থলী দারা দস্তকার্চ ধারণ পূর্ব্বক পূর্ব্বাস্ত বা উত্তরাস্ত হইয়া এই ছুইটি মন্ত্র পাঠ পূর্ব্বক দস্ত-ধারন করিবে; কিন্তু শূদ্র ও দ্রীলোকেরা প্রথম মন্ত্রটি পাঠ করিবে না, কেবল দিতীর মন্ত্রটি পাঠ করিবে।

দস্তকাঠের, অভাবে দাদশগণ্ডু য জল দারা মুখপ্রক্ষালন করিবে। ভুক্তদ্রব্যের কোন অংশ দস্তে স্থলিষ্টরূপে সংলগ্ন থাকিলে (তাহার কোনরূপ স্থাদ অস্কুত্ত না হইলে) তাহা অপনয়নার্থ বিশেষ প্রয়াস পাইবে না। জিহ্বামার্জন প্রত্যুহই কর্ত্ব্য। সংযতবাক্ হইয়া ধীরে ধীরে দস্তকার্চ দারা দস্তধাবন করিতে হয়। দস্তমার্জ্জুনাস্তে দস্তকার্চ ধৌত করিয়া পবিত্র স্থলে ফেলিয়া দিবে। তৎপরে প্রাতঃমান করিবে। *

প্রাতঃস্নান ও আচমনবিধি।

সান সপ্তবিধ;—মান্ত্র, ভৌম, আগ্রেয়, বারব্য, দিব্য, মানস ও বারক। "শর আপ" ইত্যাদি বৈদিকীসদ্ধ্যান্তর্গত মন্ত্র উচ্চারণ পূর্নক স্নানের নাম মান্ত্রনান; † গঙ্গামৃত্তিকাদি-লেপন করাকে ভৌমলান বলে; গাত্রে হোমভন্মলেপনের নাম আগ্রেয় স্নান; বায়্বেগোথ গোক্ষুরধৃলিস্পর্শকে বায়ব্য স্নান কহে; রৌদ্র থাকিতে থাকিতে যে জলবর্ষণ হয়, সেই জলে গাত্র সিক্ত করার নাম দিব্যসান; "হরিপাদনিঃস্তস্করধুনী-সলিলে স্নান করিতেছি," মনে মনে এইরূপ চিন্তা করাকে মানস্নান কহে এবং জলমধ্যে অবতরণ পূর্নক অবগাহন করাকেই বায়ণ্সান বলা যায়। এই সপ্রবিধ স্নানের মধ্যে বারুগন্নানই মুধ্যনান বলিয় পরিগণিত। আলাত অবস্থায় জপাদি-ক্রিয়ায় অধিকারী হইতে পারে না। প্রতিঃমান হায়া দেহশুদ্ধি হয়।

স্রোতোজলে স্রোতের অভিমুথে এবং স্রোতোহীনজলে স্র্য্যের অভিমুথে নাভিমগ্রজলে দণ্ডায়মান হইয়া ছই হস্ত দারা মুখ, নাসিকা, চক্ষু ও কর্ণ আচ্ছাদন পূর্বক একবার ডুব দিবে। কাহাবও কাহারও ব্যবস্থামতে স্রোতোহীন জলাশয়ে উত্তরাস্থ হইয়া

 [#] প্রাঃসানে তৈলব্যবহার নিষিদ্ধ, স্তরাং তৈলমর্কনবিধি এ স্থলে লিশিত হইল না; পরে যথাস্থানে জন্ত্রা।

[†] বেদাধিকারী বাতীত মাল্বমানে অক্সের অধিকার নাই।

ন্দান করিতে হয়। অন্সের কৃত জলাশয় হইলে নিম্নলিখিত মন্ত্রটি পড়িয়া জলাশয় হইতে তিন বা পাঁচটি মৃত্তিকাপিণ্ড উত্তোলন পূর্ব্বক তাহা তীরে ফেলিয়া দিয়া ডুব দিতে হয়। মন্ত্র যথা—

উত্তিষ্ঠোত্তিষ্ঠ পঙ্ক বং ত্যক্ত পুণ্যং পরস্থ চ। পাপানি বিলয়ং যান্ত শান্তিং দেহি সদা মম॥ একবার ডুব দিয়া যথানিয়মে আচমন করিবে। যথা—

করপদপ্রক্ষালন পূর্ব্বক পূর্ব্বমুখ বা উত্তরমুখ হইরা জান্তব্যমধ্যে দক্ষিণ-হস্ত গোকণাক্ষতিভাবে স্থাপন পূর্ব্বক উহাতে একটি মাধ-কলাই নিমগ্ন হইতে পারে,এরূপ পরিমিত জল বামহস্ত দারা গ্রহণ করিবে। অনস্তর রাদ্যাতীর্থ পারা * ঐ জল তিনবার পান করিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্র হুইটি পাঠ পূর্ব্বক বিঞুস্মরণ করিবে। যথা —

ওঁ তদিফোঃ পরমং পদং সদা পশুস্তি পূরয়ঃ। দিবীব চক্ষুরাততম্॥ ১॥ ওঁ অপবিত্রঃ পবিত্রো বা সর্বাবস্থাং গতোহপি বা। যঃ স্মরেৎ পুণুরীকাক্ষং স বাহাভ্যন্তরং শুচিঃ॥ ২॥ †

পরে দক্ষিণকরের অঙ্গুষ্ঠ্য দারা দক্ষিণদিক্ হইতে বামদিকে বারদ্বর ওষ্ঠমার্জন পূর্বক তর্জনী, মধ্যম। ও অনামিক। এই তিন অঙ্গুলী একত্র করত উহার অগ্রদেশ দারা ওষ্ঠের উপরিভাগ এবং অধ্রের নিয়দেশ হইবার স্পর্শ করিবে। তৎপরে অঙ্গুষ্ঠ ও তর্জনীর অগ্রভাগ সংযুক্ত করত একবার নাসিকার দক্ষিণরদ্ধ ও

[্] ব্রাহ্ম।তীর্থ--- অপুঠাপুলীর মূলদেশ।

[†] ব্রীজাতি ও শুজেরা দৈবতীর্থ দারা ওঠে একবার জলস্পর্ণ করাইবে। উছারা প্রথম মন্ত্রটি পাঠ করিবে না, দিতীয়টি পাঠ করিয়া মনে মনে বিষ্ণু-স্মরণ করিবে। অঞ্চলবৈ অগুভাগকে দৈবতীর্থ ক্ষে।

একবার বামরশ্ব, একবার দক্ষিণনেত্র ও একবার বামনেত্র এবং একবার দক্ষিণকর্ণ ও একবার বামকর্ণ স্পর্শ করিবে। অনস্তর অঙ্গুষ্ঠ ও কনিষ্ঠীঙ্গুলীর অগ্রভাগ একত্র করিয়া নাভিদেশ একবার স্পর্শ করত করতল দ্বারা একবার বক্ষঃপ্রদেশ স্পর্শ করিবে। তদনস্তর সমস্ত অঙ্গুলীর অগ্রদেশ সংযুক্ত করিয়া তদ্বারা একবার শিরঃপ্রদেশ এবং একবার দক্ষিণবাহুমূল ও একবার বামবাহুমূল স্পর্শ করিতে হইবে। * আচমনান্তে করবোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্রপাঠ করিবে। যথা—

* হাদয়স্থান পর্যান্ত স্পর্শ করিতে পারে, এতৎপ্রমাণ জল আচমনার্থ গ্রহণ করাই রাঙ্গণের কর্তব্য। কঠ পর্যান্ত স্পর্শ করিতে পারে, এতৎপরিমিত জল বৈত্যেরা এবং কেবল মুখ স্পর্শমাত্র করিতে পারে, এতৎপ্রমাণ জল শৃক্ত ও স্ত্রালোকেরা গ্রহণ করিবে। তাত্রপাত্রস্থ জল বারা আচমন করাই প্রশন্ত। লৌহ, রঙ্গ, পিন্তল, সীসক ও কাংস্থপাত্রস্থ জল নিষিক। তাত্ত্রিক আচমন ও বৈষ্ণব আচমন এইরূপ, মধা—

ভান্তিক আচমন।

"ঠ আত্মত হায় স্বাহা, ওঁ বিভাত হায় স্বাহা, ওঁ শিবত হায় স্বাহা" এই বলিয়া তিনবার জ্বলপান করিয়া উপরিলিগিত নিয়মে আচমন করিবে। শাক্তগণের পক্ষে এইরূপ জাচমনই কর্তব্য।

रेवक्षव चाठ्यन।

প্রথমতঃ "ওঁ কেশবায় নম:, ওঁ নারায়ণায় নম:, ওঁ মাধবায় নম:", এই তিনটি মস্ত্রে তিনবার মুখে জল দিবে। (স্ত্রা ও শুদ্র সর্বত্র নম: বলিবে, প্রণব উচ্চারণ করিবে না)। অনস্তর "ওঁ গোবিন্দায় নম:, ওঁ বিষ্ণবে নম:" বলিয়া হস্তক্ষালন; "ওঁ মধুস্দনায় নমঃ, ওঁ ত্রিবিক্রমায় নম:" বলিয়া মুখ-মার্জ্বন; "ওঁ বামনায় নমঃ, ওঁ শ্রীধ্রায় নমঃ" বলিয়া অধ্র ও ওঠ মার্জ্বন;

ওঁ কুরুক্ষেত্রং গয়া-গঙ্গা-প্রভাসপুষ্করাণি চ।
তীর্পান্মেতানি পুণ্যানি স্নানকালে ভবস্থিহ॥
তৎপরে সম্বন্ধ কবিবে। যথা—

বিষ্ণুরোম্ তৎসদত * অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতিথোঁ
অমুকগোত্রঃ বা (অমুকগোত্রা) শ্রীঅমুকদেবশর্মা (অথবা অমুকদাসঃ বা অমুকীদেবী অথবা অমুকীদাসী) শ্রীবিষ্ণুপ্রীতিকামঃ
(বা কামা) † অম্মিনু জলে প্রাতঃমানমহং করিষ্যে। ‡

"ওঁ হ্বীকেশায় নমঃ" বলিয়া হস্তকালন; "ওঁ পদ্মনাভায় নমঃ" বলিয়া পদকালন; "ওঁ দামোদরায় নমঃ" বলিয়া মস্তক-মার্জ্জন ও "ওঁ বাসুদেবায় নমঃ"
বলিয়া মুখমার্জ্জন করিয়া তৎপরে "ওঁ সক্ষর্বণায় সমঃ", ও "ওঁ প্রচান্তায় নমঃ",
বলিয়া নাদাদয়; "ওঁ অনিক্রনায় নমঃ" ও 'ওঁ পুক্রেভিমায় নমঃ" বলিয়া
নেজ্রদ্ম; "ওঁ অবাক্রকায় নমঃ" বলিয়া দক্ষিণকর্ণ; "ওঁ নৃসিংহায় নমঃ"
বলিয়া বামকর্ণ; "ওঁ অচ্যুতায় নমঃ" বলিয়া নাভি; "ওঁ জনার্দনায় নমঃ"
বলিয়া বক্ষঃ; "ওঁ উপেন্দ্রায় নমঃ" বলিয়া মস্তক এবং "ওঁ হরয়ে নমঃ"
বলিয়া দক্ষিণ-বাছ ও "ওঁ শ্রীকৃষ্ণায় নমঃ" বলিয়া বামবাছ স্পর্শক্রিবে।

- শৃদ্র ও স্ত্রীলোকেরা বিষ্ফুর্ন মোহতা বলিবে।
- † দীক্ষিত ব্যক্তিরা বিষ্ণুপ্রীতিকামনার স্নান করিয়া স্বীয় ইষ্টদেব-প্রীতি -কামনায় পুনরায় স্নান করিবে।
- ‡ পঞ্চার বা অক্তাক্ত তীর্ণস্থানে স্নান করিতে ছইলে সক্ষরণ কা অক্তরূপ এবং তাহাতে বিশেষ বিশেষ মন্ত্রও আছে। তৎসমন্ত এ স্থলে লিখিত ছইল না, পরিশিষ্টে তাহা বিবৃত আছে।

মাস ত্রিবিধ; - সৌর, মুখ্যচাক্র ও গৌণচাক্র। সঙ্কলে এই ভিনপ্রকার মাসই ব্যবহৃত হয়। সংক্রান্তি হইতে পরসংক্রান্তি পর্যান্ত সৌর,শুক্রা প্রতিপদ্ তিথি হইতে অমাবজ্ঞা পর্যান্ত মুখ্যচাক্র এবং এবং কৃষ্ণপদ্ধীয়া প্রতিপদ্ তিথি হইতে পূর্ণিমা পর্যান্ত গৌণচাক্র। বিবাহাদি সংস্কারে সৌরমাস ও রাশির উল্লেখ করিতে হয়; জন্মাইম্যাদি তিথিক্তে গৌণচাক্র এবং অক্যান্ত সঙ্কল্পান্তে "নমো নারায়ণায়" উচ্চারণ পূর্ব্বক সন্মুখে চারিদিকে এক এক হাত করিয়া চারিহাত জল মাপিয়া একটি চারিকোণ স্থান করত অন্ধুশমুদ্রাযোগে তর্জ্জনীর অগ্রদেশ দ্বারা ঐ স্থানে জল আলোড়ন পূর্ব্বক নিয়লিখিত মন্ত্রে তীর্থ আবাহন করিবে। যথা—

ওঁ গঙ্গে চ ষমুনে চৈব গোদাবরি স্বরস্বতি। নর্ম্মদে সিন্ধু-কবেরি জলেহস্মিন্ সন্নিধিং কুরু॥ তৎপরে করযোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্র কয়টি পাঠ করিবে। যথা—

ওঁ বিঞ্পাদপ্রস্থতাসি বৈষ্ণবী বিষ্ণুপুজিতা।
পাহি নম্বেনসস্তম্মাদাজন্মরণাস্তিকাৎ।
তিস্রঃ কোটার্দ্ধকোটী চ তীর্থানাং বায়ুরব্রবীৎ।
দিবি ভুব্যস্তরীক্ষে চ তানি তে সম্ভ জাহ্নবি।
নন্দিনীত্যেব তে নাম দেবেয়ু নলিনীতি চ।
বুন্দা পুথা চ স্কুতগা বিশ্বকায়া শিবামূতা। *
বিভাধরী স্প্রসন্না তথা লোকপ্রসাদনী।
ক্ষেমা চ জাহ্নবী চৈব শাস্তা শাস্তিপ্রদায়িনী।
এতানি পুণ্যনামানি স্নানকালে প্রকীর্ত্তরেৎ। †
ভবেৎ সন্নিহিতা তত্র গঙ্গা ব্রিপথগামিনী॥

অনন্তর সপ্তধা "ওঁ নমো নারায়ণায় নমঃ" বলিয়া করন্ধয়ের

কার্যো প্রায়শঃ মুখ্যচাক্রমাস ব্যবহাত হয়। সংক্রান্তিনিমিতক ক্রিয়ায় কেহ কেহ মুখ্যচাক্রমাস উল্লেখ করেন।

শুদ্র বা দ্বীলোকেরা সক্ষর ভিন্ন স্থানাক অত্য মন্ত্র পাঠ করিবে না; ভাহারা কেবল "নমো নমঃ" বলিবে, মন্ত্রগুলি ব্রাহ্মণ হারা পাঠ করাইবে।

^{*} শিবা সিতা ইতি বা পাঠঃ।

[†] স্থানকালে চ ষঃ পঠেৎ ইতি বা পঠাতে।

অগ্রভাগ একত্র করত তদ্ধারা তিনবার শিরঃপ্রদেশে জলসিঞ্চন করিবে। পরে নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ করিয়া গলে মৃত্তিকালেপন করবে। যথা—

ওঁ অশ্বক্রান্তে রথক্রান্তে বিষ্ণুক্রান্তে বস্তুদ্ধরে।

' মৃত্তিকে হর মে পাপং যন্ময়। হৃষ্কতং কৃতম্।
উদ্ধৃতাসি বরাহেন ক্লফেন শতবাহুনা।
আকৃষ্ণ মম গাঁত্রাণি সর্কাং পাপং প্রমোচয়॥

এই মন্ত্রে গাত্রে মৃত্তিকালেপন করিয়া * স্নান করিবে। তৎ-পরে গঙ্গাস্তোত্রাদি পাঠ করিয়া গঙ্গাদেবীর উদ্দেশে প্রণাম করিবে। † এই প্রকারে প্রাতঃনান সমাপন করিয়া দীক্ষিত ব্যক্তিরা তান্ত্রিক্সান করিবে।

তাল্থিকস্থান।

আচমনান্তে "বিষ্ণুরো য্ তংগদ ছ অমুকে মাসি অমুকপক্ষে অমুকরাশিন্তে ভান্ধরে অমুকতিথে অমুকদেব তা প্রীতরে নানমহং করিবাে" এই বাক্যে সক্ষন্ত্র করিবা প্রাণায়াম ও ষড়ঙ্গভাগ করিবে। ‡ তৎপরে সন্মুখন্তিত জলে "ওঁ গঙ্গে চ যমুনে চৈব" ইত্যাদি মন্ত্রে অনুশমুদ্রাযোগে তার্থ আবাহন করিয়৷ ধেরুমুদ্র। প্রদর্শন পূর্বক কবচমুদ্রাযোগে ঐ জল বেস্টন এবং অন্তমুদ্রাযোগে উহার রক্ষা করিবে। অনস্তর উহার উপর একাদশবার মূলমন্ত্র

- * জলাশয়ের ভীরস্থ মৃত্তিকা লইয়া পাতে লেপন করিতে হয়; কিন্তু ঘনীক-মৃত্তিকা, মৃষিকোৎগাত মৃত্তিকা এবং বৃক্ষমূলস্থ, শাশানস্থ, সানাবশিষ্ট, শৌ্তিকালয়স্থ জলগভিস্থ মৃত্তিকায়হণ নিষিক।
 - 🕇 भक्रारखाजामि खरकरा-अक्राप निश्ठ ३३न।
 - ‡ প্রাণায়াম ও বড়জকাসাদি পরে বিবৃত আছে।

জপ করিয়া সেই জলী হইতে স্থেয়ের অভিমুখে দাদশবার জল ফেলিয়া দিবে। তৎপরে সেই জলকে স্বীয় ইপ্তদেবের চরণাজ-বিনির্গত বোধে মুখাশক্তি মূলমন্ত্র জপ করিবে। তদনস্তর একবার ডুব দিয়া জলের উপর তিনবার মূলমন্ত্র জপ করত আপন মস্তকে তিনবার জলপ্রক্ষেপ করিবে। এই প্রকারে স্নান সমাপন করিয়া বস্ত্র পরিধান করিতে হয়।

বস্ত্রপরিধান।

মানশেষে সর্বাঙ্গ মুছিয়া মস্তকে পরিষ্কৃত উষ্ণীষ বন্ধন পূর্ব্বক ্ধোত ও পরিস্কৃত বসন পরিধান করিবে। জাকুর নিমুভাগে পতিত হয়, এরূপভাবে বস্ত্রপরিধান করা কর্ত্তব্য। ব্রাহ্মণেরা প্রণব অথবা ইপ্তমন্ত্র উচ্চারণ করিয়া এবং দীক্ষিত শূদাদি ইপ্তমন্ত্র উচ্চারণ পূর্ব্বক ত্রিকচ্ছ করিয়া বন্ধ পরিধান করিবে। রক্তবন্ত্র ব। কাষার-বন্ত্র পরিধান করিয়া তান্ত্রিককার্য্য করাই প্রশস্ত। রজকগৃহাগত বন্ধ উত্তমরূপে ধৌত করিয়া পরিধান করিতে হয়। ধৌতবন্ধ না পাইলে ছাগরোমজ, মেমরোমজ অথবা শণত্ত্রজ বন্ত্র পরিধান করিয়া পূজাদিকার্য্য করিবে। তান্ত্রিককার্য্য ভিন্ন অন্ত ক্রিয়ায় काशाय वा ब्रक्कवर्ग वख अगल नरह। गीर्ग, मगाशीन, मलिन, कोष्ठेगृषिकानि चाता ছिদ्रोक्ट, त्रिलाहेकता, ছिन्न, नीलवर्ग, व्यापीठ এবং পরিহিত বস্ত্র পরিধান করিয়া পূজাদি করিবে না। ছাগ-বোমজ, মেষরোমজ ও শণস্ত্রজ বস্ত্র আহারান্তে ছাডিয়া রাখিলে তাহা ধৌত করিয়া পুনরার পরিধান করিবে। বস্ত্রপরিধানান্তে যক্তোপবীতবৎ উত্তরীয় ধারণ করিতে হয়; কিন্তু যজ্ঞোপবীত থাকিলে উত্তরীয় ধারণের আবশ্যক করে না। যে বস্ত্র পরিধান করিয়া স্নান করা যায়, তাহাতে তিনবার মৃত্তিকা দিয়া উত্তরে বা

পূর্বাদিকে তাহার দশাগ্র বিস্তার পূর্বাক কর দারা উৎকৃষ্টরূপে ধৌত করত পুনরায় পশ্চিম বা দক্ষিণদিকে দশাগ্র বিস্তার করিয়া ধৌত করিবে। স্বয়ং ধৌত করিতে অক্ষম ইংলি স্বায় পুত্র, কন্তা, ভার্য্যা, জ্ঞাতি, বন্ধু বা ভৃত্য দারা ধৌত করাইবে। অনস্তর তিলক ধারণ করিতে হয়।

তিলকধারণ।

অনন্তর পূর্কাস্থ বা উত্তরাস্থ হইয়া তিলকধারণ করিবে।
নাসিকার মূলদেশ হইতে কেশ পর্যান্ত সচ্ছিদ্র উদ্ধূপুঞু ধারণ
করাই আদ্ধণের কর্ত্তব্য। ক্ষল্লিয়ের পক্ষে ত্রিপুঞু, বৈশ্রের
অদ্ধিচন্দ্রাকৃতি এবং শ্দের পক্ষে বর্তু লাক্তি তিলকধারণ ব্যবস্থা।
নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়িয়া তিলকধারণ করিবে। যথা—

কেশবানন্দ গোবিন্দ বরাহ পুরুষোভ্য। পুণাং যশস্ত্রমায়ুগ্যং তিলকং মে প্রসীদতু॥

চন্দন ছার। তিলক করিতে হইলে নিয়লিথিত মর পাঠ ধারণ করিবে। যথা—

> কাপ্তিং লক্ষ্মীং বৃতিং সৌম্যাং সোভাগ্যমভূলং ম্ম। দলতে চন্দনং নিত্যং সততং ধাররাম্যভয়॥

তিলকধারণস্থান।—ললাট, মস্তক, বক্ষঃ, কণ্ঠ, কর্ণযুগল, বাহুমূলযুগল, নাভি, পৃষ্ঠ, পার্শবর ও মস্তকমধ্য এই কর স্থানে তিলকধারণ করিবে। যাহার পিতা জীবিত, তাহার পক্ষে কেবলমাত্র ললাটে তিলকধারণই ব্যবস্থা।

তিলকদেব্য |— মৃতিকা, রোচনা, গোপীচন্দন, শ্বেত-চন্দন, রক্তচন্দন, গোময়, কুরুম, তমাল, তুলদী, নিস্ক, পদ্ম, যজীয়কাষ্ঠ ও বিশ্বকাষ্ঠ এই সকলের একটি ঘর্ষণ করিয়া তদ্বাক তিলকধারণ করিবে। * এই সকলের মধ্যে যদি একটিও প্রাপ্ত হওয়া না যায়, তবে জল দারা তিলক করিতে হয়।

শীবপূজাবিষয়ে বিশেষ তিলক।

শিবপূঞা-স্থলে ভস্ম দারা ত্রিপুণ্ড্র ধারণ করাই কর্ত্তব্য । তদ-ভাবে মৃত্তিকা দারা তিলক করিবে । যদি তাহারও অভাব হয়, তবে জল দারা করাই ব্যবস্থা।

শক্তিপূজাবিষয়ক তিলক।

শ্বেত্তদ্দন, রক্তচন্দন বা কুদ্ধুম দ্বারা ললাটে অর্দ্ধচন্দ্রারা তিনটি রেখা অন্ধিত করিয়া তন্মধ্যে সিন্দুরবিন্দু দিবে। ইপ্তমন্ত্র পাঠ করিয়া তিলকধারণ করিবে এবং তিলকদ্রবাকে ইপ্তদেবের চরণধূলিবৎ জ্ঞান করিবে। তিলকমধ্যে গুপ্তভাবে অর্থাৎ অন্থ কেহ পড়িতে না পারে, এইরূপে ইপ্তমন্ত্র লিখিতে হয়। তৎপরে বক্ষঃস্থলে শ্বেত্পন্মারুতি তিলক করিয়া তাহাতে 'হুঁ' এই মন্ত্র লিখিয়া বাহুতে বেণার ন্থায় ও পূর্ব্বক্থিত তিলকধারণস্থানে বিন্দুবৎ তিলক করিবে।

বৈষ্ণবতিলক।

বৈষ্ণবেরা ললাটে নাসিকাম্ল হইতে কেশ পর্যান্ত সচ্ছিদ্র উদ্ধ্ পুণ্ড্র ধারণ করিবে। উদ্ধ্ পুণ্ড্র ঘাদশাঙ্গুল, নবাঙ্গুল বা অন্তা-ঙ্গুলপরিমিত হইবে; উহা নথ ধারা স্পর্ণ করিবে বা। অনামা, মধ্যমা, অঙ্কুষ্ঠ বা তর্জনী ধারা তিলক করিবে। কণ্ঠাদি স্থলেও তিলক ধারণ করিতে হয়। মন্ত্র যথা—

(ললাটে) কেশবায় নমঃ (কণ্ঠে) পুরুষোত্তমায় নমঃ,

^{*} মতাক্ষরে বিভানিষিত।

(বামবাহুতে) বাস্থদেবায় নমঃ, (দক্ষিণবাহুতে) দামোদরায় নমঃ, (নাভিতে) নারায়ণায় নমঃ, (হৃদয়ে) মাধবায় নমঃ, (দক্ষিণপার্থে) গ্রেবিক্রমায় নমঃ, (বামকর্ণমূলে) বিষ্ণবে নমঃ, (দক্ষিণকর্ণমূলে) মধুস্থদনায় নমঃ, (শিরোমধ্যে) হৃষীকেশায় নমঃ, (পৃষ্ঠে) পদ্মনাভায় নমঃ। তিলকধারণ পূর্বক হস্তপ্রক্ষালনান্তে সেই জল 'বাস্থদেবায় নমঃ' এই মন্তে মস্তকে দিবে।

মতান্তরে এইরপ নির্দিষ্ট আছে যে, 'কেশবায় নমঃ' বলিয়া ললাটে, 'নারায়ণায় নমঃ' বলিয়া উদরে, 'মাধবায় নমঃ' বলিয়া বক্ষে, 'গোবিন্দায় নমঃ' বলিয়া কণ্ঠকূপে, 'বিষ্ণবে নমঃ' বলিয়া দক্ষিণকুক্ষিতে, 'মধুস্দনায় নমঃ' বলিয়া দক্ষিণ-বাহতে, 'ত্রিবিক্রনায় নমঃ' বলিয়া দক্ষিণ-কন্ধরে, 'বামনায় নমঃ' বলিয়া বামবাহতে, 'ক্রমীকেশায় নমঃ' বলিয়া বামবাহতে, 'ক্রমীকেশায় নমঃ' বলিয়া বামকন্ধরে,'পদ্মনাভায় নমঃ' বলিয়া পুঠে এবং 'দামোদরায় নমঃ' বলিয়া কটিতে তিলক করিয়া হস্তপ্রক্ষালনান্তে সেই জল 'বাস্কুদেবায় নমঃ' মন্ত্রে মস্তকে দিবে। তদনন্তর তর্পণ করিবে।

তর্পণব্যবস্থা। *

প্রাতঃমানের পর তিলকধারণাস্তে তর্পণ করিবে। কিন্তু যদি প্রাতঃসন্ধ্যার মুখ্যকাল অতীত হইবার আশঙ্কা থাকে, তাহা হইলে প্রাতঃসন্ধ্যা করিয়া তৎপরে তর্পণ করাই ব্যবস্থা। সন্ধ্যোপাসনার পর তর্পণ করিতে হইলে সামবেদীয়ের। সুর্য্যোপস্থানাস্তে "উপজায়

^{*} তর্পণ দ্বিবিধ ;—নিত্য ও স্নানাঞ্চ। স্নান না করিয়া যে তর্পণ করা যায়, তাহাকে নিত্য এবং স্নানাস্তে যে তর্পণ করা যায়, তাহাকে স্নানাঞ্চ তর্পণ বলে।

নমঃ" মন্ত্রে জল দিবার পর, যজুর্ব্বেদীয়েরা বিদ্ধায়ক্তর পর এবং ঋথেদীয়েরা জুপবিসর্জনান্তে হর্য্যার্ঘপ্রদানের পূর্ব্বে তর্পণ করিবে। প্রাতঃশানের পর তর্পণ করাই শূদুগণের পক্ষে ব্যবৃস্থা।

এক হস্তে তর্পণ করিতে নাই। তিল ও কুশ্নোটক দারা পিতৃতর্পণ এবং যব ও ত্রিপত্র দারা দেবতর্পণ, ঋষিতর্পণ ও মকুয়-তর্পণ করিবে। তর্পণকালে দক্ষিণ-হস্তের অনামা অঙ্গুলীতে কুশ, স্বর্ণ বা রোপ্যের অঙ্গুরীয় ধারণ করিবে। তর্পণকালে পরিধেয়-বস্তে তিল রাখিতে নাই; বামবাহুর রোমশৃত্য স্থলে তিল রাখিয়া দক্ষিণ-হস্তের অঙ্গুষ্ঠ ও অনামা দারা ঐ তিল গ্রহণ করিবে। রবিবার, শুক্রবার, সপ্তমী তিথি, দাদশী তিথি, অমাবস্তানিমিত্তক শাদ্ধ ব্যতীত অত্য শাদ্ধদিন, জন্মতিথি, সংক্রাপ্তি ও রাত্রিকালে তিলতর্পণ নিষিদ্ধ; কিন্তু অয়ন ও বিষ্বুসংক্রান্তি, গ্রহণসময়, যুগাছায়, গঙ্গাদি তীর্থে,রুষোৎসর্গে, মৃতাহে ও প্রেতপক্ষে (মহালয়া অমাবাস্থার পূর্বপ্রতিপদ্ হইতে মহালয়ামাবাস্থা পর্যন্ত) তিলতর্পণ করিবে; এ সমস্ত স্থানে কোন দিনেই তিলতর্পণ নিষিদ্ধ নহে।

একদিনে বহুতীর্থে স্নান কিংবা গ্রহণাদিনিমিত্তক স্নানস্থলে প্রতি স্নানেই তর্পণ করিবে; কেবল অশুচিম্পর্শনিমিত্তক স্নানে তর্পণ নিষিদ্ধ। পিতা জীবিত থাকিলে প্রেত্তর্পণ ভিন্ন অন্ত তর্পণ করিতে নাই। অন্তপনীতের পক্ষেও এই ব্যবস্থা। পুত্র-পৌত্রাদি না থাকিলে বিধবা পত্নী তিল ও কুশ দ্বারা পতি, শশুর ও তৎপিতার তর্পণ করিবে। শূদ্র ও স্ত্রীজ্ঞাতি ব্রাহ্মণের দ্বারা তর্পণমন্ত্র পাঠ করাইয়া স্বয়ং 'নমঃ নমঃ' উচ্চারণ পূর্ব্বক জল, দিবে; কিন্তু পিত্রাদির নাম উল্লেখ করিয়া যে বাক্য করিতে হয় তাহা শৃদ্র ও স্ত্রীক্ষাতি উচ্চারণ করিবে। এক হস্তে তর্পণ করিবে না; তুই হস্ত একত্র করিয়া অঞ্জলিবন্ধন পূর্বক তর্পণ করিবে। কোশা প্রভৃতি পাত্র ব্যুবহার করিলে
উহা ঐ অঞ্জলির মধ্যেই রাখিতে হয়। তর্পণকালে তর্পণজল
জলাশয়েই নিক্ষেপ করিবে; কিন্তু উদ্ধৃতজলে তর্পণ করিতে
হইলে তর্পণজল স্বর্ণপাত্র, রৌপ্যপাত্র, তামপাত্র, কুশ বা জলপূর্ণ
গর্ত্তে নিক্ষেপ করিবে; অশুচিস্থলে ফেলিতে নাই। তর্পণজল
পাত্র হইতে অর্ক-হস্ত উচ্চ করিয়া ফেলিবে। তর্পণকালে তিলযবাদির অভাব হইলে জলে স্বর্ণ, রৌপ্য ও কুশ স্পর্শ করাইয়া
তর্পণ করিতে হয়। রৃষ্টিসম্পর্কীয় জল, অস্তাজজাতির জলাশয়ের
জল এবং শূদাদি কর্তৃক আনীত জলে তর্পণ করিতে নাই; কিন্তু
গঙ্গাজল শূদাদি কর্তৃক আনীত হইলেও তদ্ধারা তর্পণ করিতে
পারে। এতদ্যতীত যে জলাশয়ের জল জীবগণের উদ্দেশে উৎসর্গীকৃত হয় নাই, যে জল অপেয় ও যাহা নিপানজ, * তদ্ধারা
তর্পণ নিষিদ্ধ।

আর্দ্রবিক্তে থাকিয়া তর্পণ করিতে হইলে জলে দাঁড়াইয়াই তর্পণ করিবে; শুদ্ধবন্ত ধারণ করিলে তীরে বিসিয়া তর্পণ করিতে হয়। তীর্ষপুলে শুদ্ধবন্ত্র পরিধান পূর্বাক তর্পণ করিলে একপদ জলে ও একপদ স্থলে রাখিয়া তর্পণ করিবে।

সামবেদীয়-তর্পণবিধি।

প্রথমে হুইবার আচমন পূর্ব্বক প্রাচীনাবীতী । ও দক্ষিণাস্ত

^{*} নিপান-কৃপসন্নিধানে গবাদির পানার্থ রচিত জলাশয় ;

[†] যজ্ঞসূত্র যে ভাবে গলদেশে থাকে, তাহার বিপরীতভাবে অর্থাৎ দক্ষিণস্কক্ষের উপরি হইতে বাম-পার্ম দিয়া লম্বিত করিয়া দিলেই তাহার নাম প্রাচাদাবীত।

হইয়া করযোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ করত তীর্থ আবাহন করিবে। যথা—

> ওঁ কুর্ক্তীক্ষেত্রং গয়াগঙ্গা-প্রভাসপুষ্করাণি চ। তীর্থান্তোতানি পুণ্যানি তর্পণকালে ভবন্তিহ॥

(দেবতর্পণ)

অনন্তর নাভিমাত্র জলে দণ্ডায়মান হ'ইয়। (অক্ষম হ'ইলে এক পা জলে ও এক পা স্থলে রাখিয়া) পূর্ব্বমূখে উপবীতী অবস্থায় * দেবতর্পণ করিবে। যথা—

'ওঁ ব্রহ্মা তৃপ্যতাং, ওঁ বিষ্ণুস্থপ্যতাং, ওঁ রুদ্রস্থপ্যতাং, ওঁ প্রজা-পতিস্থপ্যতাং,' এইরূপে প্রত্যেকবার বলিয়া দেবতীর্থ † দারা এক এক অঞ্জলি জল দিবে। তৎপরে নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়িয়া দেবতীর্থ-যোগে এক অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

> ওঁ দেবা যক্ষান্তথা নাগা গন্ধর্কাপ্সরসোহসুরাঃ। কুরাঃ সর্পাঃ স্থপর্ণাশ্চ তরবো জিন্ধগাঃ খগাঃ। বিচ্ঠাধরা জলাধারান্তথৈবাকাশগামিনঃ। নিরাহারাশ্চ যে জীবাঃ পাপে ধর্ম্মে রতাশ্চ যে। তেষামাপ্যায়নায়ৈতদ্বীয়তে সলিলং ময়া॥

(মহুষ্যতর্পণ)

অনম্বর পশ্চিমাস্তে নিবীতী অবস্থায় ‡ নিমুলিখিত মন্ত্র তুইবার

^{*} স্বভাবত: যে ভাবে গলদেশে ষত্তস্ত্র থাকে, ভাহার নাম উপবীত।

^{† (}परजीर्थ--- अकृतीत अधार्जारात नाम (परजीर्थ वा रेपरजीर्थ।

[🙏] মালার ক্যায় যজোপবীতধারণের নাম নিবীত।

পাঠ করত কায়তীর্থযোগে * ক্রোড়াভিমুখে অঞ্জলিম্বর জল প্রদান করিবে। যথা—

> ওঁ সনকশ্চ সনন্দশ্চ তৃতীয়শ্চ সনাতনঃ। কপিলশ্চাস্থ্রিশ্চৈব বোঢ়ুঃ পঞ্চশিখস্তথা। সর্ব্বে তে তৃপ্রিমায়াম্ভ মদ্দতেনামুনা সদা॥

(ঋষিতপ্ণ)

পরে পূর্ব্বাস্তে উপবীতী হইয়া নিম্নলিখিত মন্ত্রগুলি পাঠ পূর্ব্বক মরীচি হইতে ব্রন্ধবি পর্য্যন্ত প্রত্যেককে দেবতীর্থযোগে এক এক অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

ওঁ মরীচিত্থপাতাং, ওঁ অত্রিস্থপাতাং, ওঁ অঙ্গিরাস্থপাতাং, ওঁ পুলস্তাস্থপাতাং, ওঁ পুলহস্থপাতাং, ওঁ কুহুস্থপাতাং, ওঁ প্রচেতা-স্থপাতাং, ওঁ বশিষ্ঠস্থপাতাং, ওঁ ভ্রম্পাতাং, ওঁ নারদস্থপাতাং, ওঁ দেবাস্থপাস্থাং, ওঁ বৃদ্ধবিষ্ণপাস্থায়।

(দিব্যপিত-ভৰ্পণ)

তদনন্তর দক্ষিণাম্ম ও প্রাচীনাবীতী হইয়া নিম্নলিখিত "ওঁ অগ্নিষাত্তাঃ পিতরঃ" ইত্যাদি সাতটি মন্ত্র পাঠ পূর্ব্বক পিতৃতীর্থ দারা যথাক্রমে প্রত্যেককে এক এক অঞ্বলি করিয়া জল দিবে। যথা—

ওঁ অগ্নিষাত্রাঃ পিতরস্থপ্যস্তামেতৎ সতিলোদকং তেভ্যঃ স্বধা।১।†

কায়ভীর্থ—কনিঠার মূলদেশকে কায়ভীর্য কছে। এরপভাবে জল দিবে যে, কনিঠার মূল স্পর্শ করিয়া পড়ে।

[†] যে দিন তিলতপূণ নিষিদ্ধ অথবা যে ছলে তিলের অভাব, তথায় 'ত্পাস্তানেতগ্দকং' বঁলবে। কিন্তু গদাদি তার্পে বিনা তিলে তর্পণ অসকত, এই হেতু তিলের অভাবে তৎপ্রতিনিধিস্করণ আর কিঞিৎ জল দিয়া 'সাতল-

ওঁ সৌম্যাঃ পিতরস্থপাস্তামেতৎ সতিলোদকং তেভ্যঃ স্বধা। ২। ওঁ হবিশ্বস্তঃ প্রিতরস্থপাস্তামেতৎ সতিলোদকং তেভ্যঃ স্বধা। ৩। ওঁ উশ্বপাঃ পিতরস্থপাস্তামেতৎ সতিলোদকং তেভ্যঃ স্বধা। ৪। ওঁ সুকালিনঃ পিতরস্থপাস্তামেতৎ সতিলোদকং তেভ্যঃ স্বধা। ৫। ওঁ বহিষদঃ পিতরস্থপাস্তামেতৎ সতিলোদকং তেভ্যঃ স্বধা। ৬। ওঁ আজ্যপাঃ পিতরস্থপাস্তামেতৎ সতিলোদকং তেভ্যঃ স্বধা। ৭।

তৎপরে নিম্নলিথিত মন্ত্র যথাক্রমে তিনবার পড়িয়া তিন অঞ্জলি জল প্রদান পূর্বাক যমতর্পণ করিবে। যথা—

> যমায় ধর্মরাজায় মৃত্যবে চাস্তকায় চ। বৈবস্বতায় কালায় সর্বভূতক্ষয়ায় চ। উভূস্বরায় দগ্গায় নীলায় পরমেষ্ঠিনে। রুকোদরায় চিত্রায় চিত্রগুপ্তায় বৈ নমঃ॥
> (পিত্তর্পণ)

অনস্তর তর্পণ-সমাপ্তি যাবৎ দক্ষিণাস্থ ও প্রাচীনাবীতী হইয়া
"ওঁ আগচছন্তু মে পিতর ইমং গৃহুস্কুপোহঞ্জলিং" করযোড়ে এই
বলিয়া পিতৃগণের আবাহন করত পিতৃতীর্থযোগে নিম্নলিখিতরূপে
গোত্র, সম্বন্ধ ও নাম উল্লেখ পূর্বক মন্ত্রপাঠ সহকারে পিতা, পিতামহ, প্রপিতামহ, মাতামহ, প্রমাতামহ, বৃদ্ধপ্রমাতামহ, মাতা,
পিতামহী ও প্রপিতামহী এই নয় জনের প্রত্যেককে যথাক্রমে তিন
তিন অঞ্জলি জল দিবে; মন্ত্রও যথাক্রমে তিনবার পাঠ করিতে
গঙ্গোদকং' বলিবে। গণা ভিন্ন অন্ত কোন তীর্থের জল হইলে শেই তীর্থের
নামের সহিত্ত "উদকং" বলিতে হয়। যেনন ব্রহ্মপুত্র হইলে ''সভিলব্রহ্মপুরোদকং' বলিবে।

হয়। তৎপরে এক একবার মন্ত্র পাঠ করিয়া মাতামহী, প্রমাতা-মহী ও বৃদ্ধপ্রমাতামহী এই তিন জনকে এক এক অঞ্চলি জল দিবে। * যথা--

ওঁ বিষ্ণুরোম্ অমুকণোত্রঃ পিতা অমুকদেবশর্মা তৃপ্যতামেতৎ সতিলোদকং তক্ষৈ স্বধা।

ওঁ বিষ্ণুরোম্ (ইত্যাদি) পিতামহং (অমুকদেবশর্মা ইত্যাদি)

| ,, | ,, | প্রাপতামহঃ | 17 | 12 |
|----|-------------|------------------------|-------------|----------|
| 37 | " | মাতা মহঃ | 1) | 37 |
| ,, | ,, | প্রমাতামহঃ | 17 | 39 |
| 99 | , | <i>বৃদ্ধ</i> প্রমাতামহ | ² n | " |
| ,, | (অমুকগোত্রা | ইত্যাদি) মাতা | (অমুমকীদেবী | ইত্যাদি) |

| ., , o | | | | |
|--------|-----------|-----------------|-----------|----|
| ** | 37 | পিতামহী | 97 | ** |
| >> | ** | প্রপিতামহী | 59 | " |
| ** | ** | মাতামহী | 17 | 33 |
| 99 | " | প্রমাতামহী | " | 19 |
| " | 77 | র্দ্ধপ্রমাতামহী | ** | " |

ভৎপরে ঐ প্রকার প্রণালীতে বিমাতা, পিতৃব্য, মাতুল, ল্রাতা, ভগিনী, পিতুম্বসা, মাতুম্বসা ও স্পিও প্রভৃতিকে এক এক অঞ্চলি জল দারা তর্পণ করিবে।

^{*} পিতা, পিতামত, প্রপিতামত, মাতামত, প্রমাতামত, বৃদ্ধপ্রমাতামত, মাতা, পিতামহী, প্রপিতামহী, মাতামহী, প্রমাতামহী, বৃদ্ধপ্রমাতামহী, এই বাদশ পুরুষের মধ্যে কেহ জীবিত থাকিলে তাহাকে পরিত্যাপ করিয়া উর্ত্তন পুরুষকে ধরিয়া খাদশদংখ্যা পুরুষ করিবে।

(ভীম্মতর্পণ)

ওঁ বৈয়াপ্রপন্থগোত্রায় সাংক্ষতিপ্রবরায় চ।
অপুলীয় দদাম্যেতৎ সলিলং ভীম্মবর্ম্মণে ॥
অনস্তর এই মন্ত্রে ভীন্মের উদ্দেশে এক অঞ্জলি জল দিয়া *
নিয়লিখিত মন্ত্রে ভীন্মদেবকে প্রণাম করিবে। যথা—
ভীন্মঃ শাস্তনবো বীরঃ সত্যবাদী জিতেন্দ্রিয়ঃ।
আভিরন্তিরবাপ্নোতু পুত্রপৌত্রোচিতাং ক্রিয়াম্॥
(ঋনিদ্যাদি-তর্পণ)

অনস্তর নিম্নলিখিত তৃইটি মন্ত্র পাঠ করিয়া যথাক্রমে এক এক অঞ্চলি জল দিবে। যথা—

ওঁ অগ্নিদধাশ্চ যে জীবা বেহপাদধাঃ কুলে মম।
ভূমো দত্তেন তৃপাস্ত তৃপ্তা যান্ত পরাং গতিম্॥ ১
ওঁ বেহবান্ধনা নান্ধনা না জেহল্যজন্মনি নান্ধনাঃ।
তে তৃপ্তিমথিলাং যান্ত যে চাক্ষত্যোক্যাজ্জিনঃ॥ ২
(রামত্বপি)

পরে নিয়লিথিত মন্ত্রটি ষণাক্রমে তিনবার পড়িয়া তিন অঞ্জলিজল দিবে। যথা—

> ওঁ আব্রশ্বভূবনাল্লোকা দেবধিপিতৃমানবাঃ। তৃপ্যস্ত পিতরঃ সর্ব্বে মাতৃমাতামহাদয়ঃ। অতীতকুলকোটীনাং সপ্তদ্বীপনিবাসিনাম্। মদা দত্তেন তোয়েন তৃপ্যস্ত ভূবনত্রয়ম্॥

ঁ ভীষাষ্ট্ৰী অৰ্থাৎ মাখী শুক্লাষ্ট্ৰনীতেই ভীমতৰ্পণ করিবে। প্রত্যহ করিবার আবশ্যক নাই। প্রস্তু কেছ কেছ প্রত্যহণ্ড করিয়া ধাকেন। বালাণ ব্যতীত সম্যু জ্লাতি পিতৃতর্পণের পূর্বের ভীমতর্পণ করিবে।

(লক্ষণতপ্ৰ)

তদনস্তর নিম্নলিখিত মন্ত্র যথাক্রমে তিনবারু পড়িয়া তিন অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

ওঁ আব্রন্ধস্তম্বপর্য্যস্তং জগৎ তৃপ্যতু।
(বস্ত্রনিস্পীড়নোদকে তর্পণ)

তৎপরে নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ পূর্ব্বক বস্ত্রনিপ্পীড়নোদক দারা ভূমিতে একবার জল দিবে। †

> ওঁ যে চাম্মাকং কুলে জাতা অপুল্লাগোত্রিণো মৃতাঃ। তে তৃপ্যস্ত ময়া দত্তং বস্ত্রনিষ্পীড়নোদকম্॥

(পিতৃস্তুতি)

ওঁ পিতা স্বৰ্গঃ পিতা ধর্মঃ পিতা হি প্রমং তপঃ। পিত্রি প্রীতিমাপন্নে প্রীয়ন্তে সর্বাদেবতাঃ॥ অনস্তর এইরূপে পিতৃস্তুতি করত পিতৃনমস্কার করিবে। যথা—

(পিতৃন্মস্কার)

পিতৃন্নমস্তে দিবি বে চ মুর্ত্তাঃ, স্বধাভূজঃ কাম্যকলাভিপদ্ধে। প্রদানশক্তাঃ সকলেন্সিতানাং, বিমুক্তিদা যেইনভিসংহিতের ॥
ইতি সামবেদীয় তর্পণ সমাপ্ত।

^{*} যে ব্যক্তি সম্প্র তর্পণ করিতে অক্ষম, সে কেবল লক্ষণতর্পণ করি-লেই সম্প্র তর্পণফল প্রাপ্ত হইতে পারে।

[†] জাল হইতে স্থলে উঠিয়া এই তপ্প করিবে । কারণ, জালে বস্ত্রনিস্পী-ডুন নিষিদ্ধ। এই তপ্ণের সংগ্রেও বস্ত্র নিংড়াইবে না।

যজুর্বেদীয়গণের ও শূদ্রের তর্পণবিধি। *

প্রথমতঃ দক্ষিণাস্তে আচমন পূর্ব্বক প্রাচীনাবীতী হইয়া কর-পুটে "ওঁ কুরুক্ষেত্রং গয়াগঙ্গা" ইত্যাদি (সামবেদীয়-তর্পণোক্ত) মস্ত্রে তীর্থ আবাহন করিবে। তৎপরে "ওঁ দেবা আগচ্ছস্তু" এই বাক্যে দেবগণের আবাহন পূর্ব্বক পূর্ব্বাস্তে উপবীতী হইয়া নিম্ন-লিখিত মন্ত্র পড়িয়া ব্রন্ধা হইতে প্রজাপতি পর্যাস্ত্র চারি জনের প্রত্যেককে দেবতীর্থ দারা এক এক অঞ্চলি জল দিবে। যথা—

ওঁ ব্রন্ধ। তৃপাতু, ওঁ বিষ্ণৃস্পাতু, ওঁ রুদুস্পাতু, ওঁ প্রজাপতি-স্থপাতু।

অনস্তর "ওঁ দেবা যক্ষাস্তথ। নাগা" ইত্যাদি (২৩পু, সামবেদীয় তর্পণলিখিত) মন্ত্রে দেবতীর্থ দারা এক অঞ্জলি জল দিতে হয়।

এই প্রকারে দেবতর্পণ করিয়া উত্তরাস্তে নিবীতী অবস্থায় "ওঁ সনকশ্চ" ইত্যাদি (২৪ পৃষ্ঠার লিখিত) মন্ত্র তুইবার পড়িয়া কায়তীর্থ বারা তুই অঞ্জলি জলপ্রদান পূর্কাক মন্ত্রয়তর্পণ সমাপ্ত করিবে।

পরে প্রান্তে উপবীতী অবস্থায় ঋষিতর্পণ করিবে অর্থাৎ "ওঁ মরীচিস্প্যত্, ওঁ অত্রিস্পাতৃ, ওঁ অঙ্গিরাস্পাতৃ, ওঁ বশিষ্ঠস্পাতৃ, ওঁ পুলহস্থপাতৃ, ওঁ কুতৃস্পাতৃ, ওঁ প্রচেতাস্থপাতৃ, ওঁ পুলস্তাস্পাতৃ, ওঁ ভ্রন্থস্পাতৃ, ওঁ নারদস্পাতৃ, ওঁ দেবাস্থপান্ত, ওঁ ত্রন্ধ্যিস্পান্ত্য এই বলিরা দেবতার্থ দার। প্রত্যেক্কে এক একবার জল দিবে।

তদনন্তর দিব্যাপত্তর্পণ করিবে।—দক্ষিণাস্থে প্রাচীনাবীতী অবস্থায় † ওঁ অগ্নিষাত্তাঃ পিতরস্থপান্ত, ওঁ সৌম্যাঃ পিতরস্থপান্ত, ওঁ হবিশ্বস্তঃ পিতরস্থপান্ত, ওঁ উন্মপাঃ পিতরস্থপান্ত, ওঁ স্থকালিনঃ

^{*} শূক্র প্রণৰ ত্যাগ করিয়া অবশিষ্টাংশ উচ্চারণ করিবে।

[†] ভর্পণসমাপ্তি পর্যান্ত এইরূপ ভাবে থাকিবে।

পিতরস্থপ্যস্তু, ওঁ বহিষদঃ পিতরস্থপ্যন্তু, ওঁ আজ্যপাঃ পিতরস্থপ্যন্তু, এই মন্ত্রগুলি তিন তিনবার পড়িয়া পিতৃতীর্থ দারা প্রত্যেককে তিন তিন অঞ্জলি জল দিবে।

তৎপরে "ওঁ যমায় ধর্মরাঞ্চায়" ইত্যাদি (২৫ পৃষ্ঠার লিখিত) মন্ত্রে যথাক্রমে তিন অঞ্জলি জল দিয়া যমতর্পণ করিবে। *

অনস্তর পিতৃতর্পণ।—করযোড়ে "ওঁ পিতৃন্ আবাহয়িয়ে" এই কথা উচ্চারণ পূর্বক "ওঁ আবাহয়" বলিবে। তৎপরে নিম্ন-লিখিত হুইটি মন্ত্র পাঠ করিতে হয়। যথা—

ওঁ আরাস্ত নঃ পিতরঃ সৌম্যাসোহগ্নিষাতাঃ পথিভিদেব-যানৈঃ। আন্মিন্ যজে স্বনরা নদস্তোহধিক্রবস্ত তে অবস্তুস্মান্॥ ২॥ পরে নিম্নলিখিত মল্লে এক অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

ওঁ আগচ্ছন্ত মে পিতর ইমং গৃহ্বপোহন্তলিম্। অনস্তর নিম্নলিখিত মন্ত্র যথাক্রমে তিনবার পড়িয়া পিতৃ-উদ্দেশে তিন অন্তলি জল প্রদান করিবে। যথা—

ওঁ উজিং বহঞীরমূতং মৃতং পরঃ কীলালং পরিস্রুতং স্বধাস্থ তর্পয়ত মে পিতৃন্॥

ওঁ বিষ্ণুরোষ্ অমুকগোতা পিতঃ অমুকদেবশর্মান্ (শুদ্র হইলে "অমুকদাস") এতৎসতিলোদকং (তিলতপ্ণনিষিদ্ধদিনে—"এত-তুদকং") তুত্যং স্বধা। (শুদ্র হইলে—স্বধাস্তানে "নমঃ" বলিবে।) †

^{*} শৃদ্ধগণ এই স্থানে তীশ্মতর্পণ করিবে।

[†] মতান্তরে শুদ্রের পক্ষে ''অমুকদাস তৃপ্যস্ব এতত্তে সভিলোদকং নমঃ'' উচ্চার্যা।

এই প্রকারে পিতামহ, প্রপিতামহ, মাতামহ, প্রমাতামহ ও বৃদ্ধপ্রমাতামস্ককে পিতামহাদি নাম উল্লেখ পূর্বক তর্পণ করিতে হয়।

অনস্তর নিম্নলিখিত মন্ত্র যথাক্রমে পড়িয়া মাতৃ-উদ্দেশে তিন অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

ওঁ উর্জ্নং বহস্তীরমৃতং ঘতং পয়ঃ কীলালং পরিশ্রুতং স্বধাস্থ তর্পয়ত মে পিতৃন্॥

ওঁ অমুকগোতে মাতঃ অমুকিদেবি (শুদ্র হইলে—অমুকিদাসি) এতৎ সতিলোদকং (নিষিদ্ধদিনে—"এতত্বদক্ম") তুভ্যং স্বধা। তদনস্তর সামমেদীয় তর্পণের লিখিত পিতামহী, প্রপিতামহী প্রভৃতিকে এক এক অঞ্জলি জল দারা তর্পণ করিবে।

তৎপরে সামবেদীয় তর্পণের (২৭ পৃষ্ঠার) লিখিত প্রণালীতে ভীশ্বতর্পণ কর্ত্তব্য ।

পরে নিম্নলিখিত মন্ত্র ছুইটি যথাক্রমে তিন তিনবার পড়িয়া তিন তিন অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

ওঁ নরকের সমস্তের যাতনাস্থ চ যে স্থিতাঃ।
তেথামাপ্যায়নায়ৈতন্দীয়তে সলিলং ময়া॥ ১॥
ওঁ যেহবান্ধবা বান্ধবা বা যেহল্যজন্মনি বান্ধবাঃ।
তে তপ্তিমথিলাং যাস্ত যে চাশ্মকোয়কাজ্ঞিণঃ॥ ২॥

অতঃপর সামবেদীর তর্পণের (২৭, ২৮ পৃষ্ঠার) লিখিত নিরমে রামতর্পণ, লক্ষণতর্পণ ও বস্ত্রনিস্পীড়িতজলে তর্পণ করিয়া পিতৃস্তুতি ও পিতৃপ্রণাম করিবে।

ঋথেদীয়-তর্পণবিধি।

যজুর্বেদদীয় তর্পণের প্রণালী অন্থসারে প্রথম হইতে ঋষিতর্পণ পর্যান্ত করিয়া দক্ষিণাস্থে প্রাচীনাবীতী অবস্থায় পিতৃতীর্থ দারা "ওঁ অগ্নিম্বান্তপ্যন্ত, ওঁ শুন্মপান্তপ্যন্ত, ওঁ ইবিশ্বন্তস্থপ্যন্ত, ওঁ উন্মপাস্থপ্যন্ত, ওঁ স্কানিলস্থপ্যন্ত, ওঁ বর্হিষদস্থপ্যন্ত, ওঁ আজ্যপাস্থপ্যন্ত" এই সাতটি মন্ত্রে তিন তিনবার করিয়া জল দিবে। অনন্তর সামবেদীয় (২৫ পৃষ্ঠার লিখিত) প্রণালীতে যমতর্পণ করিতে হয়। তৎপরে করযোড়ে "ওঁ আগচ্ছন্ত মে পিতর ইমং গৃহস্থপোহঞ্জলিং" এই বলিয়া পিতৃগণের আবাহন পূর্ব্বক দক্ষিণাস্থে প্রাচীনাবীতী অবস্থায় পিতৃতীর্থ দারা নিম্নলিখিত মন্ত্রে পিতৃ-উদ্দেশে তিন অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

ওঁ অমুকণোত্রং পিতরং অমুকদেবশর্মাণং তর্পাম এতং-সতিলোদকং (গঙ্গাজল হইলে "সতিলগঙ্গোদকং") (তিলতর্পণের নিষিদ্ধদিনে "এতত্বদকং") তক্ষৈ স্বধা নমঃ॥

অনস্তর নিম্নলিখিত মন্ত্রে মাতৃ-উদ্দেশেও তিন অঞ্চলি জল দিতে হয়। যথা----

অমুকগোত্রাং মাতরং অমুকীদেবীং তর্পয়মি এতৎ সতিলো-দকং তক্তৈ স্বধা নমঃ॥

পরে সামবেদীয়পিতৃতর্পণের লিখিত অক্সান্ত ব্যক্তির উদ্দেশেও তর্পণ করিতে হয়।

তদনস্তর "ওঁ আব্রন্ধস্তম্বপর্য্যন্তং জগৎ তৃপ্যতু" এই বলিয়া তিন অঞ্জলি জল প্রদান পূর্বাক "ওঁ আব্রন্ধভূবনা" ইত্যাদি (২৭ পৃষ্ঠার লিখিত) মন্ত্রে এক অঞ্জলি এবং "ওঁ যেহবান্ধবা" ইত্যাদি (২৭ পৃষ্ঠা) মন্ত্রে এক অঞ্জলি জল দিবে। তৎপরে সামবেদীয় তর্পণের নিয়মে (২৮ পূ) বস্ত্রনিম্পীড়িতজ্ঞলে তর্পণ হ'ইতে সমস্ত কার্য্য শেষ করিবে।

সন্ধ্যার সাধারণবিধি।

রাত্রির শেষে একদণ্ড ও দিনের প্রথম একদণ্ড অর্থাৎ স্থান্যান্দরের একদণ্ড পূর্ব ও একদণ্ড পর যে সময়, তয়য়েই প্রাতঃসক্ষ্যা করিবে; দিবার শেষ একদণ্ড ও রাত্রির প্রথম একদণ্ড অর্থাৎ স্থা্যান্ডের একদণ্ড পূর্ব ও একদণ্ড পর যে সময়, তাহাই সায়ংসক্ষ্যার কাল এবং দিবসের অন্তমমূহুর্ত্ত (দিনমানকে ১৫ ভাগ করিলে এক এক ভাগকে .এক এক মূহুর্ত্ত বলে;) অর্থাৎ যে সময় স্থা্যদেব ঠিক আকাশের মধ্যভাগে অবস্থিত থাকেন, সেই সময়ই মধ্যাহ্যসক্ষ্যা করিবে। ফল কথা, দিনমানের ন্যুনাধিক্য অনুসারে এই সময় নিরূপণ করিয়া লইতে হয়।

সন্ধ্যা করিবার সময় কাহারও সহিত কথা কহিতে নাই।

ঐ সময়ে কথা কহিলে, হাঁচি বা নিষ্ঠাবন ফেলিলে, জুম্ভণ তুলিলে,
অণোবায়্ত্যাগ করিলে অথবা নিদ্যাকর্ষণ হইলে বিষ্ণুস্মরণ পূর্ব্ধক
দক্ষিণকর্ণ স্পূর্ণ করিবে।

জননাশৌচ বা মরণাশৌচে সন্ধ্যা করিবে না এবং সংক্রান্তি, অমাবস্তা, পূর্ণিমা, বাদশী ও শ্রাদ্ধবাসরে সায়ংসন্ধ্যা নিষিদ্ধ ; কিন্তু নিষিদ্ধ দিনে গায়গ্রীঙ্গপ করিতে পারে এবং তান্ত্রিকী সন্ধ্যা কোন দিনেই নিষিদ্ধ নহে।

কারণ বশতঃ সন্ধ্যার কাল অতীত হইলে দশবার গায়গ্রী-জ্প-রূপ প্রায়শ্চিত্ত করিয়া সন্ধ্যা করিবে। বৈদিকী সন্ধ্যায় বৈদিকী এবং তান্থিকী সন্ধ্যায় তান্ত্রিকী গায়ন্ত্রী জ্প করিতে হয়। ভ্রমবশে পূর্ব্বসন্ধ্যার বাধ হইলে পরসন্ধ্যা করিবার অত্রে পূর্ব্ব-সন্ধ্যা করিতে হয়। যদি তিনটি সন্ধ্যারই বাধ হয়, তাহা হইলে একদিন উপবাদ করিয়া থাকিবে। তাহাতে অক্ষম হইলে একটি ব্রাহ্মণ-ভোজন করাইবে অথবা ভোজনদ্রব্যের উপযুক্ত মূল্য দিবে। পূর্ব্বমূখ হইয়া প্রাতঃসন্ধ্যা, পূর্বাস্থ বা উত্তরাস্থ হইয়া মধ্যাহ্ব-সন্ধ্যা এবং পশ্চিমোত্তরকোণাভিমুখ হইয়া সায়ংসন্ধ্যা করিবে।

मागरवर्तीय-मन्त्राविधि।

প্রথমতঃ যথাবিধি তুইবার আচমন পূর্বাক (১২ পূ) বিষ্ণু-স্মরণ করিয়া আপোমাজ্জন করিবে অর্থাৎ নিম্নলিখিত ছয়টি মন্ত্র-পাঠ পূর্বাক কুশের বারা বা হস্ত বারা মস্তকে বিন্দু বিন্দু জল-প্রোক্ষণ করিবে। যথা—

(আপোমার্জন)

ওঁ শন্ধ আপো ধন্ধ আঃ শমনঃ দন্ত নৃপ্যাঃ। শনঃ
সমুদ্রিয়া আপঃ শমনঃ দন্ত কৃপ্যাঃ॥১॥ ওঁ জ্রুপদাদিব
মুমুচানঃ স্বিন্ধঃ স্নাতো মলাদিব। পূতং পবিত্রেণেবাজ্যমাপঃ শুদ্ধন্ত মৈনদঃ॥২॥ ওঁ আপো হি ষ্ঠ।

মক্রদেশজাত জল আমাদিণের মঙ্গল করুক, অনুপদেশোৎপন্ন (জলময়দেশজাত) জল আমাদিণের কল্যাণদারী হউক, সমুদ্রজল আমাদিণের মঙ্গলবিধান করুক্ এবং কৃপজল আমাদিণের কল্যাণ-দারী হউক্। >। স্বেদাক্ত ব্যক্তি রক্ষমূলে অবস্থিতি করিয়া যে প্রকার ঘর্ম হইতে মুক্তিলাভ করে, স্নাত ব্যক্তি বেমন দৈহিক মল হইতে মুক্ত হয়, মন্ত্রপাঠ দারা যে প্রকার হবিঃ পবিত্র হয়,

^{*} ইহা কেবল উপনীত ত্রান্ধণেরই কর্ত্ব্য।

ময়োভূবন্তা ন উর্জ্জে দ্বাতন। মহে রণায় চক্ষদে ॥ ॥ । । । বং শিবতমো রসন্তক্ষ ভাজয়তেই নং। উশতীরিব মাতরং॥ ৪॥ ওঁ তক্ষা অরঙ্গমাম বে। যদ্য ক্ষয়ায় জিম্বথ। আপো জনয়থা চ নং॥ ৫॥ ওঁ ঋতঞ্চ সত্যঞ্চাভীদ্ধাত্তপদোহধ্যজায়ত। ততো রাত্র্যজায়ত, ততঃ সমুদ্রোহর্ণবিঃ,সমুদ্রাদর্ণবাদ্ধিদংবংরোহ্জায়ত। অহোরাত্রাণি বিদ্ধধিশ্বস্থ মিষতো বশী। সূর্য্যাচন্দ্র-

জল আমাকে দেইরূপ পাপ হইতে পবিত্র করুক্। ২। হে জলসকল! তোমরা পরম আপ্যারক (মুখলারক); অতএব ইহকালে
আমাদিগের অরের সংস্থান করিয়া দেও এবং পরলোকে মনোরমদর্শন পরব্রধারে সহিত আমাদিগের মিলন করিয়া দিও। ৩।
ক্ষেহময়ী মাতা যেমন আপনার স্তনহৃদ্ধ পান করাইয়া পুজের
মঙ্গলবিধান করেন, হে জলসমূহ! তোমরাও সেইরূপ ইহলোকে
আমাদিগকে ঠোমাদের মঙ্গলমর রসের দারা পরিতৃপ্ত কর। ৪।
হে জলসমূহ! তোমরা যে রস দারা আব্রহ্মস্তম্ব পর্যান্ত জগতের
তৃপ্তিসাধন করিতেছ, সেই রস দারা যেন আমাদিগের তৃপ্তি হয়।
তোমরা আমাদিগকে সেই রসভোগের অধিকারী কর। ৫। মহাপ্রলার্ম করেনাত্র ব্রহ্ম বিল্লমান ছিলেন। তংকালে চতুর্দ্দিক্
তিমিরারত ছিল, তংপরে স্কৃত্তির আরম্ভকালে অদৃষ্টবশে স্কৃত্তির
ম্লম্বরূপ জলপূর্ণ সমুদ্র সঞ্জাত হইল। সেই সমুদ্রজল হইতে
জগৎস্কৃত্তিকারী বিধি সমুৎপন্ন হইলেন। সেই বিধিই দিবাপ্রকাশক
প্র্যা ও রজনীপ্রকাশক শ্রণরের স্কৃত্তি করিয়া বৎসরের কল্পনা

মদো ধাতা যথাপুর্বেমকল্পয়ং। দিবঞ্চ পৃথিবীঞ্চান্ত-রীক্ষমথো স্বঃ॥৬॥

(প্রাণায়াম)

অনস্তর করযোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্র কয়টি পাঠ পূর্ব্বক ঋষ্যাদি শ্বরণ করিয়া মস্তকের চতুর্দ্ধিকে জলবেষ্টন করিবে। * যথা—

ওঁকারস্থ ব্রহ্ম-ঋষিগায়ত্রীচ্ছন্দোহগ্নির্দ্দেবত। সর্বব-কর্মারন্তে বিনিয়োগঃ ॥৭॥ ওঁ সপ্তব্যাহ্য হীনাং প্রজা-পতিঋ ষিগায়ক্র্যক্ষিগন্মুফী ব্-রহহা-পঙ্-ক্তি-ত্রিফী ব্-জগত্যশ্চন্দাংদি ওঁ অগ্নি-বায়ু-সূর্য্য-বরুণ-রহম্পতান্ত্র-বিশ্বেদেবা দেবতাঃ প্রাণায়ামে বিনিয়োগঃ॥৮॥ ওঁ গায়ক্র্যা বিশ্বামিত্র-ঋষিগায়ত্রীচ্ছন্দঃ স্বিত্ত দেবতা

করেন অর্থাৎ তৎকাল হইতেই দিবা, রাত্রি, ঋতু, আয়ন, বৎসর প্রভৃতি যথানিয়মে প্রবর্ত্তিত হইল। তৎপরে ব্রহ্মা ক্রমে ক্রমে মহদাদি উদ্ধৃতিন লোকচতুষ্ট্র এবং ভূঃ প্রভৃতি লোকত্রয় সমুৎ-পাদন করিলেন। ৬।†

^{*} প্রত্যেক মন্ত্র উচ্চারণের অত্যে তন্ত্রমন্ত্রের ঋষি, ছন্দঃ, দেবতা ও বিনিরোপ জ্ঞাত হওয়া আবশ্যক। বেদ অবিনশ্বর, তবে মহাপ্রলয়সময়ে উহা
বিলীনভাবে থাকে। পরে স্ষ্টেসময়ে যিনি যে মন্ত্রটি প্রথম স্মরণ করেন
কিংবা যিনি যে মন্ত্র হারা সিদ্ধিলাভ করেন, তাঁহাকেই সেই মন্ত্রের ঋষি বলা
যায়; যে মন্ত্র যে ছন্দে গ্রথিত, তাহাই তাহার ছন্দঃ; মন্ত্রের প্রতিপাদ্য বস্তুই
সেই মন্ত্রের দেবতা বলিয়া পরিকীর্ত্তিত এবং মন্ত্রের উচ্চারণ বা কোন্ কর্মে
ভাহার প্রয়োগ, তাহারই নাম বিনিয়োগ।

[†] সন্ধার কাল উত্তীর্ণ হইলে সাম্বেদীয়েরা এই স্থলে দশবার পায়ন্ত্রীজপ্র রূপ প্রায়শিচ্ভ করিবেন।

প্রাণায়ামে বিনিয়োগঃ ॥ ৯ ॥ ওঁ শিরদঃ প্রজাপতিখ ষির্গায়জ্রীচ্ছুন্দো ব্রহ্মবাযুগ্নিসূর্য্যাশ্চতস্রো দেবতাঃ
প্রাণায়ামে বিনিয়োগঃ ॥ ১ • ॥

তদনস্তর দক্ষিণ-করের অঙ্গৃষ্ঠ দ্বারা দক্ষিণনাসা টিপিয়া বাম-নাসিকা দ্বারা বায়ু-পূরণ পূর্বক নিম্নলিখিতরূপে নাভিদেশে ব্রহ্মাকে ধ্যান করিবে। যথা—

(নভে) রক্তবর্ণং চতুমুখং দ্বিভুজং অক্ষসূত্রকমগুলুকরং হংসাসনসমার জং ব্রহ্মাণং ধ্যায়ন্)॥১১॥
ওঁ ভূঃ ওঁ ভূবঃ ওঁ স্বঃ ওঁ মহঃ ওঁ জনঃ ওঁ তপঃ ওঁ
সত্যং ওঁ তৎ সবিতুর্বরেণ্যং ভর্গো দেবস্থা ধীমহি,
ধিয়ো যো নঃ প্রচোদয়াৎ। ওঁ আপো জ্যোতীরসোহয়তং ব্রহ্মভূতু বঃস্বরোঁ॥ ১২॥

পূর্ব্বং দক্ষিণনাসা টিপিয়া রাখিয়াই অনামা ও কনিষ্ঠা দ্বারা ব্রন্ধা রক্তবর্ণ, চতুর্মুখ, অক্ষত্ত্ত্ত ও কমগুলুধর, দ্বিভুজ ও হংস-বাহন। এইরূপে ব্রন্ধাকে নাভিপ্রদেশে ধ্যান করিয়া নিম্নলিখিত-রূপে চিস্তা করিবে। ১১।

যাঁহা দারা ভ্রাদি সপ্তলোক প্রকাশিত হইতেছে, যিনি অপ্, তেজ ও রসরূপে বিভ্যমান, যিনি অথিল-জীবহৃদয়ে জীবাত্মরূপে সংস্থিত, যিনি সন্থাদি ত্রিগুণতেদে ব্রন্ধ-বিষ্ণু-রুদ্ররূপে প্রকাশমান, সেই হ্র্য্যমণ্ডলমধ্যস্থ (হ্র্য্যমণ্ডলোপাধি-পরিচ্ছিন্ন) চৈত্তভকে (ব্রন্ধকে) আমরা উপাদনা করি। তিনি ধর্মাদি চতুর্বর্গ-বিষয়ে আমাদিগের বৃদ্ধির্ভিকে প্রেরিত করিতেছেন। ১২। বামনাস। টিপিয়। শ্বাসরোধরূপ কুম্বক করত নিম্নলিখিতরূপে কেশবকে খ্যান করিবে। যথা--

(হাদি নীলোৎপলদলপ্রভং চতুর্জং শন্ধচক্রগদাপারহন্ত: গরুড়াসনসমারতং কেশবং ধ্যায়ন্) ওঁ
ছুঃ ওঁ ভুবঃ ওঁ স্বঃ ওঁ মহঃ ওঁ জনঃ ওঁ তপঃ ওঁ সত্যং
ওঁ ত ং সবিতুর্ববেংণ্যং ভর্গো দেবস্থা ধীমহি, ধিয়ো।
যোনঃ প্রচোদয়াং। ওঁ আপো জ্যোতীরসোহ্মৃতং
ভ্রমাভূভূবিংস্ব:রা॥ ৩॥

তৎপরে দক্ষিণনাপ। হইতে রদ্ধাস্কৃষ্ঠ ছাড়িয়া দিয়া শনৈঃ শনৈঃ বায়ুনিঃসারণরূপ রেচক করিতে করিতে নিম্নলিখিতরূপে শস্তুর ধ্যান করিবে। যথা—

(ললাটে শ্বেতং । দ্বভুজং ত্রিশূলডমরুকরমর্দ্ধচন্দ্র-বিভূষিতং ত্রিনেত্রং র্যভস্থং শস্তুং ধ্যায়ন্) ওঁ ভূঃওঁ ভূবং, ওঁ স্বঃ ওঁ মহঃ ওঁ জনঃ ওঁ তপঃ ওঁ মত্যং তথ সবিভূব্ব-রেণ্যং ভর্গো দেবস্থা ধীমহি, ধিয়ো য়ো নঃ চোদয়াথ। ওঁ আপো জ্যোতীরসোহমৃতং ত্রহ্মভূভূবিঃমুরোঁ॥ ১৪॥

নীলোৎপলবৎ কান্তিপূর্ণ, চতুর্ভুজ, শঙ্খচক্রগদাপদ্মধারী, গরুড়াধিষ্ঠিত বিষ্ণুকে হৃদয়ে ধ্যান করিতে করিতে পূর্ব্ববৎ গায়ত্রীর অর্থ চিন্তা করিবে। ১৩।

শুরুবর্ণ, বিভুজ, ত্রিশূল্ডমরুকর, অর্ধচন্দ্রবিরাজিত, রুষারুর্ণ শস্থুকে ললাটে ধ্যান করিতে করিতে পূর্ববং সপ্রব্যান্থতি-সম্বিত্ত ও স্থিরক্ষ গায়ন্ত্রীর অর্থ চিন্তা করিবে। ১৪।

শ্বনস্তর দক্ষিণ-হস্তে জল লইয়া প্রাতঃসন্ধ্যায় নিম্নলিখিত মন্ত্র►পাঠ পূর্ব্বক তিনবার জল পান করিয়া আচমন করিবে।—
(প্রাত্যাচমন।)

সূর্য্যশ্চ মেতি মন্ত্রস্থ ব্রহ্ম-ঋষিঃ প্রকৃতিশ্ছন্দ আপো দেবতা আচমনে বিনিয়োগঃ। ওঁ সূর্য্যশ্চ মামস্যুশ্চ মস্থাপতয়শ্চ মস্থাকৃতেভ্যঃ পাপেভ্যে। রক্ষন্তাম্। বদোত্র্যা পাপমকার্ষং মনসা বাচা হস্তাভ্যাং পদ্যামু-, দরেণ শিশ্বা অহস্তদবলুম্পতু। যৎ কিঞ্চিদ্ধুরিতং মির ইদমহমাপোহয়তযোনো সূর্য্যে জ্যোতিষি পরমাত্মনি জুহোমি স্বাহা॥ ১৫॥

(মধ্যাহ্-আচমন)

আপঃ পুন স্থিতি মন্ত্রস্থা বিরুক্ত পুত্র আপো

ব্রহ্মা "স্থ্যান্চ মা" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি, ছলঃ প্রকৃতি, দেবতা জল এবং ইহার প্রয়োগ আচমনকর্ম্মে হয়। স্থ্যা, যজ্ঞ ও যজ্ঞপতি ইল্রপ্রম্থ সুরগণ অসম্পূর্ণ-যজ্ঞ-জনিত পাতক হইতে আমাকে পরিত্রাণ করুন। আমি নিশাভাগে মন, বাকা, কর, চরণ, উদর ও শিশ্র ছারা যে পাপ করিয়াছি, দিন তাহা বিনষ্ট করুন্। আমাতে যে কিছু পাতক বিঅমান আছে, তৎসমস্ত এই জলে সংক্রোমিত করিয়া এই পাপময় জল হৃৎপদ্মধান্থিত অমৃত্যোনি (চৈত্ত্যশক্তিপ্রকাশক) জ্যোতির্ম্ময় স্থ্য্যে সমর্পণ (হোম) করিলাম; উহা নিঃশেষে দক্ষ হউক্। ১৫।

বিষ্ণু "আপঃ পুনস্তু" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি, ছন্দঃ অনুষ্ঠুপ্,

দেবতা আচমনে বিনিযোগঃ। ওঁ আপঃ পুনস্ত পৃথিবীং
পৃথা পূতা পুনাতু মাম্। পুনস্ত ভক্ষণস্পতির্ভ্র ক্ম পূ
পুনাতু মাম্। যতুচ্ছিফীমভোজ্যঞ্চ যদ্ব। তুশ্চরিতং মম।
সর্বাং পুনাতু মামাপোহসতাঞ্চ প্রতিগ্রহং স্বাহ।॥১৬।।

(সায়াহে আচমন)

অগ্নিশ্চ মেতি মন্ত্রস্থ রুদ্র-ঋষিঃ প্রকৃতিশ্ছন্দ আপো দেবতা আচমনে বিনিয়োগঃ। ওঁ অগ্নিশ্চ মা মকুদেচ মকুপ্রত্যশ্চ মকুকুতেভ্যঃ পাপেভ্যো রক্ষন্তাম্ যদহ্ব। পাপমকার্যং মনসা বাচা হস্তাভ্যাং পদ্যামুদরেণ

দেবতা জল এবং ইহার প্রয়োগ আচমনকর্মে হয়। জল মদীয় পার্ধিব-দেহের পবিত্রতাবিধান করুক্, দেহ বিশুদ্ধ হইয়া আমাকে (ক্ষেত্রজ্ঞ আয়াকে) পবিত্র করুক্, জল পরমায়াকে পবিত্র করুক্ এবং পরমায়া বিশুদ্ধ হইয়া আমাকে পবিত্র করুক্। উচ্ছিষ্ট-ভোজন, অভক্ষাভক্ষণ, অসন্ত্যবহার ও অসৎ-প্রতিগ্রহজ্ঞ আমার যে কিছু পাপদঞ্চার হইয়াছে,জল দেই দকল পাপ হইতে আমাকে মুক্ত করুক্। পাপবিদূরণার্থ অভিমন্ত্রিত এই দলিল অমৃতাখ্য-বিহুত্ব সত্যম্বরূপ পরমায়াতে আহুতি অর্পণ করিলাম, উহা নিঃশেষে দক্ষ হইয়া যাউক্। ১৬।

রুদ্র "অগ্নিশ্চ মা" ইত্যদি মন্ত্রের ঋণি, ছন্দঃ প্রকৃতি, দেবতা জল এবং ইহার বিনিয়োগ আচমনকর্ম্মে হয়। অগ্নি, যজ্ঞ ও যজ্ঞ-পতি ইন্দ্রপ্রমুধ স্থারবৃন্দ আমার পাপনাশ করিয়া আমাকে পরিত্রাণ করুন্। আমি দিবাভাগে মন, বাক্যা, কর, পদ, জঠর ও শিশ্ন বারা শিশ্না রাত্ত্রিস্তদবলুম্পতু। যৎ কিঞ্চিদ্ধুরিতং ময়ি ইদমহমাপে†২মৃতযোনো সত্যে জ্যোতিষি পর্মাত্মনি জুহোমি স্বাহা॥ ১৭॥

(পুনর্মার্জন)

তৎপরে জলে গারত্রী জপ করিয়া ঋষ্যাদিসহ নিম্নলিথিত তিন মন্ত্রে মস্তকে তিনবার জল দিবে। * যথা—

আপো হি ষ্ঠেতি ঋক্ত্রয়স্থ নিন্ধুদ্বীপঋষির্গায়ত্রী-চ্ছন্দ আপো দেবতা মার্জ্জনে বিনিয়োগঃ ॥

ওঁ আপো হি ষ্ঠা ময়োভুবস্তান উর্জ্জে দ্ধাতন মহে রণায় চক্ষদে॥

ওঁ যো বঃ শিবতমো রসস্তস্থ ভাজতেহ নঃ। উশ-তীরিব মাতরঃ॥

ওঁ তম্মা অরঙ্গমাম বে। যস্ত ক্ষয়ায় জিন্নথ। আপো জনয়থা চনঃ॥ ১৮॥

যে সকল পাপাচরণ করিয়াছি,রাত্রি তৎসমস্ত বিনম্ভ করন্; আমার দেহে যে কিছু পাপসঞ্চার হইয়াছে; ত্রিপ্রিত এই জলকে আমি অমৃতযোনি (চৈতন্তপক্তিপ্রকাশক) হৃদয়স্থিত জ্যোতির্ময় সতো (ব্রহ্মে) হোম করিলাম। উহা নিঃশেষে দগ্ধ হইয়া যাউক্। ১৭।

সিন্ধুদ্বীপ "আপো হি ষ্ঠা" ইত্যাদি তিনটি মন্ত্রের ঋষি, ছলঃ গায়ন্ত্রী, দেবতা জল এবং ইহার প্রয়োগ মার্জনক্রিয়ায় হয়। ১৮ †

^{*} যজুর্বেদীয়গণ পায়ন্ত্রী জপ করিবে না. কেবল আপোহি ঠা ইত্যাদি মন্ত্রপতিয়া মার্ক্তন করিবে।

[†] মন্ত্রতারে অত্বাদ পূর্বে প্রদর্শিত হইরাছে।

(অখমর্যণ)

তদনস্তর এক গণ্ডুৰ জল নাসিকাগ্রে ধরিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্র-পাঠ পূর্ব্বক নিশাস দারা অভ্যন্তর স্থ ভন্সীভূত পাপপুঞ্জ নিষ্কান্ত হইয়া ঐ জলগণ্ডুৰে মিশিয়াছে, এই প্রকার চিন্তা করত সেই জল বামভাগে ভূতলে ফেলিবে। তৎপরে হস্ত ধৌত করিয়া তিনবার গায়ত্রীপাঠ পূর্ব্বক স্থ্যকে তিন অঞ্জলি জল দিবে। মধ্যাহে একবার গায়ত্রী পড়িয়া এক অঞ্জলি জল দিতে হয়।

ঋতমিত্যস্যাঘমর্থণ-ঋষিরকুষ্টুপ্ছন্দো ভাবরতো দেবতা শ্বমেধাবভূথে বিনিয়োগঃ॥ ওঁ ঋতঞ্চ সত্য-ঞাভীদ্ধান্তপদোহধ্যজায়ত। ততো রাত্র্যজায়ত, ততঃ সমুদ্রোহর্ণবঃ। সমুদ্রাদর্শবাদধিসংবৎসংগহজায়ত। অহোরাত্রাণি বিদধদ্বিশ্বস্য মিষতো বশী। সূর্য্যাচন্দ্র-মসৌ ধাতা যথাপূর্বমকল্লয়ৎ। দিবঞ্চ পৃথিবীঞ্চান্ত-রীক্ষমথো স্বঃ॥ ১৯॥

(সুর্য্যোপস্থান)

প্রাতঃকালে ও সন্ধ্যাসময়ে করযোড়ে এবং মধ্যাছে উন্ধরিছ হইন্না নিম্নলিধিত হুইটি মন্ত্রে স্বর্য্যোপস্থান করিবে। যথা।— উত্নু ত্যমিত্যস্থ প্রস্কন্ধ-ঋষির্গায়ক্রীচ্ছন্দঃ সূর্য্যো দেবতা

অবমর্ধণ "শতম্" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি,ছন্দঃ অন্তই পু, দেবতা ব্রুকা এবং অধ্যাধ্যজান্তে সানকর্মে প্রয়োগ হয় *। ১১।

প্রস্কন্ন "উত্ন ত্যং" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি, ছন্দঃ গায়ন্ত্রী, দেবতা

^{*} মন্ত্রের অর্থ পূর্বের লিগিত ইইয়াছে।

সূর্য্যোপন্থানে বিনিয়োগঃ। ওঁ উত্ন ত্যং জাতবেদসং দেবং বহস্তি কেতবঃ। দুশে বিশ্বায় সূর্য্যমৃ॥ ২০॥

চিত্রমিত্যস্য কোৎস-ঋষিস্ত্রিষ্ট্রপ্ছন্দঃ সূর্য্যো দেবতা সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ। ওঁ চিত্রং দেবানা-মুদগাদনীকং, চক্ষুর্মিত্রস্য বরুণস্যাগ্নে। আপ্রাভাবা-পৃথিবীঞ্চাস্করীকং, সূর্য্য আত্মা জগতস্তস্কুষশ্চ॥ ২১॥

তৎপরে নিম্নলিখিত একাদশটি মম্বের এক একটি পড়িয়া এক এক অঞ্জলি জল দিবে। যথা—

ওঁ ব্রহ্মণে নমঃ, ওঁ ব্রাহ্মণেভ্যো নমঃ, ওঁ আচা-র্যোভ্যো নমঃ,ওঁ ঋষিভ্যো নমঃ,* ওঁ দেবেভ্যো নমঃ,

স্থ্য এবং ইহার প্রয়োগ স্থ্যোপস্থানে হয়। বহ্নিবৎ তেজোবিশিষ্ট স্থপ্রসিদ্ধ আদিত্যদেবকে তদীয় রশ্মিপুঞ্জ উদ্ধে ধারণ করিয়া রাখিয়াছে; এই জন্মই সকললোক প্রকাশিত হইতেছে। ২০।

কৌৎস "চিত্রম্" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি, ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ, দেবতা স্থ্য এবং ইহার প্রয়োগ স্থ্যোপস্থানে হয়। স্বরগণের বিষয়কর তেজোরাশিষরূপ স্থ্যদেব উদিত হইয়াছেন। ইনি মিত্র, বরুণ ও অগ্নি এই দেবত্রয়ের চক্ষুঃস্বরূপ, অন্ত দেবগণের সমষ্টিস্বরূপ এবং স্থাবরজঙ্গনের আগ্রস্বরূপ। † ইনি স্বীয় রশ্মিমালা দারা স্বর্গ, মর্ত্ত্য ও আকাশকে পরিপূর্ণ করিয়াছেন। ২১।

^{*} এই ছলে কেহ কেহ "ওঁ গুরুভ্যো নমঃ" বলিয়াও এক অপ্পলি জল দিয়া থাকেন।

[†] जामिजान्ज (बार्गाज्डे जानिनर्गत श्रमा बीराज्यस्य वित्रांबिज।

ওঁ বেদেভাো নমঃ, ওঁ মৃত্যবে নমঃ, ওঁ বায়বে নমঃ, ওঁ বিষ্ণবে নমঃ, ওঁ বৈশ্রবণায় নমঃ, ১ওঁ উপজায় নমঃ। **

গায়ত্রীজপ।

(আবাহন)

করযোড়ে নিম্নলিখিতমস্ত্রে গায়ত্রীর আবাহন করিবে। যথা— ওঁ আয়াহি বরদে দেবি ত্র্যক্ষরে ব্রহ্মবাদিনি। গায়ত্রিচ্ছন্দসাং মাতব্র ক্ষযোনি নমোহস্ত তে॥ ২২॥ এই বলিয়া আবাহন পূর্ব্বক ক্যাস করিবে। যথা—

(অঙ্গগ্রাস)

"ওঁ হৃদরায় নমঃ" বলিয়া তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামিকার অগ্রদেশ বারা হৃদর ; "ওঁ ভূং শিরদে স্বাহা" বলিয়া তর্জ্জনী ও মধ্যমার
অগ্রদেশ বারা মস্তক ; "ওঁ ভূবঃ শিখায়ৈ বষট্" বলিয়া বৃদ্ধাসূষ্ঠের
অগ্র বারা শিখা ; "ওঁ স্বঃ কবচায় হুঁ" বলিয়া দক্ষিণহন্তের পঞ্চাদ্বলীর অগ্র বারা দক্ষিণ-বাহু এবং "ওঁ ভূভূবিঃ স্বঃ নেত্রত্রয়ায়
বৌষট্" বলিয়া তর্জ্জনী ও অনামার অগ্র বারা নেত্র স্পর্শ করিয়া
"ওঁ ভূভূবিঃ স্বঃ করতলপৃষ্ঠাভ্যাং অস্ত্রায় ফট্" বলিয়া তর্জ্জনী ও
মধ্যমা যোগ করিয়া বামহন্তের পৃষ্ঠ ও তল স্পর্শ করত তালি

হে বরপ্রদে দেবি! হে অক্ষরত্রয়ময়ি! হে ব্রহ্মপ্রকাশিনি! হে ছন্দোমাতঃ! হে বেদোম্ভবে গায়ত্রি! জপকালে আমার নিকটবর্ত্তিনী হও, তোমাকে নমস্কার।২২।

^{*} মণ্যাহ্নস্থানের পর তর্পণ করিতে হইলে এই স্থলে কর্ত্ব্য।

দিরে। এই প্রকারে তিনবার অঙ্গতাস করিতে হয়। পরে ধ্যান করিবে। ধ্যান তিন বেলায় তিন প্রকার। যথা— (প্রাতর্ধ্যান)

ওঁ কুমারীং ঋথেদযুতাং ব্রহ্মরূপাং বিচিন্তয়েৎ। হংসন্থিতাং কুশহস্তাং সূর্য্যমণ্ডলসংস্থিতাম্ ২৩॥॥
(स्यास्यान)

ওঁ মধ্যাহ্নে বিষ্ণুরূপাঞ্চ তাক্ষ্যস্থাং পীতবাসদীম্। যুবতীঞ্চ যজুর্বেনাং সূর্য্যমণ্ডলসংস্থিতাম্॥ ২৪॥ (পায়াহ্ন্যান)

ওঁ সায়াকে শিবরূপাঞ্চ বৃদ্ধাং বৃষভবাহিনীম্।
সূর্য্যমণ্ডলমধ্যস্থাং সামবেদসমাযুতাম্ ॥ ২৫॥
গোনান্তে গায়ত্রীর ঋষ্যাদি স্মরণ করিবে। যথা—
(শ্ব্যাদি)

ওঁ গায়ত্র্যা বিশ্বামিত্র-ঋষির্গায়ত্রীচ্ছন্দঃ দবিত। দেবতা জপোপনয়নে বিনিয়োগঃ॥ ২৬॥ *

প্রভাতে গায়ন্ত্রীকে কুমারী, ঋগ্বেদোস্ভূতা, ব্রহ্মস্বরূপিণী, হংসবাহনা, কুশধারিণী ও স্থ্যমণ্ডলগতা ধ্যান করিবে। ২৩। মধ্যাক্তে গায়ন্ত্রীকে বৈষ্ণবী, গরুড়াসনা, পীতবন্ধধারিণী, যুবতী, যজুর্বেদোস্ভূতা ও স্থ্যমণ্ডলস্থা ধ্যান করিবে। ২৪।

সায়াহে গায়ন্ত্রী দেবীকে শিবশক্তি, বৃদ্ধা, র্ধার্ক্যা, সাম-বেদোভূতা ও স্ব্যমগুলমণ্যবর্ত্তিনী ধ্যান করিবে। ২৫।

গারত্রীর ঋষি বিশ্বামিত্র, ছন্দঃ গারত্রী, দেবতা সূর্য্য এবং জপে ইহার প্রয়োগ হয়। ২৬।

क्टिक्ट शार्मिक व्याध्य अन्तामि-व्यवस्था ताबका (मन ।

তৎপরে যথাশক্তি দশবার, একশত অন্তবার অথবা সহস্রবার গায়ত্রী জপ করিবে। গায়ত্রী যথা—

গায়জী।

ওঁ ভূভূবিঃ স্বঃ তথ সবিভূর্ববেন্যাং ভর্গো দেবস্থা ধীমহি, ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোদয়াৎ ওঁ॥ ২৭। *

স্থাবরজঙ্গমাত্মক ত্রিভ্বনস্বরূপ, জননমরণহঃখাদি-বিনাশার্থ
উপাস্থা, স্থ্যমণ্ডলগত তেজের প্রাণভ্ত, স্ষ্টিস্থিতিপ্রলয়কারিনী
শক্তির অবিচ্ছিন্ন,সর্বান্তর্য্যামী পরব্রহ্মকে "তিনিই আমি"এই তাবে
ধ্যান করি। তিনি আমাদের বুদ্ধিবৃত্তিকে ধর্মাদি চতুর্বর্গবিষয়ে
প্রেরণ করিতেছেন। তিনি ভ্রাদি সপ্তলোকের প্রকাশক অপ্,
তেজ ও রসরূপে বিজ্মান, স্থ্যমণ্ডলোপাধিপরিচ্ছিন্ন চৈতন্তস্বরূপ
ও সন্থাদি গুণভেদে ব্রহ্মবিষ্ণুরুদ্ররূপে প্রকাশমান। ২৭।

^{*} এইরপে প্রাতঃকালে, মধ্যাহ্দদময়ে ও দায়াহ্নকালে বথাক্রমে পায়ন্ত্রী, সাবিত্রী ও সরস্থতীকে চিস্তা করিবে । প্রভাতকালে উর্দ্ধভাবে থাকিয়া হস্তযুগল উর্দ্ধোন্তান,মধ্যাহ্নকালে তদফ্রপে অবস্থান পূর্বাক হন্তযুগল ভির্যাগ্রন্থ করন্ত অনামা হস্তুলীর মধ্যপর্বা, ম্লপর্বা, কনিষ্ঠাঙ্গলীর ম্লাদি তিন পর্বা, অনামিধার অগ্রন্থা, মধ্যামাঙ্গুলীর অগ্রপর্বা আর ভর্জনীর ভিন পর্বা এই দশসংখ্য পর্বে অঙ্গুটাগ্রপর্বারা গায়ন্ত্রী জ্ব করিতে হয় । সায়ন্ত্রীজ্ঞানের আদিতে ও অত্তে সায়ন্ত্রী-স্তবক্ষরতাতি এবং আদিতে গায়ন্ত্রীশাপোদ্ধারপাঠ করা করিব্য । স্তবক্ষরপ্রশ্বক্ষরণে স্তবক্ষরতাদি জইব্য ।

(অপবিসর্জ্ব)

গায়ত্রীজপান্তে জপ বিসর্জন করিবে। ওঁ মহেঁশবদনোৎপ্রনা বিফোহ্য দয়সম্ভবা। ব্রহ্মণা সমস্কুজাতা গচ্ছ দেবি যথেচ্ছয়া॥ ২৮ ॥

পরে "অনেন জপেন ভগবন্তাবাদিতাগুক্রো প্রীয়েতাম্। ওঁ আদিতাগুক্রাভাগে নমঃ" এই বলিয়া এক গণ্ডুব জল দিয়া নিম্ন-লিখিত মন্ত্রে দক্ষিণহন্তের অঙ্কৃষ্ঠ দারা দক্ষিণকর্ণের পৃষ্ঠদেশ স্পর্শ করত মস্তব্বে জলপ্রক্ষেপ পূর্বক আগ্ররক্ষা করিবে। যথা—

(আত্মরকা)

জাতবেদদ ইত্যস্থ কাশ্যপ-ঋষিস্ত্রিষ্ট্রপ্ছন্দোহগ্নি-দেবতা আত্মবক্ষায়াং জপে বিনিয়োগঃ। ওঁ জাতবেদদে স্থনবাম দোমমরাতীয়তো নিদহাতি। বেদঃ দ নঃ পরি-ষদতি, দুর্গাণি বিশ্বা নাবেব দিন্ধুং দুরিতাত্যগ্রিঃ॥২৯॥

হে দেবি ! তুমি মহেশবের মুখ হইতে উৎপন্ন হইয়াছ এবং ব্রহ্মার অসুমতিক্রমে বিষ্ণুর বক্ষঃপ্রদেশে অবস্থান করিতেছ, তুমি স্থেচ্ছামত স্থলে গমন কর। ২৮।

আত্মরক্ষা-মন্ত্রের ঋষি কাশুপ, ছন্দঃ ত্রিষ্টুপ্, দেবতা অগ্নি এবং আত্মরক্ষণকার্য্যে ইহার বিনিয়োগ হয়। যে অগ্নি আমাদিগের অহিতকারিগণকে দক্ষীভূত করেন ও বেদকে আয়ত্ত করিয়া দেন, তরণীযোগে তরক্ষিণী উত্তরণের ক্যায় জগৎ যে অগ্নি দারা হন্তর পাপ হইতে পরিত্রাণ পায়, আমরা সেই অগ্নির জন্ম সোমযুজের অন্নর্থান করি। ২১।

(ক্রেপেছান)

অনস্তর করযোড়ে নিয়লিখিত মন্ত্র পাঠ করিবে। যথা—
খাতমিত্যস্থা কালা গ্রিরুদ্ধ-খাষিরুদ্ধ পূর্ণ ছল্দো
রুদ্রো দেবতা রুদ্রোপস্থানে বিনিয়োগঃ।
ওঁ খাতং সত্যং পরং ব্রহ্ম পুরুষং কৃষ্ণপিঙ্গলম্।
উদ্ধিলিঙ্গং বিরূপাক্ষং বিশ্বরূপং নমো নমঃ॥ ৩০॥
তৎপরে নিয়লিখিত মন্ত্র কয়টির এক একটি পড়িয়। এক এক
অল্পলি দিবে। যথা—

ওঁ ব্রহ্মণে নমঃ, ওঁ অভ্যো নমঃ, ওঁ বরুণায় নমঃ, ওঁ বিষ্ণবে নমঃ, ওঁ রুদ্রায় নমঃ।

সুর্য্যার্ঘ্য)

অনস্তর (অর্যাদ্রব্য বা তদভাবে জল দ্বারা) স্ব্যার্ঘ্য দিয়া তাঁহাকে প্রণাম করিবে। যথা—

ওঁ নমো বিবস্বতে ব্রহ্মন্ ভাসতে বিষ্ণুতেজদে। জগৎসবিত্রে শুচয়ে সবিত্রে কর্মানায়িনে।। ৩১।। ইদমর্ঘ্যং ওঁ শ্রীসূর্য্যায় নমঃ।। ৩২।।

রুদ্রোপস্থান-মন্ত্রের ঋষি কালাগ্রিরুদ্র, ছন্দঃ অন্নষ্ট্রপ্, দেবতা রুদ্র এবং রুদ্রোপস্থানকার্য্যে ইহার প্রয়োগ হয়। যিনি একাক্ষর ও অনস্তজ্ঞাননামক পরব্রহ্ম, ব্রহ্মবিষ্ণুরুদ্ররূপী, উর্ক্ লিঙ্গ (উর্ক স্থিত) ও বিরূপাক্ষ, সেই বিশ্বরূপ পুরুষকে নমস্কার করি। ৩০।

হে ব্রহ্মন্! তুমি তেজস্বী, দীপ্তিমান্, বিষ্ণুতেজের আধার, জগৎকর্ত্তা, পবিত্র ও কর্ম্মপ্রবর্ত্তক।৩১। এই অর্ঘ্য শ্রীসূর্য্যদেবকে অর্পণ করিলাম।৩২।

(স্থাঞ্পাম)

ওঁ জবাকুস্থমসঙ্কাশং কাশ্যপেরং মহাত্যুতিম্।
ধ্বান্তারিং সর্ববপাপন্থং প্রণতোহিম্ম দিবাকরম্॥৩২॥
পরে এক গণ্ডূব জল দিয়া ক্রটিমার্জনা করিবে। মন্ত্র যথা—
ওঁ যদক্ষরং পরিভ্রফীং মাত্রাহীনঞ্চ যদ্ভবেহ।
পূর্ণং ভবতু তৎ সর্ববং ত্বৎপ্রসাদাৎ স্থরেশ্বরি॥ ৩৩॥

(ব্ৰহ্মযজ্ঞ) *

মধ্যাহ্নসন্ধার পর বেদাদি-মন্ত্রচতুষ্টয় পড়িবে। যথা— মধুচ্ছন্দ-ঋষিপায়ত্রীচ্ছন্দ অমিদেবতা ত্রহ্মযজ্ঞ-জপে বিনিয়ে।গঃ।

য নি জবাপুপ্রসম রক্তবর্ণ, মহাত্যতিশালী, অন্ধকারনাশক ও অধিলপাতকহারী, সেই কশুপস্থত ভাস্বরদেবকে নমস্কার। ৩২।

এই সন্ধ্যোপাসনায় যদি কোন বর্ণ উচ্চারিত হইয়া না থাকে এবং যদি কোন মাত্রাও উচ্চারণ না করিয়া থাকি, হে স্থরেশ্বরি গায়ত্রিদেবি! তোমার ক্লপায় তৎসমস্ত পূর্ণ হউক্। ৩৩।

^{*} অহ্মযজ্ঞ মধ্যাক্ষদ্ধার পর কর্ত্বর হইলেও, ভিনবেলার সন্ধ্যাই এই স্থানে লিখিত হওয়াতে উহাও এই স্থলে সন্ধিবেশিত হইল। ফল কথা, ইহা সন্ধ্যার অঙ্গ নহে। যথাশক্তি চতুর্বেদ, ধর্মশাস্ত্র ও ইতিহাসাদি-পাঠকে অক্ষযজ্ঞ কহে। পরস্তু ইহা এখন অসম্ভব বলিয়া চারিবেদের চারিটি আদ্যমন্ত্র পাঠ করিতে হয়। হস্তপদপ্রকালন পূর্বেক পূর্বাগ্রহুশোপরি পূর্বমূথে পদ্মাসনে বসিয়া বামহন্তে কুশধারণ করত তত্ত্পরি দক্ষিণহন্ত অধােমুখভাবে রাধিয়া প্রথমে গায়ত্রী পাঠ করিবে। তৎপরে ঋষাাদি সহ বেদাদি-মন্ত্রচতুইয় পড়িতে হয়।

ওঁ অগ্নিমীলে পুরোহিতং যজ্ঞস্য দেবমৃত্বিজম্। হোতারং রত্বধাতমম্ ॥ ১॥

যাজ্ঞবল্ক্য-ঋষিরু ফক্ ছন্দো বায়ুর্দ্দেবতা ব্রহ্ম-যজ্জপে বিনিয়োগঃ।

ওঁ হয়ে স্থোর্জে স্থা। বায়বঃ স্থা। দেবো বঃ সবিতা প্রাথয়তু শ্রেষ্ঠতমায় কর্মণে॥২॥

গোতম-ঋষিগায়ত্রীচ্ছন্দোইগ্নিদ্বেতা ব্রহ্মযজ্ঞ-জপে বিনিয়োগঃ।

ওঁ অগ্ন আয়াহি বীতয়ে গৃণানো হব্যদাতয়ে। নিহোতা সংসি বৰ্হিষি॥৩॥

পিপ্লাদ-ঋষিৰ্গায়ক্ৰাচ্ছন্দো বৰুণো দেবতা ব্ৰহ্ম-যজ্জপে বিনিয়োগঃ।

যিনি যজ্ঞান্মষ্ঠানের প্রথমে স্থাপিত হইয়াছেন, যিনি যাগ ও হোমকার্য্যের সহায় এবং যিনি বহুধনদাতা, সেই অগ্নিদেবের স্তব করি। ১।

হে শাথে! রৃষ্টির জন্ম তোমাকে ছেদন করি এবং রসের জন্ম তোমাকে আহরণ করি। হে বৎসরন্দ! তোমরা বায়ুর ন্যায় জগতের হিতকারী হও। হে ধেন্থগণ! দীপ্তিশীল স্থ্যদেব যজ্ঞার্থ তোমাদিগকে প্রার্থনা করুন।২।

হে বহ্নি! আমরা তোমার স্তব করিতেছি,তুমি হবির্ভোজনার্থ ও দেবগণকে অন্নপ্রদানার্থ উপস্থিত হও। তুমি হোমক্রিয়ার প্রধান সাধনস্বরূপ হইয়া কুশের উপর অধিষ্ঠান কর। ৩। ওঁ শক্ষো দেবীরভাষ্টয়ে শঙ্গো ভবস্তু পীতয়ে। সংযোরভিশ্রবস্তু নঃ॥৪॥ *

ইতি সমবেদীয়সন্ধ্যা সমাপ্তা।

यजूदर्विमीय-मक्तारिशि।

সামবেদীয় সন্ধ্যার প্রণালী অন্থসারে প্রথম হইতে অঘমর্ষণ পর্যান্ত সম্পাদন পূর্বক ক্র্য্যোপস্থান করিবে। যথা— (সুর্য্যোপস্থান)

উহু ত্যমিত্যস্থ প্রস্কন্ধ-ঋষির্গায়ক্রীচ্ছন্দঃ সূর্য্যো দেবতা অগ্নিষ্টোমে সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ॥ ওঁ উহু ত্যং জাতবেদসং দেবং বহন্তি কেতবঃ। দৃশে বিশ্বায় সূর্য্যমৃ॥ ১॥

চিত্রমিত্যস্থ কৌৎস-ঋষিস্ত্রিষ্ট্ প্ছন্দঃ সূর্য্যো দেবতা অগ্রিষ্টোমে সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ।ওঁ চিত্রং দেবানা-

স্তৃতিযোগ্য জল আমাদিগের পুষ্টিবিধানার্থ ও পানার্থ মঙ্গলপ্রদ হউক্ এবং আমাদিগের মঙ্গলসাধনার্থ অভিমুখে প্রবাহিত হউক্ ।৪। রশ্মিপটল বিশ্বপ্রকাশার্থ তেজঃস্বরূপ হর্য্যদেবকে বহন করিতেছে। ১।

মিত্র, বরুণ ও বহি এই তিন দেবতার চক্ষুস্বরূপ, সর্বস্থরাত্মক, স্থাবরজঙ্গমাত্মক, সমস্ত বিশ্বের আত্মস্বরূপ স্থ্যদেব অতি বিচিত্র-

^{*} এই মন্ত্রচতুষ্টারের মধ্যে প্রথমটি ঋপ বেদের, বিতীয়টি যজুর্কেদের, তৃতীয়টি সামবেদের এবং চতুর্গটি মথর্লবেদের প্রথম মন্ত্র!

মুদগাদনীকং, চক্ষুশ্মিত্রস্থ বরুণদ্যাগ্নে। আপ্রা ভাবা-পৃথিবীঞ্চান্তরীক্ষং, দূর্য্য আত্মা জগতস্তমুধশ্চ॥ ২॥

তচ্চক্ষুরিত্যস্য দধ্যঙ্ ঙাথর্বণ-ঋষিঃ সূর্য্যো দেবত। পুর-উঞ্চিক্ ছন্দে। মহাবীরাগ্যন্তয়োঃ শান্তিকরণে বিনি-য়োগঃ ॥ ওঁ তচ্চক্ষুর্দ্দিবহিতং পুরস্তাচ্ছুক্রমুচ্চরৎ,পশ্যেম শরদঃ শতং, জীবেম শরদঃ শতম্। শৃণবাম শরদঃ শতং, প্রবাম শরদঃ শতমদীনাঃ স্যাম শরদঃ শতং, ভূয়শ্চ শরদঃ শতাং ॥ ৩॥

উদ্বয়মিত্যস্থ প্রস্কয়-ঋষিরসুফ্ট প্ছন্দঃ সূর্যো। দেবতা সূর্য্যোপাস্থানে বিনিয়োগঃ। ওঁ উদ্বয়ং তমদঃ পরিস্বঃ পশ্যন্ত উত্তরম্। দেবং পবিত্রাঃ সূর্য্যমগন্ম জ্যোতিরুত্তরম্॥ ৪॥

ভাবে উদিত হইয়া স্বীয় রশ্মিসমূহ দ্বারা স্বর্গ,মর্দ্ত্য ও গগন পরিপূর্ণ করিয়াছেন। ২।

সুরগণের সমীহিত, শ্বেতবর্ণ (নিশ্বল), প্রকাশস্বরূপ আদিত্য-দেব পূর্ব্বদিকে সমুদিত হইয়াছেন। আমরা তাদৃশ আদিত্যদেবের উপাসনা করিয়া যেন শতবৎসর পর্য্যন্ত দর্শনশক্তি, শ্রুতিশক্তি ও বাগিন্দ্রিয়শক্তিবিশিষ্ট থাকি অর্থাৎ একশত বৎসর পর্যন্ত পূর্ব্ব-ক্ষিত ইন্দ্রিয়শক্তিসকল যেন স্থালিত না হয় এবং আমাদিগকে ধেন কাহারও নিকট দীনভাব প্রকাশ করিতে হয় না। ৩।

অপ্রকাশস্বরূপ ভূলোকের উর্দ্ধ স্বর্গলোক দেখিয়া অগ্ন্যাদি জ্যোতির্ম্মর পদার্থসমূহমধ্যে অত্যুত্তম জ্যোতিস্বরূপ আদিত্যদেবকে উপাসনা করিতেছি। তিনি আমাদিগকে রক্ষা করেন। ৪। স্বয়স্তুরিত্যস্থ সূর্য্য-ঋষির সুষ্টু প্ছন্দঃ সূর্য্যে। দেবতা সূর্য্যেশপস্থানে বিনিয়োগঃ। ওঁ স্বয়স্তুরদি শ্রেষ্ঠো রশার্বর্চোদা অদি, বর্চ্চো মে দেছি॥৫॥

এই বলিয়া সূর্য্যোপস্থান করিয়া করযোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ করিবে। যথা—

ওঁ তেজোহদি শুক্রমশুমৃতমদি ধামনামাদি প্রিয়ন্দেবানামনাধৃষ্টং দেবযজনমদি।।

তদনস্তর সামবেদীয়-সন্ধ্যাবিধির প্রশালীতে (৪৪ পৃষ্ঠা) গায়ত্রীর অঙ্গন্তাস ও আবাহন করিয়া ধ্যান করিবে।* তিনবেলার ধ্যান তিনরূপ। যথা— (প্রাতর্ধ্যান)

ওঁ প্রাতর্গায়ত্রী রবিমণ্ডলমধ্যন্থা রক্তবর্ণা দ্বিভূজা অক্ষসূত্রকমণ্ডলুধরা হংদাসনমার্কা। ব্রহ্মাণী ব্রহ্ম-দৈবত্যা কুমারী ঋথেদোদাহতা ধ্যেয়া।। ৬।।

হে আদিতারশ্মে! তুমি স্বয়ং প্রকাশমান পদার্থ, তোমাকে প্রকাশ করিতে অন্য কাহারও শক্তি নাই, তুমি সর্কশ্রেষ্ঠ ও তেজঃপ্রদ; তুমি আমাকে ব্রাহ্মাতেজ প্রদান কর। ৫।

প্রভাতে গায়ত্রী-দেবীকে লোহিতবর্ণা, দ্বিভূজা,অক্ষস্ত্রকমণ্ডলু-ধারিণী, হংসাসনস্থা, ত্রহ্মরূপা, ত্রহ্মশক্তিস্বরূপিণী, কুমারী, ঋথেদ-স্বরূপা এবং স্থ্যমণ্ডলমধ্যগতা ধ্যান করিবে। ৬।

মতান্তরে যজুর্বেদীয়গণ আবাহনমন্ত্রের মধ্যে প্রাতে "ব্রহ্মবোনি
নমোহল্প তে". মধ্যাতে "বিক্ষ্যোনি নমোহল্প তে" এবং সায়াতে "কৃত্রবোনি
নমোহল্প তে" বলিয়া আবাহন করেন। অত্রে অক্টরাস করিয়া পরে আবাহন
করাই য়কুর্বেদীয়গণের কর্ত্বা।

(মধ্যাক্ধ্যান)

ওঁ মধ্যাহ্নে সাবিত্রী রবিমগুলমধ্যন্থ। কৃষ্ণবর্ণ। চতুভুজা ত্রিনেত্র। শঙ্খচক্রগদাপদ্মহস্তা যুবতী গরুড়ারাঢ়া
বৈষ্ণবী বিষ্ণুদৈবত্য। যজুর্বেদোদাহত। ধ্যেয়া॥ ৭॥
(সায়াহ্যান)

ওঁ সায়াহ্নে সরস্বতী রবিমগুলমধ্যস্থা শুক্লবর্ণা দ্বিভুজা ত্রিশূলডমরুকরা ব্যভাসনমারতা বৃদ্ধা রুদ্রাণী রুদ্ধদৈবত্যা সামোবেদোদাহতা ধ্যেয়া॥ ৭॥

এই প্রকার ধ্যানান্তে সামবেদীয় (৪৫, ৪৬ পৃষ্ঠা) প্রণালীতে ঋষ্যাদি স্মরণ পূর্বক গায়ত্রী জপ করিবে। তৎপরে নিম্নলিখিত মন্ত্রে জপবিসর্জন করিতে হয়। যথা—

(অপবিসর্জ্ব)

ওঁ উত্তরে শিথরে জাতা ভূম্যাং পর্ববতবাদিনী। ব্রহ্মণা সমসুজ্ঞাতা গচ্ছ দেবি যথেচছয়। ॥ ৯॥

মধ্যাহ্লসময়ে গায়ত্রী-দেবীকে সাবিত্রীরূপা, রুঞ্চবর্ণা, চতুর্হস্তারিলোচনা, শঙ্খচক্রগদাপন্নধারিণী, যুবতী, গরুড়াসনসমারুড়া বিষ্ণুরূপা, বিষ্ণুশক্তিস্বরূপিণী, যজুর্ব্বেদস্বরূপা ও রবিমণ্ডলমধ্যস্থ চিস্তা করিতে হয়। ৭।

সায়াহ্রসময়ে গায়ত্রী-দেবীকে সরস্বতীরূপা, শুত্রবর্ণা, দ্বিভূজা, ব্রিশূলডমরুধারিণী, র্যাসনস্থা, রুদ্ধা, রুদ্ররূপা, রুদ্রকৈবত্যা, সাম-বেদস্বরূপা ও রবিমগুলমধ্যস্থা ধ্যান করিবে। ৮।

হে দেবি ! তুমি উত্তর-শিথর হইতে সমুৎপন্ন হইয়া ভূতলে ও গিরিশিথরে বিরাজ করিতেছ ; তুমি যথেচ্ছ প্রস্থান কর। ১। এই বলিয়া এক অঞ্জলি জল প্রদান করিবে। * তদনন্তর সামবেদীয় (ৄ৪৯, ৫০পৃষ্ঠা) প্রণালী অন্তুসারে (মধ্যাহ্দস্ক্যার পর) ব্রহ্মযজ্ঞ করিয়া তর্পণ করত স্থ্যার্য্য প্রদান করিবে; কিন্তু বেদাদি মন্ত্রচতুষ্টয়ের ঋষ্যাদি অন্তপ্রকার এবং চতুর্প মন্ত্রটির "শল্লো ভবস্তু" স্থলে, "আপো ভবস্তু" পাঠ করিবে। ঋষ্যাদি যথা—

· প্রথম মন্ত্রের ঋষ্যাদি।—ঋগ্রেদাদিসর্কস্থ মধুচ্ছন্দ-ঋষিরগ্নি-র্দ্দেবতা গায়ত্রীচ্ছন্দঃ স্বাধ্যায়ে বিনিয়োগঃ।

দ্বিতীয় মন্ত্রের ঋষ্যাদি।—যজুর্ব্বেদাদিমন্ত্রস্থ পরমেষ্টা-ঋষিঃ শাধা-বৎসগাবো দেবতাঃ শাধাচ্ছেদনসন্নয়বৎসোপস্পর্শনে বিনিয়োগঃ।

তৃতীয় মন্ত্রের ঋষ্যাদি।—সামবেদাদিমন্ত্রস্থ গোতম-ঋষির্গায়ত্রী-চ্ছন্দোহগ্নিদেবতা ব্রহ্মযজ্জপে বিনিয়োগঃ।

চতুর্থ মন্ত্রের ঋষ্যাদি।—অথর্কবেদাদিমন্ত্রস্থ দধ্যঙ্ঙাথর্কণ-ঋষি-রাপো দেবতা গায়জ্রীচ্ছন্দঃ শাস্তিকরণে বিনিয়োগঃ।

ব্রহ্মযজ্ঞের পর তর্পণ করিয়া স্থ্যার্ঘ্য দিবে, কিন্তু "ইদমর্ঘ্যং" স্থলে "এষঃ অর্ঘ্যঃ শ্রীস্থ্যায় নমঃ" বলিয়া অর্ঘ্য দিবে। অনন্তর স্থাদেবকে প্রণাম করিবে। যথা—

(সূর্য্য-নমস্কার)

ওঁ নমঃ সবিত্রে জগদেকচক্ষুষে, জগৎপ্রস্থতিস্থিতিনাশহেতবে। ত্রয়ীময়ায় ত্রিগুণাত্মধারিণে, বিরিঞ্চিনারায়ণশঙ্করাত্মনে॥

^{*} কেছ কেছ এই ছলে "ওঁ নমো দিগ্ভাঃ, ওঁ নমো দিগ্দেবতাভাঃ, ওঁ নমো ব্লংগে, ওঁ নমঃ পৃথিবৈয়, ওঁ নমঃ ওষধিভাঃ, ওঁ নমঃ অগ্রে, ওঁ নমো বাচে, ওঁ নমো বাচস্পতয়ে, ওঁ নমো বিফবে, ওঁ নমো মহতে, ওঁ নমঃ অগ্ডাঃ, ওঁ নমঃ অগাং পতয়ে, ওঁ নমো বরুণায়" এই এয়োদশটি মত্রে এফ অঞ্জাঃ পাল দিয়া বাকেল।

এই মন্ত্র বলিয়া পরে "জবাকুস্মাং" ইত্যাদি মন্ত্রে প্রণাম করিতে হয়। তৎপরে সামবেদীয় (৪৯ পৃষ্ঠা) প্রণালীতে "ওঁ যদক্ষরং" ইত্যাদি মন্ত্রে ক্রটিমার্জনা করিবে।

ঋर्यमीয়-मऋग्राविधि।

সামবেদি-সন্ধাবিধির প্রণালীতে আচমন হইতে মার্জন পর্য্যস্ত সমাপ্ত করিয়া ঋষ্যাদি স্মরণ পূর্ব্বক প্রাণায়াম করিবে। যথা— (প্রাণায়াম)

ওঙ্কারস্থ ব্রহ্ম-ঋষিরগ্নিদেবতা গায়জ্রীচ্ছন্দঃ দর্বকর্মারন্থে বিনিয়োগঃ। দপ্তব্যাহ্যতীনাং বিশ্বামিত্রভৃগুভরদ্বাজবশিষ্ঠগোতমকাশ্যপাঙ্গিরদঃ ঋষয়ঃ অগ্নিবায়াদিত্যবৃহস্পতীক্রবরুণবিশ্বেদেবা দেবতাঃ গায়ক্র্যক্ষিগন্মুফব্রহতীপঙ্ ক্তিত্রিফ বুজগত্যশ্ছন্দাংদি প্রাণায়ামে
বিনিয়োগঃ। গায়ক্র্যা বিশ্বামিত্র-ঋষিঃ দবিতা দেবতা
গায়জ্রীচ্ছন্দঃ প্রাণায়ামে বিনিয়োগঃ। গায়জ্রীশিরদঃ
প্রজাপতি-ঋষিত্র হ্মবায় গ্রিসূর্য্যাশ্চতক্রো দেবতা
গায়জ্রীচ্ছন্দঃ প্রাণায়ামে বিনিয়োগঃ॥ ১॥

হংদস্থং দ্বিভূজং রক্তং দাক্ষসূত্রকমগুলুম্। চতুর্ম্মুখমহং বন্দে ব্রহ্মাণং নাভিমগুলে॥২॥

এই প্রকারে নাভিপ্রদেশে ব্রহ্মার ধ্যান করিয়া সামবেদি-সন্ধ্যাপদ্ধতির (৩৭ পৃষ্ঠার) লিখিত "ওঁ ভূং ওঁ ভূবং" ইত্যাদি মন্ত্র পাঠ করিয়া পূরক-প্রাণায়াম করিবে। তৎপরে হৃদয়ে নিম্নলিখিত- রূপে বিষ্ণুর চিস্তা করিয়া পূর্ববৎ মন্ত্রে কুন্তক-প্রাণায়াম করিতে হয়। যথা—

ওঁ শঙ্খচক্রগদাপদ্ম-করং গরুড়বাহনম্।
হ্লদি নীলোৎপলশ্যামং বিষ্ণুং বন্দে চতুভুজম্॥ ৩॥
অনস্তর ললাটে নিমলিধিতরূপে শস্তুর ধ্যান করিয়া পূর্ব্ববৎ
মন্ত্রে রেচক-প্রাণায়াম করিবে। যথা—

ওঁ শ্বেতং ত্রিশূলডমরু-করমর্দ্ধেন্দুভূষিতম্। ত্রিলোচনং ব্যাত্রচর্ম্ম-পরীধানং রুষাদনম্। ললাটে চিন্তয়েদেবমেবং ভুজগভূষণম্॥ ৪॥

অনস্তর তিন বেলায় তিনরূপ মন্ত্র পড়িয়া আচমনবিধি অন্থ-গারে আচমন করিবে। যথা—

(প্ৰাভৱাচৰন)

সূর্য্যশ্চেত্যসুবাক্যস্য যাজ্ঞিক-উপনিষদ্যিঃ সূর্য্যমন্ত্যমন্ত্র্যপতিরাত্রয়ো দেবতাঃ সূর্য্যশ্চেত্যারভ্য রক্ষন্তামিত্যন্তঞ্মচশ্চতুর্বিংশত্যক্ষর। গায়জ্রী যদ্রুত্র্যোরভ্য
ময়ীত্যন্তক্ষ পঞ্চপদা পঙ্ক্তিঃ, ইদমহমিত্যারভ্য স্বাহে-

[&]quot;হুর্যান্ট" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি যজ্ঞকারী উপনিষৎ, ইহার দেবতা হুর্যা, যজ্ঞ, ইন্দ্র ও রাত্রি; "হুর্যান্ট" হুইতে "রক্ষ্ণাং" পর্যান্ত মন্ত্রের চতুর্বিংশাক্ষরাত্মিকা গায়ল্রী, "যদ্রাল্রা" হুইতে"ময়ি" পর্যান্ত মন্ত্রের পঞ্চপদান্মিকা পংক্তি ও "ইদমহ" হুইতে "রাহ;"

ত্যন্তব্য দশ।ক্ষরপাদাভ্য।মুপেত-বিরাট্ছন্দো মন্ত্রাচ-মনে বিনিয়োগঃ॥ ৫॥

(মধ্যাহ্নাচমন)

নিম্নলিখিতরূপে ঋষ্যাদি স্মরণ করিয়া (৩৯ পৃষ্ঠার লিখিত) "ওঁ আপঃ পুনম্ভ" ইত্যাদি মন্ত্রে মধ্যাহ্নাচমন করিবে।

আপঃ পুনস্থিত্যমুবাক্যস্ত নারায়ণ-ঋষিরাপো দেবতা আষ্ঠীচ্ছন্দো মন্ত্রাচমনে বিনিয়োগঃ॥ ৬॥

(সায়ংকালীন আচমন)

নিম্নলিখিতরূপে ঋষ্যাদি স্থাদ করিয়া (৪০ পৃষ্ঠার লিখিত)
"ওঁ অগ্নিন্ট মা মন্ত্রুন্টে ইত্যাদি মন্ত্রে দায়ংকালীন আচমন করিবে।
অগ্নিশ্বেত্যকুবাক্যদ্য যাজ্ঞিক-উপনিষদ্ধিরগ্নিমক্যুমক্যুপত্যহানি দেবতাঃ, অগ্নিশ্বেত্যারভ্য রক্ষন্তামিত্যন্তখ্যচশ্চ কুর্বিংশত্যক্ষরা গায়ত্রী, যদহ্লেত্যারভ্য
ময়ীত্যন্তদ্য পঞ্চপদা পঙ্ক্তিঃ, ইদমহ্মিত্যারভ্য স্বাহেত্যন্তদ্য দশাক্ষরপাদাভ্যামুপেতবিরাট্ ছন্দো মন্ত্রাচমনে বিনিয়োগঃ॥ ৭॥

পর্য্যন্ত মন্ত্রের বিংশাক্ষরাত্মক বিরাট্ ইহার ছলঃ এবং ইহার প্রয়োগ আচমনকর্ম্মে হয়। ৫।

"আপঃ পুনন্ত" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি নারায়ণ, জল ইহার দেবতা, আষ্টী ছন্দঃ এবং মন্ত্রাচমনে প্রয়োগ। ৬।

যজ্ঞকারী উপনিষৎ "অগ্নিশ্চ" ইত্যাদি মন্ত্রের ঋষি; অগ্নি, যজ্ঞ, ইন্দ্র ও দিবস এই চারি জন দেবতা; "অগ্নিশ্চ" হইতে "রক্ষস্তাং" পর্যান্ত মন্ত্রের বিংশাক্ষরাত্মিকা গায়লী, "যদহা" হইতে

(পুনর্মাজ্জন)

অনস্তর মার্জনপ্রণালী অনুসারে নিম্নলিখিত মন্ত্রে মার্জন করিবে। যথা—

ওঁ ভূভূবিঃ স্বঃ তৎ সবিভূর্বরেণ্যং ভর্গো দেবস্য ধীমহি, ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোয়াৎ ওঁ॥ ৮॥

আপো হি ষ্ঠেতি নবর্চ্চদ্য সূক্তদ্যাম্বরিষঃ দিন্ধুদ্বীপ-ঋষিরাপো দেবতা গায়জ্রীপঞ্চনীবর্দ্ধমানা সপ্তমীপ্রতিষ্ঠা অন্তয়োরসুষ্টপু ছন্দো মার্জ্জনে বিনিয়োগঃ॥ ১॥

ওঁ আপোঁ হি ষ্ঠা ময়ে। ভুবস্তা ন উর্জ্জে দধাত ুন। মহে রণায় চক্ষদে॥

ওঁ যো বং শিবতমো রসস্তস্য ভাজয়তেহ নং। উশতীরিব মাতরং॥

ওঁ তম্মা অরঙ্গমাম বো যদ্য ক্ষয়ায় জিন্বথ। আপো জনয়থা চ নঃ॥ ১০॥

ওঁ শন্ধে। দেবীরভীষ্টয়ে আপো ভবস্তু পীতয়ে। শং যোরভিস্রবস্তু নঃ॥ ১১॥

জলসকল পাপ বিনাশ করিয়া আমাদিগকে সুখী করুন্ এবং আমাদিগের উপচয়, পান ও মঙ্গলদাতা হউন্। ১১।

[&]quot;মরি" পর্য্যস্ত-মন্ত্রের পঞ্চপদাত্মিকা পংক্তি ও "ইদমহ" হইতে "স্বাহা" পর্য্যস্ত বিংশাক্ষরাত্মক বিরাট্ ইহার ছন্দঃ এবং মন্ত্রাচমনে প্রয়োগ। ৭।

ওঁ ঈশান। বার্য্যাণাং ক্ষয়ন্তীশ্চর্যণীনাং আপো যাচামি ভেষজম্ ॥ ১২ ॥

ওঁ অপ্স মে সোমোহত্রবীদন্তর্বিখানি ভেষজা অগ্নিঞ্বিশং ভুবম্॥ ১০॥

ওঁ আপঃ পৃণীত ভেষজং বরূথং তাম্বে মম জ্যোক্ চ সূর্য্যং দৃশে॥ ১৪॥

ওঁ ইদমাপঃ প্রবহত যৎ কিঞ্চিৎ ছুরিতং ময়ি। যদ্বাহমভিছুদ্রোহ যদ্বা শেপ উতানৃতম্ ॥ ১৫॥

ওঁ আপোহতান্বচারিষং রদেন সমগস্মহি পয়স্বানগ্র আগহি তম্মা সংস্কজ বর্চসা॥ ১৬॥

জলের সাহায্যেই ধান্তাদি সমস্ত পদার্থ জন্মে, জল মানবগণের আশ্রয়ম্বরূপ; স্মৃতরাং আমি জলসমীপে সুথ প্রার্থনা করি। ১২।

জলাভ্যস্তরে নানাবিধ ঔষধ বিষ্ণমান আছে এবং নিধিল জগ-তের স্থ্পপ্রদ অগ্নিও (তেজঃপদার্থও) উহাতে নিহিত ; সোমদেব আমাকে ইহা বলিয়াছেন। ১৩।

হে জনসকন। মদীয় দেহরক্ষণার্থ এবং চিরদিন স্থ্য (পর-মাত্মভূত জ্যোতিঃ) দর্শনার্থ বর্মস্বরূপ (পীড়াশান্তিকর) ঔষধ আমাকে প্রদান কর। ১৪।

হে জলসকল! আমি অজ্ঞানে যে পাপ করিয়াছি, পরের অহিতাত্মষ্ঠান ছারা যে পাপ করিয়াছি, সজ্জনের প্রতি শাপ দিয়া যে পাপ করিয়াছি এবং মিথ্যাকথাকথনজ্জনিত যে পাপ করিয়াছি, তৎসমস্ত বিনষ্ট কর। ১৫।

(र क्लमक्ल! व्यामि व्याध रम किছू मिथा। চরণ করিয়াছি,

(अवगर्रन)

তৎপরে অনুমর্ষণপ্রণালী অমুদারে অঘমর্যণ করিবে। যথা— ঋতব্ধেতি ঋক্ত্রয়স্থাঘমর্ষণ-ঋষির্ভাবরুত্তো দেবতা অমুফ্টুমাধুচ্ছন্দোহশ্বমেধাবভূথে বিনিয়োগঃ॥ ১৭॥

এই প্রকারে ঋষাদি শ্বরণ পূর্বক (৪২ পৃষ্ঠার লিখিত)
"ঋতঞ্চ" ইত্যাদি মন্ত্রে অঘমর্যণ করিবে।

পরে একবার অমন্ত্রক আচমন পূর্বক স্থ্যাভিমুখ হইয়া
স্থ্যের উদ্দেশে নিমূলিধিত মন্ত্রে এক অঞ্জলি জল দিবে। ষ্ণা—

ওঙ্কারস্থ ব্রহ্ম-ঋষিরগ্নির্দেবত। গায়ত্রীচ্ছন্দঃ, মহা-ব্যাহ্যতীনাং পরমেষ্ঠী-প্রজাপতির্দেবতা বৃহতীচ্ছন্দঃ, গায়ত্র্যা বিশ্বমিত্র-ঋষিঃ দবিতা দেবতা গায়ত্রীচ্ছন্দঃ, দূর্য্যজলাঞ্জলিদানে বিনিশোগঃ॥

পরে গায়ত্রী পড়িয়া জলাঞ্জলিত্রয় তিনবার উদ্ধে ক্ষেপণ করিবে।

মধ্যাহ্নকালে নিম্নলিখিত মন্ত্রে ঐরূপে উদ্ধে জলাঞ্জলি ক্ষেপণ
করিতে হয়।

* যথা—

তাহা জল দারা দূর কর। হে বহিং ! তুমিও জলের সহিত একত্ত হইয়া আগমন পূর্বকে স্বীয় তেজোদারা স্নাত আমাকে সংযোজিত কর অর্থাৎ আমাকে তেজস্বী করিয়া দেও। ১৬।

"ঋতঞ্চ" ইত্যাদি তিনটি মন্ত্রের ঋষি অঘমর্ষণ, দেবতা ব্রহ্মা, ছন্দ অফুষ্টুপ্ও মাধু এবং অশ্বনেধ্যজ্ঞের অবভ্থস্নানে ইহার বিনিয়োগ। ২৭।

^{*} সায়ংকালে গায়জী পড়িয়া তিন অঞ্চলি জল মুক্তিকায় দিবে; উৰ্চ্ছে কেপণ করিবে না।

আকৃষ্ণেণ ইত্যদ্য হিরণ্যস্তৃপ-ঋষিঃ সবিতা দেবত।
ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ সূর্য্যজলাঞ্জলিদানে বিনিয়োগঃ॥ ১৮॥
ত্র আকৃষ্ণেণ রজদা বর্ত্তমানো নিবেশয়য়য়তং
মর্ত্যঞ্চ হিরণ্যয়েন সবিতা রথেনাদেবে। যাতি ভুবনানি
পশ্যন॥ ১৯॥

(প্ৰাতঃস্ব্যোপস্থান)

অনন্তর সূর্য্যোপস্থান করিবে।

চিত্রং দেবানামিতি ষড় চস্ত সৃক্তন্য কুৎস-ঋষিঃ সূর্য্যো দেবতা ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ ॥২০॥ ওঁ চিত্রং দেবানামুদগাদনীকং চক্ষুর্মিত্রদ্য বরুণ-

"আরুষ্ণেণ" ইত্যাদি মস্ত্রের ঋষি হিরণ্যস্প, দেবতা স্থ্য, ছন্দঃ ত্রিষ্টুপ্ এবং স্থ্যজ্লাঞ্লিদানে ইহার বিনিয়োগ। ১৮।

সকলে যাহার স্তব করে, সেই স্থ্যদেব স্বর্ণরথে আরুঢ় হইয়া উপস্থিত হইতেছেন। ইনি সর্বলোকের সাক্ষিম্বরূপ, ইহাঁর উদয়ে লোকসমূহ ও সুরগণ নিজ নিজ ব্যাপারে নিযুক্ত হন। এই প্রকারে স্থ্যদেব ক্লুবর্ণ রাত্রির সহিত সর্ব্বদা উপস্থিত হইয়া লোকসকলকে আপ্যায়িত করিতেছেন। ১১। *

"চিত্রং দেবানাং" ইত্যাদি ছয়টি মন্ত্রের ঋষি কুৎস, দেবতা হুর্ম্য, ছন্দঃ ত্রিষ্টুপ্ এবং হুর্যোপস্থানে ইহার প্রয়োগ। ২০।

রাত্রিকালেই অধিকাংশ পাপকর্মের অন্তর্চান হয়, এই জয় রাত্রিকে
কয়বর্ণ বলা হইল।

স্থান্ধেঃ। আপ্রা দ্যাবাপৃথিবী অন্তরীক্ষং সূর্য্য আত্মা জগতস্তুস্থশ্চু ॥ ২১॥

ওঁ সূর্য্যে। দেবীমৃষসং রোচমানাং মর্য্যো ন যোষা-মভ্যেতি পশ্চাৎ যত্রা নরো দেবয়ন্তো যুগানি বিতন্তত প্রতিভদ্রায় ভদ্রম্॥ ২২॥

ওঁ ভদ্রা অশ্বা হরিতঃ সূর্য্যস্ত চিত্রা এতথা অমু-মাতাসঃ নমস্তান্তো দিব আ পৃষ্ঠম্ স্থঃ পরি তাবা পৃথিবী যন্তি সদ্যঃ॥২৩॥

ওঁ তৎ সূর্য্যস্থা দেবত্বং তন্মহিত্বং মধ্যাৎ কর্ত্তো-বিত্তং সঞ্জভার যদেদযুক্তা হরিতঃ স্বস্থাদাদ্রাত্রী বাসস্তন্মতে সিমস্মৈ॥ ২৪॥

মন্থয়ের। যেমন গমনশীলা রূপবতী রমণীর অভিগমন করে,
তদ্ধপ স্থ্যদেব দানাদি-গুণবিশিষ্টা দীপ্তিমতী উষাকে লক্ষ্য করিয়া
গমন করিতেছেন। এই উষার উদরে যজমানেরা অগ্নিহোত্রাদি
কার্য্যের অন্তর্চান করেন। আমরা সেই মঙ্গলপ্রদ স্থ্যদেবকে
কল্যাণার্থ স্তব করি। ২২।

মঙ্গলপ্রদ, রসগ্রহণস্বভাব ও গতিশীল স্থ্যরশ্মিষণ্ডলকে আমরা স্তব ও প্রণাম করি। এই রশ্মিষণ্ডল আকাশতলে সমুদিত হইয়া গগন ও পৃথিবীর সর্কদিকে ব্যাপ্ত হইয়া রহিয়াছে। ২৩।

সকলের প্রেরক আদিত্যদেবের বিচিত্র স্বাধীনতা ও মহত্ত

 [ং] যে সমন্ত মন্ত্রের জাত্বাদ একবার প্রদন্ত ভইয়াছে, সেগুলির জাত্বাদ আর পুনরায় লিখিত হইল না।

ওঁ তন্মিত্রস্থ বরুণস্থাভিচক্ষে সূর্য্যে। রূপং কুণুতে দ্যোরুপস্থে অনন্তমন্যক্রশদস্থ পাজঃ কুন্তমন্যদ্ধরিতঃ সংভরন্তি॥ ২৫॥

ওঁ অদ্যা দেবা উদিতা সূর্য্যস্থা নিরংহৃদঃ পিপৃত। নিরবদ্যাৎ তল্পো মিত্রো বরুণো মামহন্তামদিতিঃ সিন্ধুঃ পৃথিবী উত দ্যোঃ॥ ২৬॥

(মধ্যাহ্-সুর্য্যোপস্থান)

উত্ন ত্যমিতি ত্রয়োদশর্চস্য সৃক্তস্য কাগপ্রস্কন্মঋষিঃ

ক্কয়াদিকর্ম্মে পরিক্টে রহিয়াছে। স্থ্য যথন স্বীয় রশ্মিজাল সংহ-রণ পূর্ব্বক অন্তত্ত সংযুক্ত করেন, সেই সময়ে অন্ধকার দারা এই লোক সমাকীর্ণ হয়। ২৪।

আদিত্যদেব উদয়সময়ে নিখিল জগৎকে পুরোভাগে দেখিবার জন্ম স্বীয় তেজোরাশি গগনতলে প্রকাশ করেন। তদীয় ঐ রসহরণশীল রশ্মিজাল জগদ্ব্যাপক দীপ্যমান শুক্লবর্ণ ও নৈশাস্ক্র-কারনাশক তেজ বিস্তার করে এবং নিশাভাগে অখিল জগৎকে অন্ধকারার্ত করিয়া ফেলে। ২৫।

হে প্রকাশমান রশির্ক। অন্থ হুইলে তোমরা চতুর্দিকে ব্যাপ্ত হুইয়া আমাদিগকে অতিনিক্দনীয় পাপ হুইতে মুক্ত কর এবং মিত্র (দিবাভিমানিনী দেবতা), বরুণ (রাত্রভিমানিনী দেবতা), অদিতি, দিল্প (জলাভিমানিনী দেবতা), ভূলোকাধিষ্ঠাত্রী দেবী ও আকাশাধিষ্ঠাত্রী দেবী আমাদিগের পাপ বিনম্ভ করুন। ২৬।

সূর্য্যো দেবতা আছ্যানাং নবানাং গায়ত্রী অন্ত্যানাং চত-স্থাং অনুষ্ঠুপ্ছন্দঃ সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ॥ ২৭॥

ওঁ উচ্চ ত্যং জাতবেদসং দেবং বহুন্তি কেতবঃ। দূশে বিশ্বায় সূর্য্যম্॥ ২৮॥

ওঁ অপ ত্যে তায়বো যথা নক্ষত্রা যন্ত্যক্তবুভিঃ স্থরায় বিশ্বচক্ষদে॥ ২৯॥

ওঁ অদৃশ্রমস্থ কেতবো বি রশ্ময়ে। জনাঁ অমু-ভ্রাজন্তোহগ্নয়ো যথা॥ ৩১॥

ওঁ তরণির্বিশ্বদর্শিতা জ্যোতিষ্কুদ্দি সূর্য্য বিশ্বম। ভাদি রোচনম্॥ ৩১॥

ওঁ প্রত্যঙ্দেবানাং বিশঃ প্রত্যঙ্ঙুদেষি মানুষান্ প্রত্যঙ্বিশ্বং স্বর্দ্দে॥ ৩২॥

বিশ্বপ্রকাশক স্থ্যদেবের আগমনে যেমন তস্করেরা পলায়ন করে, সেইরূপ নক্ষত্রমালাও রাত্রির সহিত অদৃগু হইতেছে। ১৯।

প্রজ্বলিত বহ্নি যেরূপ নিখিল জগৎকে প্রকাশিত করে, সেই-রূপ সূর্য্যবশ্মিমালা অখিল জগৎ প্রকাশিত করিতেছে। ৩০।

হে স্থ্যদেব! আপনি আপনার উপাসকগণের রোগহস্তা, নিখিল জগতের দর্শনীয় ও প্রকাশক, সেই জন্মই পরিব্যাপ্ত স্থােভমান এই গগনতলকে প্রকাশিত করিতেছেন। ৩১।

হে আদিতা। মরুৎ-নামক দেবরন্দের ও নরলোকের অভিমুখে আপনার উদয় দৃষ্ট হইতেছে এবং স্বর্গবাসিগণকে দর্শনপ্রদানার্থ আপনি তদভিমুখে উদিত হইতেছেন। আপনি এক
হইয়াও সর্ব্বিত্র সমভাবে প্রকাশমান হইতেছেন। ৩২।

ওঁ যেনা পাবকচক্ষা ভুরণ্যন্তং জনা অমু হং বরুণ পশ্যসি॥ ৩৩॥

ওঁ বিন্তামেষি রজম্পৃথ্হ। মিমানোছকু ভিঃ পশ্যন্ জন্মানি সূর্য্য॥ ৩৪॥

ওঁ সপ্ত স্থা হরিতে। রথে বহন্তি দেব সূর্য্য শোচি-ক্ষেশং বিচক্ষণ॥ ৩৫॥

ওঁ অযুক্ত সপ্ত শুন্ধুবং সূরে। রথস্থ নপ্ত্যঃ তাভি-র্যাতি স্বযুক্তিভিঃ॥ ৩৬॥

ওঁ উদ্বয়ং তমদঃ পরি জ্যোতিঃ পশ্যন্ত উত্তরং দেবং দেবতা সূর্য্যমগন্ম জ্যোতিরুত্তমম্॥ ৩৭॥

হে আদিত্য! আপনি পবিত্রকারী, আপনার দ্বারা অনিষ্ট দ্র হয়। আপনি যে জ্যোতিঃপদার্থ দ্বারা এই সকল লোককে প্রকা-শিত করিতেছেন, আমরা সেই জ্যোতিঃপদার্থকে স্তব করি। ২২।

হে আদিত্যদেব ! আপনি দিন-রাত্রির বিভাগ করিয়া এই উৎপত্তিশীল পদার্থসকলকে প্রকাশ করিতেছেন এবং স্থবিস্তৃত গগনলোকে বিশেষপ্রকারে গমন করিতেছেন। ৩৪।

হে সর্ব্ধপ্রকাশক! আপনি শোচিক্ষেশ অর্থাৎ তেজারাশিই আপনার কেশস্বরূপ।সপ্তাশ্ব আপনাকে রথে বহন করিতেছে।৩৫। সর্ব্ধপ্রেরক আদিত্যদেব 'সতর্ক সপ্তাশ্বকে রথে নিয়োজিত করিয়া যজ্ঞনিকেতনে গমন করিতেছেন। ৩৬।

আমরা পাপরহিত, দেবগণমধ্যে দানাদিগুণযুক্ত স্থ্যকে দর্শন ও তদীয় উপাদনা করিয়া উৎক্লইতম স্থ্যুরূপ প্রাপ্ত হইব। ৩৭! ওঁ উদ্যন্ধদ্য মিত্র মহ আরোহন্ধুত্তরাং দিবং হৃদ্রোগং মুম সূর্য্য হরিমাণঞ্চ নাশয়॥ ১৮॥

ওঁ শুকেষু মে হরিমাণং রোপণাকাস্ত্র দধ্যসি অথো হারিদ্রবেষু মে হরিমাণং নিদধ্যসি॥ ৩৯॥

ওঁ উদগাদয়মাদিত্যে। বিশ্বেন সহস। সহ দ্বিষন্তং মহ্খং রন্ধয়মোহহং দ্বিষতে রধম্॥ ১০॥
(সায়ং-সুর্গোপ্রান্)

মোষু বরুণেতি পঞ্চর্চস্থ বশিষ্ঠ-ঋষির্ববরুণে। দেবতা গায়জ্রীচ্ছন্দঃ সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ॥

এই প্রকারে ঋয়াদি ন্যাস করিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্রে বিধি-বিহিত প্রণালীতে সায়ংকালীন স্র্যোপস্থান করিবে। যথা—

ওঁ মোযু বরুণ মৃগায়ং গৃহং রাজন্নহং গমং মৃড়। স্থকতা মৃড়য়॥ ৪১॥

হে অনুকৃলদীপ্তিমৎ-হর্য্যদেব ! অন্ত আপনি গগনতলে উদিত হইয়া মদীয় দেহ ও হৃদ্গত বাহ্ হরিদ্বর্ণ রোগরাশি ধ্বংস করুন্।৩৮। আমরা মদীয় হরিদ্বর্ণ রোগকে হরিদ্বর্ণপ্রার্থী শুক ও শারিক। পক্ষীতে এবং হরিতালরক্ষে স্থাপন করিতেছি। ৩৯।

এই সন্থ্যবর্তী অদিতিনন্দন আদিত্যদেব আমার উপদ্রব-কারী বিপক্ষকে বিনাশ করিয়া সর্ববল গ্রহণ পূর্বক উদিত ইইয়াছেন। ইনিই আমার অহিতকর ব্যাধি সংহার করুন্, আমি ব্যাধির প্রতি হিংসা করিব না। ৪০।

হে নূপতে বরুণ ! আমি তোমার মূগায় গৃহে যাইব না, আমি

ওঁ যদেমি প্রক্ষার্ক্তরিব দৃতিন গ্লাতোহদ্রিব মৃড়া স্ক্ষক্র মৃড়য়॥ ৪২॥

ওঁ ক্রত্বঃ সমহ দীনতা প্রতীপং জগমাশুচে মৃড়া স্থক্ষত্র মৃড়য়॥ ৪৩॥

ওঁ অপাং মধ্যে তস্থিবাংসং তৃষ্ণাবিদজ্জরিতারং মৃড়া স্থক্ষত্র মৃড়য়॥ ৪৪॥

ওঁ যৎ কিঞ্চেদং বরুণং দৈব্যে জনেহভিদ্রোহং মনুষ্যাশ্চরামিদ অচিত্তী যত্তব ধর্মাযুযোপিম মা নস্ত-স্মাদেনদো দেব রীরিষঃ॥ ৪৫॥

তোমার কাঞ্চনময় গৃহ প্রাপ্ত হাইব। হে প্রশন্তধনশালিন্! তুমি আমার প্রতি দয়া প্রকাশ পূর্কক সুখী কর। ৪১।

'হে অস্ত্রধারিন্ বরুণ! আমি যে সময়ে ত্বদীয় ভয়ে বিকম্পিত, বায়ুপূর্ণ চর্ম্মপাত্রবৎ ক্ষীত ও ত্বৎকর্ত্ত্ব বন্দী হইয়া গমন করিব, তথন তুমি আমাকে সুখী করিও। ৪২।

হে অর্থশালিন্! হে বিমলচরিত বরুণ! আমরা শ্রুতিস্থৃতি-প্রতিপাদিত কার্য্যের অন্থূষ্ঠানে অক্ষম; অতএব যে সময়ে ত্বংকর্ত্ত্ক বন্দী হইয়া গমন করিব, তৎকালে তুমি আমাকে সুখী করিও। ৪৩।

হে বরুণ! আমি সাগরগর্ভে বাস করিয়া ও স্বদীয় আরাধন। করিয়াও তৃষ্ণার্ভ হইতেছি; যেহেতু, লবণাক্ত সলিল পানযোগ্য নহে, উহা পান করিতে পারিতেছি না; অতএব তুমি এই পিপাসার্ভ ব্যক্তিকে (আমাকে) সুখী কর। ৪৪।

হে বরুণ! আমরা সুরগণসম্বন্ধে অনিষ্ট করিয়াছি ও অজ্ঞানতা

(অঙ্গন্তাস)

হর্ষ্যোপস্থানান্তে নিয়লিখিত প্রকারে অঙ্গন্তাস করিবে। যথা—
"ওঁ হৃদয়ায় নমঃ" বলিয়া অঙ্গুলী দারা হৃদয়, "ওঁ ভূঃ শিরসে
বাহা" বলিয়া শিরঃ, "ওঁ ভূবঃ শিখায়ৈ বয়ঢ়" বলিয়া শিখা, "ওঁ বঃ
কবচায় হঁ" বলিয়া বাহু, "ওঁ ভূভূ বঃ বঃ নেত্রত্রয়ায় বৌষ্ট্" বলিয়া
চক্ষু, "ওঁ ভূভূ বঃ বঃ অস্তায় ফট্" বলিয়া করতল, "ওঁ তৎ সবিতৄঃ
হৃদয়ায় নমঃ" বলিয়া পুনরায় হৃদয়, "বরেণ্যং শিরসে স্বাহা"
বলিয়া মস্তক, "ভর্গো দেবস্ত শিখায়ে বয়ঢ়" বলিয়া শিখা, "ধীমহি
কবচায় হঁ" বলিয়া বাহু, "ধিয়ো য়ো নঃ নেত্রত্রয়ায় বৌষ্ট্" বলিয়া
চক্ষু এবং "প্রচোদয়াৎ অস্তায় ফট্" বলিয়া করতল স্পর্শ করিবে।

তৎপরে গায়ন্ত্রীর ধ্যান করিতে হয়। তিন বেলায় ধ্যান তিন প্রকার। যথা—

(প্ৰাত্ধ গান ়)

ওঁ বালাং বালাদিত্যমণ্ডলস্থাং রক্তবর্ণাং রক্তাম্বরামু-লেপনস্রগাভরণাং চতুমুখীং দণ্ডকমণ্ডলক্ষসূত্রাভয়াস্ক-চতুভুজাং হংসারূঢ়াং ব্রহ্মদৈবত্যাং ঋথেদমুদাহরস্তীং ভূর্লোকাধিষ্ঠাত্রীং গায়ক্রীং নাম তাং ধ্যায়েৎ ॥ ৪৬ ॥

নিবন্ধন স্থানীয় কর্ম্মে বিমোহিত হইয়াছি; সেই হেতু আমাদের পাতক-সঞ্চয় হইয়াছে; তুমি সেই পাতক নিবন্ধন আমাদিগের প্রতি হিংসাচরণ করিও না। ৪৫।

প্রাতে বালিকা, বালাদিত্যমণ্ডলমধ্যস্থা, রক্তবর্ণা, রক্ত বস্ত্র, অন্ধলেপন ও মাল্যধারিণী, চতুর্মুখী, চতুর্ভু জে দণ্ড, কমণ্ডলু, জপ-

(মধ্যাহ্নধ্যান)

ওঁ যুবতীং যুবাদিত্যমণ্ডলস্থাং শ্বেতবর্ণাং শ্বেতাম্বরা সুলেপনস্রগাভরণাং দত্রিনেত্রপঞ্চবক্ত্রাং চন্দ্রশেখরাং ত্রিশূলখড়গখট্টাঙ্গডমরুকরাং চতুর্ভুজাং রুষারুঢ়াং রুদ্রদৈবত্যাং যজুর্ব্বেদমুদাহরন্তীং ভূর্লোকাধিষ্ঠাত্রীং সাবিত্রীং নাম তাং ধ্যায়েৎ ॥ ৪৭ ॥

(সায়াহ্ল-খ্যান)

ওঁ বৃদ্ধাং বৃদ্ধাদিত্যমগুলস্থাং শ্যামবর্ণাং শ্যামান্থ-রান্মলেপনস্রগাভরণাং একবক্ত্রাং শম্বচক্রগদাপদ্মাঙ্ক-চতুতু জাং গরুড়ারূঢ়াং বিষ্ণুদৈবত্যাং সামবেদমুদাহরন্তীং স্বল্লোকাধিষ্ঠাত্রীং সরস্বতীং নাম তাং ধ্যায়েৎ ॥ ৪৮ ॥

মালা ও অভয়ধারিণী, হংসবাহনা, ঋগ্বেদোচ্চারণকারিণী,ভূর্লোকের অধিষ্ঠাত্রী ব্রহ্মাণীদেবীকে গায়ত্রী নামে ধ্যান করিবে। ৪৬।

মধ্যাক্তে যুবতী, মধ্যাহ্নকালীন-স্থ্যমণ্ডলমধ্যগতা, শুক্লবর্ণা, শুক্ল বসন, অন্থলেপন ও মাল্যধারিণী, পঞ্চবদনা, পঞ্চদশনেত্রা, শশাক্ষশেখরা, চারি হাতে ত্রিশূল, অসি, খটাঙ্গ ও ডমরুধারিণী, বুষবাহনা, যজুর্ব্বেদবক্ত্রী, ভুবর্লোকাধিষ্ঠাত্রী রুজাণীদেবীকে সাবিত্রী নামে ধ্যান করিবে। ৪৭।

সায়ংকালে রদ্ধা, রদ্ধ-স্থ্যমণ্ডলসংস্থিতা, শ্রামবর্ণা, শ্রাম বসন, অন্ধলেপন ও মাল্যধারিণী, একবক্ত্রা, চতুর্ভু জে শঙ্খ-চক্রগদা-পদ্ম ধারিণী, গরুড়বাহনা, সামবেদোচ্চারণকারিণী, স্বর্লোকাধিষ্ঠাত্রী বৈষ্ণবীকে সরস্থতী নামে ধ্যান করিবে। ৪৮।

(পায়ত্রীর আবাহন)

ধ্যানাস্তে করযোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ পূর্বক গায়গ্রীর আবাহন করিবে। যথা—

র্ও আয়াহি বরদে দেবি অক্ষরং ব্রহ্মসম্মিতম্। গায়ত্রি ছন্দসাং মাতব্র ক্ষযোনে নমোহস্ত তে ॥৪৯॥ ওঁ তেজোহসি সহোহসি বলমসি ভ্রাজোহসি দেবানাং ধামনামাসি বিশ্বমসি বিশ্বায়ুঃ সর্ব্বমসি সর্ব্বায়ুঃ অভিস্তারোঁ॥ ৫০॥

ওঁ আগচ্ছ বরদে দেবি জপ্যে মে সন্নিধা ভব। গায়ন্তং ত্রায়তে যম্মাৎ গায়ত্রী ত্বমতঃ স্মৃত। ॥৫১॥ (अद्योगियात ও গায়ত্রীৰণ)

তৎপরে নিম্নলিখিত "ওঙ্কারস্থ ব্রহ্ম-ঋষিঃ" ইত্যাদি মন্ত্রে গায়ত্রীর ঋষ্যাদি স্মরণ করিবে। যথা—

হে বরদায়িনি! হে ছন্দঃপ্রসবকারিণি! হে বেদসভ্তে গায়ারি! তুমি আমাদিগকে অনশ্বর ব্রহ্মতত্ত্ব ব্কাইবার জন্য উপস্থিত হও। হে গায়ারি! তুমি শরীরের হেতৃত্ত ধাতৃরূপিনী, তুমি বিপক্ষকুলের পরাভবের শক্তিরূপা, তুমি শক্তিরূপিনী, তুমি দীপ্তিরূপা, তুমি বহি প্রভৃতি দেবরন্দের তেজােরপিনী, তুমি নিধিল-জগৎস্বরূপা, তুমি জীবনীশক্তিরূপিনী, তুমি পাতকহারিনী এবং ওক্ষারপ্রতিপান্ত-পরমাত্মস্বরূপা। হে অভীপ্তপ্রদে গায়ারি! তুমি আমার জপকালে মদীয় স্থদয়ে অধিষ্ঠান করিও। তুমি তােমার উপাসককে ত্রাণ কর বলিয়াই তােমার গায়ারী নাম প্রথিত হইয়াছে। ৪৯-৫১।

ওঁকারস্য ব্রহ্ম-ঋষিরগ্নির্দ্দেবতা গায়ত্রীচ্ছন্দো মহা-ব্যাহ্মতীনাং পরমেষ্ঠী-প্রজাপতিঋ ষিঃ প্রজাপতির্দ্দেবতা রহতীচ্ছন্দো গায়ত্র্যা বিশ্বামিত্র-ঋষিঃ সবিতা দেবতা গায়ত্রীচ্ছন্দঃ খেতো বর্ণঃ অগ্নির্দ্মুখং ব্রহ্মা শিরো বিষ্ণুহ্ম দয়ং রুদ্রো ললাটং পৃথিবী কৃক্ষিস্ত্রৈলোক্যং চরণাঃ সাংখ্যায়নং গোত্রং অশেষপাপক্ষয়ায় জপে বিনিয়োগঃ॥ ৫২॥

এইরূপে ঋষ্যাদি শ্বরণ করিয়া দশবার বা অষ্টোত্তরশতবার গায়ন্ত্রী জপ করিবে। যথা—

ওঁ ভূভূ বিঃ স্বঃ তৎ সবিতুর্ববেণ্যং ভার্গ। দেবস্থ ধীমহি, ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোদয়াৎ ওঁ॥

(গায়ত্রীর উপস্থান)

গায়ত্রীজপাস্তে নিমুলিধিত মন্ত্রে গায়ত্রীর উপস্থান করিতে হয়। যথা—

জাতবেদস ইত্যস্য কাশ্যপ-ঋষিজ তিবেদোহগ্নি-ৰ্দ্দেবতা ত্ৰিফীপু ছন্দঃ শাস্ত্যৰ্থং জপে বিনিয়োগঃ॥

ব্রহ্ম প্রণবের ঋষি, অগ্নি দেবতা, গায়জ্রী ছন্দঃ; পরমেষ্ঠা প্রজাপতি মহাব্যাছতির ঋষি, প্রজাপতি দেবতা, রহতী ছন্দঃ; বিশ্বামিত্র গায়জ্রীর ঋষি, দেবতা স্থ্য, গায়জ্রী ছন্দঃ। গায়জ্রীর বর্ণ শ্বেত, মুখ বহুি, মস্তক ব্রহ্মা, হৃদয় বিষ্ণু, ললাট রুদ্র, জঠর পূখ্বী, পদ ব্রহ্মাণ্ড, গোত্র সাংখ্যায়ন এবং পাতকবিনাশার্থ ই ইহার বিনিয়োগ। ৫২। ওঁজাতবেদদে স্থকুবাম দোমমরাতীয়তো নিদহাতি বেদঃ স নঃ পরিষদতি তুর্গাণি বিশ্বা নাবেব সিন্ধুং তুরিতাত্যগ্রিঃ॥

তচ্ছং যোরিত্যস্য শংযুঋ ষিবি শ্বেদেবা দেবতাঃ শর্করীচ্ছন্দঃ শান্ত্যর্থং জপে বিনিয়োগঃ॥

নমে। ব্ৰহ্মণ ইত্যদ্য প্ৰজাপতিঋ ষিৰ্বিশ্বেদেব। দেবতা জগতীচ্ছন্দঃ শাস্ত্যৰ্থজপে বিনিয়োগঃ।

ওঁ তচ্ছং যোরার্ণীমহে । ওঁ নমো ব্রহ্মণে অস্ত্রগ্নয়ে॥

(গায়ত্রীবিসর্জন)

পরে "ওঁ পূর্কাদিদিগ্ভ্যো নমঃ, ওঁ দিগীশেভ্যো নমঃ, ওঁ দদ্যায়ৈ নমঃ, ওঁ গায়জ্যৈ নমঃ, ওঁ গাবিত্যো নমঃ, ওঁ সর্বত্যে নমঃ, ওঁ স্কাভ্যো দেবতাভ্যো নমঃ," বলিয়া নমস্কার পূর্কক নিম্ন-লিখিত মন্ত্রে এক গণ্ডুষ জল দিয়া গায়ত্রীবিস্ক্রেন করিবে। যথা —

ওঁ উত্তরে শিখরে দেবি ভূম্যাং পর্বতমূর্দ্ধনি। ব্রাহ্মণেভ্যোহভ্যসুজ্ঞাতা গচ্ছ দেবি যথাস্থধ্য ॥৫৩॥

(ব্ৰহ্মৰজ্ঞ)

🄰 অনস্তর সামবেদিসস্ক্যাপদ্ধতির লিখিত নিয়মে (মধ্যাহ্ল-সন্ক্যার

হে দেবি গায়ত্রি! তুমি উত্তরদিগ্নতী পর্বতশিখরে অবস্থিতি করিয়া থাক; কিন্তু জপসময়ে আমার সন্নিহিতা হইয়াছিলে; এখন জ্লীয় সেবকগণের অন্ধুজ্ঞায় যথাস্থলে সুখে প্রস্থান কর।৫৩। পর) ব্রহ্মযজ্ঞ করিতে হয়। কেবল চতুর্থ মন্ত্রটির "শ্রো ভবস্তু" স্থলে "আপো ভবস্তু" পাঠ করিতে হইবে, এইফ্লাত্র প্রভেদ। * :
(স্থ্যার্থ্য)

তৎপরে নিম্নলিখিত মন্ত্রে স্থ্যার্থ্য দিবে। যথা—
ওঁ নমো বিবস্থতে ব্রহ্মন্ ভাস্বতে বিষ্ণুতেজদে।
জগৎসবিত্রে শুচয়ে সবিত্রে কর্ম্মদায়িনে।
এহি সূর্য্য সহস্রাংশো তেজোরাশে জগৎপতে।
অনুকপ্পায় মাং ভক্তং গৃহাণার্য্যং দিবাকর॥
এই প্রকারে স্থ্যের উদ্দেশে অর্থ্যদান ও এক অঞ্জলি জলদান
করিয়া পূর্ব্বলিখিত মন্ত্রে প্রণাম করিবে।

তান্ত্ৰিক সন্ধ্যা ও তৰ্পণ। ণৃ

প্রথমে যথাবিধি আচমন ‡ (১২ পুঃ) ও বিশ্নুষরণ (১২ পুঃ) পূর্বক অঙ্গুশমুদা দারা "গঙ্গে চ যমুনে চৈব" (১৬ পুঃ) ইত্যাদি

ভর্পণাধিকারী ব্যক্তি এই ছলে তর্পণ করিয়া স্থার্গির দিবে। খিনি
ভর্পণে অন্ধিকারী, ব্রহ্মযজ্বের পর স্থার্গির দেওয়াই তাঁহার পক্ষে ব্যবস্থা।

[†] দীক্ষিত ব্যক্তিমাত্রের পক্ষেই তান্ত্রিক সন্ধ্যা ও তর্পণ ভিন বেলা কর্ত্তব্য । বক্ষমজনসমাপনের পর এই সন্ধা। করিতে হয় ; কিন্ত শুল ও ব্রীলোক প্রাতঃস্মানের পর তান্ত্রিক সন্ধ্যা করিয়া পরে তর্পণ করিবে। কেন্ কেন্ ভর্পণের
পর তান্ত্রিক-সন্ধ্যা করার ব্যবহা দেন। যে ব্যক্তি তর্পণের অধিকারী নহে
সে ব্যক্তিও এই নিয়মে তান্ত্রিকসন্ধ্যা করিবে। সন্ধ্যার কাল উত্তীর্ণ হইলে
স্মান্তর্নালন্তে ইষ্টদেবতার গায়ল্যী দশবার জ্বপা করিয়া পরে সন্ধ্যামুষ্ঠান করিবে।

[‡] বৈঞ্বাদিরা ছইবার অমন্ত্রক আচমন করিবে।

মন্ত্রে জলশুদ্ধি করিবে। পরে ধেত্বমুদ্রা দেখাইয়া (গুরুদন্ত) মূলমন্ত্রে তন্ত্রমুদ্রাযোগে দেই জল তিনবার ভূতলে ফেলিয়া সাতবার
শিরঃপ্রদেশে ছিটা দিবে। তদনস্তর মূলমন্ত্র দারা প্রাণায়াম ও
বড়ঙ্গলাদ * করত বামহস্ততলে জল লইয়া দক্ষিণ-হস্ত দ্বারা আবরণ
পূর্ব্বক "হং যং বং লং রং" এই মন্ত্র তিনবার উচ্চারণ করিবে এবং
বামহস্তের ছিদ্র দিয়া গলিত জলবিল্মু মূলমন্ত্রে সাতবার বিল্মু বিল্মু
মস্তকে দিবে। পরে তন্ত্রমুদ্রা দ্বারা অবশিষ্ট জল দক্ষিণকরে গ্রহণ
করিয়া তাহাকে তেজোময় চিস্তা করত নাসাগ্রে ধরিয়া বামভাগস্থ
ইড়ানাড়ী দ্বারা আকর্ষণ করিবে এবং "শরীরমধ্যগত পাপ ঐ
জলে মিলিত হইয়াছে, পাপম্পর্শে ঐ জলও ক্লাবর্ণ হইয়াছে"
এইরপ চিন্তা করত দক্ষিণনাসা দ্বারা সেই জল বাহির করিয়া
"ফট্" মন্ত্রে ঐ পাপময় জল বামকরতলে ফেলিবে। তদনস্তর
হস্তক্ষালন ও একবার আচমন করিয়া নিয়লিথিত মন্ত্রে প্রত্যেককে
তিন তিনরার তর্পণ করিবে। † যথা—

ওঁ দেবাংস্তর্পরামি, ওঁ ঋষীংস্তর্পরামি, ওঁ পিতৃংস্তর্পরামি, ‡ ওঁ মনুষ্যাংস্তর্পরামি, ওঁ গুরুংস্তর্পরামি, ওঁ পরমগুরুংস্তর্পরামি, ওঁ পরাপরগুরুংস্তর্পরামি, ওঁ পরমেষ্টিগুরুংস্তর্পরামি । §

মূলমন্ত্র অফুসারে অফফানের মন্ত্র ভিল্ল ভিল্ল, উহা গুরুর নিক্ট জাতব্য।

[†] কেহ কেহ অপ্রিদর্জ্জনের পর তান্ত্রিক তর্পণের ব্যবস্থা দিয়া থাকেন।

[‡] যাঁহার পিতা ভাবিত, তিনি 'পিতৃংন্তর্পয়ামি' পরিত্যাপ করিবেন।

অনস্তর মূলমন্ত্র উচ্চারণ পূর্বক শাক্তগণকে "অমুকীদেবীং (ইষ্টদেবতার নাম উচ্চার্য্য) তর্পরামি স্বাহা" বলিয়া বিনবার তর্পণ করিতে হয়। শৈবগণ মূলমন্ত্রোচ্চারণান্তে "অমুকদেবং তর্পয়ামি" এবং বৈষ্ণবের। মূলমন্ত্রোচ্চারণান্তে "অমুকদেবং তর্পয়ামি নমঃ" বলিবেন।

তৎপরে দেবতার স্ব স্ব পটলোক্ত আবরণদেরতাগণকেও এক একবার তর্পণ করিবে । আবরণদেবতা গুরুর নিকট অবগত হুইতে হয়।

অনস্তর নিম্নলিথিত মন্ত্রে স্থ্যার্ঘ্য প্রদান করিবে। যথা—

ওঁ ব্লীং হং সঃ (অথবা ঘূণিঃ সূর্য্য আদিত্যঃ) ইদমর্ঘ্যং শ্রীস্ব্যায় স্বাহা॥ *

তদনস্তর "ওঁ স্থ্যমণ্ডলস্থারৈ অমুকদেবতারৈ নমঃ" বলিয়া তিনবার বুজলাঞ্জলি প্রদান পূর্বক গায়ন্ত্রীর ধ্যান করিবে। যথা---(প্রাতর্ধ্যান)

উন্যদাদিত্যসঙ্কাশাং পুস্তকাক্ষকরাং স্মরেৎ।

কৃষ্ণাজিনধরাং ব্রাহ্মীং ধ্যায়েৎ তারকিতেহম্বরে॥১

উদয়কালান আদিত্যবৎ কান্তিমতী, পুস্তক ও জপমালা-ককে তিন ভিন অঞ্জলি জল দিয়া গুরুণংক্তির তর্পণ করিবে। কেহ কেহ গুরুণংক্তি-তর্পণের পর এই সকল তর্পণ করেন।

* তারাদি-মন্ত্রোপাসকের। "ক্রাঁ হং সঃ মার্ডওভৈরণায় প্রকাশশক্তি-সহিতায় ইদমর্ঘ্যং শ্রীস্থ্যায় স্বাহা" বলিয়া অব্য দিবে। তাত্রপাত্রে চন্দন, আকন্দসুপ্প ও অপরাজিতাপুপ্প লইয়া অব্য প্রদান করাই তারাদি-উপা-সকের কর্ত্ব্য। শ্রীবিদ্যাদি-উপাসকেরা ভিন্ন ভিন্ন মন্ত্রে অব্য দিবেন; উহা গুরুর নিকট জ্ঞাত হইতে হয়। (ম্থাক্থ্যান)

শ্যামবর্ণাং চতুর্ব্বাহুং শল্পচক্রলসৎকরাম্।
গদাপদ্মধরাং দেবীং সূর্য্যাসনক্তাশ্রমম্ ॥ ২ ॥।
(সায়াহুলান)
সায়াহেল বরদাং দেবীং গায়ন্ত্রীং সংস্থারেদ্যতিঃ।
শুক্রাং শুক্রাম্বরধরাং র্ষাসনক্তাশ্রাম্ ॥
ব্রিনেত্রাং বরদাং পাশং শূলঞ্চ নৃকরোটিকান্।
সূর্য্যমগুলমধ্যস্থাং ধ্যায়ন্ দেবীং সমভ্যমেৎ ॥ ৩ ॥
তৎপরে ইপ্টদেবতার গায়ন্ত্রী * দশবার জপ করিয়া নিম্নলিখিত
মন্ধ্বে জপ সমর্পণ করিবে। যথা—

গুহাতিগুহুগোপ্ত্রী স্বং গৃহাণাশ্বংকৃতং জপম্।

সিদ্ধির্ভবতু মে দেবি স্বৎ প্রসাদাৎ স্থরেশ্বরি ॥ ৬ ॥

গারিণী,কৃষ্ণসারচর্মাশ্বরা ব্রাশ্ধীশক্তিকে বিরলতারকান্তি আকাশে

অবস্থিতা চিস্তা করিবে। ১।

মধ্যান্থে গার্ম্মীকে শ্রামবর্ণা, চতুর্ভা, শঙ্খচক্রগদাপদ্মধারিণী ও সূর্য্যমণ্ডলান্তর্গতা চিন্তা করিবে। ২।

সায়ংকালে সাধক গায়ত্রীকে বরদায়িনী, শ্বেতবর্ণা, শুক্লাম্বর-ধারিণী, র্যাসনস্থিতা, ত্রিনেত্রা, পাশ, শূল ও নৃকরোটিকধারিণী এবং সূর্য্যমণ্ডলমধ্যবর্ত্তিনী চিস্তা করিবে। ৩।

হে দেবি স্থরেশ্বরি! যাহাঃগুহু হইতেও\ গুহুতর, তুমি তাদৃশ মন্ত্রের রক্ষাকত্রী; তুমি মৎকৃত জপ গ্রহণ কর। তোমার কুপায় আমার সিদ্ধিলাভ ২উক। ৪।

কতিপয় দেবদেবীর গায়ত্রী পরিশিষ্টে লিখিত রহিল।

পুংদেবতা হইলে নিম্নলিখিতরূপে মন্ত্র উচ্চারণ করিবে । যথা— গুহ্থাতিগুহ্ম গোস্তা হুং সূহাণাস্মৎকুতৃং জপম্। দিদ্ধিভূবতু মে দেব ত্বংপ্রসাদাৎ স্থারেশ্বর ॥

পুংদেবত। হইলে মনে মনে তদীয় দক্ষিণ-হস্তে এবং স্ত্রী-দেবত। হইলে তদীয় বাম-হস্তে উক্তমন্ত্রে জল দিয়া জপ সমর্পণ করিতে হয়।

অনস্তর "রং" এই মন্ত্র দারা মস্তকে জল প্রদান পূর্ব্বক কৃতা-প্রালি হইরা যথাক্রমে বামনেত্রপ্রান্ত, দক্ষিণনেত্রপ্রান্ত ও ললাটদেশ স্পর্ব করত প্রণাম করিবে। যথা —

(বামে) ওঁ গুরুত্যে। নমঃ,ওঁ পরমগুরুত্যে। নমঃ, ওঁ পরাপর-গুরুত্যে। নমঃ, ওঁ পরমেঞ্জিরুত্যে। নমঃ, (দক্ষিণে) ওঁ গণেশায় নমঃ। (মধ্যে) ও অমুকদেবায় নমঃ॥

তৎপরে প্রাণারাম, ঋ্যাদি স্থাদ, করাক্ষ্যাদ প্রভৃতি সম্পাদন পূর্বক গুরু, দেবতা ও মন্ত্র এই তিনের ঐক্য চিস্তা করিয়া
থথাশক্তি মূলমন্ত্র জপ করত "গুছাতিগুছ" ইত্যাদি মন্ত্রে জপ
সমর্পণ করিবে এবং পুনরায় প্রাণায়াম করিয়া দেবতার প্রাণামমন্ত্রে
দেবতাকে * ও গুরুপ্রণামমন্ত্রে গুরুদেবকে নমস্কার করিবে। গুরুপ্রণামমন্ত্র যথা—

ওঁ অথগুমগুলাকারং ব্যাপ্তং যেন চরাচরম্। তংপদং দর্শিতং যেন তক্ষৈ শ্রীগুরবে নমঃ॥ ওঁ গুরুব্র ক্ষা গুরুবি ফুগু রুদে বে। মহেশ্বরঃ। গুরুরের পরং ব্রহ্ম তক্ষৈ শ্রীগুরবে নমঃ॥

ক্রের বিধান ও দেবভাগণের প্রণামমন্ত্র পরিশিষ্টে লিখিত রহিল।

ওঁ অস্তানতিমিরাস্কস্ম জ্ঞানাঞ্জনশলা কয়। । চক্ষুরুস্মীলিতং যেন তাম্মে শ্রীগুরবে নমঃ॥ ইতি প্রাতঃক্তা সমাপ্ত।

পূর্বাহ্নকৃত্য।

ं প্রথমধামার্দ্ধিক হা ; ৬টা ২ইতে গাটা)

এই প্রকারে প্রাতঃক্তা সমাপন করিয়া দিনক্তা আরও করিবে। দেবগৃহমার্জনাদি, গুরু ও মঙ্গলদ্রবাদর্শন,কেশ-প্রসাধন, দর্পণে মুখদর্শন এবং পুশতুলদী-বিশ্বপত্রাদি-চয়ন ইত্যাদি ক্রিয়ায়্রছানই প্রথমযামার্কের অন্তর্গত অর্থাৎ দেবগৃহ-মার্জন, গোময়াদি ছারা উপলেপন, অভ্যুক্তণ,তথার ব্বজপতাকাদি আরোপণ প্রভৃতি করিয়া বিজ্ঞালাতা, মন্ত্রদাতা, পিতা, মাতা প্রভৃতি গুরুজনকে ও মঙ্গলদ্রা দর্শন পূর্বাক প্রণব ও গায়ল্রা স্বরণ করত কেশপ্রসাধন করিবে। দক্ষিণমুথে বিসিয়া কেশপ্রসাধন করিবে না। তৎপরে দর্পণে আয়মুথ দর্শন করিয়া ঈশ্বরশ্বরণ পূর্বাক পুশাদি চয়ন করিবে। *

(দিতীয়যামার্দ্ধকৃত্য) (৭। টা হইতে ৯টা)

অনস্তর দ্বিতীয়-যামার্ক্ষে ব্রাহ্মণগণ বেদাভ্যাদ †ও ধর্মশাস্ত্রাদির

* পুষ্পাচয়ন, তুলসাচয়ন, বিষপ্ত চয়ন প্রভৃতির বিধি পরিশিষ্টে জট্টবা।
† বেদান্তাাস পাঁচ ভাগে বিভক্ত .—বেদস্বীকরণ, বেদবিচার, বেদের
অজ্ঞাস, বেদের জ্ঞপ ও বেদের ধ্যান । গুরুর নিকট প্রবণকে বেদস্বীকরণ,
তর্ক সহকারে আলোচনাকে বেদবিচার, পুনঃ পুনঃ আবৃত্তিকে বেদান্ত্যাস,
মানসচিস্তাকে বেদের জ্প এবং অধ্যাপনকে বেদের ধ্যান বলে । যিনি যে

আলোচনা অরিবেন। স্বীলোকেরা সাংসারিক কার্য্যাদি নির্বাহ করিবেন।

> (তৃতীয়-যামার্দ্ধকৃত্য) (১টা হইতে ১০৮টা)

তদনম্ভর তৃতীয়-যামার্দ্ধে পোস্থবর্গের * ভবরণপোষণার্থ স্বীয়

রতি দারা অর্থোপার্জন করিতে হয়। শূদ্রগণ দিতীয় ও তৃতীয় উভয় যামার্দ্ধেই অর্থ উপার্জন করিবে।

(চতুর্থামার্দ্ধকৃত্য)

(১৪-টা হইতে ১২টা)

देखनम्बन, मधारूयान ७ **७**र्लगानि ।

মণ্যাহুসান, তর্পণ ও মণ্যাহুসন্ধ্যা-পূঞাদিই এই যামার্দ্ধের

বেদের যে শাখার অন্তর্গত, তাঁহার দৈনিক পাঠ্যাংশ বা স্বাধ্যায় অধ্যয়ন कतिया भारत व्यक्तीं ज भारत्वत बात्नाहमा कावेर्यम । आमार्मित रमर्ग धर्म বেদপাঠ উঠিয়া পিয়াছে, সুতরাং গায়ত্রাপাঠ উহার অত্নকর হইয়াছে। আর্য্য-अधिक्रव वित्या वित्यान कि ब्रियार अरे अभयां दिक भाषात्नात्नात छे भयूक বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। কারণ, দেহ পবিত্র, মনোবৃত্তি সতেজ এবং स्नानमत्क्राभामनानि वाता वे मगर्य गरनत मन्त्रूर्व छेनात्रजा माविड इय ; विर्न-ষতঃ ঐ সময়ে মেধাশক্তিও অভিশ্তির বলবতা ললে, মুভরাং ঐ সময়ে শাস্ত্রাফুশীলন করিলে তাহাতে মনঃসংযোগ হয় এবং যাহা অভ্যাস করা যায়, তাহাই সদয়গুহায় স্থান প্রাপ্ত হয়।

* নাতা, পিতা, গুরু, ভার্য্যা, দরিজ, প্রস্কা, অগ্নি, আঞ্জিত, অভ্যাগত বাক্তি ও অতিথি, ইহাদিগকেই পোন্যবৰ্গ কহে। প্ৰমাণ খথা-

মাতা পিতা গুরুভার্য্যা প্রকা দীনাঃ সমাঞ্জিতাঃ। অভ্যাপতোঠ তিথিশ্চাগ্নিঃ পোষ্যবৰ্গ উদাহতঃ ॥ পুরস্ত অগ্নি কেবল সাগ্রিক ব্যক্তির পক্ষেই বুঝিতে ইইবে।

অন্তর্গত। (১১ পৃষ্ঠার লিখিত) প্রাতঃম্বানবিধি অন্ত্রুপারেই মধ্যাহ্ন-ম্বান করিতে হয়ু, তবে এইমাত্র প্রভেদ যে, প্রাতঃম্বানে তৈল-মর্দ্দন নিষিদ্ধ, মধ্যাহুম্বানে তৈলমর্দ্দন করিবে।

রবিবার, মঙ্গলবার, রহম্পতিবার, শুক্রবার, চতুর্দণী, অপ্টমী, দাদণী, পূর্ণিমা, অমাবস্থা, রবিদংক্রান্তি, ব্রতাহ, শ্রাদ্ধাহ, গ্রহণদিন, কেশচ্ছেদনের দিন, উপবাসের দিন এবং অশ্বিনী, শ্রবণা,
চিত্রা ও হস্তা এই সকল নক্ষত্রে তৈলাভ্যঙ্গ করিবে না। এতদ্বিন ষষ্ঠা ও নবমীতে মস্তকে ও পর্ব্বসন্ধিতে তৈল মাধিবে না।
নিষিদ্ধ দিনে তৈল মাধিবার নিতান্ত আবশ্যক হইলে সর্বপতৈল,
নারিকেলতৈল বা পুষ্পবাসিত তৈল মাধিতে পারে। তিলতৈল
হইলে রবিবারে পুষ্প, মঙ্গলবারে কিঞ্চিৎ মৃত্তিকা, রহম্পতিবারে
দ্র্বা, শুক্রবারে কিঞ্চিৎ গোময় এবং অন্থ নিষিদ্ধদিনে তৈলমধ্যে
পুষ্প নিক্ষেপ করিয়া সেই তৈল মর্দ্ধন করিবে । স্নানান্তে দেহে
তৈলমর্দ্ধন নিষিদ্ধ। তৈলমর্দ্ধনান্তে শোচপ্রস্রাবাদি করিতে নাই।

তৈলমর্দ্দনপ্রণালী।—উপবেশন পূর্বক কনিষ্ঠা ও অঙ্কুষ্ঠ দারা কিঞ্চিৎ তৈল লইয়া "অশ্বথায়ে নমঃ" এই মন্ত্রে মৃত্তিকায় ফেলিয়া দিবে। পরে প্রথমে বামপদে, তৎপরে দক্ষিণপদে, তদনস্তর মস্তকে এবং অবশেষে অক্সান্ত অঙ্গ-প্রত্যঙ্গে তৈলমর্দন করিবে। মস্তকে, কর্ণে ও পদতলে উত্তমব্ধপে তৈলমর্দন করা উচিত। ক্ষিত্রিরো প্রথমে দক্ষিণকর্ণে, বৈশ্বেরা দক্ষিণপদে এবং শুদ্রেরা মস্তকে তৈল মাথিয়া পরে অক্সান্ত অবয়বে মর্দন করিবে।

তৈলমর্দ্দনান্তে (১১ পৃষ্ঠার লিখিত) যথাবিধানে স্নান করিয়া বস্ত্র পরিধান (১৭ পৃঃ), শিখাবন্ধন (৯ পৃঃ) ও তিলকধারণ (১৮) করিয়া বৈদিকী ও তান্ত্রিকী সন্ধ্যা করিবে। শুদ্র ও স্ত্রীলোকেরা বৈদিকী সন্ধ্যা করিবে না। তংপরে ত্রশ্বয়ক্ত * ও পুনরায় শ্বানাঙ্গ তর্পন করিয়া পৃক্ষাগৃহে প্রবেশ পূর্বক শিবসূজাদি 战 তান্ত্রিকী পূজা করিবে। †

ইতি পূর্কাহ্নকত্য সমাপ্ত।

মধ্যাহ্নকৃত্য।

(১২ টা হইতে .॥ টা)

দেবপূজান্তে পঞ্চম্যামার্দ্ধে নিত্যহোম, বৈশ্বদেবক্রিয়া, বলি-প্রদান, অতিথিপূজা,নিত্যশ্রাদ্ধ,গোগ্রাসদান ও ভোজন এই সকল কার্য্য সম্পাদন করিবে।

(নিতাহোম)

দিজাতিগৃহ হইতে অগ্নি আনয়ন পূর্ব্বক বৌষড়প্ত মূলমন্ত্র উচ্চারণ করিয়া উহা অভিমন্ত্রিত করত নিরীক্ষণ করিবে। তৎপরে "কট্" মন্ত্রে বহ্হির আবাহন করিয়া মূলমন্ত্রান্তে "হুঁ ফট্ ক্রব্যা-দেভ্যো নমঃ" বলিরা ক্রব্যাদাংশ ত্যাগ করিবে। পরে "ওঁ বহ্হে-র্যোগপীঠার নমঃ বলিরা পূজা করিরা চারিদিকে "ওঁ বামারৈ

^{*} ব্রহ্মনজ্ঞের বিষয় ইতিপূর্ণে (৪৯ পৃষ্ঠায়) লিখিত হইয়াছে। অনেকের ধারণা আছে যে, ইহাও সন্ধার একটি অক্ষরণ; বস্তুতঃ তাহা নহে, উহার উপাদান স্বাধ্যায়পাঠ (অস্কল পায়ত্রীপাঠ) এবং বেদচতুষ্ট্রের চারিটি মন্ত্রের জপ। ঐ মন্ত্র চারিটির মন্ত্রে প্রবেদায় প্রথমটিতে অগ্নির, বজুর্নেদার বিতীয়টিতে বায়ুব, সামবেদার তৃত্যায়টিতে অগ্নির এবং অর্থনেবিদীয় চতুর্ধটিতে জলের আবাহন ও স্থাতি।ক্রা হয়।

[🛉] পূজাদি পূজাপ্রকরণে জন্টব্য ।

নমঃ, ওঁ জ্যেষ্ঠারৈ নমঃ, ওঁ রেরিক্রা নমঃ, ওঁ অম্বিকারে নমঃ," বলিয়া অর্চনশ করিবে।

অনস্তর মূলমন্ত্র উচ্চারণ পূর্ব্বক "অমুকদেবতাকুণ্ডায় নমঃ" বিলিয়া কুণ্ডের অর্জনা করত তাহার নিমে বাগীশ্বরীকে তত্তদেবতার রূপা ঋতুমতা ধ্যান করিয়া যথাবিহিত অগ্নি আনয়ন পূর্ব্বক বীক্ষণাদি দারা সংস্করণ, "রং" বাজে উদ্ধরণ, মূলমন্ত্রান্তে "হুঁ ফট্" বলিয়া ক্রব্যাদাংশ-পরিত্যাগ, অগ্নিবীজ দারা সংরক্ষণ, হুঁ মন্ত্রে অবগুর্ত্তন, ধেকুমূদ্রা দারা অমৃত্যাকরণ এবং পরিশেষে বাহুদর দারা উত্তোলন পূর্ব্বক কুণ্ডোপরি তিনবার ভ্রামিত করিবে।

তৎপরে "থ্রীং বহ্নিমূর্ত্তরে নমঃ" মদ্রে পূজা, "রং বহ্নিচৈত-ক্যায় নমঃ" মদ্রে চৈতক্সসংযোজন ও "ওঁ চিৎ পিঙ্গল হন হন দহ দহ পচ পচ পর্বাং জ্ঞাপয় জ্ঞাপয় স্বাহা" এই মদ্রে অগ্নি প্রজ্ঞালিত করিয়া নিম্নলিখিত মদ্রে অধ্যুপস্থান করিবে। যথা—

> ওঁ অগ্নিং প্ৰজ্বলিতং বন্দে জাতবেদং হুতাশনম্। স্কুবৰ্ণবৰ্ণমমলং 'সমিদ্ধং বিশ্বতোমুখম্॥

তৎপরে "অগ্নেণুরং অমুকনামাসি" বলিয়া অগ্নির নামকরণ করিয়া "ওঁ বৈশ্বানর জাতবেদ ইহাবহ লোহিতাক্ষ সর্ব্বকর্মাণি সাধয় স্বাহা" এই মন্ত্রে অর্ঘ্যাদি দারা পূজা করত নিম্নলিধিত মন্ত্রকরটি দারাও ঐরপে অর্কনা করিবে। যথা—

ওঁ অগ্নেহিরণ্যাদিসপ্তজিহ্বাভ্যো নমঃ, ওঁ সহস্রাচ্চিষে হৃদয়ায় ইত্যাদ্যগ্রিষড়ঙ্গেভ্যো নমঃ, ওঁ অগ্নয়ে জাতবেদসে ইত্যাদ্যপ্ত-মৃর্ত্তিভ্যো নমঃ, (তন্বাহ্যে) ওঁ ব্রক্ষ্যান্যপ্তশক্তিভ্যো নমঃ, (তন্বহিঃ) ওঁ পন্মাদ্যপ্তশক্তিভ্যো নমঃ, (তন্বাহ্যে) ব্রুড্র ইন্দ্রাদিলোকপালেভ্যো নমঃ, (তন্বাহ্যে) ওঁ বজ্রাদ্যগ্রেভ্যো নমঃ॥ অনস্তর প্রাদেশপরিমিত ছুইটি কুশপত্র স্থতমধ্যে ফেলিয়া সব্য, অপসব্য ও মধ্যভাগে ইড়া, পিঙ্গলা ও সুধুয়াকে চিস্তা করত ক্রব দারা স্বত লইয়া "ওঁ অগ্নয়ে স্বাহা" মদ্রে বহ্নির দক্ষিণনেত্রে এবং বামভাগ হইতে স্বত লইয়া "ওঁ দামায় স্বাহা" মদ্রে বামনেত্রে হোম করিবে। পরে মধ্যস্থল হইতে স্বত লইয়া "ওঁ অগ্নীসোমাভ্যাং স্বাহা" মদ্রে বহ্নির ললাটনেত্রে এবং "নমঃ" মদ্রে দক্ষিণাংশ হইতে স্বত লইয়া "ওঁ অগ্নয়ে স্বিষ্টিকৃতে স্বাহা" মদ্রে বহ্নির বদনে হোম করিবে। তদনস্তর নিম্নলিধিত মদ্রে তিনবার আহুতি দিতে হয়। যথা—

ওঁ ভূঃ স্বাহা, ওঁ ভূবঃ স্বাহা, ওঁ স্বঃ স্বাহা, ওঁ বৈশ্বানর জাত-বেদ ইহাবহ লোহিতাক্ষ সর্বাকশাণি সাধয় স্বাহা॥

অনন্তর মূলমন্ত্র দারা অগ্নির মুখদেশে পঞ্চবিংশতি ঘুতাত্তি দিয়া বহি ও দেবতার সহ আগ্নার ঐক্য চিন্তা করিবে। তৎপরে মূলমন্ত্র দারা একাদশ ঘুতাত্তি দিয়া "ওঁ মূলমন্ত্রস্ত অঙ্গদেবতাত্যঃ বাহা" বলিয়া একটি আত্তি অর্পণ করিবে। তৎপরে মূলমন্ত্র দারা পূর্ণাত্তি দিতে হয়। অনন্তর সংহারমুদ্রা দারা স্বেষ্টদেবতাকে হৃদয়ে আনয়ন পূর্ব্বক "ক্ষমস্ব" বলিয়া বিসর্জ্ঞন করত কর্ম্ম শেষ করিবে।

(देवश्राम्य व। (मवश्क)

অগ্রে স্বীয় বেদবিহিত প্রণালীতে আভ্যুদরিক প্রাদ্ধ করিতে হয়। তৎপরে পূর্ব্বাস্থ্যে দক্ষিণজাত্ব পাতিত করিয়া উপবেশন পূর্ব্বক যথাবিধানে অগ্নিস্থাপন করত দেবতীর্থযোগে সম্বত অন্ন, সম্বত পরমান্ন অথবা জল কিংবা ফল দারা হোম করিবে মন্ত্র যথা—

ওঁ ভূং স্বাহা। ওঁ ভূবং স্বাহা। ওঁ স্বং স্বাহা। ওঁ ভূভূ বিং স্বং স্বাহা। ওঁ দেবক্কু ত সৈননো হবয় জনমানি স্বাহা। ওঁ পিতৃক্ক ত সৈন- দোহবয় জনমানি স্বাহা। ওঁ মনুষ্ঠক ত সৈন দোহবয় জনমানি স্বাহা। ওঁ মানুষ্ঠক ত সৈন চেনক কৈ কেতম স্বাব্যজনমানি স্বাহা। ওঁ যদিবা চ নক কৈ কেতম স্বাব্যজনমানি স্বাহা। ওঁ যদিবাংশ চাবি বাংশ কৈ কেতম স্বাব্যজনমানি স্বাহা। ওঁ এন না এন সোহবয় জনমানি স্বাহা।

প্র: ত্যক মন্ত্র দারা পূথক্ পুথক্ হোম করা কর্ত্তব্য। *
(বলি বা ভূতবক্ষ)

প্রথমতঃ পূর্ব হইতে পশ্চিমদিকে জলসিঞ্চন পূর্বক একটি রেখা অন্ধিত করিয়া তহপরি ''ওঁ বিশ্বেভ্যা দেবেভ্যো নমঃ" এই ময়ে বলি (অয়াদি) প্রদান করিবে। পরে উক্ত ময়েই তহপরি কিঞ্চিৎ জল দিতে হয়। অনস্তর প্রথমোক্ত রেখার উক্তরে আর একটি রেখা অন্ধিত করিয়া "ওঁ সর্বেভ্যো ভূতেভ্যো নমঃ" এই ময়ে পূর্ববং বলি ও জল দিবে। তৎপরে দক্ষিণমুখে বামজামু পাতিয়া উপবেশন পূর্বাক দক্ষিণমুক্তে উত্তরীয় রাখিয়া এ প্রকার রেখা অন্ধিত করত "ওঁ পিতৃভ্যঃ স্বনা" ময়ে পিতৃতীর্ষ দারা তহপরি পূর্ববং বলি ও জল প্রদান করিবে। অনস্তর উহার উত্তরে আর একটি রেখা করিয়া দক্ষিণজামু পাতিত করত উপবেশনান্তে বাময়েন্দে উত্তরীয় রাখিয়া "ওঁ যক্ষন্ নমন্তেহস্ত মামা হিংলীঃ" এই ময়ে বলি প্রদান পূর্বাক "ওঁ যক্ষণে নমঃ" ময়ে জল দিবে।

^{*} মতাশ্বরে এই প্রকার নির্দিষ্ট আছে যে, "ওঁ বিখেদেবায় নমঃ" এই মন্ত্রে পূজাবিধি অনুসারে বোড়শোপচার, দশোপচার বা পঞ্চোপচার পূজা করিলেও বৈখদেবজিয়া সমাহিত হয়। বোড়শোপচার, দশোপচার ও পঞ্চোপচার কাহাকে বলে, ভাহা পরিশিষ্টে লিখিত হইল!

তংপরে পূর্বে।ক্ত যক্ষবলির পশ্চিমদিকে জল দারা একটি উত্তরাগ্র রেখা অঙ্কিত করিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্রে বলি প্রদান কারবে। যথা—

ওঁ দেবা মন্থয়াঃ পশবো বয়াংসি, সিদ্ধাঃ সরক্ষোরগদৈত্যসভবাঃ।
প্রেতাঃ পিশাচান্তরবঃ সমস্তা, যে চারমিক্ছন্তি ময়া প্রদন্তম্ ॥
পিপীলিকাকীটপতঙ্গকাত্মা, বৃভূক্ষিতাঃ কর্মনিবন্ধবদ্ধাঃ।
প্রয়ান্ত তে ভৃপ্তিমিদং ময়ায়ং, তেভা়ো বিস্ফুং মুদিতা ভবন্ত ॥
যেষাং ন মাতা ন পিতা ন বন্ধুনৈ বায়িসিদ্ধিন তথারমন্তি।
তত্ত্পয়েহয়ং ভূবি দত্তমেতং, প্রয়ান্ত ভৃপ্তিং স্থানো ভবন্ত ॥
ভূতানি সর্বাণি তথারমেতং, অহঞ্চ বিষ্কৃর্ন যতোহন্তদন্তি।
তত্মাদহং ভূতনিকায়ভূতমরং প্রয়ন্তামি ভবায় তেষাম্ ॥
চতুর্দশো ভূতগণো য এয়, যত্র স্থিতা যেহখিলভূতসভ্যাঃ।
ভৃপ্তার্থমরং হি ময়া বিস্ফুং, তেরামিদং তে মুদিতা ভবন্ত ॥

বলিপ্রদানান্তে "ওঁ দেবাদিভ্যো নমঃ" মন্ত্রে তর্পরি কিঞ্চিৎ জল দিয়। ভূমিতেও কিঞ্চিৎ জলের ছিটা দিবে। তৎপরে "ওঁ চাগুলপতিতপাপরোগিভ্যো নমঃ", "ওঁ ধর্মরাঙ্গচিত্রগুপ্তাভ্যাং নমঃ", "ওঁ বায়সেভ্যো নমঃ" এই তিন মন্ত্রে তিনবার ভূতলে জল প্রদান করিবে।

তদনস্তর নিম্নলিধিত মন্ত্রটি পাঠ করিয়া "ওঁ বায়সেভ্যো নমঃ" উচ্চারণ পূর্বক বলি প্রদান করিবে। যথা—

ঐক্রবারুণবায়ব্যাঃ সৌম্যা বৈ নৈশ্ব তান্তথা।
বায়সাঃ প্রতিগৃহুত্ত ভূমৌ পিণ্ডং ময়ার্পিতম্॥
তৎপরে নিম্নলিখিত মন্ত্র উচ্চারণ পূর্বক "ওঁ শ্বভ্যাং নমঃ"
বলিয়াও বলি প্রদানঃ করিতে হয়। যথা—-

খানো দ্বো খাবশবলো বৈবস্বতকলোম্ভবো। তাভ্যাং পিণ্ডং প্রযক্ষামি স্থাতামেতাবহিংসকৌ॥ विनिश्रमानारस चििथमध्कात (नुगळ) कतिरव । *

(অতিথিসংকার বা নুযক্ত)

অতিথির পূজা করিয়া স্বয়ং ভোজন করিবে। অভ্যাগত ব্যক্তি ব্রহ্মার স্বরূপ। অতিথি প্রিয় হউক্, দেষ্টা হউক্, মূর্থ হউক, বিদ্বান হউক, ব্রাহ্মণ হউক, চাণ্ডাল হউক, যেরূপই হউক্ না কেন, দেবতাজ্ঞানে সেবা করিবে। অতিথি আসিলে তাঁহার নিবাস, নাম, গোত্র, বিছা, কুল কিছুই জিজ্ঞাসা করিতে নাই; আহারান্তে জিজ্ঞাস। করিতে পারে। তই দণ্ডের আট ভাগের এক ভাগ সময়ের মধ্যে অতিথি না আসিলে তদীয় অংশ গাভীকে ভোজন করাইবে অথবা অগ্নিতে নিক্ষেপ করিবে।

(নিতাশ্রার)

অতিথিসৎকারের পর নিতাশাদ করিতে হয়। কেবলমাত্র ষ্ট্পিতৃগণকে অর্থাৎ পিতৃপক্ষীয় তিন ও মাতৃপক্ষীয় তিন পুরুষকে यात्र भूर्विक किक्षिৎ किक्षिৎ व्यन्न वा किक्षिৎ जन मिरनिर्रे এ कार्या সমাহিত হয়। †

^{*} বলিক্রিয়ার পূর্বে কোন ভিক্ষক উপস্থিত হইলে তাহাকে শক্তাত্মারে ভিক্ষা দিৰে। পথিক, ক্ষীণবৃত্তি ব্যক্তি, বিভাগী, ব্ৰহ্মচারী, গুরুপোষক ও যতি, এই সকল ব্যক্তিকে ভিকুক ৰলা যায়।

[†] শাস্ত্রেও ইহার প্রমাণ আছে। যথা--অহন্যহনি বৎ প্রান্ধং তরিত্যমভিধীয়তে। বৈশ্বদেবাদিহীনং তৎ তদশক্তাবুদকেন তু॥

(গোগ্রাসদান)

তদনস্তর এক গ্রাস ঘাস অথবা অন্ত কোন বৃদ্ধ লইয়া নিমলিখিত মন্ত্র পাঠ পূর্ব্বক গোরুকে প্রদান করিবে। যথা—
শৌরভেয়াঃ সর্ব্বহিতাঃ পবিত্রাঃ পুণারাশয়ঃ।
প্রতিগৃহস্ত মে গ্রাসং গাবস্ত্রৈলোক্যমাতরঃ॥
তৎপরে নিম্নলিখিত মন্ত্রে প্রণাম করিবে। যথা—
পঞ্চভূতে শিবে পুণাে পবিত্রে স্থ্যসন্তবে।
প্রতীচ্ছেমং ময়া দত্তং সৌরভেয়ি নমোহস্ত তে॥
নমো গোভাঃ শ্রীমতীভাঃ সৌরভেয়ীভা এব চ।
নমো ব্রহ্মস্থতাভাশ্চ পবিত্রাভায় নমো নমঃ॥

(ভোজন)

ভোজনবিধি।—প্রথমতঃ দেহের পাঁচটি অংশ (হস্তদ্বর, পদদর ও মুখ) ধৌত করত পূর্কামুখ হইর। অন্ধ ভোজন করিবে। তৎকালে পবিত্র আসনে বিসিবে, মুখ পরিক্ষার রাখিবে, প্রীতিপূর্ণচিত্তে আহার করিবে এবং উত্তরমুখে বা বিদিল্পুথে (কোণাকুণিভাবে) বিসিবে না। * দক্ষিণমুখে বা পশ্চিমমুখে বসিয়াও ভোজন করিতে পারে, কিন্তু পিতামাতা জীবিত থাকিলে দক্ষিণমুখেও ভোজন নিষিদ্ধ। হস্তে হীরকাঞ্বরী ভিন্ন অন্ত কোনরূপ রক্মাঞ্বরীয় ধারণ পূর্বক ভোজন করিবে।

গোময় দারা উপলিপ্ত, সম ও পবিত্র স্থানে লঘু আসনোপরি উপবেশন পূর্বক ভোগন করিতে হয়। ব্রাহ্মণ চতুক্ষোণ, ক্ষল্রিয়

পুত্রবান্ ব্যক্তি ব্যতীত অন্য সকলে উত্তরমূবে আহার করিতে পারে,
 কেহ কেহ ইরপে ব্যবস্থাও দিয়। থাকেন।

ত্রিকোণ, বৈশু গোলাকার এবং শূদ্র অদ্ধচন্দ্রাকার মণ্ডল করিয়া তত্বপরি ভোজনপীত্র স্থাপন করিবে।

ভগ্ন কাঁসার পাত্র, তামপাত্র, লোহ ও সাঁসকনির্মিত পাত্র, মলিন পাত্র, পদ্ম ও পলাশপত্র এবং পত্রের পৃষ্ঠদেশে আহার নিষিদ্ধ। ত্রন্ধচারী, যতি ও বিধবার পক্ষে কাংশুপাত্র একেবারেই নিষিদ্ধ; কারণ, শাস্ত্রে কাংশুপাত্র মৃত্তিকাবৎ পরিগণিত।

প্রতিবাদী রন্ধ বা বালক এবং প্রতিবাদিনী রন্ধা, দরিদ্রা বা দরিদা বা দরিদ্রা অভুক্ত থাকিলে তাহাদিগকে আহার করাইয়া পরে স্বরং গোজন করিতে হয়। আহারকালে মৌনভাবে অবস্থান করিবে । শাক, পায়স, ছাতু, অয়, জল, দিরি, মধু এই সকল দ্রব্য ব্যতীত অগ্যান্ত বরের কিঞ্চিৎ অবশিষ্ট রাখিবে, সমস্ত ভোজন করিবে না। শাকাদি দ্রব্য সমস্ত ভোজনে অসমর্থ হইলে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, তাহা জলে ফেলিয়া দিবে, কাহাকেও আহার করিতে দিবে না। নিতান্ত নাচভাবে বিদিয়া (অত্যন্ত নাচু হইয়া) আহার করিবে না এবং হস্ত লারা না উঠাইয়া পশুর মত কেবল মুখ লারাও আহার করিতে নাই।

প্রথমতঃ দ্রবপদার্থ, মধ্যে কঠিনদ্রব্য এবং সর্কাশেষে পুনরায় দ্রবপদার্থ ভোজন করিবে। প্রথমে মধুর রস, তৎপরে লবণ, হলনম্ভর অম্ল এবং অবশেষে কটু ও তিক্তরস সেবন করিবে।

আত্মীয়-ব্যক্তির সহিতও এক-পঙ্ক্তি হইয়া আহার করিবে না। তথ্য, তুণ কিংবা জলের অঙ্ক দিয়া পঙ্ক্তিভেদ করিয়া লইবে। *

* ভসা শব্দে হোমভসাই গ্রাহা। মহারাট্রদেশে আহ্মণেরা জালের অঙ্ক দিয়া তাহার উপর পঞ্চবর্ণের গুঁড়ি বিস্তাস পূর্বক পঙ্কিভেদের চিহ্নগুলি গুদুগু করিয়া থাকেন। পঙ (জিস্থ সকলের আহার শেষ হইলে তৎপরে গণ্ডুষ করিবে। কি
দিবা, কি রাত্রি, কোন সময়েই ছইবার অন্ন (সিদ্ধুকরা ধান্ত, যব,
গম ইত্যাদি) আহার নিষিদ্ধ। দিবাভাগে একাধিকবার আহারের
ইচ্ছা হইলে ফুলমুলাদি ভক্ষণ করিবে। গুরুতর আহার নিষিদ্ধ।
কারণবশে দিবাভাগে গুরুতর আহার হইলে রাত্রিকালে ভোজন
করিবে না। ভুক্তবস্তু সম্পূর্ণ পরিপাকপ্রাপ্ত না হইলে পুনরায়
আহার নিষিদ্ধ। অন্ধুলারা উদরের অর্দ্ধভাগ এবং জল ধারা এক
ভাগ পূর্ণ করিয়া চতুর্ধ ভাগ বায়ুস্কারের জন্ত শৃত্য রাখিবে।

মাথায় কাপড় বান্ধিয়া, হস্তে বা ক্রোড়ে ভোজনপাত্র রাথিয়া, জুতা পায়ে দিয়া, চর্মাদনে বিসিয়া, দাড়াইয়া, শয়ন করিয়া, পাছড়াইয়া অথবা গমন করিতে করিতে আহার করিবে না। আর্দ্র-মস্তকে, আর্দ্রবন্ধে,যানে,শ্মণানে বাদেবালয়ে আহার করিবে না। উচ্ছিপ্ট ভোজন করিবে না। উচ্ছিপ্ট ভোজন করিবে না এবং অহ্য ব্যক্তিকেও উচ্ছিপ্ট প্রদান করিতে নাই। উচ্ছিপ্টপাত্রে মৃতগ্রহণ ও রাত্রিকালে দবিভোজন অকর্ত্ব্য।

অভক্ষ্য।—ব্যভিচারিনী, বার্দ্ধ্ বিক, পতিত, গণিকা, মত্ত, ক্রুদ্ধ, ক্রুর, আতুর, পিশুন, শক্র, স্থাজিত, ব্যাধ, স্ত্রধর, চোর, গায়ক, মিথ্যাবাদী, উচ্ছিষ্টভোজী ইহাদিগের অন্নভোজন নিষিদ্ধ। অবজ্ঞাদত্ত, ভাবহৃষ্ট, বাগ্রৃষ্ট, ক্রণন্নী কর্তৃক দৃষ্ট, রজস্বলাস্পৃষ্ট, ভূজোচ্ছিষ্ট, পদ দার। মন্তিত, অনারত, ক্রীতান্ন, স্তিকান্ন, নগরাধ্যক্ষের অন্ন, রাজান্ন, অবীরার অন্ন, মার্জার-গো-কুরুর-কাকাদিস্পৃষ্টান্ন, পর্যুষিতান্ন ও পুনঃপক অন্ন ভোজন করিবে না। জলপান-সময়ে মুখ হইতে জল অন্নপাত্রে পড়িলে সে অন্ন-ভক্ষণ নিষিদ্ধ। শুদ্দ কর্তৃক আহুত হইয়া অন্ন ভোজন করিতে নাই। বারোরারীর

আর এবং উচ্চৈঃস্বরে ডাকিয়া দেওয়া অরও গ্রহণ করিবে না। বিক্কৃতিপ্রাপ্ত রূব্য ভক্ষণ করিতে নাই। দধি ও দধিজাত দ্রব্যাদি ভিন্ন সর্ব্ধপ্রকার শুক্ত পরিত্যজ্য। * ফল, মূল, কন্দ ও পুস্পাদি হইতে প্রস্তুত শুক্ত মন্ত্রতাসাধক না হইলে সেবন করিতে পারে।

প্রস্বান্তে দশ দিনের মধ্যে (মতান্তরে একবিংশতিদিনের মধ্যে) ছাগীর, মেষীর, গাভীর, সদ্ধিনীর (রুষের জন্ম ইচ্ছাবতী গাভীর), উদ্ধীর, মৃতবৎসা বা দূরস্থবৎসা ধেকুর, মহিষীর এবং গর্দভী প্রভৃতি একশফবিশিপ্ত জীবের হুদ্ধ সেবন করিবে না। দেবতা ও পিতৃলোকের তৃপ্তিসাধন ভিন্ন নিজের জন্ম মৎস্থমাংস আহরণ নিষিদ্ধ। স্থীজাতি মাংসভক্ষণ করিবে না; কিন্তু মতাস্তরে সধ্বার পক্ষে নিবেদিত মাংসভক্ষণের বিধি আছে।

লশুন, ছত্রাক (ভূঁই-ছাতু), পেঁয়াজ, গৃঞ্জন (গাঁজোর), অপবিত্রস্থানজাত ফল, শেতবর্ণ তাল বা বার্ত্তাকী, বর্ত্ত্বলাকার অলাবু, র্থামাংস, কুস্কুম্ভ ও কুন্দবৎ বার্তাকী ভক্ষণ করিতে নাই।

দিনবিশেষে অভক্ষ্য।—প্রতিপদে কুমাণ্ড, দ্বিতীয়ায় বৃহতী, তৃতীয়ায় পটোল, চতুর্থাতে মূলক, পঞ্চমীতে শ্রীফল, ষঞ্চীতে নিম্ব, সপ্রমীতে তাল, অপ্টমীতে নারিকেল, নবমীতে অলাবু, দশমীতে কলম্বী, একাদশীতে শিম, দাদশীতে পৃতিকা, ত্রয়োদশীতে বার্ত্তাকী এবং চতুর্দ্দশীতে মাষকলায় ভোজন করিবে না। রবিবারে আমিষ-ভক্ষণ নিষিদ্ধ। † চতুর্দ্দশী, অপ্টমী, অমাবস্থা, পূর্ণিমা, সংক্রান্তি,

শ মধুররস কালবশে অল্লরসে পরিণত ইইলেই তাহার নাম শুক্ত।
 শেমন—কাঁজি।

[†] আমিবের মধ্যে মৎস্ত ও মাংসই প্রধান বলিয়া গণা। দক্ষদ্রবা, পান, রাঙ্গা নটিয়া ও লেবু এ সমস্তক্ষেও আমিৰ বলা যায়।

ব্রতাহ, শ্রাদ্ধের পূর্বদিন, মৃতাশেচ, কাত্তিকমাদ, বিশেষতঃ বক-পঞ্চকে (কার্ত্তিকী একাদণা হইতে পূর্ণিমা পর্য্যস্ত) এৎস্থ-মাংস-ভক্ষণ নিষিদ্ধ।

জলপানবিধি।—জলপাত্র আপনার দক্ষিণদিকে রাখিবে, বামদিকে রাখিতে নাই। যদি বামদিকে থাকে, তাহা হইলে দক্ষিণদিকে একবার রাখিয়া পরে জলপান করিবে। পীতশেষ জলপান নিধিদ্ধ; এক হস্ত ছারাও জলপান করিবে না।

অনিবেদিত দ্রব্যাদি-ভোজন নিষিদ্ধ; স্কুতরাং অন্নাদি যথা-বিধানে নিবেদন করিয়া ভোজন করিবে। আহারীয়ের মধ্যে মৎস্ত, মাংস বা মুদ্র। থাকিলে * তাহা শোবন করিয়া তৎপরে অন্নাদি নিবেদন করিবে।

মৎস্তাদোধন। — নিম্নলিধিত মন্ত্রপাঠ পূর্বক পক্ষৎস্তের উপর জলের ছিটা দিয়া শোধন করিবে। যথা—

> ওঁ ত্র্যম্বকং যজামহে স্থান্ধিং পুষ্টিবর্ত্ধনম্। উর্ব্বাক্ককমিব বন্ধনাৎ মৃত্যোমু শ্লীয়মামূতাৎ॥

মাংসশোধন।—নিম্নলিখিত মন্ত্রে মাংদের উপর জলের ছিটা দিতে হয়। যথা—

ওঁ এতৰিষ্ণু: স্তবতে বীর্ষ্যেণ মূগো ন ভাম কুচয়ো গরিষ্ঠা যস্তোরুবু ত্রিধু বিক্রমে ধিয়স্তি ভূবনানি বিশ্বাঃ।

মূজাশোধন।—নিম্নলিখিত মন্ত্রে মূজার উপর জলাভ্যুক্ষণ করিবে। যথা—

^{*} नृति, क्री अवः खाका खवारक मूखा वरन।

ওঁ তদ্বিষ্ণুঃ পরমং পদং সদা পশুস্তি স্বরঃ। দিবীব চক্ষুরাততম্। ওঁ তদ্বিপ্রাসো বিপণ্যবে। জাগৃবাংসঃ সমিন্ধতে। বিষ্ণোর্যৎ পরমং পদম্॥

এই প্রকারে মৎস্থাদি শোধন করিয়া অন্নাদি নিবেদন করিবে।

অন্নাদি-নিবেদন ও ভোজনপ্রণালী।—প্রথমতঃ "সুপ্রোক্ষিতমস্তু" বলিয়া অন্নব্যপ্রনাদির উপর জল দারা অভ্যুক্ষণ করিবে।
পরে অবগুঠনমুদ্রা দারা অবগুঠন করিয়া অন্নব্যপ্রনাদির উপর
ধেমমুদ্রা দেখাইবে। তৎপরে মৎস্থমুদ্রা দারা আচ্ছাদন পূর্বক

অন্নাদির উপর দশবার মূলমন্ত্র জপ করিয়া পুনরায় মূলমন্ত্র উচ্চারণ
করত "এতৎ সন্থতোপকরণমন্ত্রং অমুকদেবতায়ৈ নমঃ" বলিয়া
নিবেদন করিবে। তদনস্তর নিয়লিখিত মন্ত্রে অন্নকে প্রণাম
করিবে। যথা—

ওঁ তেজাহিদ দহোহদি বলমদি লাজোহিদ দেবানাং ধাম-নামাদি। বিশ্বমাদ্ব সর্বমাদ্ব সর্বমাদ্ব সর্বান্তভূঃ॥

অনস্তর নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়িয়া তিনবার ভূতলে কিঞ্চিৎ আর স্থাপন করিতে হয়। যথা—

ওঁ ভুবঃ পতয়ে স্বাহা, ওঁ ভুবনপতয়ে স্বাহা, ওঁ ভূতানাং পতয়ে স্বাহা, ওঁ স্বঃপতয়ে স্বাহা॥

তৎপরে ভূমির উপর অল্পপরিমাণ আর পাঁচ ভাগে রাখিয়া এক গণ্ডুষ জল গ্রহণ পূর্বক "ওঁ নাগায় নমঃ, ওঁ কৃশ্মায় নমঃ, ওঁ কৃকরায় নমঃ, ওঁ দেবদন্তায় নমঃ, ওঁ ধনঞ্জয়ায় নমঃ" এই মন্ত্রে প্রত্যেক ভাগের উপর এক একটু জল দিবে। ইহা দারা বাহ্য পঞ্চবায়ুকে বলিপ্রদান করা হয়। তদনস্তর "ওঁ অমৃতোপস্তরণমসি স্বাহা" বলিয়া এক গণ্ডুষ জল পান করত * অল্প অল্প অল্প তুলিয়া প্রাণাদি মুদ্রা দারা † নিম্নলিখিত পঞ্চমন্ত্রে পাঁচবার ভোজন করিবে। যথা—

ওঁ প্রাণায় স্বাহা, ওঁ অপানায় স্বাহা, ওঁ সমানায় স্বাহা, ওঁ উদানায় স্বাহা, ওঁ ব্যানায় স্বাহা॥

ঐ প্রকারে পাঁচবার মুখে দিয়া ভুক্তাবশেষ মৃত্তিকায় ফেলিবে। পরে নির্জ্জনে উপবেশন পূর্ব্বক ভোজন করিবে।

গণ্ডু ষত্যাগ।—ভোজন সমাপ্ত হইলে অন্নযুক্ত হন্তে এক গণ্ডু ষ জল লইয়া "ওঁ অমৃতাপিধানমসি স্বাহা" এই মন্ত্রে অর্দ্ধাংশ পান করত অবশিষ্টাংশ ভূতলে ফেলিবে ‡ এবং কিঞ্চিৎ উচ্ছিষ্ট অন্ন ও জল গ্রহণ পূর্বকে নিম্নলিধিত মন্ত্র পড়িয়া ভূতলে স্থাপন করিবে। যথা—

> ওঁ রৌরবে পুণ্যানলয়ে পদার্ক্কুদনিবাসিনাম। প্রাণিনাং সর্কভূতানামক্ষয়মুপতিষ্ঠতাম্॥ §

- শতপ্রমতে নিয়লিখিত মল্লে পণ্ডুব করিতে হয়। যথা —
 ওঁ লক্ষাপণং লক্ষ হবিল ক্ষায়ে লক্ষাপ ছতয়।
 লক্ষাব তেন পন্তবাং লক্ষক্ষাসমাধিনা॥
- † মূলাপ্রকরণে সমস্ত মূলার বিধিই লিখিত আছে !
- ‡ মাংসভোজন করিলে কিঞ্ছিৎ জল বারা হন্তপ্রকালন পূর্বক অরযুক্ত জলগণ্ডুয় গ্রহণ করিতে হয়।
- § এই মন্ত্র পাঠ লা করিয়া কেহ কেহ "ওঁ উচ্ছিয়ভাদধেয়েভো লমঃ"
 বলিয়াও ভূতলে স্থাপন করেন।

ভোজনশেষ হইবামাত্র উচ্ছিষ্টপাত্র স্থানাস্তরিত ও উচ্ছিষ্টস্থান পরিকার করিবে; নচেৎ আচাস্ত হইলেও অণ্ডচি বলিয়া পরিগণিত হইতে হয়। ভোজনাস্তে আচমন।—তৎপরে জল ও মৃত্তিকা দারা হস্ত ধোত করিয়া আচমন করিবে এবং এরূপভাবে দস্তলগ্ধ দ্রব্য বাহির করিবে বৈন ক্ষত না হয় অথবা রক্ত না পড়ে; পরস্ত নথ দারা বাহির করিবে না। পরে পদপ্রকালন পূর্বক উপবিষ্ট হইয়া (১২ পৃষ্ঠার লিখিত) যথাবিধানে আচমন করিবে এবং নিম্নলিখিত মন্ত্রে দক্ষিণচরণের অন্তুঠে জল দিবে। যথা—

> ওঁ অঙ্গুষ্ঠমাত্রঃ পুরুষঃ অঙ্গুষ্ঠঞ্চ সমাশ্রিতঃ। ঈশঃ সর্বাস্থ জগতঃ প্রভুঃ প্রীণাতু বিশ্বধৃত্ব॥

তংপরে নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়ির। উদরে হাত বুলাইতে হয়। যথা—

যথা সমস্তেক্তিরদেহিদেহে, প্রধানভূতো ভগবান্ যথৈকঃ। সত্যেন তেনারমশেষমেতৎ, আরোগ্যদং মে পরিণামমেতু॥

> বীর্য্যবন্তা যথৈবারং পরিণামমূবৈতি বৈ। সত্যেন তেন যদ্ভুক্তং জীর্য্যন্ত্রমিদং তথা॥ *

এই প্রকারে আহার পরিসমাপ্ত করিয়া তাম্বূল দেবন করিতে হয়।

^{*} নিম্নলিখিত মন্ত্ৰ পাড়িয়া হস্ত বুলাইবারও বিধি আছে। যথা—
ওঁ অগ্নিরাপ্যায়তাং ধাতৃং পার্থিবং প্রনেরিত:।
দন্তাবকাশো নভদা জনমন্ত্র মে সুখন্॥
প্রাণাপানসমানানামুদানব্যানয়োত্তথা।
অনং পুতিকরং চাল্ল মমাল্লব্যাহতং সুখন্॥
অপন্তাবহ্নির ড্বানলন্চ, ভুক্তং ময়ায়ং জনমন্তশেষন্।
সুখং মনৈতৎ পরিণামসন্তবং, যক্তর্নোগং মম চাল্ল দেহে॥

তামূলভক্ষণ।

তাম লভক্ষণের পূর্ব্বে একবার আচমন করিবে। পানের বোঁটা খাইলে পীড়া, অগ্রদেশ খাইলে পাপ ও শিরা ভক্ষণ করিলে বুদ্ধিত্রংশ হয়; স্মৃতরাং ঐ সমস্ত ফেলিয়া ভক্ষণ করিবে। শুষ পানভক্ষণও নিধিদ্ধ; কারণ, উহা আয়ুঃক্ষয়কর।

ইতি মধ্যাহকত্য সমাপ্ত।

অপরাহ্নকৃত্য।

(ষষ্ঠ ও সপ্তম্যামার্দ্ধকৃত্য) (১॥টা ২ইতে ৪॥টা)

অনস্তর অপরাহ্মকৃত্য আরম্ভ হইবে। আহারান্তে বর্চ ও সপ্তমযামার্দ্ধে ক্ষণকাল বিশ্রামের পর ইতিহাস ও পুরাগাদি ধর্মশাস্ত্রাদির
আলোচনা করিবে এবং নিদ্র দক্রীড়াদি পরিত্যাগ পূর্বক, যে সমস্ত ক্রিয়া চিত্তরঞ্জক ও যাহা বারা ধর্ম ও জ্ঞানের রৃদ্ধি হয়, তত্তৎক্রিয়ার অনুষ্ঠান করিবে। এ সময়ে কাহারও সহিত বিবাদ বা পরনিন্দা করিবে না।

অফ্টমযামার্দ্ধকৃত্য।

(৪॥টা হইতে ৬টা)

তৎপরে অষ্টমযামার্দ্ধের কিয়দংশ পর্যান্ত অর্থাৎ দিবার শেষ-ভাগে কিঞ্চিৎ ভ্রমণ করিবে এবং শিষ্টজন ও আত্মীয়বন্ধুগণের সহিত সদালাপে অতিবাহিত করিবে। *

শাল্পেও ইহার প্রমাণ আছে, বথা—
 "মহংশেবং সমাসীত শিষ্টেরিট্রেক্ট বন্ধুভিঃ

সায়াহ্নকৃত্য।

অষ্টমযামার্দ্দের শেষভাগে অর্থাৎ স্থ্যান্তের একদণ্ড বিলম্ব থাকিতে সায়ংসন্ধ্যা করিবে। পশ্চিমাস্ত বা বায়ুকোণাভিমূ্থ হাইয়া সায়ংসন্ধ্যা করিতে হয় এবং সন্মুখে তারকাদর্শন যাবৎ গায়ত্রী জপ করিবে। *

রাত্রিকৃত্য।

(প্রথম্যামক্ত্য)

(৩টা হইতে ১টা)

অতঃপর রাত্রিক্তাের অন্ধর্চান করিবে। রাত্রির প্রথমযামে দিবাক্বত কর্ম্মের আলােচনা ও অনক্ষিত ক্রিয়া সম্পাদন করিবে অর্থাৎ দিবাভাগে কি কি কার্য্য করা হইয়াছে, মনে মনে ভাহারই আলােচনা করিতে হয় এবং ভ্রমবশে বা অন্ত কােন কারণে দিবা-ভাগে যে সকল ক্রিয়ার অনুষ্ঠান হয় নাই, সেই সকল বৈধকর্ম সম্পাদন করিতে হয়।

> (দ্বিতীয়ধামক্বত্য) (৯টা হইতে ২২টা)

এই যামের প্রথমে রাত্রিভোজনের পূর্বকৃত্যস্বরূপ বৈশ্বদেব, বলি ও অতিথিসৎকার করিয়া ১১টার মধ্যে স্বয়ং আহার

* সায়ংসজ্যাবিধি পূর্বেই লিখিত হইবাছে। গৃহে শালগ্রামশিলা বা দেববিগ্রহাদি থাকিলে এই সময়ে আরাত্রিক (আরতি) করিয়া শীতল দিতে হয় অর্থাৎ জ্বলপানীয়দ্বা ভোগ দেওয়ার নিয়মে দিবে। আরতি ও ভোগ দেওয়ার প্রণালী পরিশিষ্টে দ্রষ্টবা। করিবে। * রাত্রিকালে উদর পূর্ণ করিয়া আহার করিবেনা। আহারের পর ক্ষণকাল বিশ্রাম করিয়া ভৃত্যগণকে তাহাদিগের রাত্রিতে করণীয় সম্বন্ধে আদেশ প্রদান পূর্বক তৎপরে শয়ন করিবে।

(তৃতীয়াদিযামক্বত্য) শয়নবিধি।

মলিন, উচ্চনীচ, ভগ্ন, ক্ষুদ্র, ছিন্ন, জন্তুময় (ছারপোকা প্রভৃতিযুক্তন) আন্তরণরহিত ও অপবিত্র শযায়, পট্রবন্ধে, দাগযুক্ত কম্বলে, কেবলমাত্র মৃত্তিকায় এবং তৃণের উপর শয়ন করিতে নাই। হর্ষ্যান্তের পর খটা বা তক্তপোষের উপর শয়া প্রস্তুত করিয়া শয়ন করিবে। রাত্রিশেষে হর্ষ্যাদ্যের পূর্বেই আবার শয়া তুলিয়া রাথিতে হয়। শয়ার অভাবে ভূতলে কার্পাসবন্ধ বিস্তৃত করিয়া শয়ন করিবে। অক্টের বাবহৃত শয়ায় শয়ন করিবে না, কিয়্ক শয়ায়ায়ীর আজা পাইলে শয়ন করিতে পারে। অশুচি অবস্থায় শয়ন করিতে নাই। উলঙ্গ হইয়া, আর্দ্রবন্ধ ধারণ করিয়া, অথবা উত্তানভাবে (চিৎ হইয়া) শয়ন নিষিদ্ধ। গুরুজন, ধায়া, গো, বিপ্রা ও দেবতা ইহাঁদিগের কোন একটি যে গৃহে থাকে, তাহার উপরিতলে শয়ন করিতে নাই। দিবালয়, য়াশান, লোষ্ট্রময় স্থান, বালুকাময় স্থান, চৈত্যবৃক্ষতল ও চতুপ্রথে শয়ন নিষিদ্ধ। পশ্চিম ও উত্তরদিকে মাথা করিয়া শয়ন করিবে না; প্রশিরা বা দক্ষিণশিরা হইয়া শয়ন করিবে; কিস্ক প্রবাদে

^{*} বৈশ্বদেব, বলি অভিথিসৎকার প্রভৃতি ক্রিয়াবিধি পূর্বেই লিখিত হইয়াছে। দিবার অভিথি অপেকা রাত্রির অভিথিসৎকারে অধিকতর পুণাসঞ্চয় হয়।

পশ্চিমশিরা হইয়া শয়ন করিতে পারে। প্রাচীরাদিতে স্পর্শ না হয়, এরূপ ভাবে শয়্যা প্রস্তুত করিবে।

শয়নকালে মস্তকের নিকট জলপূর্ণ কলস রাখিয়া নিম্নলিখিত মস্ত্রে প্রণাম করিবে, যথা ···

ওঁ বিষ্ণবে নমঃ, ওঁ নন্দিকেশ্বরায় নমঃ, ওঁ নর্ম্মদারৈ নমঃ, ওঁ প্রাতর্ন্ম্মদায়ৈ নমঃ।

তদনস্তর নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়িয়া শয়ন করিতে হয়, যথা— ওঁ নমস্তে নর্মদে নিত্যং ত্রাহি মাং বিষদর্পতঃ॥ এই মন্ত্র পড়িয়া শয়ন করত বিষ্ণুকে "ওঁ নমো ব্রহ্মণ্যদেবায়"

এই মন্ত্র পড়িয়া শয়ন করত বিষ্ণুকে "ওঁ নমো ব্রহ্মণ্যদেবায়" ইত্যাদি মন্ত্রে প্রণাম পূর্ব্বক তদীয় মূর্ত্তি ধ্যান করিতে করিতে নিদ্রিত হইবে। *

দারোপগমন।

রাত্রির তৃতীয় প্রহরে স্ত্রীসহবাস করিতে হয়। ঋতুকালে আপন স্ত্রীতে সঙ্গত হওয়াই কর্ত্তরা। প্রতিমাসে রজোদর্শন হইলে সেই দিন হইতে ষোড়শরাত্রি পর্যান্তই নারীগণের ঋতুকাল বলিয়া অভিহিত। তন্মধ্যে প্রথম তিন দিন স্ত্রীসহবাস নিষিদ্ধ। অব-শিষ্ট কয়দিনের মধ্যে যুগারাত্রিতে অর্থাৎ চতুর্ধ, ষষ্ঠ, অষ্টম, দশম, ঘাদশ, চতুর্দশ ও ষোড়শ রাত্রিতেই স্ত্রীগমন করিবে। পরস্ত ইহার মধ্যে আবার ষষ্ঠী, অষ্টমী, অমাবস্তা, পূর্ণিমা, চতুর্দ্শী, ঘাদশী ও সংক্রান্তি, এই সকল তিথি পরিত্যক্তা। এতস্ব্যতীত

^{*} নিজার পূর্বে মনসাদেবী, আতীক ঋষি, অরৎকারুর্নি, বাসুকি, গরুড়, নলরাজা, মুধিপ্তির, ভাম, অর্জুন, নকুল, সহদেব ও জীমৃতবাহন, ইহা-দিগের নাম শারণ করাও কর্ত্তব্য।

ব্রতাহ, শ্রাদ্ধের দিন ও তৎপূর্ব্বদিন, উপবাসের দিন এবং জ্যেষ্ঠা, মূলা, অপ্লেষা, মঘা, রেবতী, কৃত্তিকা, অশ্বিনী, পূর্ব্বাষাঢ়া, উত্তরাবাঢ়া, উত্তরভাদপদ ও উত্তর্গন্ত্ত্ত্বনী এই সকল নক্ষত্ত্বে স্ত্রীসংসর্গ নিষিদ্ধ। পূর্ণগৃর্ভা স্ত্রীতে অভিগমন করিতে নাই। সহবাসকালে স্ত্রী-পুরুষ উভয়েই দেহ পবিত্র এবং মন প্রফুল্ল ও ভগবচ্চিস্তায় আসক্ত রাখিবে। *

ইতি নিত্যক্বত্য সমাপ্ত।

পূজাপ্রকরণ।

শাস্ত্রে দেবপৃজা সম্বন্ধে বহুবিধ উপচারের বিষয় বর্ণিত আছে।
এ স্থলে তৎসমূদ্য বর্ণন করিয়া গ্রন্থবিস্থৃতি নিপ্পয়োজন।
সাধারণতঃ ষোড়শোপচার, দশোপচার ও পঞ্চোপচার এই তিন
প্রকার উপচার দারা পূজাই প্রচলিত আছে। যে নিয়মে সাধা-

^{*} পুলোৎপাদনার্থই নারীসহবাস করিবে, ইহাই আমাদিণের শাল্পের মুখ্য উদ্দেশ্য। পুলোৎপাদন বেমন বাঞ্চনীয়, পুল্র সুন্দরাকৃতি, দীর্ঘায়ু, মেধাবী, সবল ও বুদ্ধিমান্ হয়, ইহাও সেইদ্ধপ অভিপ্রেত। পরস্তু পুল্রকে তদত্রূপ করিতে হইলে, সহবাসকালে ব্রী-পুরুষ উভয়েই প্রফুলচিত থাকিবে, পরস্পর প্রগাঢ় সান্থিক প্রেমে নিমগ্র হইবে এবং ঈমরে চিত্ত একাগ্র রাখিবে। এইরূপ করিলেই সেই দম্পতির পুলু মে প্রেলিজরূপ গুণশালী হইবে, তাহাতে সন্দেহ নাই। স্বতুকাল ভিন্ন অক্তমনয়েও নারীন মনস্তুষ্টিবিধানার্থ সহবাস করিতে পারা যায় বটে, কিন্তু স্বয়ং কামোপভোগ চরিতার্থ করিবার জন্ম নারীতে উপগত হওয়া অকর্ত্ব্য। ফল কথা, নিয়মান্ত্র্সারে নারীসহবাস করিলে পিত্মাত্দেহের ও তাহাদিগের চিত্তের ভাব এরূপ পরিশুদ্ধ হয় যে, সহজাত দোষনিবন্ধন সন্তান কলাচ অকালে কালগ্রাসে পতিত হয় না।

রণতঃ সর্বত্তি নিত্যপূজার বিধি দৃষ্ট হয়, এ স্থলে তাহাই লিখিত হইল। যে কোন সুপ্রালায়ই হউক্, অগ্রে শিবপূজা করাই কর্ত্তব্য ; এই জন্ম সর্ব্বাগ্রে শিবপূজাপদ্ধতি প্রদর্শিত হইল।

পার্থিবশিবলিঙ্গপূজ। *

লিঙ্গনির্মাণবিধি—"ওঁ হরায় নমঃ" † এই মন্ত্রে এক তোলা বা হুই তোলা মৃত্তিকা গ্রহণ পূর্ব্বক ‡ "ওঁ মহেশ্বরায় নমঃ" বলিয়া অঙ্গুপ্তথমাণ শিবলিঙ্গ নির্মাণ করিবে। মৃত্তিকা সমান তিন অংশ করিয়া উপরের অংশে লিঙ্গ, মধ্যাংশে গৌরীপীঠ (শক্তি-পীঠ) এবং শেষাংশ দারা বেদী (আসন) § প্রস্তুত করিতে হয়।

আলয়ং লিঞ্চমিত্যাহ্ন লিঞ্চং লিঞ্চমুচ্যতে। যশ্মিন্ সর্বাণি ভূতানি লীয়ত্তে বুদ্বুদা ইব॥

লিক্ষার্চনতন্ত্রে লিখিত আছে, শিবপূচ্চা করা রাহ্মণাদি চতুর্বর্বেরই কর্ত্তব্য। শাক্ত, বৈঞ্চব, গাণপ, সৌর প্রভৃতি সকল সম্প্রদায়েরাই অগ্রে শিবপূচ্চা করিয়া পরে ইষ্টদেবতার অর্চ্চনা করিবে।

† পী ও শৃক্ষপণ সকল মন্তেরই প্রণব পরিভ্যাগ করিয়া তৎপরিবর্তে 'নমঃ"শক্ষ উচ্চারণ করিবে; কিন্তু শিবপৃঞ্জাস্থলে যথন "নমঃ" শিবায় নমঃ"

মল্লেই পৃত্সা করিতে হয়, তখন ইহার পূর্কে আবার "নমঃ" বোগ করিবেনা।

়া রাহ্মণ শুকুবর্ণ, ক্ষত্রিয় রক্তবর্ণ, বৈশা হরিদ্রাবর্ণ এবং শৃদ্ধ কৃষ্ণবর্ণ । যুভিকা দারা নিক্স নির্মাণ করিবে।

^{*} বেমন সাগরে বৃদ্বুদরাশি সমুখিত হইয়া আবার সাগরেই বিলয় প্রাপ্ত হয়, তদ্ধণ যে বক্ষসাগরে অনস্তকোটি বক্ষাও বিলীন হইতেছে, সেই পরবক্ষের নামই লিক; স্তরাং লিকপ্তা বলিতে ব্রক্ষোপাসনাই ব্রিভে হইবে। শাল্পেও ইহার প্রমাণ আছে, যথা—

উপরের লম্বমান অংশকে লিঙ্গ, মধ্যাংশকে গৌরীপীঠ এবং নিয়াংশকে বেদী কহে। উভয় হস্তের মধ্যে যে কোন হস্ত দারা শিবলিঙ্গ নির্দ্ধাণ করিবে। এক হস্তে সমর্থ না হইলে ছই হস্ত দারা নির্দ্ধাণ করিবে। এই প্রকারে লিঙ্গনির্দ্ধাণ পূর্বক একটি ক্ষুদ্র গোলাকার মৃত্তিকা লিঙ্গের মস্তকোপরি দিবে। ইহাকেই বক্ত কহে। *

উপবেশন ও আসননিয়ম।—লিঙ্গ-নির্মাণান্তে (৮ পৃষ্ঠার লিখিত বিধানে) পাদপ্রকালন পূর্বাক উত্তরাস্থ হইয়া কুশাসনে, কম্বলাসনে অথবা মৃগরোমজ আসনে উপবেশন করিবে। স্বেচ্ছান্ত যে কোন আসনে বসিবে না, মৃত্তিকাতেও বসিতে নাই। আসনের উচ্চতা তিন অঙ্গুলি, দৈর্ঘ্য হুই হস্ত এবং বিস্তার দেড় হস্তের অধিক হইবে না। (আসন ও মুজাপ্রকরণের লিখিত নিয়মে) পদ্মাসন বন্ধন পূর্বাক উপবেশন করাই কর্ত্তব্য। লিঙ্গের পিনাকটিও যাহাতে উত্তরদিকে থাকে, এই প্রকারে বিশ্বপত্রের সোজা পৃষ্ঠের উপর বসাইবে। পূজার সময় ললাটে ভত্ম বা মৃত্তিকার ত্রিপুণ্ড এবং গলদেশে ক্লোক্ষমালা ধারণ করা কর্ত্তব্য।

স্বস্তিবাচন।—অনস্তর (১২ পৃঃ) আচমন ও বিষ্ণুস্বরণ করিয়। দক্ষিণ-হস্তে গুটিকত অক্ষত (আতপ তণ্ডুল) গ্রহণ পূর্বক নিয়-

শক্তিসহযোগে তাঁহার ধ্যানাদি করা কর্ত্ব্য, এই কারণেই শিবের নিয়ে শক্তি বিরাজিতা থাকেন, তাঁহাকেই গৌরীপীঠ বা ষোনিপীঠ অথবা শক্তিপীঠ বলা যায়। বেদী—উপবেশনার্থ আসন।

^{*} যদি অক্ত ব্যক্তি লিক নির্মাণ করিয়া দেয়, তাহা হইলে পুলক এক-কালেই "ওঁ হরায় মমঃ" ও "ওঁ মহেখরার নমঃ" এই ছইটি মন্ত্র উচ্চারণ করিবে।

লিখিত মন্ত্রে স্বস্তিবাচন করিবে অর্থাৎ সেই তণ্ড্লকরটি নিক্ষেপ করিবে। * যথা—

ওঁ সোমং রাজানং বরুণমগ্নিমনারভামহে। আদিত্যং বিষ্ণুং স্থ্যং ব্রহ্মাণঞ্চ রহম্পতিম্। ওঁ স্বস্তি ওঁ স্বস্তি ওঁ স্বস্তি । †

তৎপরে করযোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ করিতে হয়, যথা— ওঁ স্র্য্যঃ সোমো যমঃ কালঃ সন্ধ্যে ভূতান্তহঃ ক্ষপা। পবনো দিক্পতিভূমিরাকাশং খচরামরাঃ। ব্রাক্ষ্যং শাসনমাস্থায় কল্পধমিহ সন্নিধিম্॥ ‡

- স্ত্রী ও শৃক্তপণ মন্ত্র পাঠ করিবে না, কেবল "নমঃ স্বস্তি, নমঃ স্বস্তি,
 নমঃ স্বস্তি" বলিয়া তঙ্কা নিক্ষেপ করিবে।
- † যজুর্বেদীয় স্বন্তিবাচনমন্ত্র যথা—ওঁ স্বন্তি ন ইল্রো বৃদ্ধশ্রবা: স্বন্তি
 ন: পুষা বিশ্ববেদাঃ স্বন্তি নন্তাক্ষে গ্রিইনেমিঃ স্বন্তি নো বৃহস্পতিদ বাতু। ওঁ
 গণানান্তা গণপতিং হবামহে প্রিয়াণান্তা প্রিয়পতিং হবামহে নিধীনান্তা নিধিপতিং হবামহে বদো মম। ওঁ স্বন্তি ওঁ স্বন্তি ওঁ স্বন্তি।

ঋষেণীয় সন্তিবাচনমন্ত।—ওঁ সন্তি নো মিমীতামধিনী ভগঃ সতি দেবাদিতেরপর্বনং সন্তি প্যা অন্ধরো দধাতু নং। সন্তি দ্যাবা পৃথিবী সুচেতনা
সন্তি নো ৰায়্ম্পক্রবামহৈ। সোমং সন্তি ভুবনভায়স্পতিং। বৃহস্পতিং
সর্বনগণং সন্তয়ে সন্তয় আদিত্যা শোভবন্ত নং বিখেদেবা নো আদ্যাং সন্তয়ে।
বৈশানরো বস্ত্রাগ্রং সন্তয়ে দেবা অভবন্ত ঋভবং সন্তয়ে। সন্তিনো ক্লঃ
পাত্বংহসং সন্তি মিত্রাবক্ষণা সন্তি পথ্যে রেবভিং সন্তি ন ইল্লুক্টাগ্লিক সন্তি
নো অদিতয়ে কৃষি। সন্তি পন্থা অনুচরেম স্ব্যাচল্ডমসাবিব। প্নশিদতা
মতা আনতা সঙ্গমেমহি। সন্তয়্মনং তাক্ষ্মিরিষ্টনেমিং মহদ্ভূতং বায়সং
দেবানায়। অসুর্ঘ্মন্তস্বং সমুৎসূর্ব্হৃদ্যশো নাব্যিবাক্সহেম। অভ্যো
মুচ্মান্তিরসঞ্জয়ঞ্চ সন্ত্যাত্রেয়ং মনসা চ তাক্ষ্যি প্রেভ্গাণেঃ শরণং প্রপদ্যে।
মন্তি সন্থাধে সভয়ং নোহন্তা। ওঁ সন্তি ওঁ সন্তি ওঁ সন্তি।

I কেহ কেহ এই স্থলে সূর্য্যার্ঘ্যপ্রদানের ব্যবস্থা দিয়া থাকেন।

সামান্তার্য।—তদনম্ভর সামান্তার্য স্থাপন করিবে। বামদিকে ভূমিতে একটি চতুকোণ, তন্মধ্যে বৃত্ত এবং তাহার মধ্যে ত্রিকোণ-মণ্ডল অন্ধন পূর্বাক তহপরি "এতে গন্ধপুলো ওঁ আধারশক্তয়ে নমঃ, এতে গন্ধপুলো ওঁ কর্মায় নমঃ, এতে গন্ধপুলো ওঁ অনস্তায় নমঃ, এতে গন্ধপুলো ওঁ পৃথিব্যৈ নমঃ" এই চারি মন্ত্রে চারিবার গন্ধ-পূলা দিবে। * তৎপরে "ফট্" মন্ত্রে কোশা ধৌত করত ত্রিকোণো-পরি একটি পাত্র স্থাপন পূর্বাক তহপরি কোশা রাখিয়া "নমঃ" মন্ত্রে উহাতে জল পূর্ণ করিবে। অনস্তর কোশার অগ্রভাগে অর্ঘ্য সাজাইবে অর্থাৎ গন্ধ, পূলা, অক্ষত, বিশ্বপত্র, গর্ভান্ত ও দুর্বা স্থাপন করিবে। তৎপরে জলশুদ্ধি করিবে।

জলশুদ্ধি। —অন্ধুশমুদ্রাযোগে তর্জনীর অগ্র দারা ঐজল আলোড়ন পূর্ব্বক "ওঁ গঙ্গে চ যমুনে চৈব" ইত্যাদি মন্ত্রে তীর্ধ আবাহন করিয়া "এতে গন্ধপুপে ওঁ জলায় নমঃ" মন্ত্রে জলে গন্ধপুষ্প প্রদান করিবে। পরে "বং" এই মন্ত্রে ধেন্তুমুদ্রা দেখাইয়া মৎস্তমুদ্রা দারা ঐজল আচ্ছাদন করত তর্গুরি দশবার বা অন্তবার প্রণব জপ করিবে। † অনস্তর ঐজল তিনবার ভূতলে ছিটাইয়া দিয়া আপনার মস্তকে ও যাবতীয় প্রজাপকরণে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ প্রক্ষেপ করিবে।

আসনশুদ্ধি।—অনস্তর আসনশুদ্ধি করিতে হয়। ‡ আসনের

পুস্পের অভাব হইলে গন্ধ ও আতপতগুল লইয়া "এতে গন্ধাক্ষতে"
 ইত্যাদিরপ বলিবে।

[†] खी ७ मृज्यभ "नयः" विनिद्ध ।

[‡] কেছ কেছ সামাক্তার্ঘাস্থাপনের পূর্কে আসনশুদ্ধির ব্যবস্থা দিয়া থাকেন।

নিয়ে ত্রিকোণমগুল অন্ধন পূর্ব্বক "এতে গন্ধপুষ্পে ওঁ ব্রীঁ আধার-শক্তিকমলাসনার নমঃ" বলিয়া একটি সচন্দন পুষ্প আসনের উপর দিবে। * তৎপরে আসন ধরিয়া নিয়লিখিত মন্ত্র পাঠ করিবে, যথা—

আসনমন্ত্রস্ত মেরুপৃষ্ঠ-ঋষিঃ স্কৃতলং ছন্দঃ কুর্ম্মো দেবতা আস-নোপবেশনে বিনিয়োগঃ।

ওঁ পৃথি স্বয়া ধৃতা লোকা দেবি স্বং বিষ্ণুনা ধৃতা।
স্বঞ্চ ধারয় মাং নিত্যং পবিত্রং কুরু চাসনম্॥

তৎপরে করযোড়ে (বামে) ওঁ গুরুভ্যো নমঃ, ওঁ পরম-গুরুভ্যো নমঃ, ওঁ পরাপরগুরুভ্যো নমঃ; (দক্ষিণে) ওঁ গণেশার নমঃ; (উদ্ধে) ওঁ ব্রহ্মণে নমঃ; (অধঃ) ওঁ অনন্তায় নমঃ; (মধ্যে) ওঁ নারায়ণায় নমঃ; (সম্থে) ওঁ অমুকদেবতায়ৈ (স্ব স্ব অভীষ্টদেব) নমঃ বলিয়া যথায়থ স্থান স্পর্শ পূর্বক প্রণাম করিবে। †

বিন্নাপসরণ।—তৎপরে বিন্ননিবারণ করিবে। "ওঁ নমঃ
শিবার" মন্ত্র পাঠ সহকারে উদ্ধে নেত্রপাত পূর্বক উদ্ধৃতিগান্ত,
"অস্ত্রার ফট্" মন্ত্র পাঠ সহকারে দক্ষিণ-হস্ত দ্বারা দক্ষিণাবর্ত্তে
মস্তকের চারিদিকে শ্রে জলপ্রোক্ষণ পূর্বক শ্রুমার্গস্থ এবং
বামচরণের গুল্ফ দ্বারা বামদিকে ভূতলে বারত্রয় আঘাত পূর্বক
ভূতলস্থ নিখিল বিন্ন বিদ্রিত হইয়াছে চিস্তা করিয়া, তণ্ডুলের
উপর সাত্রবার "ফট্" এই মন্ত্র জপ করিবে। পরে নারাচমুদ্রা
দারা ঐ তণ্ডুল লইয়া নিম্নলিখিত মন্ত্রপাঠ পূর্বক ভূতলে ফেলিয়া
দিবে। যথা—

^{*} পুষ্পের অভাবে "এতে গন্ধাক্ষতে" বলিয়া সচন্দন আতপতঙ্ল দিবে।

[†] এই স্থলে অনেকে সূর্য্যার্যাপ্রদানের ব্যবস্থা দিয়া থাকেন।

ওঁ অপদর্পম্ভ তে ভূতা যে ভূতা ভূবি দংশ্বিতাঃ। যে ভূতা বিম্নকর্তারন্তে নশুস্ক শিবাজ্ঞা॥

অনস্তর এইরূপ চিস্তা করিবে যে, গৃহমধ্যস্থ বিদ্বরাশিও বিদ্-রিত হইয়াছে।

গন্ধাদির অর্চনা।—অনস্তর গদ্ধাদির অর্চনা করিতে হয়।
শাস্ত্রে লিখিত আছে যে, কোন দ্রব্য অর্চনা না করিয়া দেবতাকে
প্রদান করিলে তাহা দেবতারা গ্রহণ করেন না; উহা অস্ত্রগণের
ভোগ্য হয়। প্রথমে "বং এতেভ্যো গদ্ধাদিভ্যো নমঃ" বলিয়া
গদ্ধাদির উপর তিনবার জলের ছিটা দিবে। তৎপরে গদ্ধপুষ্প
লইয়া "এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ এতদ্ধিপ্রয়ে বিষ্ণবে নমঃ, এতে
গদ্ধপুষ্পে ওঁ এতৎসম্প্রদানেভ্যো নারায়ণাদিভ্যো নমঃ, এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ এতেভ্যো গদ্ধাদিভ্যো নমঃ" বলিয়া এক একটি গদ্ধপুষ্প
প্রক্রেপ করিবে।

নারায়ণাদির অর্জনা।—তৎপরে নিম্নলিখিত মন্ত্রে এক একটি গন্ধপুষ্প প্রক্ষেপ করিয়া নারায়ণাদির অর্জনা করিতে হয়। যথা—

এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ নারায়ণায় নমঃ, এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ গুরবে নমঃ, এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ আদিত্যাদি-নবগ্রহেভ্যো নমঃ, এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ ব্রাহ্মণেভ্যো নমঃ।

গণেশাদিপৃজা।—অনস্তর পঞ্চোপচারে শালগ্রামে বা জলে গণেশাদি পঞ্চদেবতার অর্চনা করিবে। শুদ্র ও স্ত্রীলোকে জলে করিবে।

গণেশপূজা।—প্রথমতঃ "গাং গীং গৃং গৈং গোং গঃ" এই মন্ত্রে করন্তাসাঙ্গতা সপদ্ধতির নিয়মে করাঙ্গতাস করিয়া কূর্মমূজা-যোগে একটি পুষ্প গ্রহণ পূর্ব্বক ধ্যান করিবে। যথা— থবাং স্থলতমং গজেন্দ্রবদনং লম্বোদরং স্থলরং, প্রস্থান্দন্মদগদ্ধল্বমধুপব্যালোলগণ্ডস্থলম্। দস্তাঘাতবিদারিতারিরুধিরৈঃ সিন্দ্রশোভাকরং, বন্দে শৈলস্থতাস্থতং গণপতিং সিদ্ধিপ্রদং কর্মসু॥

এইরপে ধ্যান করত স্বীয় মস্তকে পুষ্পটি দিয়া মানসপূজা সম্পাদন পূর্বক পুনরায় করাজ্ঞাস ও ধ্যানাস্তে শিলার উপর পুষ্পটি দিবে এবং নিয়লিখিতরূপে পূজা করিবে। যথা—

"এষ গন্ধঃ ওঁ গণেশায় নমঃ, এতৎ পুষ্পঃ ওঁ গণেশায় নমঃ, এষ ধ্পঃ ওঁ গণেশায় নমঃ, এষ দীপঃ ওঁ গণেশায় নমঃ, এতলৈবেল্ঞং ওঁ গণেশায় নমঃ।

তৎপরে "ওঁ গণেশায় নমঃ" এই মন্ত্র দশবার বা অস্টোতরশত জপ করিয়া "গুহাদিগুহু" ইত্যাদি মন্ত্রে জপ সমর্পণ পূর্বক প্রণাম করিবে। যথা—

> ওঁ দেবেক্তমৌলিমন্দার-মকরন্দকণারুণাঃ। বিল্লং হরম্ভ হেরম্ব-চরণামূজ্বরেণবঃ॥

তৎপরে "ওঁ শিবাদিপঞ্চদেবতাভ্যো নমঃ" এই মন্ত্রে পঞ্চোপ-চারে পূজা করিয়া স্থ্যপূজা করিবে।

হুর্যাপৃজা—গণেশপৃজাপদ্ধতির নিয়মে "ওঁ শ্রীহুর্যায় নমঃ" এই মন্ত্রে পূজা করিতে হয়। কেবল ধ্যান ও প্রণামমন্ত্র পৃথক্। ধ্যান যথা—

রক্তামু জাসনমশেষগুণৈক সিন্ধং, ভাকং সমস্তজগতামধিপং ভজামি। পদ্মদ্বয়াভয়বরান্দধতং করাজৈ-মাণিক্যমোলিমরুণাঙ্গরুচিং ত্রিনেত্রম্॥ পূজান্তে "এহি স্থ্য সাহস্রাংশো" ইত্যাদি মন্ত্রে অর্থ্যপ্রদান করিয়া "জবাকুসুমসন্ধাশং" ইত্যাদি মন্ত্রে প্রণাম করিবে।

বিষ্ণুপ্জা।—তৎপরে ঐরপ গণেশপূজাপর্দ্ধতি অনুসারে পঞ্চোপচারে "ওঁ বিষ্ণবে নমঃ" মন্ত্রে বিষ্ণুর পূজা করিবে। কেবল ধ্যান ও প্রণামমন্ত্র পৃথক্। ধ্যান যথা—

ওঁ ধ্যেয়ঃ সদা সবিত্মগুলমধ্যবর্তী, নারায়ণঃ সরসিজাদনদলিবিষ্টঃ। কেয়ুরবান্ কুনককুগুলবান্ কিরীটী, হারী হিরঝয়বপুর্যুতশম্খচক্রঃ॥

যথাবিধি পূজান্তে "ওঁ নমো ব্রহ্মণ্যদেবার" ইত্যাদি মন্ত্রে প্রণাম করিবে।

শিবপূজা।—শিবের ধ্যান, পূজামন্ত্র ও প্রণামমন্ত্র যথাস্থানে লিখিত আছে, তদক্ষসারে পঞ্চোপচারে পূজা করিবে।

জয়হ্র্গাপৃজা।—অনন্তর ঐরপে পঞ্চোপচারে "ওঁ হ্র্গারৈ ন্মঃ" মক্ষে জয়হ্র্গার পূজা করিবে। কেবল ধ্যান ও প্রশামমন্ত্র পৃথক্। ধ্যান যথা—

কালান্রাভাং কটাকৈররিকুলভয়দাং মৌলিবদ্ধেশুরেথাং,
শঙ্খং চক্রং রূপাণং ত্রিশিথমপি করৈরুদ্বহস্তীং ত্রিনেত্রাম্।
সিংহস্কদ্ধাধিরুঢ়াং ত্রিভুবনমধিলং তেজসা পুরয়স্তীং,
ধায়েদুর্গাং জয়াখ্যাং ত্রিদশপরিরতাং সেবিতাং সিদ্ধিকামৈঃ॥
যথাবিধি পূজাস্তে নিয়লিখিত মদ্রে প্রণাম করিবে। যথা—
ওঁ সর্কমঙ্গলমঙ্গল্যে শিবে সর্কার্থসাধিকে।
শরণ্যে ত্রাম্বকে গৌরি নারায়ণি নমোহস্ত তে॥
করশুদ্ধি।—তদনস্তর করশুদ্ধি করিবে। একটি সচন্দন পুশা

লইয়া "ঐ রং অস্ত্রায় কট্" মন্ত্রে হস্তদ্বয় দারা উহা ঘর্ষণ পূর্বক বামদিকে কেলিয়া দিবে। তৎপরে সম্মুখভাগে উদ্ধাদিশে ঘথা-ক্রমে তিনটি তালি দিয়া দক্ষিণাবর্ত্তে পূর্ব্বদিক্ হইতে দশদিকৈ তুড়ি প্রদান পূর্বকি দশদিগদ্ধন করিবে।

ভূতশুদ্ধি।—তৎপরে ভূতশুদ্ধি করিতে হয়। "রং" মন্ত্রে জল-ধারা দ্বারা স্বদেহ বেষ্টন পূর্ব্বক ঐ জলধারাকে অগ্নিময় প্রাচীর চিস্তা করত হস্তবয় উত্তানভাবে বামদক্ষিণক্রমে উপযুর্তপরি নিজক্রোড়-দেশে স্থাপন করিবে। অনন্তর "সোহহং"চিন্তা করত * হৃৎ প্রদেশন্ত मी প क निकाद को वा बादक मूना था तक कु छ नि नी मास्कि नह सूर्मा-মার্গে মূলাধার, স্বাধিষ্ঠান, মণিপূর, অনাহত, বিশুদ্ধ ও আজ্ঞা নামক চক্রে চতুর্দল, ষড়্দল, দশদল, ষোড়শদল ও দ্বিদলপদ্ম ভেদ করত মস্তকস্থ অধোবদন সহস্রারকমলের কর্ণিকাভ্যম্ভরগত পরামাত্মাতে সংযোগ করিয়া তাহাতেই দৈহিক ক্ষিতি, অপ্, তেজ, মরুৎ, ব্যোম, গন্ধ, রস, রূপ, শব্দ, স্পর্শ, ছাণ, জিহ্বা, নেত্র, ত্ব্, কর্ণ, বাক্, কর, চরণ, পায়ু, উপস্থ, প্রকৃতি, মন, বুদ্ধি ও অহঙ্কার এই চতুর্বিংশতিতত্ত্বকে বিলীন ভাবনা করিবে। অনম্ভর বামনাসাপুটে "ষং" এই বায়ুবীজ্ঞকে ধূমবর্ণ ভাবনা করিয়া প্রাণায়ামবিধি অমু-সারে ঐ বীজ যোড়শবার জপ করত বায়ু দারা দেহ পূর্ণ করিবে এবং নাসাপুট রোধ করিয়া চতুঃষষ্টিবার জপ স্বারা কুম্ভক করত वामकृकिष्ठ कृष्ण्वर्ग, थर्स, शिक्रनात्व शिक्रनात्क शांशिश्करस्त्र সহিত নিজদেহকে শোষণ করিবে। তৎপরে ঐ বীজ দ্বাত্রিংশদার জপ করিয়া দক্ষিণনাসিকারন্ধারা বায়ু পরিত্যাগ করিবে। অনম্ভর দক্ষিণনাসিকাপুটে "রং" এই অগ্নিবীব্দ চিম্ভা করত উহা

मंख्किविषदत्त "इश्म" अवर मृदक्तत्रा "नगः" िखा कतिद्व ।

ষোড়শবার জপ করিয়া বায়ু দারা দেহ পূর্ণ করিবে এবং নাসাপুট-যুগল রোধ পূর্ব্বক ঐ বীজ চতুঃষষ্টিবার জপসহকারে কুন্তক করিয়া মূলাধারোখিত বহিং দারা পাপপুরুষ সহ নিজ শরীর দগ্ধ করত পুনর্কার দাত্রিংশদার জপ করিবে । তৎপরে বামনাদাপুট দারা দগ্ধভক্ষ সহ ঐ বায়ু ত্যাগ করিবে। তদনস্তর বামনাসাপুটে "ঠং" এই সোমবীজ ধ্যান বরত যোডশবার জপ দারা শ্বাস আকর্ষণ পূর্ব্বক ঐ বীজাকৃতি দোমকে ললাটদেশে ধ্যান করিয়া নাসাপুট-দয় রোধ করিবে এবং "বং" এই বরুণবীজ চতুঃষষ্টিবার জপ করিয়া কুন্তুক করত উল্লিখিত সোমদেব হইতে বিগলিত পঞ্চাশৎ-মাতৃকার্ণস্বরূপ স্থুণা দারা সমগ্র দেহকে নূতন-গঠিতবৎ চিস্তা করিবে। পরে "লং" এই ধরাবীজ দাত্রিংশদার জপ করিয়া নিজ শরীরকে স্থৃদৃঢ় জ্ঞান করত দক্ষিণনাসাপুট দ্বারা বায়ু ত্যাগ করিবে। তদনস্তর "হংসঃ" (শূদ্র ও স্ত্রীলোকেরা "নমঃ") এই মন্ত্র দারা বিলীন কুণ্ডলিনী সহ জীবাত্মাও চতুর্বিংশতি ত্রুকে পুনর্কার স্বস্থানে আবিভূতি ধ্যান করিবে। পরে নিজদেহকে দেব-দেহ সহ অভেদরূপে ধ্যান করিতে হয়। এই প্রকারে ভূতভদ্ধি করিয়া মাতৃকান্তাস করিবে।

মাতৃকাভাদ ।* - প্রথমে করপুট হইয়া নিয়লিখিত মন্ত্র পাঠ করিবে, যথা---

অস্ত মাতৃকামস্কস্ত ব্রহ্মা , ঋষির্গায়ল্রীচ্ছন্দো মাতৃকা-সরস্বতী দেবতা হলো বীজানি স্বরাঃ শক্তয়ো মাতৃকাস্তাদে বিনিয়োগঃ।

 ^{*} মন্ত্রপাঠ সহকারে নির্দ্ধিষ্ট হলে অঞ্লীহাপনকেই তাস বলে। যে
তাসে কোন অঞ্লীর নিয়ন নাই, তথায় পুষ্প হারা অথবা অঞ্জ ও অনামিকা
বোগ করিয়া তাস করিতে হয়।

এই মন্ত্র পাঠ করিয়া মস্তকে দক্ষিণ-হস্ত প্রদা পূর্বক ওঁ ব্ৰহ্মণে ঋষয়ে নমঃ ", মুখে "ওঁ গায়জীচ্ছন্দদে নমঃ", হৃদি মাতৃকাসরস্বত্যৈ দেবতায়ৈ নমঃ", গুছে "ওঁ ব্যঙ্গনেভ্যো বীজেভ্যো নমঃ", পাদয়োঃ "ওঁ স্বরেভ্যঃ শক্তিভ্যো নমঃ" বলিয়া হস্ত স্পর্শ করিবে। * তৎপরে "অং কং খং গং ঘং ঙং আং অসু-ষ্ঠাভ্যাং নমঃ" বলিয়া হুই হস্তেরই তর্জ্জনী অঙ্গুলী বৃদ্ধাঙ্গুষ্ঠের উপর উভয় হস্তের অঙ্গুষ্ঠ তর্জ্জনীর উপর ; "উং টং ঠং ডং ঢং ণং উং মধ্যমাভ্যাং বষট্" বলিয়া উভয় হস্তের রদ্ধাঙ্গুলী মধ্যমার উপর; "এং তং থং দং ধং নং ঐং অনামিকাভ্যাং হুং" বলিয়া উভয় হস্তের বুদ্ধাঙ্গুলী অনামিকার উপর এবং "ওং পং ফং বং ভং মং উং কনি-ষ্ঠাভ্যাং বৌষ্ট" বলিয়া উভয় হস্তের অঙ্গুষ্ঠ কনিষ্ঠার উপর দিবে। পরে "অং যং রং লং বং শং ষং সং হং লং ক্ষং অঃ করতলপৃষ্ঠাভ্যাং দট" বলিয়া দক্ষিণহস্তের তর্জনী ও মধ্যমা যোগ করত বামকরের পৃষ্ঠ ও তলস্পূর্শ পূর্ব্দক তালি দিবে। অনন্তর "অং কং খং গং ঘং ছং আং হৃদয়ায় নমঃ" বলিয়া দক্ষিণহন্তের তর্জনী, মধ্যমা ও অনামার অগ্রদেশ দারা বক্ষঃস্থল ; हैर हर हर कर तर कर किर শির্পে স্বাহা" বলিয়া তর্জনী ও মধ্যমার অগ্র দারা মন্তক; "উং টং ঠং ডং **ঢং ণং উং শিখা**য়ৈ বষ্ট্ৰ" বলিয়া বৃদ্ধাঞ্চুৰ্ছের অগ্ৰ দ্বারা শিখা; "এং তং থং দং দং নং ঐং কবচায় হুং" বলিয়া দক্ষিণ-হস্তের ্রপঞ্চাঙ্গুলীর অগ্রদেশ দ্বারা বামবাহু ও বামহস্তের পঞ্চাঙ্গুলীর অগ্র দারা দক্ষিণ-বাহু এবং "ওং পং ফং বং ভং মং ঔং নেত্র**েরায়** বৌষ্ট্" বলিয়া দক্ষিণ-হস্তের তর্জনী, মধ্যমা ও অনামার অগ্র

সর্বতেই দক্ষিণ-হস্ত খারা স্পর্শ করা বিধি।

দারা যথাক্রমে ছই চক্ষু ও নাসিকার মূল স্পর্ণ করিবে। তৎপরে "আং যং রং লং বং শং ষং সং হং লং ক্ষং আং করতলপৃষ্ঠাভ্যাং ফট্" বলিয়া দক্ষিণ-হন্তের তর্জনী ও মধ্যমা যোগ করত বামহন্তের পৃষ্ঠ ও তল স্পর্শ করিয়া তালি দিবে। * তৎপরে প্রাণায়াম করিতে হয়।

প্রাণায়াম।—"নমঃ শিবায় নমঃ" শিবের এই মূলমন্ত্র বা প্রণব বোড়শবার জপ দারা পূরণ, চতুঃষষ্টিবার জপ দারা কুন্তক এবং দাত্রিংশদার জপ দারা রেচকরূপ প্রাণায়াম করিতে হয়। অসমর্থ হইলে চারিবার জপ দারা পূরণ, ষোড়শবার জপ দারা কুন্তক এরং আটবার জপ দারা রেচন করিবে। প্রাণায়ামের প্রণালী পূর্কেই লিখিত হইয়াছে। †

প্রাণপ্রতিষ্ঠা।—অনস্তর কাংস্থা, রোপ্য বা স্বর্ণপাত্র ইত্যাদি
যথাবিহিত পাত্রে যথাযথভাবে স্থিত শিবলিঙ্গের প্রাণপ্রতিষ্ঠা
করিতে হয় অর্থাৎ লেলিহামুদ্রাযোগে দূর্বনি, তণ্ডুল বা পুষ্প দারা
শিবলিঙ্গ ধরিয়া "ওঁ শূলপাণে ইহ স্থপ্রতিষ্ঠিতো ভব" বলিয়া প্রাণপ্রতিষ্ঠা করিবে। তৎপরে অঙ্গন্তাস ও করন্তাস করিতে হয়। ‡

অক্সাস-কর্মসের প্রণালী সর্ব্রেই এইরূপ, কেবল মন্ত্র ভিন্ন ভিন্ন।

[†] অনেকে পুর্বালিখিত ছলে গণেশাদি পঞ্চদৰতার পূঞা না করিয়া এই ছলে তাহা সম্পাদন পূর্বাক স্থ্যার্ঘ্য দিয়া থাকেন।

[়] অনেকে এই ছানে "হরায় নমঃ" মন্ত্রে শিবলিকের মন্তকে কিঞ্চিৎ জল দিয়া বক্সটি নামাইয়া পিনাকোপরি ছাপন করেন এবং "মহেশ্রায় নমঃ" বলিয়া মন্তকটি একটু টিপিয়া দিয়া তৎপরে প্রাণপ্রতিষ্ঠা করিয়া থাকেন। ফল কথা, লিকের মন্তকে এরপভাবে জল দিবে যে, বক্সটি স্বয়ং ঘথাছানে পতিত হয়। ইহাতে অসমর্থ হইলে হন্ত দারা তুলিয়া পিনাকোপরি রাথিবে।

অঙ্গতাস।—"ওঁ হাদয়ায় নমঃ" বলিয়া বক্ষঃস্থল, "নং শিরসে
বাহা" বলিয়া মস্তক, "মং শিখায়ে বষট্" বলিয়া শিখা,"শিং কবচায়
হুং" বলিয়া বামশাহু ও দক্ষিণবাহু এবং "বাং নেত্রত্রয়ায় বৌষ্ট্"
বলিয়া তুই চক্ষু ও নাসিকার মূল স্পর্শ করত "য়ঃ করতলপৃষ্ঠাভ্যাং
ফট্" বলিয়া বামহস্তের পৃষ্ঠ ও তল স্পর্শ করত তালি দিবে।

করন্তাস।—"ওঁ অঙ্গুষ্ঠাভ্যাং নমঃ, নং তর্জ্জনীভ্যাং স্বাহা, মং মধ্যমাভ্যাং বষট্, শিং অনামিকাভ্যাং হং, বাং কনিষ্ঠাভ্যাং বৌষট্" বলিয়া যথাক্রমে যথাযথ অঞ্গুলীর উপর যথাবিহিত অঙ্গুলী স্পর্শ করাইয়া "য়ঃ করতলপৃষ্ঠাভ্যাং অন্ত্রায় ফট্" বলিয়া দক্ষিণ-হস্তের তর্জ্জনী ও মধ্যমা যোগ করত বামহন্তের পৃষ্ঠ ও তল স্পর্শ করিয়া তালি দিবে। * তৎপরে ঋষ্যাদিক্যাস ও ব্যাপকন্তাস করিতে হয়।

ঋয়াদিতাস।—"ওঁ বামদেব-ঋষয়ে নমঃ" বলিয়া শিরঃ-প্রদেশে, "ওঁ পঙ্ক্তিচ্ছন্দসে নমঃ" বলিয়া মুখে, "ওঁ ঈশানায় দেবতায়ৈ নমঃ" বলিয়া হাদয়ে দক্ষিণ-হস্ত স্পর্শ করাইবে।

ব্যাপকল্যা স। — হস্তদ্বয় প্রসারণ পূর্ব্বক "ওঁ নমঃ শিবায়" বলিয়া তুই হাত মন্তক হইতে চরণ পর্য্যন্ত, গুনরায় চরণ হইতে মন্তক পর্য্যন্ত নয়বার, সপ্তবার, পঞ্চবার অথবা তিনবার লইয়া যাইবে।

ধ্যান।—তদনস্তর কুর্মমুদ্র। দারা বামহস্তে একটি পুষ্প বা বিশ্বপত্র লইয়া ধ্যান করিতে হয়, যথা—

ওঁ ধ্যায়েন্নিত্যং মহেশং রঞ্জতিগরিনিতং চারুচন্দ্রাবতংসং, রক্লাকল্পোচ্ছলাঙ্গং পরশুমূগবরাভীতিহস্তং প্রসন্ম।

পদ্মাদীনং সমস্তাৎ স্ততমমরগণৈর্ব্যান্তকৃতিং বসানং, বিশ্বাদ্যং বিশ্ববীক্ষং নিথিলভয়হরং পঞ্চবক্তং ত্রিনেত্রম্ ॥

এই ধ্যান পাঠ করিয়া পুষ্প বা বিশ্বপত্রটি আপনার মন্তকে দিবে এবং প্রার্থনামুদ্রা প্রদর্শন পূর্ব্বক "আমি শিব" এই প্রকার ভাবনা করত হৃৎকমলাভ্যন্তরে ধ্যানলিখিত আকৃতি চিন্তা করিতে করিতে মানসপূজা করিবে।

মানসপূজা।—মানসার্কনাতে বাহা কিছু কর্ত্তব্য, তৎসমস্তই মনে মনে করিতে হয়। ইহাতে বাহ্ন উপকরণের প্রয়োজন নাই। হৃৎকমলাভ্যন্তরে স্থধাসাগর চিন্তা করিবে। তাহার মধ্যে রত্ত্বলিমায়ন্ত্ব কল্পতরুমুলে দেবতার রূপ ধ্যান করিয়া হৃৎকমলেই আসন প্রদান পূর্বক স্বাগত * জিজ্ঞাসা করিয়া লিঙ্কমূলস্থ কূলকুণ্ডলিনীচক্রন্থিত জলরপ পাত্ত, মনোরূপ অর্ঘ্য, মস্তকন্থিত সহস্রদলপদ্ম হইতে নিঃস্থত স্থধারূপ আচমনীয়, ক্ষিত্যাদি চতুর্বিংশতিতর্বরূপ গন্ধ, দয়াদিরূপ পুষ্প, প্রাণরূপ র্প, তেজোরূপ দীপ, ধর্মাধ্ররূপ নৈবেত্ত, স্থাসাগরের জলরূপ পানীয়, হৃৎকমলস্থ অনাহতচক্রের ধ্বনিরূপ বাত্ত এই সমস্ত মনে মনে অর্পণ করিবে। তৎপরে মনে মনে "ওঁ নমঃ শিবায়" এই মূলমন্ত্র যথাশক্তি জপ করিয়া মনে মনেই স্তবপাঠ, প্রদক্ষিণ ও নমস্কার করিতে হয়। তৎপরে বিশেষার্ঘ্য স্থাপন করিবে।

বিশেষার্য্য। †—সন্মুখস্থ কোশার বামদিকে মৃত্তিকায় জলাভ্যুক্ষণ

অর্চিতব্য দেবভাকে গুভাগমনঞ্জিলাস। করার নাম স্থাপত।

[†] শিবপূজার স্বর্ণ, রৌপ্য বা ভাত্রপাত্তে অর্থাস্থানই কর্ত্তব্য ; শিব ও স্ব্যপ্তার শধ্যে অর্থাস্থাপন করিতে নাই। অ্যান্য দেবতার অর্থাস্থাপন শধ্যে হইতে পারে। অর্থাপাত্র বট্জিংশং অঙ্গুলী-পরিমিত হইলেই উত্তম,

পূর্বক তহুপরি ত্রিকোণমণ্ডল অঙ্কন করিয়া তাহার উপর ত্রিপদী স্থাপন কবিবে। তৎপরে "ফট্" মন্ত্রে জল দারা অর্ঘ্যপাত্র প্রকালন পূর্বকী ত্রিপদীর উপর রাখিয়া "নমঃ" মন্ত্রে তাহাতে গন্ধ, পুষ্প, তণ্ডুল ও দূর্কা দিবে। অনস্তর "ওঁ নমঃ শিবায়" अंटे मृत्यमञ्ज * अवर कर तर दर मर यर मर वर तर वर यर मर छर वर कर भर नर धर जर थर कर गर एर एर ठेर हेर कर कर कर कर हर हर हर पर गर थर कर बार बार खेर धर और धर हर हर श्लार श्लार खेर छेर हेर আং অং" এই বিলোম মাতৃকাবর্ণ উচ্চারণ পূর্বক স্বচ্ছজল দারা অর্য্যপাত্র পূর্ণ করিবে। তদনস্তর ত্রিপদীতে "মং বহ্ন্মিণ্ডলায় দশকলাত্মনে নমঃ", অর্ঘ্যপাত্তে "অং স্থ্যমণ্ডলায় দাদশকলাত্মনে নমঃ", এবং জলে "উং সোমমগুলায় ষোড়শকলাখানে নমঃ" বলিয়া তণ্ডুলপ্রদান পূর্বক পূজা করিয়া অন্ধুশমুদ্রাযোগে অর্ঘ্য-পাত্রস্থ জল আলোড়ন করিতে করিতে "গঙ্গে চ যমুনে চৈব" ইত্যাদি মন্ত্র পাঠ করিবে। পরে এইরূপ চিন্তা করিবে যে, সূর্য্য-মণ্ডল হইতে তীর্থসকল মদীয় অর্ঘ্যপাত্রে অবতীর্ণ হইলেন। অন-ন্তর "ওঁ নমঃ শিবায়" মন্ত্রে হুৎকমলম্থ মহাদেবকে ঐ জলে আন-য়ন পূর্ব্বক "হুঁ" মন্ত্রে জলের উপর অবগুণ্ঠনমুদ্রা প্রদর্শন করত "ফট্" মন্ত্রে ঐ জলের উপর গালিনীমুদ্রা দেখাইবে। তদনস্তর "ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ" মন্ত্রে সেই জলের দিকে দৃষ্টিপাত পূর্বক

চতুর্বিংশতাঙ্গুলী হইলে মধ্যম এবং দাদশাস্ত্রপ্রমাণ হইলেই অধ্য। পরস্ত অষ্টাঙ্গুলীর ন্যুন হইলে ভাহাতে অধ্যস্থাপন করিতে নাই।

* সকল দেবতার পূজাতেই বিশেবার্য্য-স্থাপ্নের প্রণালী এইরূপ। প্রভেদ এই বে, এ স্থলে যেথানে যেথানে "ওঁ নমঃ শিবায়" মূলমন্ত্র আছেছে, সম্মান্য দেবতাপূজায় সেই সেই স্থানে ততুদ্দেবতার মূলমন্ত্র উচ্চার্য্য। গন্ধপুষ্প দারা শিবের ষড়ঙ্গে (অঙ্গন্তাসমন্ত্রে) * পূজা করিবে। যথা---

এতে গন্ধপুপে ওঁ হৃদরার নমঃ, এতে গন্ধপুঞ্চো নং শিরসে স্বাহা, এতে গন্ধপুন্থে মং শিখারৈ বষট্, এতে গন্ধপুন্থে শিং কবচার হুং, এতে গন্ধপুম্পে বাং নেত্রতারার বৌষট্, এতে গন্ধপুম্পে রঃ করতলপৃষ্ঠাভ্যাং অন্ত্রায় ফটু।

এক একটি মন্ত্র পড়িয়া জলে গন্ধপুষ্প প্রদান করিবে। † তদনন্তর গন্ধপুষ্প দারা "ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ" মন্ত্রে সেই জলমধ্যে
শিবের অর্চনা করিয়া মৎস্তমুদ্রা দারা জল আচ্ছাদন পূর্বক তত্বপরি আটবার মূলমন্ত্র জপ করত ধেরুমুদ্রা দেখাইবে। তৎপরে
"ফট্" মন্ত্র উচ্চারণ পূর্বক ঐ জল নির্বিদ্নে রক্ষিত হইল, এই
প্রকার চিন্তা করিয়া ঐ জলের কিঞ্চিৎ তুলিয়া সামান্তার্য্যপাত্রে
স্থাপন করিবে।

পুনর্ধ্যান ও আবাহন ৷—এই প্রকারে বিশেষার্য্যস্থাপনান্তে পূর্ব্ধবং অঙ্গন্তাদ-করন্তাদ করিয়া কুর্মমুদ্রা দ্বারা একটি দচন্দন পূষ্প বা বিশ্বপত্র লইয়া পূর্ব্ধবং ধ্যাব করিবে! তৎপরে দেই পুষ্পে বা বিশ্বপত্রে নিশ্বাদ দ্বারা ব্রহ্মরন্ধু হইটে দেবতাকে শিব-লিঙ্গোপরি আনয়ন ও স্থাপন পূর্ব্বক আবাহনমুদ্রা দ্বারা "উহ পিনাকধৃক্ ইহাগচ্ছাগচ্ছ" বলিয়া আবাহন, স্থাপনীমুদ্রা দ্বারা "ইহ

^{*} অন্তাত্ত দেরতার পূজায় তত্তদেবতার অক্ষতাদমত্রে পূজা করিতে হয়।

+ স্ত্রী ও শৃক্ষেরা "ওঁ নং মং শিং বাং য়ং" এই কয়টি বর্ণের পরিবর্তে "শাং
শীং শৃং শৈং শোং শঃ" এই কয়টি বর্ণ উচ্চারণ পূর্বক ষড়ক্ষপুজা করিবে।

অক্সান্ত দেবতার পূজায় তত্তদেবতার নামের আভক্ষরে ঐরপ দীর্ষসর ও
অক্সার বাগে করিয়া পূজা করিতে হয়।

তির্ছ তির্ছ" বলিয়া স্থাপন, সন্নিধাপনী মুদ্রা স্থারা "ইহ সন্নিধেহি সন্নিধেহি" বলিয়া সন্নিধাপন, সংবোধিনী মুদ্রা স্থারা "ইহ সন্নিক্তম্ব" বলিয়া সংবোধন, সন্মুখীকরণমুদ্রা স্থারা "অত্রাধিষ্ঠানং কুরু মম পূজাং গৃহাণ" বলিয়া সন্মুখীকরণ করত করপুটে "যাবৎ পূজাং করোম্যহং তাবৎ স্থিরো ভব" বলিয়া শিবলিঙ্গকে স্নান করাইবে। *

শিবলিক্ষাপন।—ওঁ পশুপতয়ে নমঃ" বলিয়া অথবা "ইদং মানীয়োদকং পশুপতয়ে নমঃ" উচ্চারণ পূর্বক লিক্ষোপরি তিনবার জল প্রদান করত মান করাইবে। তৎপরে সম্প্রদায়মুসারে বজ্র ফেলিয়া দিয়া পূজায় প্রবৃত্ত হইতে হয়। † শাক্ত, সৌর ও শৈব-গণ ঈশানকোণে, গাণপ শিবলিক্ষের মূলদেশে এবং বৈষ্ণবগণ পৃষ্ঠ-দেশে বজ্রটিকে নিক্ষেপ করিবে।

পূজা। ‡—এতৎ পাছাং ওঁ নমঃ শিবার নমঃ, ইদমর্ঘ্যং § ওঁ নমঃ শিবার নমঃ, ইদমাচমনীয়ং ওঁ নমঃ শিবার নমঃ, ইদং সানীয়ং ওঁ নমঃ শিবার নমঃ, এষ মধুপর্কঃ ওঁ নমঃ শিবার নমঃ, ইদং পুনরাচমনীয়ং ওঁ নমঃ শিবার নমঃ, এষ গন্ধঃ ওঁ নমঃ শিবার

^{*} সকল পূজাতেই আবাহন এইরূপ।

[†] পূর্বেই বলা হইয়াছে যে. শিবের মন্তকে এরপভাবে জল দিবে যেন, বজ্রটি আপনাপনি যথাস্থানে পতিত হয়। তাহা না পারিলে হন্ত হারা উল্তোলন করিয়া যথাস্থানে রাধিতে হয়।

[্]ৰ সমস্ত উপচার শিবের সদ্যোজাত নামক পূর্বদিক্ছ মুখে প্রদান করিতে হয়। তাঁহার পূর্বদিকে সদ্যোজাত, পশ্চিমে বামদেব, উত্তরে অবোর, দক্ষিণে তৎপুরুষ ও উঠ্ছে ঈশান নামক মুখ বিরাজিত।

[§] শিবের অর্থ্যে বিশ্বপত্ত ও রম্ভাও দিবে।

নমঃ, এতৎ পুলাং ওঁ নমঃ শিরায় নমঃ, এতং বিশ্বপত্রং ও নমঃ
শিবায় নমঃ, * এম ধৃপাঃ ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ, এম দীপাঃ ওঁ নমঃ
শিবায় নমঃ, এতৎ নৈবেছাং ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ, † এতং পানার্থজলং ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ, ইদং পুনরাচমনীয়ং ওঁ নমঃ শিবায়
নমঃ, এতৎ তাম্বূলং ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ, এমঃ সচন্দনপুল্পবিশ্বপত্রাজলঃ ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ। এই প্রকারে পূজা করিয়া অন্তম্প্রির
পূজা করিবে। ‡

অষ্টমূর্ত্তিপূজা। —পূর্কাদিকে "এতে গদ্ধপুপে ওঁ সর্কায় ক্ষিতি মূর্ত্তয়ে নমঃ," § ঈশানকোণে "এতে গদ্ধপুপে ওঁ ভবায় জলমূর্ত্তয়ে নমঃ," উত্তরে "এতে গদ্ধপুপে ওঁ রুদ্রায় অগ্রিমূর্ত্তয়ে নমঃ," বায়ু-

* অনেক পুষ্প ইইলে "এডানি পুষ্পাণি" এবং অনেক বিষপত্র ইইলে এডানি বিষপ্রাণি" উচ্চারণ করিতে হয়। মন্ত্রিকা, মালতী, জাতি, শেফালিকা, জবা, বকুল ও কাঠটগর পুষ্প শিবপুজায় নিধিক। বিষপত্রের বৃস্ত ও মূল ভাগে করিয়া এবং দ্ব্রির গর্ভ (কোঁক) ফেলিয়া শিবকে দিবে। ত্রাদ্ধ: গ্রান্ধলিধিত মন্ত্রপাঠ করিয়াও শিবকে বিঅপত্র দিতে পারেন, যথা—

ওঁ তাম কং সঞ্চামতে সুসন্ধিং পুষ্টিবৰ্দ্ধনম্। উৰ্বাক্তকমিৰ বন্ধনাৎ মুকোমু কীয়মামুক্তাৎ স্বাহা॥

- + গদ্ধ মূলা বারা গদ্ধ, পুপামূলা বারা পুষ্পা ধূপ মূলা ধারা ধূপ, দ পামূলা বারা দীপ এবং নৈবেদ্য মূলা বারা নৈবেদ্য প্রদান করিতে হয় । মূলার বিষয় পরিশিষ্টে জন্তব্য। নৈবেদ্য দেবতার বাম, দক্ষিণ বা সন্থোৱা বিশেষ
- ‡ সাধারণত: দশোপচারেই নিত্যপূজা হইয়া থাকে, এই হেতু এ ছলে দশোপচার ধারা পূজাই লিখিত হইল। যোড়শোপচার ধারা পূজা প্রণালীও এইরূপ; কেবল কয়েকটি উপচারমাত্র অধিক দিতে হয়, এই প্রভেদ।
- § পুলের অভাবে আতপতওুল লইয়া "এতে গলাক্ষতে" বলিয়া পুজা
 করিবে।

কোণে "এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ উগ্রায় বায়ুমূর্ত্তরে নমঃ," পশ্চিমে "এতে গদ্ধপুষ্ণে ওঁ ভীমার আকাশমূর্ত্তরে নমঃ," নৈশ্ব তে "এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ পশুপতরে ষজমানমূর্ত্তরে নমঃ," দক্ষিণে "এতে গদ্ধ-পুষ্পেওঁ মহাদেবার সোমমূর্ত্তরে নমঃ," অগ্নিকোণে "এতে গদ্ধপুষ্পে ওঁ ঈশানার স্থ্যমূর্ত্তরে নমঃ।"

জপ ও জপবির্জন।—অনস্তর প্রাণায়াম করিয়া দশবার বা একশত আটবার শিবের মূলমন্ত্র জপ করত "ওঁ গুহাতিগুহা" ইত্যাদি মন্ত্রে বিসর্জন করিবে অর্থাৎ কোশাস্থিত সামান্তার্য্য বা জলগণ্ডুষ দেবতার দক্ষিণকরে মনে মনে দিবে এবং উদ্ধি স্থিত ঈশাননামক মুখে জপফল সমর্পণ করিবে। তৎপরে দক্ষিণহস্তের বৃদ্ধাস্থৃষ্ঠ ও তর্জনী যোগ করিয়া তদ্ধারা "বম্ বম্" শব্দে দক্ষিণ-গালবাত্য করিতে হয়। * সময় থাকিলে স্তবকবচাদি পাঠ করিবে। তদনস্তর "এব পুপাবিল্বপত্রাঞ্জলিঃ ওঁ নমঃ শিবায় নমঃ" মন্ত্রে তিন-বার পুপাঞ্জলি প্রদান করিবে।

প্রণাম। -- তদনন্তর প্রদক্ষিণ করিয়া নিমুলিখিত মন্ত্রে প্রণাম করিবে। যথা—

ওঁ নমস্তত্যং বিরূপাক্ষ নমন্তে দিব্যচক্ষুষে।
নমঃ পিনাকহস্তায় বজ্ঞহস্তায় বৈ নমঃ॥
নমস্ত্রিশূলহস্তায় দণ্ডপাশাসিপাণয়ে।
নমস্ত্রৈলোক্যনাথায় ভূতানাং পতয়ে নমঃ॥
বাণেশ্বরায় নরকার্বিতারণায়,
জ্ঞানপ্রদায় করুণাময়সাগরায়।

* কেহ কেহ প্রণামান্তে গালবাত করিয়া থাকেন

কর্পুরকুন্দধবলেনুজ্জটাধরায়,
দারিজ্যকৃষ্ণধন্দর নমঃ শিবায় ॥
নমঃ শিবায় শাস্তায় কারণত্রয়হেতবে।
নিবেদয়ামি চায়ানং ত্বং গতিঃ পরমেশর ॥
নমস্তে ত্বাং মহাদেব লোকানাং গুরুমীশরম্।
পুংসামপূর্ণকামানাং কামপুরামরাজ্বি পম্॥

আত্মসমর্পণ।—দক্ষিণ-করে বিশেষার্য্যক্তন গ্রহণ পূর্বক নিম্ন-নিখিত মন্ত্রে উহা শিবলিক্ষোপরি প্রদান করিবে। যথা—

ইতঃ পূর্বং প্রাণবৃদ্ধিদেহধর্মাধিকারতো জাগ্রৎ-স্বপ্নসূষ্প্ত্য-বস্থাস্থ মনসা বাচা হস্তাভ্যাং পদ্ধ্যামূদরেণ শিশা যৎ স্বৃতং যত্তং যৎ ক্বতং তৎ সর্বং শ্রীশিবায় স্বাহা। মাং মদীয়ং সকলং সম্যক্ শ্রীশিবচরণে সমর্পয়ে।

ক্ষমাপ্রার্থনা।—এই প্রকারে আত্মসমর্পণ করিয়া করপুটে
নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ পূর্বক ক্ষমা প্রার্থনা করিবে। যথা—ু

ওঁ আবাহনং ন জানামি নৈব জানামি পৃজনম্। বিসর্জনং ন জানামি ক্ষমস্ব পরমেশ্বর॥

বিসর্জন।—অনস্তর ঈশানকোণে জলের ছিটা দিয়া ত্রিকোণমণ্ডল অন্ধন পূর্বাক সংহারমূদ্রা দ্বারা একটি নির্ম্মাল্য লইয়া নাসিকাগ্রে আঘাণ লইবে। আঘাণ করিতে করিতে এইরূপ চিস্তা
করিবে যে, পূজিত দেবতা হৎকমলমধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। তৎপরে ঐ পূষ্ণটি পূর্ব্বোক্ত ত্রিকোণমণ্ডলের উপর রাখিয়া "এতে
গন্ধপুষ্পে ওঁ চণ্ডেশ্বরায় নমঃ" মন্ত্রে মণ্ডলোপরি পূজা করত
"মহাদেব ক্ষমস্ব" বলিয়া শিবটিকে কাইত করিয়া ফেলিবে।

তৎকালে শিবের মস্তকে একট জলও দিতে হয়। * তৎপরে চরণামৃত ও নির্মাল্যাদি গ্রহণ কর্ত্তব্য। শিবনির্মাল্য ও নৈবেচ্ছাদি অগ্রে বিষ্ণুকে নিুবেদন করিয়া তৎপরে গ্রহণ করাই বিধি।

वानित्र निवश्रका।

বাণলিক্ষে শিবপূজাও পার্ষিবশিবলিক্ষ-পূজাপদ্ধতি অনুসারে করিতে হয়। কেবল প্রভেদ এই যে, ইহাতে আবাহন, বিসর্জন ও প্রাণপ্রতিষ্ঠা নাই এবং ''হোঁ বাণেশ্বরায় নমঃ" মন্ত্রে সমস্ত উপচারাদি প্রদান করিতে হয়। বিশেষতঃ যেখানে যেখানে 'নমঃ শিবার নমঃ' এই মূলমন্ত্রের প্রয়োগ আছে, তথায় ''হোঁ" মন্ত্র

ওঁ প্রমত্তং শক্তিসংযুক্তং বাণাখ্যঞ্চ মহাপ্রভম্। কামবাণাবিতং দেবং সংসারদহনক্ষমম্। শৃঙ্গারাদিরসোলাসং বাণাখ্যং পরমেশ্বরম্॥

পার্থিব-শিবলিঙ্গপৃজা-পদ্ধতি অনুসারে পূজা করিয়া শিবের স্তবকবচ পাঠ করিবে এবং সমর্থ হটলে বাণলিঙ্গের স্তবকবচও পাঠ করিতে হয়।

গুরুপূজা।

প্রথমতঃ আচমনান্তে ধ্যান করিয়া মানসপূজা করিবে । যথা-

সর্ব্যক্তই এই প্রণালীতে পার্থিবশিবলিকপুজা করিবে; কেবল শিব-রাত্রিক্তো কিঞ্চিৎ বিশেষ আছে, তাহা পরিশিষ্টে লিখিত হইল। প্রতিষ্ঠিত মূর্তিতে বা জলে পূজা করিলে আবাহন, বিসর্জ্জন ও প্রাণপ্রতিষ্ঠা করিতে হয় না। তন্তির সমন্তই পার্থিবশিবলিক-পূজাপদ্ধতি অমুসারে করিবে।

গুরুধ্যান।

শিরসি সহস্রদলকমলাবস্থিতং শ্বেতবর্ণং দিভুজম্।
বরাভয়করং শ্বেতমাল্যাস্থলেপনং স্বপ্রকাশর্মপ্রা।
স্ববামস্থিত-সুরক্তশক্ত্যা স্বপ্রকাশস্বরূপয়া সহিতং গুরুম্॥
স্ত্রীগুরু হইলে নিম্নলিধিতরূপে ধ্যান করিবে। যথা --

প্রীগুরুর ধ্যান।

সহস্রারে মহাপা কিঞ্জন্ধগণশোভিতে।
প্রফুল্লপদ্মপত্রাক্ষীং ঘনপীনপারাধরাম্।
প্রদারবদনাং ক্ষীণ-মধ্যাং ধ্যায়েচ্ছিবাং গুরুম্।
পদ্মরাগদমাভাদাং রক্তবন্ত্রস্থশোভনাম্।
রক্তকুত্ত্মপাণিঞ্চ রক্তন্পুরশোভিতাম্।
স্থলপদ্মপ্রতীকাশ-পাদপদ্মবিশোভিতাম্।
শরদিন্প্রতীকাশাং রক্তোদ্ভাসিতকুগুলাম্।
স্থনাথবামভাগস্থাং বরাভয়করামুক্তাম্॥

কৃশ্বমুদ্রা-যোগে একটি পুষ্প হস্তে লইয়া এই প্রকারে ধ্যান করত আপন মুস্তকে দিয়া মানসপূজা করিবে; কিন্তু প্রাতঃক্তার মানসপূজা স্থলে পুষ্পের আবশুক করে না, মনে মনেই সমস্ত কার্য্য শেষ করিবে।

মানসপূজা।* -এই প্রকারে ধ্যানান্তে গুরুদেবকে সদাশিব-মূর্ত্তি এবং দ্বীগুরু হইলে শক্তিমূর্ত্তি চিন্তা করত মানস পঞ্চোপ-

প্রাতঃরুত্যমধ্যে (৩৩৪ পৃষ্ঠায়) মে গুরুদেবের ধ্যান ও মানসপ্রাদির কথা বলা হইয়াছে, দে স্থলে এই প্রকার বিধানে তত্তৎকার্য্য
সম্পাদন করিবে।

চারে অর্চনা করিবে। যথা—"ঐং শ্রীঅমুকানন্দনাথগুরবে * লং ভ্র্ম্যাত্মকং গন্ধং সমর্পরামি" এই বাক্যে স্বীয় শরীরস্থ পার্বিবাংশ গন্ধরপে কল্পনী করত গন্ধমুদ্রা দেখাইবে; "ঐং শ্রীঅমুকানন্দনাথগুরবে হং আকাশাত্মকং পুলাং সমর্পরামি" এই বাক্যে শরীরস্থ আকাশকে পুলারপে কল্পনা করত পুলামুদ্রা দেখাইবে; "ঐং শ্রীঅমুকানন্দনাথগুরবে যং বায়াত্মকং ধৃপং সমর্পরামি" বাক্যে শরীরস্থ বায়ুকে ধৃপরপে কল্পনা করত ধৃপমুদ্রা দেখাইবে; "ঐং শ্রীঅমুকানন্দনাথগুরবে রং বহ্যাত্মকং দীপং সমর্পরামি" বাক্যে শরীরস্থ বহ্নিকে দীপরপে কল্পনা করত দীপমুদ্রা দেখাইবে এবং "এং অমুকানন্দনাথগুরবে বং জলাত্মকং নৈবেছাং সমর্পরামি" বাক্যে শরীরস্থ জলীয় অংশ নৈবেছারপে কল্পনা করত নৈবেদ্যাম্প্রা দেখাইবে। তৎপরে করন্তাদ ও অঞ্বন্তাদ করিতে হয়।

করন্তাস ।—"গাং অঙ্কুষ্ঠাভ্যাং নমঃ" বলিয়া হুই হস্তেরই বৃদ্ধাঙ্গুলীর উপর তর্জ্জনীষয়, "গীং তর্জ্জনীভ্যাং স্বাহা" বলিয়া তর্জ্জনীর
উপর অন্ধুষ্ঠ, "গৃং মধ্যমাভ্যাং বষট্" বলিয়া মধ্যমার উপর অন্ধুষ্ঠ,
"গৈং অনামিকাভ্যাং হুং" বলিয়া অনামিকার উপর অন্ধুষ্ঠ এবং
"গোং কনিষ্ঠাভ্যাং বৌষট্" বলিয়া উভয় হস্তের কনিষ্ঠার উপর
অন্ধুষ্ঠম্বয় স্থাপন করিবে। তৎপরে "গঃ করতন্ত্রপৃষ্ঠাভ্যাং অন্ধায় ফট্"
বলিয়া দক্ষিণকরের তর্জ্জনী ও মধ্যমা যোগ করত বামকরের পৃষ্ঠ ও
তলদেশ স্পর্শ পূর্মক তালি দিবে। তৎপরে অন্ধৃষ্ঠাস করিতে হয়।

অঙ্গন্যাস।—"গাং স্থান্য নমঃ" বলিয়া দক্ষিণকরের তর্জনী, মধ্যমা ও অনামিকার অগ্রদেশ বারা স্থান্য, "গীং শিরদে স্বাহা"

 ^{*} যেখানে যেখানে "এঅমৃকানলনাণ" আছে, সেই সেই ছানেই নিজ্প গুরুদেবের নাম উচ্চারণ করিবে।

বাক্যে তর্জনী ও মধ্যমার অগ্র দ্বারা শিরঃপ্রদেশ, "গৃং শিখারৈ বষট্" বাক্যে অন্ধৃষ্ঠাগ্র দ্বারা শিখা,'গৈং কবচায় হুঁ'বাক্যে দক্ষিণ-হস্তের পঞ্চান্থূলীর অগ্র দ্বারা বামস্কন্ধ ও বামকরের পঞ্চান্থূলীর অগ্র দ্বারা বামস্কন্ধ ও বামকরের পঞ্চান্থূলীর অগ্র দ্বারা দক্ষিণস্কন্ধ এবং "গৌং নেত্রত্রয়ায় বৌষট্" বাক্যে দক্ষিণকরের তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামিকার অগ্র দ্বারা ক্রমান্তরে নেত্রদ্বয় ও নাসামূল স্পর্শ করিবে। পরে "গঃ করতলপৃষ্ঠান্ত্যাং অস্ত্রায় ফট্" এই বাক্যে দক্ষিণ-হস্তের তর্জ্জনী ও মধ্যমা যোগ করত বামকরের পৃষ্ঠ ও তল স্পর্শ করিয়া তালি দিবে।

পূজা।—অনস্তর পুনরায় ধ্যান করিয়া পঞ্চোপচারে বা দশো-পচারে অর্চনা করিবে। "ঐ শ্রীগুরবে নমঃ" এই মন্ত্রে সমস্ত উপচার প্রদান করিতে হয়। তৎপরে পুনরায় উপরি-উক্তরূপে করাঙ্গতাস করিয়া গুরুপংক্তিনমস্কার করিবে।

শুরুপঙ্ ক্তিনমস্কার ও জপবিসর্জন।—কর্যোড়ে বামে "ওঁ শুরুভা নমঃ, ওঁ পরমগুরুভা নমঃ, ওঁ পরাপরগুরুভা নমঃ, ওঁ পরাপরগুরুভা নমঃ, ওঁ পরমেঞ্চীগুরুভা নমঃ; দক্ষিণে "ওঁ গণপতয়ে নমঃ; মধ্যে "এঁ শ্রীগুরুবে নমঃ"এই প্রকারে প্রণাম করত *"এঁ "এই মূলমন্ত্র অস্টো-জরশত জপ করিয়া"গুহাতিগুহু"ইত্যাদি মন্ত্রে জপবিস্ক্রন করিবে।

গুরুপ্রণাম।—তৎপরে গুরুদেবকে প্রণাম করিতে হয়। যথা---

ওঁ অখণ্ডমণ্ডলাকারং ব্যাপ্তং যেন চরাচরম্। তৎপদং দর্শিতং যেন তক্ষৈ শ্রীগুরবে নমঃ॥ অজ্ঞানতিমিরাশ্ধস্য জ্ঞানাঞ্জনশলাকয়া। চক্ষুরুন্মীলিতং যেন তক্ষৈ শ্রীগুরবে নমঃ॥

অস্তান্ত দেবতার্চনার সময় তত্তদেবতার মৃলমন্ত্রযুক্ত নাম উচ্চারণ
 করিতে হয়।

নমোহস্ত গুরবে তত্মা ইষ্টদেবস্বব্ধপিণে। যস্ত বাক্যামৃতং হস্তি বিষং সংসারসংজ্ঞিতম॥

অনস্তর "প্রক্ষোদানন্দনাথায় গুরবে নমঃ, সনকানন্দনাথায় গুরবে নমঃ, কুমারানন্দনাথায় গুরবে নমঃ, বশিষ্ঠানন্দনাথায় গুরবে নমঃ,, ক্রোধানন্দনাথায় গুরবে নমঃ, সুখানন্দনাথায় গুরবে নমঃ, বোধানন্দনাথায় গুরবে নমঃ" এইরূপে নমস্কার করিয়া গুরুর স্তব, কবচ ও গুরুগীতা পাঠ করিবে। স্ত্রীগুরু হইলে তদীয় স্তবকবচ পাঠ করিতে হয়।

গুরুপাত্বকাপূজা।*

ঐ হ্রী স্ত্রী হস খ ফ্রেছসক্ষম লবর যুঁহসক্ষম লব র যীং হেসাঃ প্রীঅমুকানন্দনাথ গুরো প্রীঅমুকি দেব্যম্ব † প্রীগুরু-পাত্নাং পূজ্যামি।

এই মন্ত্র স্মরণ পূর্ব্ধক গুরুপ্রণামমন্ত্রে প্রণাম করিয়া গুরু-পাতুকান্তোত্তাদি পাঠ করিতে হয়।

कुछनिनी शृजा। इ

"হুঁ" অথবা "হংসঃ" (বৈষ্ণবগণ এই স্থানে "সোহহং" উচ্চা-

প্রাতঃকত্যের মধ্যে যে গুরুপাছকাপৃদ্ধার উলেথ হইয়াছে, তথায় এই
নিয়্মে পৃলা করিবে।

[়] প্রাতঃক্তার মধ্যে যে ক্ওলিনীপুন্ধার উলেথ হইয়াছে, তথায় এই প্রভিতে মনে মনে পূজা করিবে। সেই স্থলে কেহ কেহ গুরুপার্কাপ্তার অগ্রে ক্ওলিনীপুনা এবং কেহ কেহ গুরুপার্কাপ্তার অল্ডে ক্ওলিনীপুনা

রণ করিবেন) এই মন্ত্র উচ্চারণ করিয়া মূলাধারের ত্রিকোণস্থিত বহ্নি প্রজ্ঞালন পূর্বক কুণ্ডলিনী শক্তিকে জাগরিতা করিবে এবং স্থ্যাভ্যন্তর দিয়া সহস্রদলকমলস্থ * পরমশিবে সংযোজিত করিবে। তৎপরে পুনরায় "সোহহং" মন্ত্রে † স্থ্যুমামার্গে মূলাধারে সংস্থাপন পূর্বক মনে মনে নিম্নলিখিতরূপে ধ্যান ও পূজা করিবে। যথা—

> ধ্যায়েৎ কুগুলিনীং স্ক্ষাং মূলাধারনিবাসিনীম্। তামিষ্টদেবতারূপাং সার্দ্ধত্রিবলয়ারিতাম্। কোটিসোদামিনীভাসাং স্বয়স্তুলিঙ্গবেষ্টিতাম্॥

এইরূপে ধ্যান করিয়া "ঐ" মস্ত্রে গন্ধ, পুষ্প, ধৃপ, দীপ, নৈবেছ্য ও পানীয় প্রদান পূর্ব্ধক অষ্টোত্তরশতবার "ঐ" মন্ত্র জপ করিয়া ইষ্টদেবতার নমস্কারমন্ত্রে ‡ নমস্কার করিবে। পরে ঐ প্রকারে গন্ধাদি দারা ইষ্টদেবতার মানসপূজা করিয়া অষ্টোত্তর-

করিয়া থাকেন। মেরুদণ্ডের বামে ইড়া, দক্ষিণে পিঞ্চলা ও মধ্যভাবে সুষুমা নাড়ী বিভামান। তন্মধ্যে সুষুমার গ্রন্থিতে যথাক্রমে মুলাধারপান, সাধিষ্ঠানপান, মণিপূরপান, অনাহতপান, বিশুন্ধপান ও আজ্ঞাপান অবস্থিত আছে। মুলাধারপান চতুর্দ্ধলা ও বক্তবর্ণ, মলগারের চতুর্দ্ধলা উর্দ্ধে এই পান অবস্থিত। ঐ পান্ধের বীজকোষমধ্যে ত্রিকোণ একটি চক্র আছে, তন্মধ্যে স্বয়ন্ত্রিক অধোবদনে অবস্থিতি করিতেছেন! কুলকুণ্ডলিনীশক্তি ঐ স্বয়ন্ত্রিকাককে, বেষ্টন পূর্বকি বিরাজিতা রহিয়াছেন। তিনি সান্ধিত্রিবলয়বেষ্টিনী, নিজিতভুজ্গাকারা, অতি স্ক্রেওরা, শতকোটিতড়িন্বৎ কান্তিমতী, গাদশাস্ক্লপরিমিতা এবং ইষ্টদেবীস্কর্মপাণী। তিনি ধ্যানপ্রা।; সাধারণ চকুর দৃষ্ঠানহেন।

সহস্রদলপদ্ম শিরঃপ্রদেশে অবস্থিত।

⁺ देवश्ववशन अहे " (माश्र्वः" श्राम "इश्म" উচ্চারণ করিবেন।

[‡] শাক্তপণ শক্তিনমস্কারমন্ত্র, বৈফবেরা বিস্থানমস্কারমন্ত্র, কুফোপা-সকেরা কৃষ্ণনমস্কাম্মন্ত্র, শৈবগণ শিবনমস্কারমন্ত্র, গাণপুগণ গণেশপ্রণাম-

শত মূলমন্ত্র জপ করত "গুহাতিগুহু" ইত্যাদি মন্ত্রে জপবিসর্জন করিবে। তৎপরে ইষ্টদেবতার প্রণামমন্ত্রে প্রণাম করিতে হয়।

শালগ্রামশিলায় নারায়ণপূজা।

আচমন হইতে গন্ধাদির অর্চনা পর্য্যস্ত সকল ক্রিয়া শিবপূজা-পদ্ধতির লিখিত নিয়মে সম্পাদন করিবে।

শালগ্রামন্ধান।—অনস্তর ঘণ্টাধ্বনি সহকারে নিম্নলিখিত মন্ত্রে শালগ্রামশিলাকে ন্নান করাইতে হয়। যথা—

> ওঁ সহস্রশীর্ষা পুরুষঃ সহস্রাক্ষঃ সহস্রপাৎ। স ভূমিং সর্ব্বতঃ পৃষ্টু । অত্যতিষ্ঠদ্দশাঙ্গুলম্॥

পঞ্চদেবতাপূজা।—এই প্রকারে স্নান করাইয়া "এতৎ স্নানীয়োদকং ওঁ বিষ্ণবে নমঃ" উচ্চারণ করিবে। পরে একটি সচন্দন
তুলসীপত্র (চিৎভাবে) পরাইয়া যথাস্থলে শিলাস্থাপন করত
শিবপূজাপদ্ধতির নিয়মে নারায়ণাদির অর্চ্চনা, পঞ্চোপচারে পঞ্চদেবতার পূজা এবং করন্সাসাঙ্গন্তাসাদি করিবে। পরস্তু "নাং নীং
নুং নৈং নোং নঃ" এই মন্ত্র দারা অঙ্গন্তাস ও করন্সাস করিতে হয়।
মূলপূজা।—অনস্তর শিবপূজাপদ্ধতির নিয়মে ধ্যান ও মানসপূজা
করিয়া পুনরায় ধ্যানাস্তে দশোপচারে অর্চ্চনা করিবে। যথা—
এতৎ পাজং ওঁ বিষ্ণবে নমঃ, (বা নারায়ণায় নমঃ), ইদ-

মন্ত্র এবং অপরাপর দেবোপাসকের। তত্তৎপ্রণামমন্ত্রে প্রণাম করিবে। কতক-গুলি দেবদেবীর প্রণামমন্ত্র পরিশিষ্টে জট্টব্য।

রাহ্মণ ব্যতীত অপর কেহ এ পৃঞ্চায় অধিকারী নহে। নারায়ণপূজার
সময় (১৯ পৃষ্ঠার লিখিত নিয়মে) বৈঞ্চব তিলক ও সংস্কৃত তুলসীমালা ধারণ
করা কর্তব্য। (বৈঞ্বতিলকধারণ ও তুলসীমালাসংস্কারবিধি বর্তমান গ্রন্থের
প্রকাশক শ্রীশরচন্দ্র চক্রবর্ত্তী প্রকাশিত "শ্রীশ্রীহরি ভক্তিবিলাস" গ্রন্থে সবিভার

मर्चाः उँ विकाद नमः, रेममाठमनीग्रः उँ विकाद नमः, रेमः झानीत्या-मकः उँ विकाद नमः, এव गक्षः उँ विकाद नमः, এতৎ পूष्णः उँ विकाद नमः, এতৎ সচন্দনতুলসীপত্রং उँ नमत्छ वह क्रिशाः विकाद পরমান্মনে স্বাহা उँ विकाद नमः, এव ध्लः उँ विकाद नमः, এव मौलः उँ विकाद नमः, এতৎ নৈবেজং उँ विकाद नमः, रेममाठ-मनौगः उँ विकाद नमः। *

জপবিদর্জন ও প্রণাম। —পূজান্তে "ওঁ নারায়ণায়" এই মন্ত্র দশবার বা অষ্টোত্তরশতবার জপ করিয়া "গুহাতিগুহু" ইত্যাদি-মন্ত্রে জপবিদর্জন করত নিম্নলিখিত মন্ত্রে প্রণাম করিবে। যথা—

> ওঁ ধ্যেয়ং সদা পরিভবন্নমভীষ্টদোহং, তীর্থাস্পদং শিববিবিরিঞ্চিত্নতং শরণ্যম্। ভৃত্যার্ত্তিহং প্রণতপাল ভবান্ধিপোতং, বন্দে মহাপুরুষ তে চরণারবিন্দম্॥

বিবৃত আছে।) একত্র ছুইটি শালগ্রামশিলা, ছুইটি শিবলিক অথবা ছুইটি শক্তিমূর্ত্তি রাখিতে নাই; যদি থাকে, তবে পৃথক্ পৃথক্ অর্চনা করিবে। বহু-শিলা একত্র থাকিলে, এক পৃঞ্জাতেই কার্য্য সম্পন্ন হয়। নিবেদিত পৃষ্প দারা দেহতাকে সজ্জিত করিবে না।

^{*} শেওচন্দন, অগুরু, কুছুম, কপুরি, বেণামূল, দেবদারু বা পদ্মক, কুড় ও জ্ঞানাংসী, ইহাই বিষ্ণুপ্রাবিষয়ক পদ্ধ। কুল, বাসক, কহলার, কুরবক, মল্লিকা, তগর, ভূমিচম্পক, মালতী, বক, জাতি, লবঙ্গ, শেফালিকা, পেত-জ্বা, পলাশ, অশোক, পাটল, অতসী, মূধিকা, কদম, বকুল, করবী, পদ্ম, কেন্তকী, নাগকেশর এই সকল পুস্পই বিষ্ণুপ্রায় প্রশন্ত। পুস্প যে ভাবে প্রস্কৃতিত হয়, সেই ভাবে দেবতাকে দিবে। তুলসীপত্র চিৎ করিয়া দিতে হয়। অনেক পুস্প হইলে যে ভাবে ইচ্ছা দিতে পারে। পদাদিস্ট, কাট-কেশাদিহট, মলিন, নির্গন্ধ, আত্রাত, উগ্রসন্ধ ও প্রমুবিত পুস্প হারা প্রা

ত্যক্ত্বা স্বহস্ত্যজ্-স্থরেন্সিতরাজ্যলন্ধীং,
ধর্মিষ্ঠ .আর্য্যবচদা যদগাদরণ্যম্।
শারামৃগং দয়িতয়েন্সিতমন্বধাবদ্বন্দে মহাপুরুষ তে চরণারবিন্দম্॥
ওঁ পাপোহহং পাপকর্মাহং পাপাত্মা পাপদন্তবঃ।
ত্রাহি মাং পুগুরীকাক্ষঃ সর্ব্বপাপহরো ভব॥ *
ওঁ নমো ব্রহ্মণ্য গোবিন্দায় নমো নমঃ॥

অনস্তর গৃহে লক্ষী, সরস্বতী, মনসা বা অতাত্ত দেবতা থাকিলে অথবা ইচ্ছা হইলে শালগ্রামশিলাতেই তাঁহাদিগের পূজা করিবে। পূজাপ্রণালী সমস্তই একরপ, কেবল ধ্যান ও প্রণামমন্ত্র পৃথক্ এবং উপচারাদিপ্রদান স্থলে তত্তদ্বেবতার নাম উল্লেখ করিয়া দিবে, এইমাত্র প্রভেদ।

অনস্তর "আদিত্যাদিনবগ্রহেভ্যো নমঃ,ইন্দ্রাদিদশদিক্পালেভ্যে।
নমঃ, সর্ব্বদেবতাভ্যো নমঃ" এই কয়টি মন্ত্রে পঞ্চোপচারে পূজা
করিয়া করযোড়ে নিম্নলিখিত মন্ত্র উচ্চারণ করিবে। যথা—

ওঁ মন্ত্রহীনং ক্রিয়াহীনং ভক্তিহীনং জনার্দন। যৎ পৃজিতং ময়া দেব পরিপূর্ণং তদস্ত মে॥ ইতি পূজাপ্রকরণ সমাপ্ত।

করিবে না; কিন্তু তুলসীপত্র পয়্রিষত হইলেও দেবৈ নাই। অঙ্গুষ্ঠ ও তর্জ্জন দারা বোঁটা ধরিয়া পুষ্প ও তুলসী প্রদান করিবে। নারায়ণকে তুলসীপ দশ বা অষ্টোত্তরশত অথবা যত ইচ্ছা দিতে পারে।

"সর্ব্বপাপহরে। হরি:" ইতি বা পাঠ:।

আসন ও মুদ্রাপ্রকরণ। *

আসনবিধি।

আসনানি সমস্তানি যাবস্তো জীবজন্তবঃ।
চতুরশীতিলক্ষাণি শিবেন কথিতং পুরা।
তেষাং মধ্যে বিশিষ্টানি ষোড়শানাং শতং কৃতম্।
তেষাং মধ্যে মর্ত্ত্যলোকে দ্বাত্রিংশদাসনং শুভম্॥

জগতে জীবজন্তুর সংখ্যা যত, আসনের সংখ্যাও তত প্রকার।
মহাদেব চতুরশীতিলক্ষ আসনের উল্লেখ করিয়াছেন; তন্মধ্যে
যোড়শশত শ্রেষ্ঠ; যোড়শশতের মধ্যে মনুয়ালোকে দ্বাত্রিংশৎ
আসনই শুভকর।

দ্বাত্রিংশদ্বিধ আসনের নাম।

সিদ্ধং পদ্মং তথা ভদ্রং মৃক্তং বজ্রঞ্চ স্বস্তিকম্।
সিংহঞ্চ গোমুখং বীরং ধক্মরাসনমেব চ।
মৃতং গুপ্তং তথা মাৎস্তং মৎস্তেলাসনমেব চ।
গোরক্ষং পশ্চিমোন্তানং উৎকটং সন্ধটং তথা।
ময়ুরং কুরুটং কৃর্মং তথা চোন্তানকৃর্মকম্।
উত্তানমণ্ডুকং বৃক্ষং মণ্ডুকং গরুড়ং বৃষম্।

^{*} আসন ও মুদ্রাসমূহের মধ্যে যে কয়টি বিশেষ প্রশস্ত, তাহাই এ ছলে লিখিত হইল, বৃধা গ্রন্থভিতিতয়ে অক্যাক্তলি পরিত্যাপ করা পেল। ফল কথা, অক্সাক্ত আসন ও মুদ্রাসমূহ যোগসাধনাদি উচ্চতম ক্রিয়াকাতেই বিশেষ আবিশ্রক; তৎসমন্ত গ্রন্থান্তর ইইতে বা শুক্রদেবপ্রমুখাৎ জ্ঞাতব্য।

শলভং মকরং উট্টং ভুজকঞ্চ যোগাসনম্। ছাত্রিংশদাসনানি স্কার্ম র্ত্তালোকে চ সিদ্ধিদম॥

সিদ্ধাসন, পিলাসন, ভদাসন, মুক্তাসন, বজ্ঞাসন, স্বস্তিকাসন, সিংহাসন, গোমুখাসন, বীরাসন, ধকুরাসন, মৃতাসন, গুপ্তাসন, মংস্থাসন, মংস্থাসন, গোরক্ষাসন, পশ্চিমোপ্তানাসন, উৎকটাসন, সক্ষটাসন, ময়ুরাসন, কুকুটাসন, কুর্মাসন, উপ্তানক্র্মকাসন, উপ্তানমণ্ড,কাসন, রক্ষাসন, মগুকাসন, গরুড়াসন, র্যাসন, শলভাসন, মকরাসন, উপ্তাসন, ভুজঙ্গাসন ও যোগাসন, মর্ত্তালোকে এই দাত্রিংশদিধ আসন শুভকর।

সিদ্ধাসন।

যোনিং সংপীত্য যত্নেন পাদম্লেন সাধকঃ।
মেট্রোপরি পাদম্লং বিস্তদেৎ যোগবিৎ সদা।
দৃষ্ট্যা নিরীক্ষ্য ক্রমধ্যং নিশ্চলঃ সংযতেক্রিয়ঃ।
বিশেষাবক্রকায়শ্চ রহস্ম্যদেগবর্জিতঃ।
এতৎ সিদ্ধাসনং জ্রেয়ং সিদ্ধানাং সিদ্ধিদায়কম্।
নাতঃ পরতরং শুহুমাসনং বিস্ততে ভুবি॥

বামচরণের গুল্ফ দারা সমত্রে যোনি (লিক্স ও গুছের মধ্য-ভাগ) নিপীড়ন পূর্বক দক্ষিণচরণের মূলদেশে (যাহাতে লিক্সদার বদ্ধ হয়, এই প্রকার) লিক্সের উপর রাখিবে এবং সংযতেন্দ্রিয় ও ন্থিরকায় হইয়া ক্রমধ্যে স্থিরদৃষ্টি স্থাপন করিবে। বিশেষতঃ বিরলে চপলতাশ্রু হইয়া এরপভাবে বিসিবে যে, দেহের কোন অংশই যেন বক্র না হয়। ইহারই নাম সিদ্ধাসন। ইহা সিদ্ধগণের সিদ্ধিপ্রদ, ধরাতলে ইহা অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ আসন আর নাই।

পদ্মাসন।

উত্তানো চরণো ক্ববা উক্তসংস্থে প্রযন্ততঃ।
উক্তমধ্যে তথোতানো পাণী ক্ববা তু তাদৃশোণ।
নাসাত্রো বিশুসেদৃদৃষ্টিং দস্তমূলঞ্চ জিহ্বরা।
উত্তত্য চিবুকং বক্ষ উত্থাপ্য প্রবনং শনৈঃ।
যথাশক্ত্যা ততঃ পশ্চাৎ রেচয়েদবিরোধতঃ।
ইদং পুলাসনং প্রোক্তং সর্বব্যাধিবিনাশনম্॥

বামচরণতল দক্ষিণ-উরূপরি এবং দক্ষিণচরণতল বাম-উরূপরি সমত্রে উত্তানভাবে রাখিয়া গুরূপদেশক্রমে করতলয়ুগলও উরুদয়ন্মধ্যে ঐরূপ উত্তানভাবে রাখিবে এবং দস্তমূলে জিহ্বা রাখিয়া নাসাত্রে দৃষ্টিস্থাপন করিবে। এতদ্যতীত বক্ষঃস্থল কিঞ্চিৎ উন্নত করিয়া তাহাতে চিবুকস্থাপন পূর্বক ধীরে ধীরে বায়ু আকর্ষণ করত তল্পারা মথাশক্তি উদর পূর্ণ করিবে। দেহের অবিরোধে সাধ্যাকুসারে কুম্বক করিয়া শেষে অবিলম্বে ঐ বায়ু ত্যাগ করিতে হয়। ইহারই নাম পদ্মাসন; ইহা দারা সর্বব্যাধি দূর হয়।

ভদ্রাসন।

গুল্ফে চ র্ষণস্থাধো ব্যুৎক্রমেণ সমাহিতঃ। পাদাঙ্গুঠে করাভ্যাঞ্চ ধ্বা চ পৃষ্ঠদেশতঃ। জালন্ধরং সমাসাগ্থ নাসাগ্রমবলোকয়েৎ। ভদ্রাসনং ভবেদেতৎ সর্বব্যাধিবিনাশনম্॥

অগুকোষের নিমে গুল্ফ্রয় বিপরীতভাবে রাখিয়া পৃষ্ঠের দিক্ দিয়া হস্তদ্বর প্রদারিত করত হুই পদের অঙ্গুষ্ঠ ধারণ করিবে এবং জালন্ধরবন্ধ করিয়া নাসাগ্রে দৃষ্টিস্থাপন করিতে হইবে। ইহারই নাম ভদ্রাসন, ইহা সর্কব্যাধি বিনাশ করে।

মৃতাসন।

উত্তান্দাববদ্ভূমে শয়ানন্ত শবাসনম্।
শবাসনং শ্রমহরং চিত্তবিশ্রান্তিকারকম্॥
শববৎ ভূমিতে শয়ন করিলেই মৃতাসন বা শবাসন হয়। ইহা
শ্রমনাশক ও চিত্তবিনোদনকর।

মৎস্থাসন।

মুক্তপদ্মাসনং রূপা উত্তানশ য়নং চরেৎ।
ক্রকরীভ্যাং শিরো বেষ্ট্য মৎস্ঠাসনস্ত রোগহা॥
মুক্তপদ্মাসন করিয়া কণুই দ্বারা মস্তক পরিবেষ্টন করত উত্তানভাবে শয়ান হইলেই মৎস্ঠাসন হয়। ইহা সর্বরোগ দূর করে।

গুপ্তাসন।

জান্ধনোরস্তরে পাদে কথা পাদে চ গোপয়ে ।
পাদেপরি চ সংস্থাপ্য গুহুং গুপ্তাসনং বিহুঃ ॥
জান্ধ্যুগলের মধ্যস্থলে পদষম গুপ্তভাবে রাধিয়া ঐ পদম্মের
উপর গুহু রাধিলেই গুপ্তাসন হয় ।

পশ্চিমোত্তানাসন।

প্রদার্য্য পাদে ভূবি দণ্ডরপৌ, সংগ্রন্তভালন্চিতিয়ুগ্মমধ্যে।
যত্নেন পাদে চ ধতে করাভ্যাং, যোগীন্দ্রপীঠং পশ্চিমোতানমান্তঃ॥
পদম্বয় ভূমে দণ্ডবৎ সরলভাবে প্রসারণ পূর্বক হস্তম্বয় দারা
ঐ চরণয়ুগল ধরিয়া জঙ্ঘাদ্বয়ের মধ্যে মন্তক বিক্তাস করিলেই
পশ্চিমোতানাসন হয়।

মৎস্থেন্দ্রাসন। উদরং পশ্চিমাভ্যাসং ক্রত্বা তিষ্ঠতি যত্নতঃ। নম্রাঙ্গবামপাদং হি দক্ষজানুপরি স্থাসেৎ। তত্র যাম্যং কূর্পরঞ্চ যাম্যকরে চ বক্ত্রকম্। ক্রন্মেশ্যে গতাং দৃষ্টিং পীঠং মাৎস্তেক্তমুচ্যতে॥

জঠরদেশকে সরলভাবে রাখিয়া স্যত্নে বামপদ নত করত দক্ষিণজান্ত্র উপর স্থাপন করিবে এবং তত্ত্পরি দক্ষিণ কণুই রাখিয়া দক্ষিণকরের উপর মুখ দিয়া জ্রন্বয়ের মধ্যস্থল নিরীক্ষণ করিবে। ইহারই নাম মৎস্তেক্রাসন।

গোরক্ষাসন।

জানুর্ব্বোরস্তরে পাদে উত্তানাব্যক্তসংস্থিতে।
গুল ফো চাচ্ছাত হস্তাভ্যামুব্তানাভ্যাং প্রযত্নতঃ।
কণ্ঠসংকোচনং কৃষা নাসাগ্রমবলোকয়েৎ।
গোরক্ষাসন্মিত্যাহ যোগিনাং সিদ্ধিকারণম্॥

জামুদ্বয় ও উরুর মধ্যে পদযুগল উত্তান করিয়া গুপ্তভাবে সংস্থাপন পূর্ব্বক করদ্বয় দারা গুল্ফদ্বয় আরত করিবে। পরে কণ্ঠ-সংকোচন পূর্ব্বক নাসাগ্রে দৃষ্টিস্থাপন করিলেই গোরক্ষাসন হয়।

উৎকটাসন।

অঙ্গৃষ্ঠাভ্যামবম্বভা ধরাং গুল্ফে চ থে গতে। তত্ত্রোপরি গুদং ক্যন্স বিজ্ঞেয়মুৎকটাসনম্॥

পদান্ধ্র্চষর দারা ভূতল স্পর্শ পূর্ব্বক গুল ফর্গল নিরালম্বভাবে শূক্তমার্গে উত্তোলন করত অবস্থিতি করিবে এবং গুল্ফদ্যের উপর গুহুদেশ রাখিবে। ইহারই নাম উৎকটাদন।

যোগাসন।

উত্তানো চরণো কৃত্বা জান্থনোরুপরি স্থনীঃ। আসনোপরি সংস্থাপ্য উত্তানং করযুগ্মকম্। পূরকৈর্বায়ুমারুষ্য নাসাগ্রমবলোকয়েৎ। যোগাঃসনং ভবেদেতৎ যোগিনাং যোগসাধনে॥

পদন্বয় চিৎ করিয়া জামুযুগলের উপরিভাগে সংস্থাপন পূর্বক করন্বয় উত্তানভাবে আসনোপরি রাখিবে। তৎপরে পূরকযোগে বায়ু আকর্ষণ পূর্বক কুম্ভক করিয়া নাসাগ্র দর্শন করিবে। ইহারই নাম যোগাসন।

মুক্তাসন।

পায়ুমূলে বামগুল ফং দক্ষগুল ফং তথোপরি।
শিরোগ্রীবাসমং কারং মুক্তাসনম্ভ সিদ্ধিদম্॥
বামগুল ফ পায়ুমূলে স্থাপন পূর্বক তত্তপরি দক্ষিণগুল্ফ রাধিরা।
গ্রীবা ও মস্তক সমভাবে স্থাপন করত ঋজ্কারে বসিলেই মুক্তাসন
হয়। এই আসন সিদ্ধিপ্রদ।

বজ্ঞাসন।

জ্জ্বাভ্যাং বজ্জবৎ কৃত্বা গুদপার্থে পদাবুভৌ। বজ্ঞাসনং ভবেদেতৎ যোগিনাং সিদ্দিদায়কম্॥ জ্জ্বাদ্বয় বজ্ঞাকার করত গুন্থের তুই দিকে পাদ্দ্বয় বিক্তপ্ত করিলেই বজ্ঞাসন হয়। ইহা যোগিগণের সিদ্ধিপ্রদ।

স্বস্তিকাদন।

জান্থর্কোরস্তরে কৃষা যোগী পাদতলে উভে।

ঋজুকায়ঃ সমাসীনঃ স্বস্তিকং তৎ প্রচক্ষতে॥

ছই পদ জান্থদ্বয়ের ও উরুদ্বয়ের মধ্যে রাখিয়া ত্রিকোণাকৃতি

আসনবন্ধন করত ঋজুকায়ে বসিলেই স্বস্তিকাসন হয়।

সিংহাসন।

গুল কো চ র্ষণস্থাধো ব্যুৎক্রমেণােদ্ধ আং গতঃ।
চিতিম্লাে ভূমিসংস্থঃ ক্বথা চ জাগ্বােরপরি।
ব্যাতবক্ত্রো জলন্ধ কনাসাগ্রমবলােকয়েৎ।
সিংহাসনং ভবেদেতৎ সর্বব্যাধিবিনাশনম্॥

কোষের নিম্নে গুল ফ্বয়কে পরস্পর ব্যুৎক্রমভাবে (উণ্টাভাবে)
স্থাপন পূর্বক উদ্ধাতা বাহির করিয়া জামুদ্বয় ভূমিতে রাধিবে
এবং ব্যান্তানন হইয়া জালম্বরবন্ধন * পূর্বক নাসাগ্রে দৃষ্টিস্থাপন
করিবে। ইহারই নাম সিংহাসন। ইহা সমস্ত-রোগনাশক।

গোমুখাসন।

পাদো চ ভূমো সংস্থাপ্য পৃষ্ঠপার্শ্বে নিবেশয়েৎ। স্থিরকায়ং সমাসাভ গোমুখং গোমুখারুতিঃ॥

পদম্বর ভূমিতে রাখিয়া পৃষ্ঠের উভয় পার্শ্বে নিবেশিত করিবে এবং ঋজুকায় হইয়া গোমুখবৎ উল্লতমুখে বিদবে। ইহারই নাম গোমুখাসন !

वीवामन ।

একপাদমথৈকস্মিন্ বিভাসেদ্রুসংস্থিতম্।
ইতর্স্মিংস্তথা পশ্চাদীরাসনমিতীরিতম্॥
এক পদ একটি উরুর উপর রাথিয়া অভাপদ পশ্চাদিকে
রাথিলেই বীরাসন হয়।

 পলদেশের শিরাগমূহ বন্ধন পূর্বক হাদয়ে চিবুক রাখিলেই জ্ঞালকর-বন্ধ হয়। প্রমাণ যথা—

> বন্ধা গলশিরাজালং হৃদয়ে চিবুকং গুদেৎ। বন্ধো জালন্ধর: প্রোক্তো দেবানামণি হুল ভ: ॥

ধকুরাসন।

প্রসার্য্য পাদে ছুবি দণ্ডরূপো, করে চ পৃষ্ঠে ধৃতপাদযুগাম্। কৃত্বা ধমুস্তল্যপরিবর্ত্তিতাঙ্গং, নিগন্ত যোগী ধমুরাসনং তৎ॥

ভূতলে দণ্ডবৎ সমানভাবে চরণযুগল প্রসারিত করত পৃষ্ঠভাগ দিয়া ছই হস্ত দারা পদদ্ম ধরিবে এবং দেহ ধন্মুর ক্যায় বক্র করিয়া রাখিবে। ইহার্ট নাম ধন্মরাসন।

মুদ্রোবিধি। মহামুদ্রা।

অপসব্যেন সংপীত্য পাদমূলেন সাদরম্। গুরূপদেশতো যোনিং গুদমেঢ়াস্তরালগাম্। সব্যং প্রসারিতং পাদং ধৃত্বা পাণিমূগেন বৈ। নবদারাণি সংযম্য চিবৃকং হৃদয়োপরি। চিত্তং চিত্তপথে দল্বা প্রারভেদায়ুসাধনম্। মহামূদ্রা ভবেদেশা সর্ব্বভন্তের্ গোপিতা। বামাঙ্কেন সমভ্যস্ত দক্ষাঙ্কেনাভ্যসেৎ পুনঃ॥

শুরুদেবের উপদেশামুসারে বামপদের শুল্ ফ দারা শুগু ও উপস্থের মধ্যবর্তী যোনিমণ্ডল পীড়ন পূর্বক দক্ষিণচরণ প্রসারিত করিয়া করতলদ্বর দারা তাহার অঙ্গুলীসমূহের অগ্রদেশ ধারণ করিবে। সে সময় নবদার সংযত করিয়া হৃদয়োপরি চিবুক স্থাপন করিতে হয়। এই প্রকার অবস্থায় মনকে ব্রহ্মমার্গে রাখিয়া বায়ুসাধনে প্রবৃত্ত হইবে। এই গোপনীয় মুদ্রার নাম মহামুদ্রা। প্রথমে বামাঙ্গে এই মুদ্রা যেরূপ সাধন করিবে, পশ্চাৎ সংযতমনে দক্ষিণাঙ্গেও সেইরূপ করিতে হয় অর্থাৎ দক্ষিণচরণ

প্রসারণ পূর্বক যতবার প্রাণায়াম করিবে, বামপদ প্রসারিত করিয়াও ততবার প্রাণায়াম কর্ত্তব্য।

মহাবন্ধ।

ততঃ প্রসারিতো পাদো বিশুশু তাবৃদ্ধপরি।
গুদ্যোনিং সমাকুঞ্চ ক্রতা চাপানমূদ্ধ গম্।
যোজয়িত্বা সমানেন ক্রতা প্রাণমধামূশ্য।
বন্ধয়েছদরে২ত্যর্থং প্রাণাপানো চ যঃ স্থনীঃ।
প্রথিতোহয়ং মহাবন্ধঃ দিদ্ধিমার্গপ্রদায়কঃ॥

মহামুদ্রাবন্ধন পূর্বক প্রাণায়ামান্তে প্রসারিতপদ উরুস্থলে স্থাপন করিবে। পরে মূলাধার আকুঞ্চন দ্বারা অপানবায়ুকে উদ্ধ-গামী করিয়া নাভিস্থলে সমানবায়ুর সহিত একত্র করিবে এবং তৎকালে প্রাণবায়ুকে অধামুখ করিয়া ঐ নাভিস্থলে আনমন পূর্বক প্রাণ ও অপানবায়ুকে নাভিদেশে সমানের সহিত বদ্ধ ও ক্রম্ব করিবে। ইহারই নাম মহাবন্ধ।

খেচরীমুদ্রা।

ক্রবোরন্তর্গতাং দৃষ্টিং বিধায় স্থদৃঢ়াং স্থুণীঃ। উপবিশ্যাসনে বজে নানোপদ্রববর্জিতঃ। লম্বিকাদ্ধ স্থিতে গর্ত্তে রসনাং বিপরীতগাম্। সংযোজয়েৎ প্রযক্তেন স্থাকৃপে বিচক্ষণঃ। মুদ্রৈষা খেচরী প্রোক্তা ভক্তানামন্থরোধতঃ॥

নিরুপদ্রবস্থানে বজ্রাসনে বসিয়া জ্রন্বয়ে দৃঢ়দৃষ্টি স্থাপন পূর্ব্বক জিল্পা বিপরীতগামিনী করিয়া গলশুণ্ডিকার (আলজিল্পার) উপরিস্থ গর্ডে পরিচালন করিবে এবং যত্ন সহকারে জ্রমধ্যস্থ স্থা-কৃপে সংযোজিত করিতে হইবে। ইহাকেই খেচরীযুলা কহে।

গন্ধমুদ্রা।

অঙ্গুৰ্জাগ্ৰে মধ্যমাগ্ৰং অনামাগ্ৰঞ্চ যোজয়েৎ। গন্ধদানে দ্বিয়ং মুদ্ৰা গন্ধমুদ্ৰা প্ৰকীৰ্ত্তিতা॥ অঙ্গুষ্ঠ, মধ্যমা ও অনামা এই তিনটি অঙ্গুলীর অগ্ৰভাগ একত্ৰ লেই গন্ধমুদ্ৰা হয়। এই মূদ্ৰা দ্বাবাই দেবপুজায় গন্ধ দান

করিলেই গন্ধমুজা হয়। এই মুজা দ্বারাই দেবপূজায় গন্ধ দান করিবে।

পুষ্পযুদ্রা 🖟

অসুষ্ঠ তর্জনীত্যান্ত চক্রে পুশং নিবেদয়েৎ।
অস্থল্যগ্রেণ দেবেশি পুশ্বমূদ্রা থিয়ং স্থতা।
অসুষ্ঠ ও তর্জনীর অগ্রদেশ একত্র করিয়া দেবোদেশে পুশ দিবে। ইহারই নাম পুশ্বমুদ্রা।

ধূপমুদ্রা ও দীপমুদ্রা।

গন্ধবন্ধূজনা ধৃপং দীপং দ্যাদিচক্ষণঃ।
ধৃপমূজা দীপমূজা সৈব মূজা প্রকীর্ত্তিতা॥
গন্ধমূজাবৎ মূজাকেই ধৃপমূজা ও দীপমূজা বলা যায়। সেই
মূজা দারাই ধৃপদীপ প্রদান করিবে। *

निर्वश्रम् ।

অনামা যোজিতা চৈব অঙ্গুষ্ঠাণ্ডো মহেশ্বরি। নৈবেক্সমুদ্রা বিজ্ঞেয়া দেবতাপৃজনে পরা॥

 মতান্তরে কনিষ্ঠা ও অলুষ্ঠবোগের নাম গন্ধমুলা এবং অলুষ্ঠ ও তর্জ্জনী-বোগের নাম পুশ্পমূলা, ধৃপমূলা ও দীপমূলা। অনাবশ্যকবোধে তাহার প্রমাণ লিখিত হইল না। অন্তুষ্ঠ ও অনামার অগ্রদেশ যোগ করিলেই নৈবেগুমুদ্রা হয়। এই মুদ্রা দ্বারা নৈবেগু দান করিবে। *

প্রাণমুদ্রা।

তর্জনী মধ্যমা চৈব অঙ্গুষ্ঠাগ্রে তু যোজিতা। প্রাণমুদ্রেষা ব্যাখ্যাতা তন্ত্রবিস্তিম নীমিভিঃ॥ তর্জনী, মধ্যমা ও অঙ্গুষ্ঠের অগ্র একত্র করার নাম প্রাণমুদ্রা। অপানমুদ্রো ও সমানমুদ্রো।

মধ্যমানামিকাভ্যান্ত অঙ্গুষ্ঠাগ্রঞ্চ যোজয়েৎ। অপানমুদ্রা বিজ্ঞো সর্কৈঃ সমানমুদ্রিকা॥ মধ্যমা, অনামা ও অঙ্গুষ্ঠ একত্র করিলে অপানমুদ্রা এবং

উদানমুদ্র।।

मर्काकृली একত कतिरल मभानमूजा दश ।

সর্বাঙ্গুলীভিরঙ্গুষ্ঠং যোজিতং মধ্যবর্জিতম্। উদানমুদ্রিকা জ্ঞেয়া কথিতা মুনিসন্তমৈঃ॥ মধ্যমা ভিন্ন সমস্ত অঙ্গুলী একত্র করার নাম উদানমুদ্রা। ব্যানমুদ্রা।

কনিষ্ঠানামিকাঙ্গুঠৈর্ব্যানমুদ্রা প্রকীর্ত্তিতা। কনিষ্ঠা, অনামা ও অঙ্গুষ্ঠ একত্র করার নাম ব্যানমুদ্রা। অঙ্কুশমুদ্রো।

ঋজীঞ্চ মধ্যমাং কৃত্বা তর্জনীমধ্যপর্কণি। সংযোজ্যাকুঞ্চয়েৎ কিঞ্চিন্মুদ্রৈষাঙ্কুশসংজ্ঞিকা॥ দক্ষিণ-হস্ত উবুড় করিয়া তাহার মধ্যমাঙ্গুলীকে সিধা করত

কেহ কেহ নৈবেলপ্রদানকালে নৈবেল্যমুদ্রা না দেখাইয়া ভত্বমুদ্রা
 প্রদর্শন করিয়া থাকেন।

তর্জনীর মধ্যপর্ব পর্যান্ত উহাতে সংলগ্ন করিবে এবং তর্জনীর অগ্রদেশ ঈষৎ বক্র করিয়া রাখিবে। ইহারই নাম অন্ধুশমুজা।

তত্ত্বমূদ্রা।

অধোমুখস্ত দক্ষস্ত হস্তস্ত পরমেশ্বরি। মধ্যমানামিকাঙ্গুষ্ঠ-সংযোগাক্তরমুক্তিকা॥

দক্ষিণ-হস্ত অধামুখ করত মধ্যমা ও অনামিকার অগ্রদেশে অন্তুষ্ঠ যোগ করিলেই তাহাকে তত্ত্বমূদ্রা বলে।

ধেকুমুদ্রা।

অন্যোত্তাভিমুখান্নিষ্টা কনিষ্ঠানামিকা পুনঃ।
তথৈব তৰ্জনী মধ্যা ধেকুমুদ্রা প্রকীর্ত্তিতা॥

বামকরের মধ্যমা ও কনিষ্ঠাতে দক্ষিণকরের তর্জ্জনী ও অনামা এবং বামকরের তর্জ্জনী ও অনামাতে দক্ষিণকরের মধ্যমা ও কনিষ্ঠা যোগ করিলেই ধেমুমুদ্রা হয়।

নারাচমুদ্রা।

অন্ধৃতি তেওঁ তাঃ সংযোজ্যাথোদ্ধ রেখয়া।
অন্তান্ধূলীন্তথানম্য নারাচঃ স্তাৎ প্রকীর্ত্ত্যতে ॥

দ ক্ষিণকরের অন্তুষ্ঠাগ্রে তর্জনী যোগ করত মধ্যমা, অনামিকা ও কনিষ্ঠাকে হস্ততলস্থ উদ্ধরিধার সহিত বক্র করিয়া বাধিলেই নারাচমুদ্রা হয়।

लिनश्रमुका।

তৰ্জনীমধ্যমানামাঃ সমং কুৰ্য্যাদধোমুখম্।

অনামায়াং ক্ষিপেদ্ব দ্ধাং ঋত্মীং কৃষা কনিটিকাম্।
লোলহা নাম মুদ্ৰেয়ং জীবক্যাসে প্ৰকীৰ্ত্তিতা॥

তৰ্জনী, মধ্যমা, অনামা এই অঞ্চুলীত্ৰয় সমান করিয়া অধো-

মুখ করিবে এবং অঙ্গুষ্ঠকে অনামার অগ্রদেশে সংলগ্ন করত কনিষ্ঠাকে সরল করিয়া রাখিবে। ইহাকে লেলিহামুদা বলে।

কূর্মমুদ্র।।

বামহস্তস্ত তর্জ্নন্তাং দক্ষিণস্ত কনিষ্ঠয়।
তথা দক্ষিণতর্জন্তাং বামাস্কৃষ্ঠেন যোজয়েৎ।
উন্নতং দক্ষিণাস্কৃষ্ঠং বামস্ত মধ্যমাদিকাঃ।
অঙ্গুলীর্যোজয়েৎ পৃষ্ঠে দক্ষিণস্ত করস্ত চ।
বামস্ত পিতৃতীর্থেন মধ্যমানামিকে তথা।
অধােমুখে চ তে কুর্য্যাৎ দক্ষিণস্ত করস্ত চ।
কুর্ম্মপৃষ্ঠসমং কুর্য্যাৎ দক্ষপাণিঞ্চ সর্বতঃ।
কুর্মমুদ্রেয়মাখ্যাতা দেবতাধ্যানকর্মণি॥

দক্ষিণহন্তের তর্জনী বামকরের অঙ্গুঠে এবং কনিষ্ঠা বামকরের তর্জনীতে যোগ করত দক্ষিণাঙ্গুষ্ঠ উন্নত করিবে। তৎপরে বাম-করের অঙ্গুষ্ঠ ও তর্জনীর মধ্য দিয়া দক্ষিণহন্তের মধ্যমা ও অনামা বক্র করিয়া রাখিবে। অনস্তর দক্ষিণহাতের পৃষ্ঠে বামহন্তের মধ্যমা, অনামা ও কনিষ্ঠা বক্র করিয়া দিয়া দক্ষিণহস্তকে কৃর্ম্ম-পৃষ্ঠবৎ করিলেই কৃর্মমুদ্রা হয়।

व्यार्थनागुका।

প্রস্থতান্ত্রলিকো হস্তো মিথঃশ্লিষ্টো চ সংমুখো। কুর্য্যাৎ স্বে হৃদয়ে সেয়ং মুদ্রা প্রার্থনসংজ্ঞিকা।

দক্ষিণ ও বামহস্তের সমস্ত অঙ্গুলী সোজা করিয়া বামকরের উপর দক্ষিণ-কর চিৎভাবে স্থাপন পূর্বক বক্ষঃস্থলে রাখিলেই প্রার্থনামুদ্রা হয়।

আবাহনীমুদ্র।।

হস্তাফ্র্যামঞ্জলিং বঞ্চানামিকামূলপর্ব্যণোঃ।
অঙ্গুষ্ঠো নিক্ষিপেৎ সেয়ং মূদ্য স্বাবাহনী স্মৃতা।
করদ্বয় চিৎভাবে মিলিত করিয়া তুই হাতের অনামার মূলপর্ব্বে অঙ্গৃষ্ঠাগ্র যোগ করিলেই আবাহনীমূদ্রা হয়।
স্থাপনীমূদ্রা।

অধোমুখী দ্বিরং চেৎ স্থাৎ স্থাপনী মুদ্রিকা স্মৃতা।
অধোমুখ হস্তকে আবাহনীমুদ্রাবৎ করিলেই স্থাপনীমুদ্রা হয়।
সন্ধিধাপনীমুদ্রা।

উচ্ছিতাঙ্গৃষ্ঠমুষ্ট্যোস্ত সংযোগাৎ সন্নিধাপনী। মুষ্টিবদ্ধ হস্তদ্বকে পরম্পার একত্র করিয়া অঙ্গৃষ্ঠদ্বয় উন্নত করিয়া রাখিলেই তাহার নাম সন্নিধাপনীমুদ্রা।

मः दािशिनीयुक्त।।

অন্তঃপ্রবেশিতাঙ্গুষ্ঠা দৈব সংবোধিনী মতা।

কৃই হাত মুষ্টিবদ্ধ করিয়া র্দ্ধাঙ্গুষ্ঠদ্বয়কে মুষ্টিমধ্যে প্রবেশিত
করিলেই সংবোধিনী মুদ্রা হয়।

সম্মুখীকরণীমুদ্র।।

উন্তানমৃষ্টিযুগলা সন্মুখীকরণী মতা।

মৃষ্টিবদ্ধ হস্তদ্বয়কে পরস্পর চিৎভাবে একত্র করিলেই সন্মুখীকরণী মৃদ্রা হয়।

মৎস্যমুদ্র।

দক্ষপাণি-পৃষ্ঠদেশে বামপাণিতলং অদেৎ। অঙ্গুষ্ঠো চালয়েৎ সম্যক্ মুদ্রেয়ং মৎস্তর্রূপিণী॥ বামহন্তের তলদেশকে দক্ষিণহাতের পৃষ্ঠে ঠিক সমভাবে মিলিত করিয়া হস্তধ্য়ের অঙ্কৃষ্ঠধয়কে সম্যক্ চালনা করিলেই মংস্তমুদ্রা হয়।

शानिनीयुक्ता ।

কনিষ্ঠান্ত্র্ককো সজে করয়োরিতরেতরম্। তর্জনীমধ্যমানামা সংহতা ভূগ্নবর্জিতা। মুদ্রৈষা গালিনী প্রোক্তা শব্দাস্থাপরিচালিতা॥

দক্ষিণ-হাতের উপর বামহস্ত স্থাপন পূর্বক বামকরের কনিষ্ঠা ও অঙ্গুষ্ঠ দক্ষিণ-হাতের বৃদ্ধা ও কনিষ্ঠাতে যোগ করত হস্তম্বরের তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামা পরস্পর একত্র করিবে। পরে মিলিত কনিষ্ঠা ও অঙ্গুষ্ঠকে তর্জ্জনী, মধ্যমা ও অনামিকা হইতে ব্যবহিত রাখিলেই গালিনীমুদ্রা হয়।

অবগুণ্ঠনমূদ্রা।

সব্যহস্তকৃতা মৃষ্টিদীর্ঘাধোমুখতর্জনী। অবশুঠনমুদ্রেয়মভিতো ত্রামিতা মতা॥

দক্ষিণ-হস্ত মৃষ্টিবদ্ধ করিয়া তর্জ্জনীকে সোজা ও অংগামূখ করত দক্ষিণাবর্ত্তে ঐ তর্জ্জনীকে ঘুরাইলেই অবশুণ্ঠনমূদ্রা হয়।

সংহারমুদ্রা।

অধােমুখে বামহন্তে উদ্ধািস্তং দক্ষহন্তকম্। ক্ষিপ্তাঙ্গুলীরঙ্গুলীভিঃ সংগ্রথ্য পরিবর্ত্তয়েৎ। এবা সংহারমুদ্রা স্থাৎ বিসর্জনবিধে স্থতা॥

অধোমুখ বামহস্তের উপর দক্ষিণকর উত্তানভাবে রাখিয়া কনিষ্ঠাবধি অঙ্গুলীসমূহের মধ্যে অঙ্গুলী স্থাপন করত পরস্পর বন্ধন করিয়া ঘুরাইয়া সম্মুধে আনিলেই সংহারমুদ্রা হয়।

আসন ও মুদ্রাপ্রকরণ সমাপ্ত।

স্তবকবচ-প্রকরণ।

বাল্মীকি-কৃত-গঙ্গাফ্টক-স্তোত্রম্।

बीगक्रारिय नमः।

মাতঃ শৈলস্থতা-সপত্নি বস্থধাশৃঙ্গারহারাবলি, স্বর্গারোহণ-বৈজয়ন্তি! ভবতীং ভাগীরথীং প্রার্থয়ে। স্বত্তীরে বসতস্থদমু পিবতস্বদ্বীচিমুৎপ্রেছ্খত-স্বন্নাম স্মরতস্থদর্পিতদৃশঃ স্থান্মে শরীরব্যয়ঃ॥ অত্তীরে তরুকোটরাস্তরগতো গঙ্গে বিহঙ্গো বরং, জন্নীরে নরকাস্তকারিণি ! বরং মৎস্তোহথবা কচ্ছপঃ। নৈবাক্তত্র মদান্ধ-সিন্ধার-ঘটা-সংঘট্ট-ঘণ্টা-রণৎ-কারত্রস্ত-সমস্তবৈরিবনিতা-লব্বস্ততিভূপিতিঃ॥ कारेकिनिक् विठः चिंडः कर्तनिठः वौष्ठिन्तितालानिठः, স্রোতোভিশ্চলিতং তটাস্তমিলিতং গোমায়ুভিলু গ্রিতম। जिवा-खी-कत-ठाक्रठायत-यक्--प्रश्वीकायानः कनाः দক্ষ্যেহং পরমেশ্বরি ত্রিপথণে ভাগীরবি ! স্বং বপুঃ॥ অভিনববিষবল্লী পাদপাদ্মস্ত বিষ্ণো-र्यामन-मथनरमीलर्यानजी पूष्प्रमाना। জয়তি জয়পতাকা কাপ্যসো মোক্ষলক্ষা. ক্ষয়িত-কলিকলঙ্কা জাহ্নবী নঃ পুনাতু॥ যন্ততালতমালশালসরলব্যালোলবল্লীলতা-চ্ছন্নং সূর্য্যকরপ্রতাপরহিতং শঙ্খেলুকুন্দোজ্জল্ম।

গন্ধর্কামরসিদ্ধ-কিন্নরবধৃত্ত ক্ষন্তনাক্ষালিতং, স্থানায় প্রতিবাদরং ভবতু মে গাঙ্গং জলং নির্মালম্॥ গাঙ্গং বারি মনোহারি মুরারিচরণাচ্চ্যুতম্। ত্রিপুরারি-শিরশ্চারি পাপহারি পুনাতু মাম্॥

শ্রীমচ্ছঙ্করাচার্য্য-বিরচিত-গঙ্গা-স্তোত্রম্।

बीगकारेय नमः।

দেবি সুরেশ্বরি ভগবতি গঙ্গে, ত্রিভূবনতারিণি তরলতরক্ষে। শঙ্করমৌলিবিহারিণি বিমলে, মম মতিরাস্তাং তব পদকমলে॥ ভাগীরথি স্থপদায়িনি মাতস্তব জলমহিমা নিগমে খ্যাতঃ। নাহং জানে তব মহিমানং, পাহি কুপাময়ি মামজ্ঞানয ॥ হরিপাদপদ্মবিহারিণি গঙ্গে, হিমবিধুমুক্তাধবলতরঙ্গে। দ্রীকুরু মম হৃষ্কতিভারং, কুরু কুপাময়ি ভবসাগরপারম্॥ তব জলমমলং যেন নিপীতং, পরমপদং খলু তেন গৃহীতম্। মাতর্গঙ্গে স্বয়ি যো ভক্তঃ, কিল তং দ্রষ্ট্রং ন যমঃ শক্তঃ॥ পতিতোদ্ধারিণি জাহ্নবি গঙ্গে, খণ্ডিতগিরিবরমণ্ডিতভঙ্গে। ভীম্মজননি মুনিবরকন্তে, পতিতোদ্ধারিণি ত্রিভূবনধন্তে॥ কল্পলতামিব ফলদাং লোকে, প্রণমতি যন্ত্রাং ন পততি শোকে। পারাবারবিহারিণি গঙ্গে, বিমুখবনিতাক্ততরলাপাঙ্গে॥ তব চেন্মাতঃ স্রোতঃমাতঃ, পুনরপি জঠরে সোহপি ন জাতঃ। নরকনিবারিণি জাহ্নবি গঙ্গে, কলুষবিনাশিনি মহিমোত্র জে। পরিরসদঙ্গে পুণ্যতরক্ষে, জয় জয় জাহ্নবি করুণাপাঙ্গে। ইন্দ্রমুকুটমণিরাজিতচরণে, সুখদে শুভদে দেবকশরণে॥ রোগং শোকং তাপং পাপং, হর মে ভগবতি কুমতিকলাপম। ত্রিভূবনসারে বস্থুধাহারে, ত্বমসি গতির্শ্বম খলু সংসারে॥ অলকানন্দে পরমানন্দে, কুরু ময়ি করুণাং কাতরবন্দ্যে। তব তটনিকটে যশ্ত নিবাসঃ, খলু বৈকুঠে তস্ত নিবাসঃ॥ वत्रिश् नीरत कमर्छ। भीनः, किश्वा औरत नत्रिः क्यीनः। অথবা গব্যুতি দীনঃ শ্বপচো, ন চ তব দূরে নুপতিকুলীনঃ॥ ভো ভুবনেশ্বরি পুণ্যে ধন্তে, দেবি দ্রবময়ি মুনিবরকন্তে। গঙ্গান্তবমিদমমলং নিত্যং, পঠতি নরে। যঃ স জয়তি সত্যম ॥ যেষাং হৃদয়ে গঙ্গাভজিন্তেষাং ভবতি সদা সুধমুক্তিঃ। মধুরমনোহরপজাটিকাভিঃ, পরমাননাকলিতললিতাভিঃ।

গঙ্গান্তোত্রমিদং ভবসারং, বাঞ্চিতফলদং বিগলিতভারম্।
শঙ্করসেবকশঙ্কররচিতং, পঠতি বিষয়ীদমিতি সমাপ্তুম্॥
ইতি শ্রীমচ্চন্ধরাচার্য্যবিরচিতং গঙ্গান্তোত্রম্॥

অন্নপূৰ্ণাস্তোত্ৰম।

নিজানন্দকরী বরাভয়করী সৌন্দর্যা-রত্নাকরী. নির্দ্ধ, তাথিলঘোরপাবনকরী প্রত্যক্ষমাহেশ্বরী। अलग्राहनवः म- शावनकती का नी शूता शी खती, ভিক্ষাং দেহি রূপাবলম্বনকরী মাতান্নপূর্ণেশ্বরী॥ নানারত্ববিচিত্রভূষণকরী হেমাম্বরাড্ম্বরী, मुक्काशात्रविवस्थानविवनप्रवाक्षाककुष्ठाखतौ। কাশীরাগুরুবাসিতা রুচিকরী কাশীপুরাধীশ্বরী, ভিক্ষাং দেহি রূপাবলম্বনকরী মাতারপর্ণেশ্বরী॥ যোগানন্দকরী রিপুক্ষয়করী ধর্মার্থনিষ্ঠাকরী, **ठक्कार्कानव**ञ्चात्रमानवरती देखलाकात्रकाकती। সবৈশ্বৰ্য্যসমন্তবাঞ্চিতকরী কাশীপুরাধীশ্বরী. ভিক্ষাং দেহি রূপাবলম্বনকরী মাতান্নপূর্ণেশ্বরী॥ किनानाज्नक मतानयकती (भोती धिमा मकती, को यात्री निगयार्थ(गाठतकती अक्षात्रवीकाकती। মোক্ষদারকপাটপাটনকরী কাশীপুরাধীশ্বরী, ভিক্ষাং দেহি রূপাবলম্বনকরী মাতান্নপূর্ণেশ্বরী॥ দৃখ্যাদৃখ্যপ্রভূতবাহনকরী ব্রহ্মাণ্ডভাণ্ডোদরী, नौनानां देकश्वराज्यन करी विष्णानमी शासूरी ।

ঐবিষেশমনঃ-প্রসাদনকরী কাশীপুরাধীশ্বরী, ভিক্ষাং দেহি রূপাবলম্বনকরী মাতারপূর্ণেশ্বরী ॥ উব্বীপৰ্বজনেশ্বরী ভগবতী মাতান্নপূর্বেশ্বরী, (विभीनीनप्रभानकुञ्जनहती निज्यानपारनश्रती। সর্কানন্দকরী দৃশা শুভকরী কাশীপুরাধীশ্বরী, ভিক্ষাং দেহি রূপাবলম্বনকরী মাতান্নপূর্ণেশ্বরী ॥ वामीकाञ्चनभञ्चवर्गनकती मरङ्गाञ्चिलावाकती, কাশীরাত্রিজলেশ্বরী ত্রিলহরী নিত্যান্থরী শর্কারী। कामाकाष्क्रकती जत्नामग्रकती कानीलूताधीयती, ভিক্ষাং দেহি কুপাবলম্বনকরী মাতারপূর্ণেশ্বরী॥ দর্মী স্বর্ণবিচিত্ররত্বরচিতা দক্ষে করে সংস্থিতা. বামে স্বাত্বপয়োধরী সহচরী সোভাগ্যমাহেশ্বরী। ভক্তাভীষ্টকরী দশা শুভকরী কাশীপুরাধীশ্বরী, ভিক্ষাং দেহি কৃপাবলম্বনকরী মাতারপূর্ণেশ্বরী॥ চক্রার্কাগ্রিসমানকুগুলধরী চক্রার্কবর্ণেশ্বরী। মালাপুত্তকপাশকান্ত্রশধরী কাশীপুরাধীশ্বরী, ভিক্ষাং দেহি কুপাবলম্বনকরী মাতারপূর্ণেশ্বরী॥ ক্ষেত্রতাণকরী মহাভয়হরী মাতা রূপাদাগরী, माक्कात्माककती मना निवकती विश्ववती औधती। দক্ষাক্রন্দকরী নিরাময়করী কাণীপুরাধীশ্বরী. ভিক্ষাং দেহি রূপাবলম্বনকরী মাতারপূর্ণেশ্বরী। অন্নপূর্ণে সদা পূর্ণে শঙ্করপ্রাণবল্লভে। জ্ঞানবৈবাগাসিদ্ধার্থং ভিক্ষাং দেহি নমোহস্ত তে ॥

মাতা চ পার্বতী দেরী পিতা দেবো মহেশ্বরঃ। বান্ধবা শিবভক্তাশ্চ স্বদেশো ভূবনত্রয়ম্॥ ইতি শ্রীমচ্ছন্ধরাচার্য্যবিরচিতং অন্নপূর্ণান্তেশ্বরু॥

অন্নপূর্ণাকবচম্।

শ্রীদেব্যবাচ। —কথিতাশ্চারপূর্ণায়া যা যা বিচ্ছাঃ স্বত্র্লভাঃ। কপয়া কথিতাঃ সর্বা শ্রুতাশ্চ বিবিধা ময়া॥ সাম্প্রতং শ্রোত্মিচ্ছামি কবচং যৎ পুরোদিতম। ত্রৈলোক্যরক্ষণং নাম কবচং মন্ত্রবিগ্রহম। **প্রীঈশর উবাচ।—শুণু পার্ব্বতি বক্ষ্যামি সাবধানাবধার**য়। ত্রৈলোক্যরক্ষণং নাম কবচং ব্রহ্মনামকম্॥ ব্রহ্মবিত্যাস্বরূপঞ্চ মহদৈশ্বর্য্যদায়কম্। পঠনাদ্ধারণাণান্মর্ক্ত্যবৈশোকৈয়শ্বর্য্যভাগভবেৎ ॥ ত্রৈলোকারক্ষণস্থাস্থ কবচস্থ ঋষিঃ শিবঃ। ছন্দো বিরাড়ন্নপূর্ণা দেবতা সর্বাসিদ্ধিদা। ধর্মার্থকামমোক্ষেরু বিনিয়োগঃ প্রকীর্ত্তিতঃ॥ হীঁ নমো ভগবতান্তে মাহেশ্বরি পদং ততঃ। অন্নপূর্ণে ততঃ স্বাহা চৈষা সপ্তদশাক্ষরী॥ পাতু মামন্নপূর্ণা সা যা খ্যাতা ভুবনত্রের। বিমায়া প্রণবাল্তেষা তথা সপ্তদশাক্ষরী ॥ পাত্রপূর্ণা সর্কাঙ্গং রত্নকুন্তারপাত্রদা। শ্রীবীজান্তা তথা চৈষা দিরন্ধার্ণা যথাসুখম্॥ প্রণবাষ্ঠা ভ্রবৌ পাতু কণ্ঠং বাগীজপূর্ব্বিকা। কামবীজাদিকা চৈব জদয়ত্ত মতেশ্ববী।

তারং শ্রীঁ রীঁ নমোহস্তে চ ভগবতীপদং ততঃ। মাহেশ্বরি পদং চান্ন-পূর্ণে স্বাহেতি পাতু মাম্॥ নাভিমেকে নবিংশার্গা পায়ানাহেশ্বরী সদা। তারং মায়া রমা কামঃ ধোড়শার্ণাস্ততঃ পরম ॥ শিরঃস্থা সর্বাদা পাতু বিংশত্যর্ণাত্মিকা চ যা। করে পাদে দদা পাতু রমা কামো ধ্রবস্তথা।। ধ্বজঞ্চ সর্বাদা পাতু বিংশত্যর্ণাত্মিকা চ যা॥ অন্নপূর্ণা মহাবিষ্ঠা হ্রীঁ পাতু ভুবনেশ্বরী ॥ শিরঃ শ্রীঁ হ্রীঁ তথা ক্লীঞ্চ ত্রিপুটা পাতু মে গুদম। ষড় দীৰ্ঘভাজা বীজেন ষড়ক্ষাপি পুনস্ত মাম্॥ ইন্দ্রো মাং পাতু পূর্বেচ বহ্নিকোণেইনলোইবতু। যমো মাং দক্ষিণে পাতু নৈশ্বত্যাং নিশ্বতিস্তথা। পশ্চিমে বরুণঃ পাতৃ বায়ব্যাং প্রনোহবতু। কুবেরশ্চোত্তরে পাতু মামৈশান্তাং শিবোহবতু ii উদ্ধাধঃ সততং পাতু ব্ৰহ্মানস্তো যথাক্ৰমাৎ । বজ্ঞান্তায়ুধাঃ পান্ত দশদিক্ষু যথাক্রমাৎ॥ ইতি তে কথিতং পুণ্যং ত্রৈলোক্যরক্ষণং পরম্। यक् जा পठनात्कवाः मटेर्क्यश्रमवाश्र ग्रुः॥ ব্রহ্মা বিষ্ণুুুুুুুুহু রুদ্রুুুুু ধারণাৎ পঠনাদ্যতঃ। স্জত্যবতি হস্ত্যেব কল্পে কল্পে পৃথক্ ॥ পুষ্পাঞ্জল্যস্টকং দেবৈয় মূলেনৈব পঠেততঃ। যুগাযুতকৃতায়াস্ত পূজায়াঃ ফলমাপুরাৎ॥ প্রীতিমন্তোহন্ততঃ কৃত্বা কমলা নিশ্চলা গৃহে। বাণী বক্তে বসেত্তস্ত সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ॥

অষ্টোত্তরশতং চাস্থ পুরশ্চর্য্যাবিধিঃ শ্বতঃ।
ভূজে বিলিখ্য গুলিকাং স্বর্ণস্থাং ধারয়েদ্যদি।
কঠে বা দক্ষিণে বাহো সোহপি সর্বতপোময়ঃ॥
ব্রহ্মান্তানি শস্ত্রাণি তদগাত্রং প্রাপ্য পার্বতি।
মাল্যানি কুসুমান্তেব ভবস্ত্যেব ন সংশয়ঃ॥
ইতি ভৈরবতদ্ধে ভৈরবত্তিরবীসংবাদে অন্নপূর্ণাকবচম্॥

হিমালয়-ক্কৃত-শিব-স্তোত্রম্। শ্রীশিবায় নমঃ।

হিমালয় উবাচ।—য়ং ব্রহ্মা সৃষ্টিকর্তা চ স্বং বিষ্ণুঃ পরিপালকঃ।

য়ং শিবঃ শিবদোহনস্তঃ সর্বসংহারকারকঃ॥

য়মীশ্বরো গুণাতীতো জ্যোতীরূপঃ সনাতনঃ।

প্রকৃতঃ প্রকৃতীশশ্চ প্রাকৃতঃ প্রকৃতঃ পরঃ॥

নানারূপ-বিধাতা স্বং ভক্তানাং ধ্যানহেতবে।

যেয়ু রূপেয়ু যৎপ্রীতিস্তব্দ্রসং বিভর্ষি চ॥

স্থ্যক্তং স্টিজনক আধারঃ সর্বতেজসাম্।

সোমস্বং শশ্ত-পাতা চ সততং শীতরশ্মিনা॥

বায়ুস্বং বরুণস্বঞ্চ বিদ্বাংশ্চ বিহুষাং গুরুঃ।

মৃত্যুগ্ধয়ো মৃত্যুমৃত্যুঃ কাল-কালো যমাস্তকঃ॥

বেদস্বং বেদ-কর্তা চ বেদ-বেদাঙ্গ-পারগঃ।

বিহুষাং জনকন্ত্রঞ্চ বিঘাংশ্চ বিহুষাং গুরুঃ॥

মন্ত্রম্বং হি জপস্বং হি তপস্বং তৎকর্তা তদ্প্রকঃ স্বয়্ম॥

অহা সরস্বতী-বীজং কস্বাং স্তোত্মিহেশ্বরঃ।
ইত্যবমূক্ত্বা শৈলেজস্তহৌ ধূজা পদাস্কুজ্ম ॥
তত্ত্রোবাস তমাবোধ্য চাবরুছ রুষাচ্ছিবঃ।
স্তোত্তমেত সর্ব্ব-পাপেভ্যো ভরেভ্যুন্ট ভবার্ণবে।
অপুত্রো লভতে পুত্রং মাসমেকং পঠেদবিদ ॥
ভার্য্যাহীনো লভেদ্বার্যাং স্থশীলাং স্থমনোহরাম্।
চিরকাল-গতং বস্তু লভতে সহসা ফ্রবম্ ॥
রাজ্য-ভ্রন্থো লভেদ্রাজ্যং শঙ্করন্থ প্রসাদতঃ।
কারাগারে শ্মশানে চ শক্ত-প্রস্তেহতিসম্বটে॥
গভীরেহতিজলাকীর্ণে ভগ্নপোতে বিষাদনে।
রণমধ্যে মহাভীতে হিংশ্রজস্ত্র-সমন্বিতে।
সর্ব্বতো মূচ্যতে স্থজা শক্ষরন্থ প্রসাদতঃ॥

ইত্তি শীর্ষাব্রহ্রে মহার্থানার শীর্ষাক্তঃ॥

ইত্তি শীর্ষাব্রহ্রে মহার্থানার শীর্ষাক্তঃ॥

ইত্তি শীর্ষাব্রহ্রে মহার্থানার শীর্ষাক্তঃ॥

ইত্তি শীর্ষাব্রহ্রে মহার্থানার শীর্ষাক্তঃ॥

ইত্তি শীর্ষাব্রহ্রে মহার্থানার শীর্ষাক্ত

ইতি শীব্ৰন্ধবৈবৰ্ত্তে মহাপুরাণে শ্রীকৃষ্ণ-জন্মখণ্ডে হিমালয়-কৃতং শিব-স্তোত্তম্ ॥

মহিম্নস্তোত্রম্।

মহিয়ঃ পারস্তে পরমবিহুষো যত্মদৃশী,
স্তুতিত্র ক্লাদীনামপি তদবদরাস্থয়ি গিরঃ।
অথাবাচ্যঃ সর্ব্যঃ স্বমতিপরিণামাবিধি গৃণন্,
মমাপ্যেষঃ স্তোত্রে হর! নিরপবাদঃ পরিকরঃ॥
অতীতঃ পন্থানং তব চ মহিমা বাশ্বনসয়োরতদ্বারস্তা যং চকিতমভিধতে শ্রুতিরপি।

স কস্ম স্তোতবাঃ কতিবিধগুণঃ কস্ম বিষয়ঃ, পদে স্বর্লাচীনে পত্তি ন মনঃ কন্স ন বচঃ॥ মধুক্ষীতা বাচঃ পরমম্মতং নির্শ্বিতবত-স্তব ব্রহ্মন কিং বাগপি সুরগুরোর্কিস্ময়পদম। মম ত্বেতাং বাণীং গুণকথনপুণ্যেন ভবতঃ, পুনামীত্যর্থেহিম্মিন্ পুরম্থন! বুদ্ধির্ব্যাবসিতা॥ **उदिनश्र्याः यखब्जग**त्रुमग्रतकाञ्चनग्रकूर, ত্রয়ীবস্ত ব্যস্তং তিস্বয়ু গুণভিন্নাস্থ তমুয়ু। **অভব্যানামস্মিন্ বরদ! রমণীয়ামরমণীং,** বিহন্তং ব্যাক্রোশীং বিদধত ইহৈকে জডধিয়ঃ॥ কিমীহঃ কিংকায়ঃ স খলু কিমুপায় স্ত্রিভূবনং, কিমাধারো ধাতা স্থজতি কিমুপাদানমিতি চ। অতর্কৈশ্বর্য্যে স্বয়নবসরত্বঃস্থে হতধিয়ঃ, কুতর্কোহয়ং কাংশ্চিন্মুখরয়তি মোহায় জগতঃ॥ অজনানো লোকাঃ কিমব্যব্যক্ষেত্রপি জগতা-মধিষ্ঠাতারং কিং ভববিধিরনাদত্য ভবতি। वनीत्भा वा कूर्याष्ट्रवनक्रमत्न कः পরিকরো, যতো মন্দাস্থাং প্রত্যমরবর ! সংশেরত ইমে॥ ত্রয়ী সাঙ্খ্যাং যোগঃ পশুপতিমতং বৈষ্ণবমিতি. প্রভিন্নে প্রসানে পর্মিদমদঃ পথ্যমিতি চ। कृतीनाः दिवित्वजामुक्कुकुर्विननानाभथकृषाः, नृगात्मत्का भगासमि भग्नमामर्गत हैत ॥ মহোক্ষঃ খট্টাক্ষ্ণ পরশুরজিন্য তত্ম ফণিনঃ. কপালঞ্চেতীয়ত্তব বরদ। তন্ত্রোপকরণম॥

সুরাস্তাস্থাদ্বন্ধিং দংতি তু ভবদুক্রপ্রণিহিতাং, ন হি স্বাত্মারামং বিষয়মগতকা ভ্রময়তি॥ দ্রুবং কশ্চিৎ সর্ব্বং সকলমপরস্বদ্রুবমিদং, পরো ধৌবাাধৌবো জগতি গদতি বাস্তবিষয়ে। সমস্তেহপ্যেতস্মিন্ পুরমণন! তৈর্নিস্মিত ইব, खतन किद्धिय वार न थनू नकू धृष्टी मूथत्रा ॥ **उरिवर्धाः यञ्जानयञ्ज**भति वितिक्षिर्दतित्रसः, পরিচ্ছেত্রং যাতাবনলমনলক্ষরবপুষঃ। ততো ভক্তিশ্রদাভরগুরুগণস্ত্যাং গিরিশ! যৎ. স্বয়ং তম্বে তাভ্যাং তব কিমমুবুত্তির্ন ফলতি॥ অয়পাদাসাম্ম ত্রিভুবনমবৈরব্যতিকরং, দশাস্তো যম্বাছুনভূত রণকগু,পরবশান্। শিরঃপদ্মশ্রেণীরচিতচরণাম্ভোরুহবলেঃ. স্থিরায়াম্বভক্তে স্ত্রিপুরহর! বিক্ষৃ জিতমিদম্॥ অমুয়্য বংসেবাসমধিগতসারং ভুজবনং, বলাৎ কৈলাসেহপি অদ্ধিবসতো বিক্রময়তঃ। অলভ্যা পাতালে২প্যলসচলিতালুষ্ঠশির্সি, প্ৰতিষ্ঠা স্বয়াসীদ্ধু ব্যুপচিতো যুহ্ছতি খলঃ ॥ যদৃদ্ধিং স্ত্রাম্মো বরদ! পরমোচ্চেরপি সতী-भश्कातक वानः পরিজনবিধেয়ত্রিভূবনঃ। ন তচ্চিত্রং তঙ্গিন বরিবসিতরি অচ্চরণয়ো-র্ন কস্থাপুরুত্যে ভবতি শিরসম্বয়বনতিঃ॥ অকাণ্ড-ব্রহ্মাণ্ড-ক্ষয়চকিত-দেবাস্থরক্পা-বিধেয়স্তাসীদযন্ত্রিনয়ন! বিষং সংস্কৃতবতঃ।

স কল্মাষঃ কণ্ঠে তব ন কুরুতে ন শ্রিয়মহো, বিকারোহপি শ্লাঘ্যো ভুবনভয়ভঙ্গব্যসনিনঃ 🎚 অসিদ্ধার্থা নৈব কচিদপি সদেবাস্থরনরে, নিবর্ত্তমে নিতাং জগতি জয়িনো যস্য বিশিখাঃ। স পশুরীশ! সামিতরস্থরসাধারণমভূৎ, স্মরঃ স্মর্ত্তব্যাত্মা ন হি বশিধু পথ্যঃ পরিভবঃ ॥ মহী পাদাঘাতাদ্বজতি সহসা সংশ্যপদং, পদং বিষ্ণোর মাজজপরিঘরুগ্ন-গ্রহণণম। মুহুদ্দৌদৌস্থ্যং যাত্যনিভূতজটা তাড়িত-তটা, জগদ্রক্ষায়ৈ বং নটিদ নমু বামৈব বিভূতা॥ বিয়ন্ত্রাপী তারাগণগুণিত-ফেনোলামরুচিঃ. প্রবাহো বারাং যঃ পৃষতলগুদৃষ্টঃ শিরসি তে। জগদ্দীপাকারং জলধিবলয়ং তেন ক্লতমি-जातिताताता १ ४०-महिम मिवाः जव वर्षः॥ র্থঃ কোণী যন্তা শত-ধৃতিরগেল্রো ধরুরথো, রথাঙ্গে চক্রার্কে) রথচরণ-পাণিঃ শর ইতি। দিধক্ষোন্তে কোহয়ং ত্রিপুরত্বণমাড়ম্বরবিধি-র্বিধেয়েঃ ক্রীড়স্ক্যো ন খলু পরতন্ত্রাঃ প্রভূধিয়ঃ॥ হবিস্তে সাহস্রাং কমলবলিমাধায় পদয়ো-র্যদেকোনে তিমন্ নিজমুদহরন্নেত্রকমলম্। গতো ভক্ত্যুদ্রেকঃ পরিণতিমসো চক্রবপুষা, ত্রয়াণাং রক্ষায়ৈ ত্রিপুরহর! জাগর্ত্তি জগতাম। ক্রতো সুপ্তে জাগ্রহুমদি ফলযোগে ক্রতুমতাং, ক কর্ম্ম প্রধ্বস্তং ফলতি পুরুষারাধনমূতে।

অতস্থাং সংপ্রেক্ষ্য ক্রতুর্ ফলদানপ্রতিভূবং, শ্রুতে শ্রদ্ধার বদ্ধা দৃঢ়পরিকরঃ কর্ম্মস্থ জনঃ।। ক্রিয়া-দক্ষো দক্ষঃ ক্রতুপতিরধীশস্তমুভতা-मृयीगामाविकाः भवनमः। मन्याः स्वतंगनाः। ক্রতুরংশস্থতঃ ক্রতুষু ফলদানব্যসনিনো, ঞ্বং কর্ত্তঃ শ্রদ্ধাবিধুরমভিচারায় হি মখাঃ।। প্রজানাথং নাথ! প্রসভমভিকং স্বাং চুহিতরং, গতং রোহিঙ্ক তাং রিরময়িবুমৃষ্যস্থ বপুষা। ধমুম্পাণের্যাতং দিবমপি সপত্রাক্বতমমুং, ত্রসন্তং তেই ছাপি ত্যজতি ন মুগ-ব্যাধ-রভসঃ।। স্থলাবণ্যাশংসা ধৃতধমুষম্ভার তৃণবৎ, পুরঃ প্লুষ্টং দৃষ্ট্রা পুরমথন ! পুস্পায়ুধমপি। यि देखाः (परी यमनित्र जानशक्ति परिना-দবৈতি স্বানধ্বা বত বরদ ! মুগ্ধা যুবতয়ঃ।। শ্রশানেম্বাক্রীড়াঃ স্বরহর ! পিশাচাঃ সহচরা-শ্চিতাভঙ্গালেপঃ স্রগপি নুরোটীপরিকরঃ। অমঙ্গল্যং শীলং তব ভবতু নামৈবমখিলং, তথাপি স্বর্ভূণাং বরদ ! পরমং মঙ্গলমসি ॥ মনঃ প্রত্যক্ চিত্তে স্বিধ্যভিধায়াত্ত্র্যকৃতঃ, প্রস্থাদ্রোমাণঃ প্রমদসলিলোৎসঙ্গিতদৃশঃ। यनात्नाकाां ब्लानः इन देव निमञ्जामुजभरम, দ্ধত্যস্তস্ত ক কমপি যমিনস্তৎ কিল ভবান।। অমর্কস্থং সোমস্তম্সি প্রনস্থং হত্বহ-স্বমাপস্থং ব্যোম স্ব্যু ধরণিরাক্মা স্বমিতি চ।

পরিচ্ছিন্নামেবং স্বয়ি পরিণতা বিভ্রতি গিরং, ন বিশ্বস্থ তবং বয়মিহ যৎ স্থং ন ভবসি ।। ত্রয়ীং তিন্ত্রো রন্তীস্ত্রিভবনমথো ত্রীনপি স্থরা-নকারাজৈর্বনৈস্তিভিরপি দধন্তীর্ণবিক্বতি। তুরীয়ন্তে ধাম ধ্বনিভিরবরুদ্ধানমণুভিঃ, সমস্তং ব্যস্তং খাং শরণদ! গুণাত্যোমিতি পদম।। ভবঃ শর্কো রুদ্রঃ পশুপতির্থোগ্রঃ সহ মহাং-স্তথা ভীমেশানাবিতি যদভিধানাষ্টকমিদম্। অমুন্মিন প্রত্যেকং প্রবিচরতি দেব! শ্রুতিরপি, প্রিয়ায়াশৈ ধান্নে প্রবিহিতনমস্তোহশি তবতে।। নমো নেদিষ্ঠায় প্রিয়দব দবিষ্ঠায় চ নমো. নমঃ কোধিষ্ঠায় স্বরহর! মহিষ্ঠায় চনমঃ। নমে। বহিষ্ঠায় ত্রিনয়ন। যবিষ্ঠায় চ নমে। নমঃ সর্ববৈশ্ব তে তদিদমিতি শর্কায় চ নমঃ।। ব্রুলবজ্ঞসে বিশ্বোৎপত্তো ভবায় নমে৷ নমঃ. প্রবল্তমদে তৎসংহারে হরায় নমো নমঃ। জনস্থক্ততে সর্বোদ্রিক্তো মূড়ায় নমো নমঃ, প্রমহসি পদে নিষ্ট্রেগুণ্যে শিবায় নমে। নমঃ।। ক্রশপরিণতিচেতঃ ক্লেশবর্ত্তং ক চেদং, রু চ তব গুণসীমোল্লজ্বিনী শশ্বদূদ্ধিঃ। ইতি চকিত্মমন্দীকৃত্য মাং ভক্তিরাধা-দরদ । চরণয়োত্তে বাক্যপুষ্পোপহারম ॥ অসিতগিরিসমং স্যাৎ কজ্জলং সিন্ধু পাত্রং, সুরতরুবরশাখা লেখনী পত্রমুর্মী।

লিখতি যদি গৃহীত্বা সারদা সর্ব্বকালং, তদপি তব গুণানামীণ! পারং ন যাতি॥ অসুরস্থরমুনীজৈরর্চ্চিতস্তেন্দ্র্মোলে-গ্র থিত গুণমহিয়ে। নিগুর্ণস্থোপরস্থা। সকলগুণবরিষ্ঠঃ পুষ্পদস্থাভিধানো, রুচিরমলগুরুক্তঃ স্তোত্রমেতচ্চকার।। অহরহমনবন্তং ধৃর্জ্জটেঃ স্তোত্রমেতৎ, পঠতি পরমভক্ত্যা শুদ্ধচিতঃ পুমান যঃ। স ভবতি শিবলোকে রুদ্রতুল্যস্তথাত্র, প্রচুরতরধনায়ুঃপুত্রবান্ কীর্ত্তিমাংশ্চ।। কুসুম-দশন-নামা সর্কাগন্ধর্কারাজঃ, मिश्व-ममध्यस्योत्नर्क्तवरम्वयः मामः। দ খলু নিজমহিমো ভ্রষ্ট এবাস্ত রোষাৎ, खननिममकावी कितानिताः महिन्नः॥ সুরবরমুনিপূজ্যং স্বর্গমোক্ষৈকহেতুং, পঠতি যদি মন্তুয়ঃ প্রাঞ্জলিনান্সচেতাঃ। ব্রজতি শিবসমীপং কিন্নরৈঃ স্তায়মানঃ, স্তবনমিদমমোঘং পুষ্পদন্ত প্রণীতম্।। মহেশাল্লাপরো দেবো মহিম্নো নাপরা স্তুতিঃ। অঘোরাল্লাপরো মন্ত্রো নাস্তি তত্ত্বং গুরোঃ পরম্।। দীক্ষা দানং তপস্তীর্থং জ্ঞানং যোগাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। মহিয়ঃ স্তবপাঠস্থ কলাং নাইস্তি ষোড়ণীম্।। আসমাপ্তমিদং স্তোত্রং সর্ক্ষমীশ্বরবর্ণনম। অমুপমং মনোহারি পুণ্যং গন্ধর্কভাষিতম্।।

শ্রীপুষ্পদন্তমুখপৃষ্কজ-নির্গতেন, স্তেত্রেণ কিল্পিন-হরেণ হরপ্রিয়েণ। কণ্ঠস্থিতেন পঠিতেন গৃহস্থিতেন,সুপ্রীণিতো ভবতি ভূতপতির্মহেণঃ।

> ইত্যেষা বাশ্বয়ী পূজা শ্রীমচ্ছঙ্করপাদয়োঃ। অর্পিতা তেন দেবেশঃ প্রীয়তাং চ সদাশিবঃ।। ইতি শ্রীপুষ্পদস্তপ্রশীতং মহিন্ধঃ স্তোত্রম্ ॥

শিবকবচম।

শৃণু দেবি প্রবক্ষ্যামি কবচং সর্ক্ষসিদ্ধিদম্।
বৈজ্ঞানারক্ষণং নাম সর্ব্বাপদ্বিনবারণম্।।
বক্তুকোটিসহত্রৈস্ত কল্পকোটিশতৈরপি।
কবচস্ত গুণান্ বক্তুং নৈব শক্তো মহেশ্বরঃ।।
ওঁকারো মে মুখে পাতু নকারঃ কণ্ঠদেশকে।
মকারঃ পাতু শিরসি শিকারো হৃদয়ে মম।।
বাকারো নেত্রযুগে চ যকারো বাহুযুগাকে।
অকারস্ত মুখে পাতু উকারো হৃদয়ে মম।।
মকারঃ পৃষ্ঠদেশে চ পঞ্চার্ণঃ পাতু সর্ব্বতঃ।
ইতি তে কথিতং দেবি কবচং সর্ব্বসিদ্ধিদম্।
বৈলোক্যরক্ষণং নাম সর্ব্বসিদ্ধিপ্র দায়কম্।।
কপ্রে বা দক্ষিণে বাহো কবচস্ত চ ধারণাং।
সর্ব্বব্যাধিবিনির্দ্ধক্তঃ স ভবেন্নাত্র সংশয়ঃ।।
ইতি শ্রীলিঙ্গার্চনতন্ত্রে মহাদেবস্ত ষড়ক্ষরকবচম্।।

কর্পুরস্তোত্রম্।

কর্পূরং মধ্যমাস্থ্যস্বরপরিরহিতং সেন্দ্বামান্দিযুক্তং, বীজন্তে মাতরেতৎ ত্রিপুরহরবধু ত্রিঃকৃতং যে জপন্তি।

তেষাং গভানি পভানি চ মুখকুহরাত্লসন্ত্যেব বাচঃ, স্বচ্ছন্দং ধ্বাস্তধারাধররুচিরে সর্ব্বসিদ্ধিং গতানাম।। केमानः रम्ल्याम् अवग्यतिग्रा वीक्रम्य ग्राहिन, হৃদ্বস্তে মন্দ্রটেতা যদি জপতি জনো বারমেকং কদাচিৎ।। জিত্বা বাচামধীশং ধনদমপি চিরং মোহয়য়ৢজাকী-রুলং চন্দ্রার্দ্ধচড়ে প্রভবতি স মহাঘোররাবাবতংসে॥ केरण देवशनदृष्टः गगरतिनम्यागरत्या गूर्त्छ।, বীজন্তে স্বন্ধমমন্তদিগলিতাচকুরে কালিকে যে জপন্তি। ষেষ্টারং মস্তি তে চ ত্রিভূবনম্পি তে বগুভাবং নয়ন্তি, সক্ষদ্ধান্ত্রধারদ্বয়ধরবদনে দক্ষিণে কালিকেতি॥ উদ্ধি বামে কূপাণং করকমলতলে ছিন্নমুণ্ডং তথাধঃ, সব্যে চাভীব বিঞ্চ ত্রিজগদগহুরে দক্ষিণে কালিকেতি। জাপ্তৈ ত্রাম যে বা তব মন্ত্রিভবং ভাবরস্ত্রেতদম্ব, তেষামষ্ট্রে করস্তাঃ প্রকটিতবদনে সিদ্ধরত্রাম্বকস্য॥ বর্গান্তং বহ্নিংস্থং বিধুরতিবলিতং তল্রয়ং কৃর্চ্চযুগ্রাং, লজ্জাদ্বন্ধ্ব পশ্চাৎ স্মিতমুখি তদণষ্ঠদ্বয়ং যোজয়িত্ব। মাতর্যে যে জপন্তি স্মরহরমহিলে ভাবয়ন্তঃ স্বরূপং, তে লক্ষ্মীলাস্থলীলাকমলদৃশঃ কামরূপা ভবস্তি।। প্রত্যেকং বা দ্বাং ত্রয়মপি চ পরং বাজমত্যস্তগুহুং, হলায়া যোজয়িত্ব। সকলমপি সদা ভাবয়ন্তো জপস্থি। তেষাং নেত্রারবিন্দে বিহরতি কমলা বক্ত শুত্রাংশুবিম্বে, বাগ্দেবী দেবী মুণ্ডস্রগতিশয়লসংকন্স পীনস্তানাঢ্যে।। গতাসনাং বাতপ্রকরকতকাঞ্চীপরিলস-ন্নিতম্বাং দিগম্বাং ত্রিভুবনবিধাত্রাং ত্রিনয়নাম।

ধর্ম-জীবন।

শ্মশানস্থে তল্পে শবহৃদি মহাকালস্থুরত-প্রসক্তাং ঝাং ধ্যায়ন জননি জড়চেতা অপি কবিঃ।। শিবাভির্যোরাভিঃ শবনিবহমুণ্ডাস্থিনিকরৈঃ পরং সঙ্কীর্ণায়াং প্রকটিতচিতায়াং হরবধুম। প্রবিষ্ঠাং সম্ভষ্টামুপরিস্করতেনাতিযুবতীং, সদা আং ধ্যায়ন্তি কচিদপি ন তেখাং পবিভবঃ ।। বদামস্তে কিংবা জননি বয়মুচৈর্জভধিয়ঃ, ন ধাতা নাপীশো হরিরপি ন তে বেত্তি পরমম্। তথাপি বন্তুক্তিমু খরয়তি চাস্মাকমসিতে, তদেতৎ ক্ষন্তব্যং ন খলু পশুরোধঃ সমুচিতঃ।। সমস্তাদাপীনস্তনজ্বনগুগযৌবনবতী-রতাসক্তং নক্তং যদি জপতি ভক্তস্তব মনুম। বিবাদাস্থাং ধ্যায়ন্ গলিতচিকুরস্তদ্য বশগাঃ, সমস্তাঃ সিদ্ধোষা ভূবি চিরতরং জীবতি কবিঃ।। সমাঃ স্বস্থীভূতো জপতি বিপরীতো যদি সদা, কিচিন্তা খাং ধ্যায়ন্নতিশয়মহাকালস্থরতাম। তদা তস্য কোণীতলবিহরমাণস্য বিরুষঃ, করান্তোজে বশ্বা হরবধু মহাসিদ্ধিনিবহাঃ।। প্রস্থতে সংসারং জননি জগতীং পালয়তি চ. সমস্তং কিত্যাদি প্রলয়সময়ে সংহরতি চ। অতস্ত্রং ধাতাপি ত্রিভুবনপতিঃ শ্রীপতিরহো, মহেশোহপি প্রায়ঃ সকলমপি কিং স্টোমি ভবতীম।। অনেকে সেবস্তে ভবদধিকগীর্কাণনিবহান. বিমঢ়ান্তে মাতঃ কিমপি ন হি জানন্তি পরম্ম।

मभाताधामानाः श्रिश्त-वित्रिकानिविवृदेधः, প্রপন্নোহন্দি স্বৈরং রতিরসমহানন্দনিরতাম।। धतिबी कैनानः अठिविश मगौतानाक्षेत्र गर्भनः. অমেকা কল্যাণী গিরিশরমণী কালি সকলম। স্তুতিঃ কা তে মাত্রনিজকরুণয়া মামগতিকং. প্রসন্না বং ভূয়া ভবমকু ন ভূয়ান্মম জকুঃ।। শ্মশানস্থঃ স্থস্থে গলিতচিকুরো দিকুপটধরঃ, সহস্রস্থানাং নিজগলিতবীর্য্যেণ কুসুমম্। জপংস্বৎপ্রত্যেকং মনুমপি তব ধ্যাননিরতো. মহাকালি স্বৈরং স ভবতি ধরিত্রীপরিরচঃ।। গুহে সম্মার্জন্যা পরিগলিতবীর্য্যং হি চিকুরং, সমূলং মধ্যাহে বিতরতি চিতায়াং কুজদিনে। সমুচ্চার্য্য প্রেমা মন্ত্রমপি সকুৎ কালি সততং, গঙ্গারুটো যাতি ক্ষিতিপরিবৃদ্ধ সৎকবিবরঃ।। স্বপুলোরাকীর্ণং কুসুমধন্থবো মন্দিরমহো, পুরো ধ্যায়ন ধ্যায়ন যদি জপতি ভক্তন্তব মহুম। স গন্ধর্বশ্রেণীপতিরপি কবিত্বায়তনদী-নদীনঃ পর্যান্তে পর্মপদলীনঃ প্রভবতি।। ত্রিপঞ্চারে পীঠে শবশিবছদি স্মেরবদনাং. यहाकारलातारेर्छम्बलनत्रनावग्रानित्राय । সমাসক্রো নক্তং স্বয়মপি রতানন্দনিরতো. জনো যো शारि खामि जनि म मा प्यार यह है।। সলোমান্তি স্বৈরং পললমপি মার্জারমসিতে. পরঞ্চিষ্টং মৈষং নরমহিষয়োশ্ছাগমপি বা।

বলিন্তে পূজায়ামপি বিতরতাং মর্ত্যবস্তাং,
সতাং সিদ্ধিঃ সর্কা প্রতিপদমপূর্কা প্রভবতি ।।
বশী লক্ষং মন্ত্রং প্রজপতি হবিয়াশনরতাে,
দিবা মাত্যু স্মচরণযুগলধ্যাননিপুণঃ ।
পরং নক্তং নগ্নো নিধুবনবিনোদেন চ মন্তুং,
জপেল্লক্ষং স সাাৎ স্বরহরসমানঃ ক্ষিতিতলে ॥
ইদং স্থোত্রং মাতস্তব মন্তুসমুদ্ধারণজন্তুঃ,
স্বরূপাখাং পাদাস্কুসুগল-পূজাবিধিযুত্যু ।
নিশার্ক্ষং বা পূজাসময়মধি বা যন্ত্র পঠতি,
প্রলাপস্তস্যাপি প্রসরতি কবিত্যামৃতরসঃ ।।
ক্রেক্সাক্ষীরন্দং তমন্তুসরতি প্রের-প্রতিনিধিঃ ।
রিপুঃ কারাগারং কলয়তি চ তং কেলিকলয়া,
চিরং জীবমুক্তঃ স ভবতি চ ভক্তঃ প্রতিজন্তু ।।

ইতি শ্রীমহাকালবিরচিতং শ্রীদক্ষিণ-কালিকয়াঃ স্বরূপাখ্যং স্তোত্রস্।

কালীকবচম্।

শ্রীভেরব উবাচ । — কালিকা যা মহাবিত্যা কথিতা ভূবি হুর্লভা।
তথাপি হৃদয়ে শল্যমস্তি দেবি কুপাং কুরু।।
কবচন্ত মহাদেবি কথয়সামুকম্পায়।
যদি নো কথাতে মাতর্বিমুঞ্চামি তদা তমুম্॥
শ্রীদেব্যবাচ।—শক্ষাপি জায়তে বৎস তব স্নেহাৎ প্রকাশিতম্।
ন বক্তবাং ন দুইবামতিগুহুতরং মহৎ॥

কালিকা জগতাং মাতা শোকত্বঃখবিনাশিনী। বিশেষতঃ কলিযুগে মহাপাতকহারিণী॥ কালী মে পুরতঃ পাতৃ পৃষ্ঠতশ্চ কপালিনী। কুৰা মে দক্ষিণে পাতু কণো চোগ্ৰপ্ৰভা মতা। বদনং পাতৃ মে দীপ্তা নীলা চ চিবুকং নদা। ঘনা গ্রীবাং দদা পাতু বলাকা বাহুযুগাকম ॥ মাতা পাতু করম্বন্ধং বক্ষো মুদ্রা সদাবতু। মিতা পাতু স্তনদ্বন্ধং যোনিং মণ্ডলদেবতা॥ ব্রাহ্মী মে জঠরং পাতু নাভিং নারায়ণী তথা। উর মাহেশ্বরী নিত্যং চামুগু। পাতু লিঙ্গকম্॥ কৌমারী চ কটিং পাতৃ তথৈব জাতুযুগাকম। অপরাজিতা পাদে মে বারাহী পাতু চাঙ্গুলীন ॥ সন্ধিস্থানং নারসিংহী পত্রস্থা দেবতাবতু। রক্ষাহীনম্ভ যৎ স্থানং বৰ্জ্জিতং কবচেন তু। তৎ সর্বাং রক্ষ মে দেবি কালিকে ঘোরদক্ষিণে। উদ্ধৰ্মধন্তথা দিক্ষ পাতু দেবী স্বয়ং বপুঃ। হিংস্রেভ্যঃ সর্বাদা পাতৃ সাধকঞ্চ জলাধিকাং। দক্ষিণা কালিকা দেবী ব্যাপকত্বে সদাবতু॥ ইদং কবচমজ্ঞাত্বা যো জপেদেবীদক্ষিণাম। ন পূজাফলমাপ্নোতি বিন্নস্তস্ত্র পদে পদে॥ কবচেনারতো নিড্যং যত্র তত্ত্বৈব গছতে। তত্ৰ তত্ৰাভয়ং তস্য ন ক্ষোভং বিশ্বতে কচিৎ॥ ইতি একালীকুলসর্কমে দক্ষিণকালিকাকবচম।

গুরুস্তোত্রম্।

ওঁ নমস্তভ্যং মহামন্ত্রদায়িনে শিবরূপিণে। ব্রহ্মজ্ঞানপ্রকাশায় সংসারত্বঃখতারিণে॥ অতিসৌম্যায় দিব্যায় বীরায়াজ্ঞানহারিণে। নমস্তে কুলনাথায় কুলকোলীগুদায়িনে॥ শিবতত্বপ্রবোধায় ব্রহ্মতত্তপ্রকাশিনে। নমস্তে গুরুবে তুভ্যং সাধকাভয়লায়িনে॥ অনাচারচারাভাব-বোধায় ভাবহেতবে। ভাবাভাববিনিমু ক্ত-মুক্তিদাত্রে নমো নমঃ॥ নমোহস্ত শন্তবে তৃত্যং দিব্যভাবপ্রকাশিনে। জ্ঞানানন্দস্তরপায় বিভবায় নমে। নমঃ॥ শিবায় শক্তিনাথায় সচিচদানন্দরপিণে। কামরপায় কামায় কামকেলিকলাখনে॥ কুলপূজোপদেশায় কুলাচারস্বরূপিণে। আরক্তনিজতচ্চক্তি-সমভাগবিভূতয়ে। নমস্তেহস্ত মহেশায় নমস্তেহস্ত নমো নমঃ॥ ইদং স্তোত্রং পঠেরিত্যং সাধকো গুরুদিরা খ:। প্রাতরুখায় দেবেশি ততো বিষ্যা প্রসীদতি। ইতি কুন্দিকাতস্ত্রোক্তং গুরুস্তোত্রম।

গুরুকবচম্।

শ্রীদেব্যবাচ।—ভূতনাথ মহাদেব কবচং তস্য মে ব গুরুদেবস্য দেবস্য সাক্ষাদ্বন্ধরূপিণঃ ॥ াঈশ্বর উবাচ।—অথাতঃ কথয়ামীশে কবচং মোক্ষদায়কম। यमा अलानः विना (पवि न मिक्तिन ह मनाजिः॥ ব্রন্ধাদয়োহপি গিরিজে সর্বত্ত যাজিনঃ স্মৃতাঃ। অস্য প্রদাদাৎ সকলা বেদাগমপুরঃসরাঃ॥ কবচস্তাস্ত দেবেশি ঋষিবিফুরুদার্তঃ। ছুন্দো বিরাড় দেবতা চ গুরুদেবঃ স্বয়ং শিবঃ॥ চতুর্ব্বর্গজ্ঞানমার্গে বিনিয়োগঃ প্রকীর্ত্তিতঃ। সহস্রারে মহাপদ্মে কপূর্বধবলো গুরুঃ॥ বামোরুস্থিতশক্তির্যঃ সর্ব্বত্র পরিরক্ষতু। পরমাখ্যো গুরুঃ পাতু শিরস্ত মম বল্লভে।। পরাপরাখ্যো নাসাং মে পরমেষ্ঠা মুখং সদা। कर्श सम मना পाञ् अस्नानानननाथकः।। বাছ ছো সনকাননঃ কুমারানন্দ এব চ। विश्वितन्त्रताथक क्रमग्नः भाषु मर्वामा ॥ ক্রোধাননঃ কটিং পাতু সুখাননঃ পদং মম। धानानमञ्ज नक्तां (वाधानमञ्ज कानत ॥ সর্বত্র গুরুবঃ পাস্ত সর্বে ঈশ্বররূপিণঃ। ইতি তে কথিতং ভদ্রে কবচং পরমং শিবে॥ ভক্তিহীনে হুরাচারে দক্তৈতৎ মৃত্যুমাপুরাৎ। অসৈাব পঠনাদ্ধেবি ধারণাৎ শ্রবণাৎ প্রিয়ে॥ জায়তে মন্ত্ৰসিদ্ধিশ্চ কিমন্তৎ কথয়ামি তে। कर्छ वा मिक्सल वार्ट्श मिथायाः वीतवन्ति ॥ श्रावनानामायः श्राप्तः ग्रमायाः कवायः यथा । ইদং কবচমজ্ঞাত্বা যদি মন্ত্ৰং জপেৎ প্ৰিয়ে॥

তৎ সর্বাং নিক্ষলং কৃত্বা গুরুর্যাতি স্থনিশ্চিতম্। শিবে রুপ্টে গুরুস্তাতা গুরো রুপ্টে ন কশ্চন।। ইতি কন্ধালমালিনীতন্ত্রে গুরুকবচম।।

দ্রীগুরুস্থোত্রম্।

শ্রীদেব্যবাচ।—স্তুতিঞ্চ কবচং নাথ শ্রোতুমিচ্ছামি সাম্প্রতম। শ্রীগুরোঃ কবচং স্তোত্রং পুরা প্রাক্তং হয়া প্রভো॥ ইদানীং স্ত্রীগুরোস্তোত্রং কবচং ময়ি কথ্যতাম । যস্য বিজ্ঞানমাত্রেণ পুনর্জন্ম ন বিস্ততে॥ শ্রীশিব উবাচ।—শুণু দেবি প্রবক্ষ্যামি স্তোত্রং পরমগোপনম। যস্য শ্রবণমাত্রেণ সংসারানুচ্যতে নরঃ॥ নমস্তে দেবদেবেশি নমস্তে হরপুজিতে। ব্রন্ধবিত্যাম্বরূপায়ে তাস্যে নিতাং নমে। নমঃ॥ অজ্ঞানতিমিরাশ্বস্য জ্ঞানাঞ্জনশলাক্ষা। যয়া চক্ষকন্মীলিতং তলৈয় স্থীগুরবে নমঃ॥ ভববন্ধনপারস্য তারিণী জননী পর।। জ্ঞানদা মোক্ষদা নিত্যা তলৈয় নিত্যং নমো নমঃ॥ শ্রীনাথবামভাগস্থা সদয়া স্থরপৃঞ্জিতা। সদা বিজ্ঞানদাত্রী চ তাসো নিতাং ন্যো ন্যঃ॥ সহস্রারে মহাপদ্মে সদানন্দস্বরূপিণী। মহামোক্ষপ্রদা দেবী তাস্যে নিত্যং নমে। নমঃ॥ ব্রহ্মবিষ্ণুস্বরূপা চ মহারুদ্রস্বরূপিণী। ক্রিগুণাত্মস্বরূপা চ তাদ্যে নিতাং নমো নমঃ॥ চক্রত্র্য্যাগ্রিরূপ। চ মদাবৃর্ণিতলোচনা।

স্থনাথঞ্চ সমালিক্ষ্য তদ্যৈ নিতাং নমো নমঃ॥

ব্রন্ধবিষ্ণুশিবস্থাদি-জীবন্ম্ ক্রিপ্রদায়িনী।
জ্ঞানবিজ্ঞানদাত্রী চ তগৈয় নিত্যং নমে। নমঃ॥
ইনং স্তোত্ত্বং মহেশানি যঃ পঠেৎ ভক্তিসংযুতঃ।
স সিদ্ধিং লভতে নিত্যং সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ॥
প্রাতঃকালে পঠেদ্যস্ত গুরুপূজা-পুরঃসরম্।
স এব ধত্যো লোকের্ দেবীপুত্র ইব ক্ষিতো॥
ইতি মাতৃকাভেদতত্বে স্ত্রীপ্রয়াঃ স্তোত্রম্॥

স্ত্রী গুরুকবচম।

শ্রীপদাশিব উবাচ। শ্রীগুরুকবচস্তাস্ত সদাশিব-ঋষিঃ স্মৃতঃ।
তবাধ্যা দেবতা খ্যাতা চতুর্বর্গকলপ্রদা॥
ক্রীং-বীজং চক্ষুষোর্মধ্যে সর্বাঙ্গং মে সদাবতু।
ব্রং-বীজং মে মুখং পাতু হ্রীং জিহ্বাং পরিরক্ষতু॥
শ্রীং-বীজং ক্ষদদেশং মে হসধফ্রেং ভুজদ্বয়ম্।
হকারঃ কঠদেশং মে সকারঃ বোড়শং দলমু।
ক্ষবর্গনাং পাতু লকারো হদয়ং মম॥
বকারঃ পৃষ্ঠদেশঞ্চ রকারো দক্ষপার্থকম্।
য়্বারো!বামপার্থঞ্চ সকারো মেরুমেব চ॥
হকারো মে দক্ষভুজং ক্ষকারো বামহস্তকম্।
মকারশ্চাঙ্গুলিং পাতু লকারো মে নখং বতু॥
বকারো মে নিতন্ত্বঞ্চ রকারো জঠরং বতু।
য়ীক্ষারঃ পাদমুগলং হে সাঃ স্ব্রাক্ষমেব চ॥

(र नीः निक्रक लागानि (कमक পরিরক্ষতু। ঐং-বীজং পাতৃ পূর্বে মে খ্রীং-বীজং দক্ষিণুেহবতু ॥ শ্রীং-বীব্ধং পশ্চিমে পাতু উত্তরে ভূত-সম্ভবম্। শ্রীং পাতু অগ্নিকোণে চ বেদাখ্যা নৈশ্ব তেহবতু॥ দেব্যম্বা পাতু বায়ব্যাং শম্ভে শ্রীপাত্তকা তথা। পূজ্য়ামি তথা চোদ্ধং নমশ্চাধঃ সদাবতু।। ইতি তে কথিতং কান্তে কবচং পরমাদ্ভুতম্। গুরুমন্ত্রং জপিত্বা তু কবচং প্রপঠেদযদি॥ স সিদ্ধঃ সগণঃ সোহপি শিব এব ন সংশয়ঃ। পূজাকালে পঠেদ্যস্ত কবচং যন্ত্রবিগ্রহম্॥ পূজাফলং ভবেত্তস্ত সত্যং সত্যং স্থুরেশ্বরি। ত্রিসন্ধ্যং যঃ পঠেন্দেবি স সিদ্ধো নাত্র সংশয়ঃ ॥ ज्र्रा विनिधिज्रेक्षेत वर्गद्वः धात्रराम्यि । তম্ম দর্শনমাত্রেণ বাদিনো নিপ্সভাং গতাঃ॥ বিবাদে জয়মাপ্লোতি রণে চ নিশ্বতিঃ সমঃ। সভায়াং জয়মাপ্নোতি মম তুল্যো ন সংশয়ঃ॥ সহস্রারে ভাবরন্ তাং ত্রিসন্ধ্যং প্রপঠেদ্যদি। স এব সিদ্ধো লোকেয় নির্বাণপদমীয়তে॥ সমস্তমঙ্গলং নাম কবচং পরমান্ত্তম। यदेन करेन न माठवाः न প्रकाशः कमाठन॥ দেয়ং শিষ্যায় শাস্তায় চাক্তথা পতনং ভবেৎ। অভক্তেভ্যন্চ দেবেশি পুত্রেভ্যোহপি ন দর্শয়েৎ॥ हेमः कवहमञ्जाबा मनविष्ठाक (या कर्पार । স নাপোতি ফলং তম্ম চাম্বে চ নরকং ব্রজেৎ॥

সমাপ্তং কবচং দেবি কিমগ্রৎ শ্রোত্মিচ্ছসি। তব শ্বেহামুবন্ধেন কিং ময়া ন প্রকাশিতম্॥ ইতি মীতৃকাভেদতন্ত্রে স্ত্রীগুরুকবচম্॥ বাণীস্তোত্রম।

নাজ্ঞবন্ধ্য উবাচ।—কৃপাং কুরু জগন্মাতমার্মেব হততেজসম। গুরুশাপাৎ স্মৃতিভ্রষ্টং বিদ্যাহীনঞ্চ হুঃখিতম ॥ জ্ঞানং দেহি স্মৃতিং দেহি বিচ্ঠাং বিচ্ঠাধিদেবতে। প্রতিষ্ঠাং কবিতাং দেহি শক্তিং শিশ্বপ্রবোধিকাম্॥ গ্রন্থকর্ত্তকশক্তিঞ্চ সৎশিষ্যং সুপ্রতিষ্ঠিতম । প্রতিভাং সৎসভায়াঞ্চ বিচারক্ষমতাং শুভাম ॥ नुश्रः प्रर्काः रिनववमार नवीकृठः পूनः कूकः। যথাদ্বরং ভন্মনি চ করোতি দেবতা পুনঃ॥ বন্ধস্বরূপা প্রমা জ্যোতীরূপা স্নাত্নী সর্ববিদ্যাধিদেবী যা তক্তৈ বালৈ নমে। নমঃ॥ যয়া বিনা জগৎ সর্বাং শশ্বদূজীবনা তং সদা। জ্ঞানাধিদেবী যা তক্তৈ সরস্বত্যৈ নমে। নমঃ॥ यश विना क्र नर्तर मृक्यू मञ्जद नना। বাগধিষ্ঠাত্তদেবী যা তক্তৈ বাণ্যৈ নমে। নমঃ॥ হিমচন্দনকুন্দেন্দু-কুমুদাস্ভোজসন্নিভা। वर्गाधितनवी या उटेश हाक्कत्रादेश नत्या नयः॥ विमर्गविन्यूभाजाञ्च यमिक्षानस्य ह। তদধিষ্ঠাত্রী যা দেবী ভারতো তে নমে। নমঃ॥ যয়া বিনাত্র সংখ্যাকৃৎ সংখ্যাকর্ত্তং ন শক্যতে। কালসংখ্যাস্বরূপ। যা তক্সৈ দেবো নমে। নমঃ।

ব্যাখ্যাম্বরূপা যা বেবী ব্যাখ্যাধিষ্ঠাতদেবতা। ভ্রমসিদ্ধান্তরপা যা তদ্যৈ দেব্যৈ নমে। নমঃ॥ স্বতিশক্তিজ্ঞ নিশক্তিবু দ্বিশক্তিম্বরূপিণী। প্রতিভা-কল্পনাশক্রিয়া চ তক্ত্রৈ নমো নমঃ ॥ সনৎকুমারো ব্রহ্মাণং জ্ঞানং পপ্রচ্ছ যত্র বৈ। বভূব জড়বৎ সোহপি সিদ্ধান্তং কর্ত্ত্বাক্ষমঃ॥ তদা জগাম ভগবানাত্মা শ্রীরুফ ঈশবঃ॥ উবাচ সততং স্তোত্রং বাণীমিতি প্রজাপতিম্। স চ তৃষ্টাব তাং ব্রহ্মা চাজ্যা প্রমাত্মনঃ॥ চকার তৎপ্রসাদেন তদা সিদ্ধান্তমুত্তমম্। यদাপ্যনন্তং পপ্রচ্ছ জ্ঞানমেকং বস্থন্ধরা॥ বভূব মৃকবৎ সোহপি সিদ্ধান্তং কর্ত্ত্রাক্ষমঃ। তদা ত্বাঞ্চ স তুষ্টাব সংত্রস্তঃ কশুপাজয়া॥ ততশ্চকার সিদ্ধান্তং নির্ম্মলং ভ্রমভঞ্জনম্। ব্যাদঃ পুরাণহত্তঞ্চ পপ্রছ বাল্মীকিং যদা॥ মৌনীভূতঃ স সন্মার স্বামেব জগদম্বিকাম্। তদা চকার সিদ্ধান্তং মন্বরেণ মুনীশ্বরঃ॥ সংপ্রাপ নির্দ্মলং জ্ঞানং প্রমাদধ্বংসকারণম্। পুরাণস্ত্রং শ্রুষা স ব্যাসঃ কৃষ্ণকুলোম্ভবঃ ॥ ত্বাং দিষেব দ দধ্যে চ শতবর্ষঞ্চ পুষ্করে। তদা যতো বরং প্রাপ্য স কবীন্দ্রো বভূব হ। তদা বেদবিভাগঞ্চ পুরাণঞ্চ চকার হ॥ যদা মহেন্দ্রঃ পপ্রচ্ছ তত্ত্বজ্ঞানং শিবা শিবম্। ক্ষণং স্বামের সংচিন্তা তাস্যৈ জ্ঞানং দদে বিভঃ॥

পপ্রচ্ছ শব্দশাস্ত্রঞ্চ মহেন্দ্রণ্ড বৃহস্পতিম। দিব্যং বর্ষ্বসহত্রঞ্চ স আং দধ্যে চ পুষ্করে ॥ তদা স্বত্যে বরং প্রাপ্য দিব্যং বর্ষসহস্রকম। উবাচ শব্দশাস্ত্রঞ্চ তদর্গঞ্চ স্থারেশ্বরম্ ॥ অধ্যাপিতাশ্চ থৈঃ শিক্ষা থৈরণীতং মুনীশ্বরৈঃ। তে চ ত্বাং পরিসংচিত্তা প্রবর্ত্তক্তে স্ররেশ্বরি॥ ত্বং সংস্থতা পূজিতা চ মুনীক্রমকুমানবৈঃ। দৈত্যেকৈশ্চ স্থারেশ্চাপি ব্রহ্মবিষ্ণুশিবাদিভিঃ॥ জড়ীভূতঃ সহস্রাস্থ্য পঞ্চবক্ত শুরুর্যুর্যঃ। যাং স্তেত্যি কিমহং স্তেমি তামেকাস্যেন মানবঃ॥ ইত্যুক্ত । যাজ্বকাশ্চ ভক্তিনমাত্মকন্ধরঃ। প্রণনাম নিরাহারো রুরোদ চ মুত্মু তঃ॥ তদা জ্যোতিঃস্বরূপা সা তেনাদৃষ্টাপ্যুবাচ তম্। স্থকবীন্দ্রো ভবেত্যুক্ত্রণ বৈকুণ্ঠঞ্চ জগাম সঃ॥ याक्कवन्नाक्रकः वानी-त्स्नाज्ञः यः मःयठः পঠে९। সুক্বীন্দ্রো মহাবাগ্মী রহস্পতিসমো ভবেৎ॥ মহামুর্খন্চ তুর্মোধাে বর্ষমেকঞ্চ यः পঠেৎ। স পণ্ডিতশ্চ মেধাবী স্থকবিশ্চ ভবেদ্গুৰম্॥ ইতি শ্রীব্রন্ধবৈবর্ত্তে মহাপুরাণে প্রকৃতিখণ্ডে নারায়ণ-नात्रमभारात यो खन दिया किना निर्देश विश्व ।

সরস্বতীকবচম্।

ব্রহ্মোবাচ।—শৃণু বৎস প্রবক্ষ্যামি কবচং সর্বকামদম্ শ্রুতিসারং শ্রুতিস্থং শ্রুত্যক্তং শ্রুতিপূজিতম্ ॥

উক্তং ক্লঞেণ গোলোকে মহাং বন্দাবনৈ বনে। রাদেশরেণ বিভুনা রাদেন রাদমগুলে॥ অতীব গোপনয়ীঞ্ কল্পবৃক্ষসমং পর্ম। অশ্ৰতাত্ত্তমন্ত্ৰাণাং সমূহৈশ্চ সমন্বিতম্॥ যদ্ধা পঠনাদ্বন্ধন্ বুদ্ধিমাংশ্চ রহস্পতিঃ। যদ, স্বা ভগবান্ শুক্রঃ সর্ব্বদৈত্যেরু পূঞ্জিতঃ॥ পঠনাদ্ধারণাম্বাগ্মী কবীক্রো বাল্মীকো মুনিঃ। স্বায়ন্ত্রবো মন্ত্রীশ্চব যদ্ধ, স্বা সর্ব্বপূজিতঃ॥ কণাদো গৌতমঃ কথঃ পাণিনিঃ শাকটায়নঃ। গ্রন্থকার যদ্ধ বা দক্ষঃ কাত্যায়নঃ স্বয়ম ॥ ক্ষা বেদবিভাগঞ্চ পুরাণান্তখিলানি চ। চকার नौनाभारत्व क्षक्षेर्वभावनः अवस् ॥ শাতাতপশ্চ সংবর্ত্তো বশিষ্ঠশ্চ পরাশরঃ। যদ্ধ তা পঠনাদুগ্রন্থং যাজ্ঞবন্ধ্যশ্চকার সং॥ ঋয়শক্ষা ভরম্বাজশ্চান্তীকো দেবলস্তথা। জৈগীৰব্যোহথ জাবালিৰ্যদ্ধ থা সৰ্ব্বপূজিতঃ॥ কবচ্স্যাস্য বিপেক্ত খবিরেষঃ প্রকাপতিঃ। স্বয়ং বৃহস্পতিচ্ছন্দো দেবো রাদেশবঃ প্রভঃ ॥ সর্বতত্ত্বপরিজ্ঞান-সর্বার্থসাধনেষু চ। কবিতাস্থ চ দর্বাস্থ বিনিয়োগঃ প্রকীর্ত্তিতঃ॥ ওঁ হ্রী সরস্বত্যৈ স্বাহা শিরো মে পাতু সর্ব্বতঃ। শ্ৰীং বান্দেবতায়ৈ স্বাহা ভালং মে সর্ব্বদাবতু॥ ওঁ সরস্বত্যৈ স্বাহেতি শ্রোত্রং পাতৃ নিরস্করম্। ্ও শ্রীং হীং ভারত্যৈ স্বাহা নেত্রযুগ্যং সদাবতু॥

ঐং ব্রীং বাগাদিলৈ স্বাহা নাসাং মে সর্বতোহবতু। হ্রীং বিষ্ণাধিষ্ঠাতুদেব্যৈ স্বাহা ওষ্ঠং সদাবতু॥ ওঁ শ্রীং ব্রীং ব্রাক্ষ্যৈ স্বাহেতি দম্বপংক্ষীঃ সদাবতু। ঐ ইত্যেকাক্ষরো মন্ত্রো মম কঠং সদাবত। **७** ड़ौर ड़ौर পां प्र त्य श्रीवार क्रम्बर त्य श्री निमां प्र শ্ৰীং বিষ্যাধিষ্ঠাতদেব্যৈ স্বাহা বক্ষঃ সদাবতু ॥ ওঁ খ্রীঁ বিত্তাস্বরূপায়ৈ স্বাহা মে পাতু নাসিকাম্। ওঁ ব্রী ব্রী বাণ্ডৈ স্বাহেতি মম পূর্চং সদাবতু॥ ওঁ সর্ববর্ণাত্মিকাট্য় পাদযুগ্মং সদাবতু। ওঁ রাগাধিষ্ঠাতদেব্যৈ সর্ব্বাঙ্গং মে সদাবতু॥ उँ नर्सकर्श्वानिरेना स्वाहा প্রাচ্যাং नमावजू। 📝 ওঁ হ্রীং জিহবাগ্রবাসিকৈ স্বাহাগ্রিদিশি রক্ষতু॥ ওঁ ঐ হ্রী শ্রী সরস্বত্যৈ বুধজনকৈ স্বাহা। সততং মন্ত্ররাজোইয়ং দক্ষিণে মাং সদাবতু॥ ওঁ খ্রীং শ্রীং ত্রাক্ষরো মন্ত্রো নৈখ ত্যাং মে সদাবতু। কবিজিহ্বাগ্রবাসিলৈ স্বাহা মাং বারুণেহবতু॥ ওঁ সদান্ধিকায়ৈ স্বাহা বায়ব্যে মাং সদাবতু। ওঁ গল্পপাত্রবাসিলৈ স্বাহা মামুন্তরে হবতু॥ उँ नर्सनाञ्चवानिरेख चार्रिनाखाः नमावज् । ওঁ হ্রীং সর্ব্বপূজিতায়ৈ স্বাহা চোর্দ্ধুং সদাবতু॥ **७ँ डीः পুস্তকবাসিজৈ স্বাহাধো মাং সদাবতু।** ওঁ গ্রন্থবীজরপায়ৈ স্বাহা মাং দর্কতোহবতু॥ ইতি তে কথিতং বিপ্র সর্ব্বমন্ত্রৌষবিগ্রহম। ইদং বিশ্বজয়ং নাম কবচং ব্রহ্মরূপিণম ॥

পুরা শ্রুতং ধর্মবিজ্বাৎ পর্কতে গন্ধমাদনে।
তব শ্বেহানায়াখ্যাতং প্রবক্তব্যং ন কস্যচিৎ ।
গুরুমভার্ক্য বিধিবৎ বস্ত্রালঙ্কারচন্দনৈঃ।
প্রথম্য দণ্ডবদ্ধা কবচং ধারয়েৎ স্থণীঃ॥
পঞ্চলক্ষজপেনৈব সিদ্ধন্ত কবচং ভবেৎ।
যদি স্যাৎ সিদ্ধকবচো বৃহস্পতিসমো ভবেৎ॥
মহাবাগ্মী কবীলৈশ্চ ত্রৈলোক্যবিজয়ী ভবেৎ।
শক্রোতি সর্কং জেতুং সঃ কবচস্য প্রসাদতঃ॥
ইদং তে কাগশাখোক্তং কথিতং কবচং মুনে।
স্থোত্রং পূজাবিধানঞ্চ ধ্যানঞ্চ বন্দনং তথা॥
ইতি শ্রীব্রহ্মবৈবর্ত্তে মহাপুরাণে প্রকৃতিথক্তে নারায়ণনারদসংবাদে সরস্বতীকবচম॥

মহালক্ষীস্তোত্রম্।

ইক্স উবাচ।—নমঃ কমলবাসিত্তৈ নারায়ণ্যৈ নমো নমঃ।
ক্ষণপ্রিয়াত্যৈ সারাত্যৈ পদ্মাত্যে চ নমো নমঃ।
পদ্মপত্রেক্ষণাত্যৈ চ পদ্মস্যাত্যৈ নমো নমঃ।
সর্ব্বসম্পৎস্বরূপাত্যৈ সর্বাদাত্ত্য নমো নমঃ।
স্থাদাত্যৈ মোক্ষদাত্যৈ সিদ্ধিদাত্যে নমো নমঃ।
হরিভক্তিপ্রদাত্ত্ত্যে চ হর্ষদাত্যে নমো নমঃ।
কৃষ্ণবক্ষংস্থিতাত্যৈ চ ক্ষেশাত্য নমো নমঃ।
কৃষ্ণবক্ষংস্থিতাত্যৈ চ ক্ষেশাত্য নমো নমঃ।
কৃষ্ণবক্ষংস্থিতাত্যৈ চ ক্ষেশাত্য নমো নমঃ।
কৃষ্ণবক্ষংস্থিতাত্য বহুপদ্মে চ শোভনে।
সম্পন্ত্যধিষ্ঠাত্দেত্ব্য মহাদেব্য নমো নমঃ॥

শস্যাধিষ্ঠাতদেবৈত্য চ শস্যাহৈয় চ নমে। নমঃ। नत्मा वृक्षित्रक्रभारेश वृक्षिमारेश नत्मा नमः॥ देवकुर्छ या सशानन्त्रीनन्त्रीः कीरताममागरत । यर्गनकी विख्रागार वाकनकी ने भानाय ॥ গৃহলক্ষ্মীশ্চ গৃহিণাং গেহে চ গৃহদৈবতী। সুরভিঃ সা গবাং মাতা দক্ষিণা যজ্ঞকামিনী।। অদিতির্দ্দেবমাতা ত্বং কমলা কমলালয়ে। স্বাহা ত্রঞ্চ হবির্দানে কব্যদানে স্বধা স্মৃতা।। ত্বং হি বিষ্ণুস্থরূপা চ সর্বাধারা বস্তুস্ধরা। শুদ্দসত্তস্তরপা জং নারায়ণপরায়ণ।।। ক্রোধহিংসাবর্জিতা চ বরদা চ শুভাননা। প্রমার্থপ্রদা ত্বঞ্চ হরিদাস্থপ্রদা পর।।। জীবনা তঞ্চ বিশ্বঞ্চ শবতুল্যং যয়। বিনা ।। সর্বেষাঞ্চ পরা মাতা সর্ববান্ধবরূপিনী। যয়া বিনা ন সংভাগো বান্ধবৈক্ষান্ধবঃ সদা।। ত্বয়া হীনো বন্ধহীনঃ ত্বয়া যুক্তঃ স্বান্ধবঃ। ধর্মার্থকামমোক্ষাণাং ত্বঞ্চ কারণরূপিনী।। যথা মাতা স্তনন্ধানাং শিশূনাং শৈশবে যথা। তথা জং সর্বাদা মাতা সর্বেষাং সর্ববিশ্বতঃ।। মাতহীনস্তনতাক্তঃ স চেৎ জীবতি দৈবতঃ। ত্বরা হীনো জনঃ কোহপি ন জীবত্যেব নিশ্চিতম।। স্থপ্রসন্নশ্বরূপা বং মাং প্রসন্না ভবান্ধিকে। বৈবিএক বিষয়ং দেহি মহাং সনাতনি।।

বয়ং যাবৎ ত্বয়া হীনা বন্ধহীনাশ্চ ভিক্ষকাঃ। সর্ব্বসম্পত্তিহীনাশ্চ তাবদেব হরিপ্রিয়ে ।। ताकाः पिरि शिक्षः पिरि वनः पिरि ऋति भेति । কীৰ্ত্তিং দেহি ধনং দেহি যশো মহাং চ দেহি মে॥ া কামং দেহি মতিং দেহি ভোগান দেহি হরিপ্রিয়ে জানং দেহি চ ধর্মঞ্চ সর্বসোভাগ্যমীপ্সিতম্॥ প্রভাবঞ্চ প্রতাপঞ্চ সর্বাধিকারমের চ। জয়ং পরাক্রমং যুদ্ধে পরবৈশ্বর্য্যমেব চ॥ ইত্যুক্তা চ মহেজ্রণ্ড সর্বৈঃ স্থরগণৈঃ সহ। প্রণনাম সাঞ্রনেত্রো মৃদ্ধা চৈব পুনঃ পুনঃ॥ ব্রহা চ শঙ্করকৈর শেষো ধর্মান্চ কেশবঃ। ययुर्क्तवान्ठ मञ्जूष्ठी यः यः श्रानक नात्रम ॥ (मवी यर्यो रुत्तः क्लाफ्ः मुक्ते क्लोरतान्माविनः न যযভূদৈতব স্বগৃহং ত্রন্ধেশানো চ নারদ। দত্বা শুভাশিষং তৌ চ দেবেভ্যঃ প্রীতিপূর্বকম্ ॥ हेनः रखाजः यहार्युगाः जिनसाः यः भरतेनतः । কুবেরতুল্যঃ স ভবেৎ রাজরাজেশ্বরো মহান্।। সিদ্ধস্তোত্রং যদি পঠেৎ সোহপি কল্পতরুর্নরঃ। **পঞ্চলক্ষজপেনৈব স্তোত্রসিদ্ধির্ভবের ণাম্।।** সিদ্ধস্তোত্রং যদি পঠেৎ মাসমেকঞ্চ সংযতঃ। মহাস্থী চ রাজেক্রো ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ।। ইতি শ্রীব্রন্ধবৈবর্ত্ত মহাপুরাণে প্রকৃতিখণ্ডে নারায়ণ-নারদসংবাদে মহালক্ষীন্তোত্রম ।।

लक्यीक्रवह्यू।

অথ বক্ষ্যে মহেশানি কবচং সর্ব্ধকামদম্।

যক্ত বিজ্ঞানমাত্রেণ ভবেৎ সাক্ষাৎ সদাশিবঃ॥
নার্চনং তস্য দেবেশি মন্ত্রমাত্রং জপেররঃ।
স ভবেৎ পার্ব্ধতীপুত্রঃ সর্ব্ধশান্তপুরস্কৃতঃ॥
বিজ্ঞার্থিনা সদা সেব্যা বিশেষে বিষ্ণুবল্পতা॥
অস্তাশ্চাত্রক্ষরী-বিষ্ণুবনিতায়াঃ কবচস্য শ্রীভগবান্ শিবঋষিরস্কাইপ্ ছন্দো বাগ্ভবী দেবতা বাগ্ভবং বীজং লজ্জা
শক্তী রমা কীলকং কামবীজায়কং কবচং মম স্প্রণাণ্ডিত্যকবিত্ব-সর্ব্ধসিদ্ধিসমূদ্ধয়ে বিনিয়োগঃ।

खें-कारता मखरक পाणू वाग् खरी मर्कमिकिना।

डीं পाणू कक्क् रवार्यासा कक्क् यूर्ण क मक्क ती।

किक्वा ताः मूथत्र ख क कर्ग र्यार्ग खरा मि ।

ख्रिवा ताः मूथत्र ख क कर्ग राग खरा मि ।

ख्रिवा ताः मूथत्र ख क कर्ग राग खरा मि ।

श्रिवा ताः विक्वा ताः जा विक्वा ताः विक्वा ताः ।

श्रिवा स्वा विक्वा ताः विक्वा ताः विक्वा ताः ।

कर्म राग ज्ञिवा ताः विवा ताः विवा ताः भूतः।

मर्का त्या पाणू कारमा स्वा विवा ताः भूति ।

ग्रिवा तां विक्वा ताः विवा ताः विवा ताः विवा ।

ग्रिवा तां विवा ताः विवा ताः विवा ताः विवा ताः ।

ग्रिवा तां विवा ताः विवा ताः विवा ताः विवा ताः ।

ग्रिवा तां विवा ताः विवा

विकशा পাত ভবনে कशा পাত मना यय। শিবদূতী দদা পাতু স্থলরী পাতু সর্বদা॥ ভৈরবী পাতু সর্ব্বত্র ভেরুগু সর্ব্বদাবতু। ষ্বিতা পাতু মাং নিত্যং উগ্রতারা সদাবতু॥ পাতু মাং কালিকা নিত্যং কালরাত্রিঃ সদাবতু। বনহর্গা দলা পাতু কামাধ্যা দর্কলাবতু॥ (याणिकः नर्तना भाइ मुनाः भाइ नना मम। माजाः পास मना (मरा फक्षा (यागिनी गर्गाः ॥ সর্বত্র সর্বকার্য্যের সর্বকর্মস্থ সর্বাদা। পাত মাং দেবদেবী চ लक्षाः मर्वत्रमृद्धिन।।। ইতি তে কথিতং দিব্যং কবচং সর্বাসিদ্ধয়ে। यदा ठदा न वक्तवाः यनीत्कानाश्चान। विच्या। শঠায় ভক্তিহীনায় নিন্দকায় মহেশ্বরি। ন্যুনাঙ্গে অতিরিক্তাঙ্গে দর্শয়ের কদাচন। न खतः प्रनियमिताः मःपनी निवश ভবেৎ ॥ কুলীনার মহোচ্ছায় তুর্গাভক্তিপরায় চ। বৈষ্ণবায় বিশুদ্ধায় দন্তাৎ কবচমুত্তমম্ ।। নিজশিয়ায় শান্তায় ধনিনে জ্ঞানিনে তথা। দ্যাৎ কবচমিত্যুক্তং সর্বশাস্ত্রসম্বিতম্।। मत्नी मञ्जनवादत ह त्रक्रहम्मनदेकस्था। যাবকেন লিখেনান্তং সর্ব্বতন্ত্রসমন্বিতম।। বিলিখ্য কবচং দিব্যং স্বয়ন্ত্রকুস্থুমৈঃ শুভৈঃ। স্বস্তুকৈঃ পরশুকৈশ্চ নানাগন্ধসমন্বিতৈঃ।। (शांत्रहनांक्ड्रामन त्रक्रहन्मनांकन व।

ञ्चित्थो ७७८यारा वा अवनामाः त्रविक्ति। অশ্বিতাঃ কৃত্তিকায়াং বা ফল্পতাং বা মঘাসু চ॥ পূর্বভাদ্রপদাযোগে স্বাত্যাং মঙ্গলবাসরে। বিলিখেৎ প্রপঠেৎ স্তোত্রং শুভযোগে সুরালয়ে ॥ আয়ুশ্বৎ-প্রীতিযোগে চ ব্রহ্মযোগে বিশেষতঃ। ইন্দ্রবোগে শুভযোগে শুক্রযোগে তথৈব চ। কৌলবে বালবে চৈব বণিজে চৈব সভ্যঃ॥ শূক্তাগারে শ্মশানে বা বিজনে চ বিশেষতঃ। কুমারীং পূজয়িত্বাদে যজেদ্বেনীং সনাতনীম॥ মৎস্থমাংদৈঃ সোপকরণৈঃ পৃপস্পেবিশেষতঃ। ব্রাহ্মণান্ ভোজয়িতা চ পূজয়েৎ পরমেশ্বরীম্। আখেটকমুপাখ্যানং তত্র কুর্য্যাদ্দিনত্রয়ম। তদা ধরেনাহারকাং শঙ্করেণেতি ভাষিত্য॥ মারণদ্বেষণাদীনি লভতে নাত্র সংশয়ঃ। স ভবেৎ পার্বভীপুত্রঃ সর্বাশাস্ত্রপুরস্কৃতঃ॥ গুরুর্দেবো হরঃ সাক্ষাৎ পত্নী তম্ম হরপ্রিয়া। অভেদেন ভজেদ্যস্ত তম্য সিদ্ধিরদূরতঃ॥ পঠতি য ইহ মর্ত্ত্যো নিতামাদ্রান্তরাত্মা, জপফলমসুমেয়ং লঙ্গ্যতে যদ্বিধেয়ম্। স ভবতি পদ্মুচৈঃ সম্পদাং পাদনম্র-ক্ষিতিপমুকুটলক্ষীর্লক্ষণানাং চিরায়॥ ইতি বিশ্বাসারতন্ত্রে লক্ষীকবচম্॥

ভবাস্থক্তকম্।

ন তাতো ন মাতা ন বন্ধুৰ্ন দাতা, ন পুলো ন পুলী ন ভ্ত্যো ন ভৰ্তা। ন জায়া ন বিভা ন বুত্তিম নৈব, গতিস্থং গতিস্থং স্বমেকা ভবানি॥ ভবান্ধিপারে মহাহঃখভীরো, পপাত প্রকামী প্রলোভী প্রমন্তঃ। সংসারপাশপ্রবদ্ধ: সদাহং, গতিস্তং গতিস্তং স্বয়েকা ভবানি॥ ন জানামি দানং ন চ ধ্যানযোগং,ন জানামি তন্ত্রং ন চ স্তোত্তমন্ত্রম। ন জানামি পৃজ্ঞাং ন চ গ্রাসযোগং, গতিস্থং গতিস্বং স্বমেকা ভবানি॥ न कानामि भूगाः न कानामि ठौर्थः,न कानामि मूक्तिः नग्नः वा कनाहि । ন জানামি ভক্তিং ব্ৰতং বাপি মাতৰ্গতিস্থং গতিস্থং স্বমেকা ভবানি॥ क्कची क्मन्नो क्वृक्षिः क्नामः, क्नामतशीनः कनामतलीनः। কুদৃষ্টি: কুবাক্যপ্রবদ্ধ: সদাহং, গতিস্থং গতিস্থং স্বমেকা ভবানি॥ প্রজেশং রমেশং মহেশং সুরেশং,দিনেশং নিশীথেশ্বরং বা কদাচিৎ। ন জানামি চান্তৎ সদাহং শরণ্যে, গতিস্থং গতিস্থং অমেকা ভবানি॥ বিবাদে বিষাদে প্রমাদে প্রবাদে, জলে চানলে পর্কতে শক্রমধ্যে॥ অর্ণ্যে শ্রণ্যে দদা মাং প্রপাহি,গতিস্বং গতিস্বং হমেকা ভবানি॥ व्यनात्था प्रतित्वा कतात्तागगुरका, महाक्रीनमीनः मना काष्ठावकः। বিপত্তো প্রবিষ্টঃ প্রণষ্টঃ সদাহং, গতিস্কং গতিস্কং অ্যেকা ভবানি ॥ ইতি শঙ্করার্যাবিরচিতং ভবাগ্রপ্টকম।।

তুৰ্গাকবচম্।

প্রীঈশ্বর উবাচ।—শৃণু দেবি প্রবক্ষ্যামি কবচং সর্ব্বসিদ্ধিদম্
পঠিস্থা ধারয়িস্থা চ নরো মুচ্যেত সঙ্কটাৎ॥

অজাত্বা কবচং দেবি হুৰ্গামন্ত্ৰঞ্চ যো জপেং। স নাপ্নোতি ফলং তস্ত পরে চ নরকং ব্রজেৎ।। ইদং গুৰুতমং দেবি কবচং তব কথ্যতে। গোপনীয়ং প্রয়ত্ত্বেন সাবধানাবধারয়।। उँभाषिती भितः পाउँ ननाहेः मृनश्तिनी। ठक्क्षी (थठती পाञ्च कर्णा ठ कात्रवात्रिनी।। সুগন্ধা নাসিকাং পাতৃ বদনং সর্বসাধিনী। জিহ্বাঞ্চ চণ্ডিকা পাতু গ্রীবাংদো ভদ্রিকা তথা।। व्यागकवात्रिमी (हाटा (प्र) वाङ्क वक्षभाविशी। কণ্ঠং পাতৃ মহাবাণী জগনাতা স্তনদ্বয়ম।। সদয়ং ললিতা দেবী উদরং সিংহবাহিনী। কটিং ভগবতী দেবী দাবুর বিশ্বাবাসিনী। মহাবলা চ জজ্মে ছে পাদে ভূতলবাদিনী।। এবং স্থিতাসি দেবি সং ত্রোলাক্যরক্ষণাত্মিকে। রক্ষ মাং সর্বাগাত্রের হুর্গে দেবি নমোহস্ত তে।। ইত্যেতৎ কবচং দেবি মহাবিত্যাফলপ্রদম। যঃ পঠেৎ প্রাতরুখায় সর্বভীর্থফলং লভেং॥ যো অদেৎ কবচং দেহে তস্ত বিল্লং ন কুত্রচিৎ। ভূতপ্রেতপিশাচেভ্যো ভয়ম্বস্ত ন বিদ্যতে।। রণে রাজকুলে বাপি সর্বত্র বিজয়ী ভবেৎ। সর্ব্বত্র পূজামাগ্নোতি দেবীপুত্র ইব ক্ষিতো।। ইতি কুব্ৰিকাতন্ত্ৰে হুৰ্গাকবচম্ ॥

মঙ্গলচণ্ডিকাস্তোত্রম্।

শ্রীশঙ্কর উবাচ।—রক্ষ রক্ষ জগন্মাতর্দ্দেবি মঙ্গলচ্ছিকে। হারিকে বিপদাং রাশিং হর্ষমঙ্গলকারিকে॥ হর্ষমঙ্গলদক্ষে চ শুভমঙ্গলচণ্ডিকে। শুভে মঙ্গলদক্ষে চ শুভমঙ্গলচ্তিকে॥ यक्त यक्रमार्ट् ह प्रस्यक्रमयक्ता । সতাং মঙ্গলদে দেবি সর্বেষাং মঙ্গলালয়ে॥ পূজ্যা মঙ্গলবারে চ মঙ্গলাভীষ্টদৈবতে। পূজ্যা মঙ্গলভূপস্ত মনুবংশস্ত সম্ভতম্॥ মঙ্গলাধিষ্ঠাতদেবী মঙ্গলানাঞ্চ মঙ্গলে। मः मात्रभक्षनाशास्त्र (योक्रमक्रनाशिनी ॥ সারে চ মঙ্গলাধারে পারে চ স্প্রকর্মণাম। প্রতিমঙ্গলবারে চ পূজ্যে চ মঙ্গলপ্রদে॥ স্তোত্রেণানেন শতুশ্চ স্তত্তা মঙ্গলচণ্ডিকাম্। প্রতিমঙ্গলবারে চ পূজাং ক্বরা গতঃ শিবঃ॥ দেব্যাশ্চ মঙ্গলস্তোত্রং যঃ শুণোতি সমাহিতঃ। তন্মঙ্গলং ভবেৎ শশ্বর ভবেক্তদমঙ্গলম্॥ প্রথমে পূজিতা দেবী শিবেন সর্ব্বমঙ্গলা। দ্বিতীয়ে পুঞ্জিতা দেবী মঙ্গলেন গ্রহেণ চ॥ চতুর্থে মঙ্গলবারে চ স্থন্দরীভিশ্চ পুঞ্জিতা। मक्रत्व मक्रवाकारिकान देवर्यक्रवाधिका ॥ পূজিতা প্রতিবিশ্বেষু বিশ্বেশপূজিতা সদা। ততঃ সর্বত্রে সংপূজ্য। সা বভূব স্থারেশ্বরী ॥

দেবাদিভিশ্চ মুনিভির্মন্থ ভিম নিবৈমু নৈ।।
দেব্যাশ্চ মঙ্গলস্তোত্রং যং শৃণোতি সমাহিতঃ।
তন্মঙ্গলং ভীবেৎ শশ্বন্ন ভবেত্তদমঙ্গলম্।
বৰ্দ্ধতে তৎপুত্রপৌত্রমঙ্গলেষ্টং দিনে দিনে।।
ইতি শ্রীব্রহ্মবৈবর্ত্তে মহাপুরাণে প্রকৃতিখণ্ডে নারায়ণনারদসংবাদে মঙ্গলচণ্ডিকা-স্তোত্রম্।।

বগলামুখাঁস্তোত্রম্।

চলৎকনককুগুলোল্লসিত চারুগণ্ডস্থলীং, লসৎকনকচম্পকত্যতিষদিন্দ্বিম্বাননাম। गमार তবিপক্ষকाः कनिত्लान किस्ताक्षनाः, यात्रीय वर्गमायूथीः वियुषम्यनः अखिनीय्।। পীযুষোদধিমধ্যচারুবিলস্থ-রক্তোৎপলে মণ্ডপে, যৎসিংহাসনমৌলিপাতিত-রিপুপ্রেতাসনাধ্যাসিনীম। ম্বর্ণাভাং করপীডিতারিরসনাং ভাম্যালালবিত্রমাং, ইথং ধাায়তি যান্তি তম্ম সহসা সম্মোহথ সর্বাপদঃ।। দেবি বচ্চরণাম্বজার্চনকতে যঃ পীতপুষ্পাঞ্জলিং, ভক্ত্যা বামকরে বিধায় চ মন্থং মন্ত্রী মনোজ্ঞাক্ষরম। পীঠধ্যানপরোহথ কুম্ভকবশাৎ বীজং শরেৎ পার্থিবং, তস্থামিত্রমুখস্থ বাচি হৃদয়ে জাড্যং ভবেৎ তৎক্ষণাৎ।। বাদী মুকতি রঙ্কতি ক্লিভিপতিবৈশ্বানরঃ শীততি, কোধী শাম্যতি হুৰ্জনঃ সুজনতি ক্ষিপ্ৰাহুগঃ খঞ্জতি। গৰ্বী থৰ্বতি দৰ্ববিচ্চ জড়তি ত্বনন্ত্ৰিণা মন্ত্ৰিতঃ, শ্ৰীনিত্যে! বগলামুখি! প্ৰতিদিনং কল্যাণি! তুভ্যং নমঃ।।

মন্ত্রভাবদলং বিপক্ষদলনে স্তোত্তং পবিত্রঞ তে. যন্ত্রং বাদি নিয়ন্ত্রণং ত্রিজগতাং ক্রৈত্রং তু চিত্রং মু তে। মাতঃ ! শ্রীবগলেতি নাম ললিতং যস্তান্তি জম্ভামু থে, তন্নাম-গ্রহণেন সংসদি মুখ-স্তম্ভো ভবেদ্বাদিনাম্।। হুষ্ঠস্তমমূগ্রবিদ্বশ্যনং দারিদ্যবিদাবণং, ভূভ্দ্ভূশমনং চলনা, গদৃশাং (চতঃ-সমাকর্ষণম। সোভাগ্যৈকনিকেতনং মথ দৃশঃ কারুণ্য-পূর্ণামৃতং, মৃত্যোশারণমাবিরস্ত পুরতো মাতস্থদীয়ং বপুঃ।। भा ठ ७ अ र विशक्त वन नः किस्ताः ठलाः की लग्न, বান্ধীং মুদ্র নাশরাশু ধীষণামুগ্রাং গতিং স্তন্তর। শত্রংশ্চুর্ণয় দেবি ! তীক্ষণদয়া গৌরাঙ্গি ! পীতাম্বরে, বিল্লোখং বগলে ! হর প্রনমতাং কারুণ্যপূর্বেক্ষণে !।। মাতভৈর্বি ভদুকালি বিজয়ে বারাহি বিশ্বাশ্রয়ে, ঐবিজে সময়ে মহেশি বগলে কামেশি রামে রমে। মাতঙ্গি ত্রিপুরে পরাৎপরতত্ত্বে স্বর্গাপবর্গপ্রদে! দাসোহহং শরণাগতঃ করুণয়া বিশ্বেশ্বরি ! ত্রাহি মাম্ ॥ সংর্ভে চৌরসজ্যে প্রহরণসময়ে বন্ধনে ব্যাধিমধ্যে, বিজ্ঞাবাদে বিবাদে প্রকুপিতনূপতৌ দিব্যকালে নিশায়াম্ বশ্যে বা স্তম্ভনে বা রিপুবধসময়ে নির্জনে বা বনে বা, গচ্ছংস্তিষ্ঠংস্ত্রিকালং যদি পঠতি শিবং প্রাপ্নু রাদাশু ধীরঃ ॥ নিতাং স্তোত্রমিদং পবিক্রমিহ যো দেব্যাঃ পঠত্যাদরাৎ, ধকা যন্ত্রমিদং তথৈব সময়ে বাহো করে বা গলে। রাজানোহপ্যরয়ো মদাধ্বকরিণঃ দর্পা মূগেন্দ্রাদিকা-স্তে বৈ যান্তি বিমোহিতা রিপুগণা লক্ষীঃ স্থিরাঃ সিদ্ধয়ঃ ॥

বং বিস্তা পরমা ত্রিলোকজননী বিদ্নোঘসংচ্ছেদিনী,
যোষাকর্ষণকারিণী জনমনঃ-সন্দোহসন্দায়িনী।
স্তন্তোৎসারণকারিণী পশুমনঃ-সন্দোহসন্দায়িনী,
জিহ্বা-কীলনভৈরবী বিজয়তে ব্রহ্মাদিমন্ত্রো যথা।
বিস্তাং লক্ষ্মীং সর্বসৌভাগ্যমায়ুঃ,পুল্লৈঃ পোত্রেঃ সর্বসামাজ্যসিদ্ধিন্।
মানং ভোগো বশুম্বিগ্যেন্য,-সৌধ্যং,প্রাপ্তং তদ্বভূতলেহস্মিন্ নরেণ।

যৎ কৃতং জপদন্নাহং গদিতং পরমেশ্বরি।

কুষ্টানাং নিগ্রহার্থায় তং গৃহাণ নমোহস্ত তে॥
ব্রহ্মান্ত্রমিতি বিখ্যাতং ত্রির্ লোকেশু কুর্ক্ল তম্।
গুরুতজ্ঞায় দাতব্যং ন দেয়ং যক্ত কক্সচিৎ॥
পীতাম্বরাং দিভূজাঞ্চ ত্রিনেত্রাং গাত্রকোজ্জলাম্।
শিলামূল্যরহস্তাঞ্চ শরেক্তাং বগলামূখীম্॥
প্রাতম ধ্যাহ্নকালে স্তবপঠনমিদং কার্য্যদিদ্ধিপ্রদং স্থাৎ॥
ইতি রুদ্রথামলে শ্রীবগলামুখীস্তোত্রম্॥

জগদ্ধাত্ৰীস্তোত্ৰম্।

শ্রীশিব উবাচ। আধারভূতে চাধেয়ে গতিরূপে ধুরন্ধরে।

গবে গুবপদে ধীরে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥

শবাকারে শক্তিরূপে শক্তিবিগ্রহে।

শাক্তাচারপ্রিয়ে দেবি জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥

জয়দে জগদাননে জগদেক-প্রপূজিতে।

জয় সর্ব্বগতে হুর্বে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥

পরমাণুস্বরূপে চ দ্বাণুকাদি-স্বরূপিণি।

স্থলাতিস্ক্ররূপে চ জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥

ফ্রন্থাতিফ্রুরূপে চ প্রাণাপানাদিরপিণি। ভাবাভাবস্থরপে চ জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥ কালাদিরপে কালেশে কালাকালবিভেদিনি সর্বস্বরূপে সর্বজ্ঞে জগদাত্তি নমোহস্ত তে ॥ মহাবিত্রে মহোৎসাহে মহামায়ে বরপ্রদে। প্রপঞ্চসারে সাংবীশে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥ অগ্যে জগতামালে মাহেশ্ববি ব্রাঙ্গনে। অশেষরূপে রূপন্তে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥ দ্বিসপ্তকোটিমন্ত্রাণাং শক্তিরূপে সনাতনি। সর্কশক্তিস্বরূপে চ জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥ তীর্থযজ্ঞতপোদান-যোগসারে জগন্ময়ি। ব্যমেব সর্বাং সর্বান্তে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥ प्यात्रात्र प्याप्ट प्यादर् इः श्राति । সর্বাপত্তারিকে হর্গে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে॥ व्यवस्थानम् अश्रीमा अश অমেয়ভাবকুটম্বে জগদাত্রি নমোহস্ত তে॥

তারাস্তোত্র্য।

ইতি জগদাতীকল্পে জগদাতীস্তোত্রম্॥

মাতর্নীলসরস্বতি প্রণমতাং নৌভাগ্যসম্পৎপ্রদে, প্রত্যালীড়পদস্থিতে শবহৃদি স্বেরাননাম্ভাক্সতে। ফুল্লেন্দীবরলোচনত্রয়মুতে কর্ত্রীং কপালোৎপলে, খড়গঞ্চাদধতী সমেব শরণং সামীশ্বরীমাশ্রমে।

বাচামীশ্বরি ভক্তকল্পলতিকে সর্বার্থসিদ্ধীশ্বরি, গত্য-প্রাক্তপত্মকাতরচনা-সর্কার্থসিদ্ধিপ্রদে। নীলেন্দীবরলোচনত্রয়যুতে কারুণ্যবারাং নিধে, সোভাগ্যামৃতবর্ষণেন রূপয়া সিঞ্চ অমসাদৃশম্॥ ধর্কে গর্কসমূহপুরিততনো সর্পাদিবেশোজ্জলে, ব্যাত্রত্বত্-পরিবীত-স্থন্দর-কটিব্যাধৃতঘণ্টাঙ্কিতে। मण्डः कुछगम्जङः পরিলসন্ত্রমীমুর্দ্ধজ-গ্রন্থিশ্রেণিনুমুগুদামললিতে ভীমে ভয়ং নাশয়॥ भाषान्यविकात्रत्रभावना विक्कित्यांकित. হুঁ-ফটুকারময়ী স্বমেব শরণং মন্ত্রাত্মিকে মাদৃশঃ। মূর্ত্তিক্তে জননি ত্রিধা সুঘটিতা সুলাতিক্সা পরা, বেদানাং ন হি গোচরা কথমপি প্রাপ্তাং ফু তামাশ্রয়ে॥ ৰৎপাদামুজদেবয়া সুকৃতিনো গচ্ছন্তি সাযুজ্যতাং, তস্ত ঐপরমেশ্বরি ত্রিনয়নব্রনাদিসাম্যাত্মনঃ। मःमातास्थिमञ्जात भाषे जन्न (मारवास्थान स्तान, भाजखर्भारत्वरत हि विभूशन् किः मन्नधीः त्रवर् ॥ মাতস্ত্রৎপদপক্ষজন্বয়রজোমুদ্রাক্ষকোটিবিণ-(उ (नव) क्यमक्रद्र विक्यिता निःमक्रमद्क गणाः । দেবোহহং ভুবনে ন মে সম ইতি স্পর্দ্ধাং বহন্তঃ পরে, তত্তুল্যাং নিয়তং যথা শুচিবরী নাশং ব্রজস্তী স্বয়ম্॥ জ্বামস্মরণাৎ পলায়নপরা দ্রষ্ট্রঞ্চ শক্তা ন তে, ভূতপ্রেতপিশাচরাক্ষসাগণা যক্ষাশ্চ নাগাধিপাঃ। দৈত্যা দানবাশ্চ খচরা ব্যাঘ্রাদিকা জন্তবো, ডাকিন্তঃ কুপিতান্তকাশ্চ মহুজং মাতঃ ক্ষণং ভূতলে॥

লক্ষীঃ সিদ্ধিগণাশ্চ পাতৃকমুখাঃ সিদ্ধান্তথা বারিণাং, স্তন্ত্রশাসিনে গজঘটা-স্তন্ত্রপথা মোহনম্। মাতস্ত্রৎপদসেবয়া খলু নৃণাং সিধ্যন্তি তে তেঁ গুণাঃ, ক্রান্তিঃ কাস্তমনোভবস্থ ভবতি ক্ষুদ্রোহপি বাচম্পতিঃ॥ তারাষ্ট্রকমিদং পুণ্যং ভক্তিমান্ যঃ পঠেররঃ। প্রাতর্মধ্যাহ্নকালে চ সায়াহ্নে নিয়তঃ শুচিঃ। লভতে কবিতাং দিব্যাং সর্কশাস্ত্রার্থবিস্তবেৎ॥ লক্ষ্মীমনশ্বরাং প্রাপ্য ভুক্ত্বা ভোগান্ যথেপিতান্। কীত্রিং কান্তিঞ্চ নৈক্জ্যং সর্কেবাং প্রিয়তাং ব্রন্ধেই। বিখ্যাতিং চাপি লোকের্ প্রাপ্যান্তে মোক্ষমাগ্নুয়াৎ।।

ইতি নীলতন্ত্রে তারাস্তোত্রম্॥

তারাকবচম্।

শ্রীঈশ্বর উবাচ। —কোটিতন্ত্রেষ্ গোপ্যা হি বিদ্যাতিভয়মোচনী।
দিব্যং হি কবচং তস্তাঃ শৃণুত্ব সর্কামদম্ ॥
তারাকবচাস্যাক্ষোভ্য-ঋষিস্থৃত্ব ছেন্দো ভগবতী তারা দেবতা
সর্কামন্ত্রমিদ্ধামন্ত্রে বিনিয়োগঃ॥

প্রণবো মে শিরঃ পাতু ব্রহ্মরূপা মহেশ্বরী।

রী -কারঃ পাতু ললাটে বীজরূপা মহেশ্বরী॥
স্ত্রীং-কারঃ পাতু বদনে লজ্জারূপা মহেশ্বরী।
হাঁকারঃ পাতু হৃদয়ে তারিণী শক্তিরূপধৃক্॥
ফট্কারঃ পাতু সর্কাঙ্গে সর্কসিদ্ধি-ফলপ্রদা।
শর্কা মাং পাতু দেবেণী গগুমুগো ভয়াপহা॥

नत्यामती नमा ऋक-यूत्या পाष्ट्र मत्याती। ব্যান্ত্রচর্মারতা কটী পাতু দেবী শবপ্রিয়া॥ পীনোরতস্তনী পাতৃ পার্যব্যে মহেশ্বরী। রক্তবর্ত্ত্রলনেত্রা চ কটিদেশে সদাবতু॥ ললজ্জিহ্বা সদা পাতু নাভো মাং ভূবনেশ্বরী। করালাস্যা সদা পাতৃ লিঙ্গে দেবী হরপ্রিয়া॥ পিক্লোগ্রৈকজটা পাতু জঙ্গায়াং বিম্নাশিনী। প্রেত্তর্থর্পরধরা দেবী জান্মচক্রে মহেশ্বরী॥ नीनवर्गा नमा পाउँ कारूनी नर्वमा भय। নাগমুগুধরা দেবী সর্বাঙ্গং পাতু সর্বাদা॥ নাগাঙ্গদধরা দেবী পাতু প্রান্তরদেশতঃ। চতুভুজা সদা পাতু গমনে শক্রনাশিনী॥ খড়গহন্তা মহাদেবী পাতু মাং বিজয়প্রদা। नीलास्त्रधता (पर्वी পां प्रभाः विद्यनानिनी॥ কত্রীহস্তা সদা পাতু বিবাদে শক্রমধ্যতঃ। ব্রহ্মরূপধরা দেবী সংগ্রামে পাতু সর্বদা। नागन्युत्रधता (मवी (ভाक्रत পां प्रक्रिमा। শবকণা মহাদেবী শয়নে পাতু সর্বদা॥ বীরাসনধরা দেবী নিদ্রায়াং পাতু সর্বাদা। धक्रकीं वध्ता (मरी পां प्रभाः विष्रमञ्जल ॥ নাগাঞ্চিতকটী পাতু দেবী মাং স্ক্কিশ্মস্থ। ছিন্নমুগুধরা দেবী কাননে পাতৃ সর্বদ।।। চিত্রামধ্যাস্থিতাদেবী মারণে পাতু সর্বাদা। षौि (प्रक्षंधत्रा (मवी शूलमात्रधनामिष् ॥

অলঙ্কারাম্বিতা দেবী পাতু মাং হরবল্লভা। तक तक नमीकृत्व हैं -हैं -फर्टे-नमविञ्राता বীজরপা মহাদেবী পর্বতে পাতু সর্বাদা। মণিধরি বক্তিণি দেবী মহাপ্রতিসরে তথা। तुक तुक नमा हैं हैं अ ही श्वारा मरश्वी। পুষ্পকেতুরাজার্হতে কাননে পাতু মাং সদা।। उँ द्वीँ तक्ष्रपूष्ण उँ कर् श्रास्तर नर्सकामना। ওঁ পুলে পুলে মহাপুলে পাতৃ পুল্রান্ মহেশ্বরী।। इ वाश-भक्ति-मश्का नातान् तक्क प्रक्ति। ওঁ আং হুং ফট স্বাহা মহেশানী পাতু দ্যুতে হরপ্রিয়া।। उँ द्वौँ मर्कविष्मा ५ मातिनी (प्रवी विष्नानाः मर्काला ३ वर्ष 🧸 ওঁ স্বাহা পবিত্রবক্সভূমে ওঁ ফট্-স্বাহা-সমন্বিতা ॥ পৃথিব্যাং পাতু মাং দেবী সর্ক্ষবিদ্ববিনাশিনী। ওঁ আঃ সুরেখে হুঁ ফট্-স্বাহা-সমন্বিতা।। পাতালে পার্তু মাং দেবী নাগিনী নাগসংজ্ঞিকা। ব্লীক্ষারী পাতু মাং পূর্ব্বে শক্তিরূপা মহেশ্বরী। जीकाती पिकत्प পाजू वश्क्रभा मरश्वती। হ্রঁ-স্বরূপা মহাদেবী পাতু মাং ক্রোধরূপিণী। ফলস্বরূপা মহামায়া পশ্চিমে পাতু সর্ব্বদা। উত্তরে পাতু মাং দেবী টম্বরূপা হরপ্রিয়া॥ **मर्गा मार পाजू (मर्क्यो इं)- अक्र** भा गां शिका। ত্বরিতা পাতু মাং দেবী সর্ববিন্নবিনাশিনী।। নীলবর্ণা সদা পাতু সর্ব্বত্র বাগ্ভবী সদা। ভবানী পাতু ভবনে সর্বৈশ্বর্য্যপ্রদায়িনী।।

বিষ্ঠাদানরতা দেবী পাতু বক্তেনু সরস্বতী। भारत वारा ह मधारा करन ह विषय शिर्ता ॥ जीयक्रभा प्रमा भाष्ट्र भाषात्व जर्माणिनी। ভূতপ্রেতালয়ে ঘোরে হুর্গা মাং ভীষণাবতু। পাতু নিত্যং মহেশানি সর্ব্বত্র শিবদৃতিকা॥ কবচন্দ্র চ মাহাত্ম্যং নাহং বর্ষশতৈরপি। শকোমি কথিতুং দেবি ভবেত্তস্ত ফলঞ্চ যৎ॥ পুত্রদারার্থবন্ধ নাং সর্বদেশে চ সর্বাদা। ন বিশ্বতে ভয়ং তম্ম নূপপৃঞ্চো ভবেচ্চ সং॥ শুচিভূ স্বাশুচির্কাপি কবচং সর্ককামদম। প্রপঠন বা স্বরুরর্ত্ত্যে হুঃখশোকবিবর্জিতঃ ॥ সর্বশাস্ত্রে মহেশানি কবিরাড়্ভবতি গ্রুবম। সর্ববাগীখরো মর্ত্ত্যো লোকবশ্যো ধনেখরঃ॥ রণে দ্যুতে বিবাদে চ জয়স্তম্য ভবেদ্ঞবম। পুত্রপৌত্রান্বিতো মর্ত্ত্যো বিলাদী সর্বযোষিতাম ॥ भेजर्दा नाम्जाः यासि मर्स्वयाः वद्यकः मना । গৰ্কী খৰ্কো ভৰত্যেৰ বাদী খলতি দৰ্শনাৎ। মৃত্যুশ্চ বশতাং যাতি দাসাস্তস্থাবনীভুজঃ। প্রসঙ্গাৎ কথিতং সর্বাং কবচং সর্বাকামদম। প্রপঠন বা স্থরন মর্ত্যঃ শাপামুগ্রহণক্ষমঃ॥ আনন্দরন্দবন্ধুনামধিপঃ কবিরাড্ভবেৎ। সর্ববাগীশ্বরো মর্ত্ত্যো লোকবভাঃ সদা সুখী। গুরোঃ প্রদাদমাদাভ বিভাং প্রাপ্য স্থগোপিতাম। তত্রাপি কবচং দেবি হুর্লভং ভুবনত্রয়ে॥

গুরুর্দেবো হরঃ সাক্ষাৎ পত্নী তম্ম হরপ্রিয়া। অভেদেন যজেদ্যস্ত তম্ত সিদ্ধিরদূরতঃ॥ মন্ত্রাচারা মহেশানি কথিতাঃ পূর্বতঃ প্রিয়ে। নভো জ্যোতিস্তথা রক্তং হৃদয়ো পরি চিস্তয়েৎ॥ ঐশ্বর্যাং সুকবিত্বঞ্চ মহাবাগীশ্বরো নরঃ। নিতাং তম্ম মহেশানি মহিলাসক্ষমঞ্চরেও॥ পঞ্চাচাররতো মর্ত্তাঃ সিদ্ধো ভবতি নারূপা। শক্তিযুক্তো ভবেমৰ্ত্যঃ সিদ্ধো ভবতি নান্তথা।। ব্রহ্মা বিষ্ণুশ্চ রুদ্রশ্চ যে দেবাঃ সুরস্ত্রমাঃ। তং দৃষ্টা সাধকং দেবি লক্ষাযুক্তা ভবস্তি তে॥ স্বর্গে মর্ত্ত্যে চ পাতালে যে দেবাঃ সিদ্ধিদায়কাঃ। প্রশংসন্তি দদা দেবি তং দৃষ্ট্বা সাধকোত্তমম্ ॥ বিল্লাত্মকাশ্চ যে দেবাঃ স্বর্গে মর্ত্ত্যে রসাতলে। প্রশংসন্তি সদা সর্ব্বে তং দৃষ্ট্র সাধকোত্তমম্ ॥ ইতি তে কথিতং দেবি ময়া সম্যক্ প্রকীর্ত্তিতম। ভূক্তিমুক্তিকরং সাক্ষাৎ কল্পরক্ষস্বরূপকম্॥ व्यानामाण खद्भः श्रेनाण य रेमः कन्न क्रमानस्नः. মোহেনাপি মদেন বাপি রহিতো জাড্যেন মুহুত্যসৌ। সিদ্ধোহসৌ ভূবি সর্ব্বহুংখবিপদাং পারং প্রয়াত্যন্তকো, মিত্রং তম্ম নুপাশ্চ দেবি বিপদো নগুম্ভি তদ্যাশুভম্।। তদুগাত্রং প্রাপ্য শস্ত্রাণি ব্রহ্মান্ত্রাদীনি বৈ ভূবি। মাল্যানি কুসুমান্তেব ভবন্তি সুখদানি চ। তস্য গেহে স্থির। লক্ষীর্কাণীর্ব ক্রে বদেদ্ধবম্ ॥ ইদং কবচমজ্ঞাত্বা তারাং যো ভজতে নরঃ।

অক্সায়ুনি ধ নো মুর্থো ভবত্যের ন সংশয়ঃ॥ ি লিখিত্বা ধ্রারয়েদ্বস্ত কণ্ঠে বা মন্তকে ভূজে। তম্ম সর্বার্থসিদ্ধিঃ স্থান্যদ্বন্মনসি বর্ত্তে॥ গোরোচনা-কুদ্ধমন রস্ত্র-সন্কেন বা। या वटेकर्का बर्श्यानि निर्वत्यक्षः मना इंडः॥ অষ্টম্যাং মঙ্গলদিনে চতুর্দ্মগ্রামথাপি বা। সন্ধ্যায়াং দেবদেবেশি লিখেন্যন্তং সমাহিতঃ॥ মঘায়াং শ্রবণায়াং বা রেবত্যাং বা বিশেষতঃ। সিংহরাশো গতে চল্রে কর্কটন্তে বিবাকরে। মীনরাশো গুরো যাতি রা-চকম্বে শনৈশ্চরে॥ লিখিতা ধারয়িত্বা চ উত্তরাভিমুখো ভবন্। শ্মশানে প্রান্তরে বাপি শূক্তাগারে বিশেষতঃ। নিশায়াং যো লিখেদযন্ত্রং তম্ম সিদ্ধিরচঞ্চলা।। ভুর্জপত্রে লিখেদ্যন্তং গুরুর, চ মহেশ্বরি। ধ্যানধারণ যোগেন ধার রেদ্যস্ত ভাইনতঃ। অচিরাত্তম নিদ্ধিঃ সাত্রাত্র কার্য্যা বিচারণা।। ইতি এর দ্রবানলে তারাকবচম।।

তুলদী-স্তোত্রম্।

ঈশ্বর উবাচ। —ইন্দ্রাদ্যৈঃ সকলৈ. দবৈরচ্চিতাং স্থ্রস্ক্রীম্।
ভক্তানাং বরদাং বন্দে তুলদীং সোম্যন্ধপিণীম্।।
নাদবিন্দ্কলাতীতাং মুগুমালাং তপস্বিনীম্।
বাস্থদেব-রতাং বন্দে তুলদীং সৌম্যন্ধপিণীম্।।

पर्वति वसहीः (प्रवीः (वप्रविशः सत्नाह्रसाम्।

(यागगगामशः वर्ष्य ज्नाः (प्रोमाह्निनी ।

स्वास्त्रविष्य खाः पर्वानकात् ज्विणामः।

जिक्ष गड्याः प्रमास्थीः प्रमाशः प्रमामान्।

नम्मी क्षामान् वर्ष्य ज्नाः (प्रोमाह्मिनी मः।।

प्रमाह्याः प्रमास्थीः प्रमाशः प्रमामान्।।

नम्मी क्षामान् वर्ष्य ज्नाः (प्रोमाह्मिनी मः।।

परका खारेक्ष्य प्रमास्थ खार्ष क्षामान्।।

यः पर्छे रायरा ज्ञा मर्किमिक्रमवास् हाः।।

विना सहः विना कपाः विना यक्षः विना किहामः।।

विना सानः विना जीर्थः प्रकिमिक्रकाः खर्वः।।

हेषः खक्षक्रकः स्थाजः म्रक्रिक्व न प्रभाः।।

हेणः क्षक्रकः (साज्य प्रकिम्पिक ज्ञाने-स्थाजमः।।

हेणः स्वाप्राण्याः (साज्य प्रकिम्पिक ज्ञाने-स्थाजमः।।

हेणः स्वाप्राण्याः (साज्य प्रकिम्पिक ज्ञाने-स्थाजमः।।

हेणः स्वाप्राण्याः (साज्य प्रकिम्पिक ज्ञानी-स्थाजमः।।

শ্রীকৃষ্ণস্তোত্রম্।

গর্গ উবাচ।— হে রুঞ্চ জগতাং নাথ ভক্তানাং ভয়ভঞ্জন।
প্রসন্ধো ভব মানীশ দেহি দাস্যং পদাস্থুজে।
বংপিত্রা মে ধনং দত্তং তেন কিং মে প্রয়োজনম্।
দেহি মে নিশ্চলাং ভক্তিং ভক্তানামভয়প্রদাম্।।
অব্নিমাদির সিদ্ধের যোগের মুক্তির প্রভা।
জ্ঞানতত্ত্বে চ তত্ত্বে বা কিঞ্জিলান্তি স্পৃহা মম।
ইন্দ্রদে বা মহুত্বে বা স্বর্গভোগং ফলং চিরম্।
নান্তি মে মন্দ্রো বাঞ্ছা ত্বংপাদ্বেবনং বিনা।।

শালোক্যপাষ্টি - সামীপ্য-সার্রপাকত্বমীপ্রিতম । নাহং গৃহ্লামি তে ত্রহ্মংম্বৎপাদসেবনং বিনা।। গোলোকে বাপি পাতালে বাসে তুল্যং মনোরথম। কিন্তু তে চরণাম্ভোজে সম্ভতং স্মৃতিরম্ভ মে।। বেদাঙ্গং শঙ্করাৎ প্রাপ্য কতি-জন্মফলোদয়াৎ। সর্ববজ্ঞাহহং সর্বাদশী সর্বাত্ত গতিরস্তি মে।। कृशाः कुक कृशां शिक्षा मीनवस्ता शमाच्यक । রক্ষ মামভয়ং দহ। মৃত্যুর্শ্বে কিং করিষ্যতি।। मर्त्वयाभी यदः मर्वत ख ९ भागा खाक रमवशा । মৃত্যুন্ধয়েহস্তকারশ্চ বভুব যোগিনাং গুরুঃ।। ব্ৰহ্মা বিধাতা জগতাং স্বংপাদাম্ভোজসেবয়া। যস্কৈদিবসে ব্ৰহ্মন্ পতন্ত্ৰীক্ৰাশ্চতুৰ্দ্দশঃ।। यৎপাদদেবয় ধর্মঃ সাক্ষী চ সর্বকর্মণাম্। পাতা চ ফলদাতা চ জিত্বা কালং স্বত্ৰুজয়ম ।। সহস্রবদনঃ শেষো যৎপাদপদ্মসেবয়া। गर्छ तिकार्थविवधः भित्रता रेठव स्मिनिया ॥ সর্ব্বসম্পদ্বিধাত্রী চ যা দেবী যৎ পরাৎপরা। করোতি সততং লক্ষীঃ কেশৈস্বৎপাদমার্জনম ॥ প্রকৃতিবীজরপা সা সর্কেষাং শক্তিরপিণী। স্মারং স্মারং ত্রৎপাদাব্রং বভূব ত্রৎপরাৎপরা ।। পাर्वा गर्वापिया मा गर्वियाः वृद्धिकारिया । वर्भामस्यवंश काखः ननाञ मिवगीयंत्रग्।। বিদ্যাধিষ্ঠাতদেবীর্যা জ্ঞানমাতা সরস্বতী। পূজ্যা বভুব দৰ্কেষাং স্বৎপাদান্তোজন্সেবয়া।।

সাবিত্রী বেদমাত। চ পুনাতি ভূবনত্রয়ম্। বন্ধণো ব্রাহ্মণানাঞ্চ গতিস্তৎপাদদেবয়া।। ক্ষমা ক্লগছিধর্ত্ত্ব রত্বগর্ভা বসুন্ধরা। প্রত্তা সর্বশ্বদানাং ভংপাদপদ্মদেবয়া।। রাধা বামাংশসম্ভূতা তব তুল্যা ৮ তেজসা। স্থিত্ব। বক্ষসি তে পাদং দেবতেহন্সস্য ক। কথা।। यथा भव्यानरमा (नवा (नवाः भवानरमा यथा। তৎসমং নাথ কুরু মামীশ্বরস্য সমা রূপা।। ন যাস্যামি গৃহং নাথ ন গৃহামি ধনং তব। কৃষা মাং রক্ষ পাদাজে দেবারাং দেবকং রতম্॥ ইত্যুক্ত্রণ চ সাশ্রুনেত্রঃ পপাত চরণং হরেঃ। রুরোদ চ ভূশং ভক্ত্যা পুলকান্ধিতবিগ্রহঃ।। গর্গসা বচনং শ্রুত্বা জহাস ভক্তবৎসলঃ। উবাচ তং স্বয়ং রুফো ময়ি তে ভক্তিরস্থিতি।। ইদং গর্গকৃতং স্তোত্রং ত্রিসন্ধ্যং যঃ পঠেন্নরঃ। দঢ়াং ভক্তিং হরের্দাস্যং শ্বৃতিঞ্চ লভতে গ্রুবম্।। জন্মত্যুজরারোগ-শোকমোহাতিসঙ্কটাৎ। তীর্ণো ভবতি এক্সফদাসঃ সেবনতৎপরঃ।। ক্ষুস্য ভবনং কালে কুষ্ণসাৰ্দ্ধং প্ৰযোদতে। কদাপি ন ভবেত্তস্য বিচ্ছেদে। হরিণা সহ।।

ইতি শ্রীব্রন্ধবৈবর্ত্তে মহাপুরাণে গর্গকৃতশ্রীকৃষ্ণস্তোত্তম ।।

🗐 কৃষ্ণকবচম্।

যোগনিদ্রা উবার্ট ।—দূরীভূতং কুরু ভয়ং ভয়ং কিন্তে হরো স্থিতে। স্থিতায়াং ময়ি চ ব্ৰহ্মন্ স্থুখং তিষ্ঠ জগৎপতে॥ শ্রীহরিঃ পাতু তে বক্ত্রুং মস্তকং মধুসদনঃ। শ্রীকৃষ্ণচক্ষুষী পাতু নাসিকাং রাধিকাপতিঃ॥ কর্বযুগ্মঞ্চ কণ্ঠঞ্চ কপালং পাতু মাধবঃ। কপোলং পাতু গোবিন্দঃ কেশাংশ্চ কেশবঃ স্বয়ম্॥ অধরোঠে স্থীকেশো দন্তপংক্তিং গদাগ্রজঃ। রাদেশ্বরশ্চ রসনাং তালুকাং বামনোহবতু॥ বক্ষঃ পাতু মুকুন্দত্তে জঠরং পাতু দৈত্যহা। জনাৰ্দ্দনঃ পাতু নাভিং পাতু বিষ্ণু তে হন্ত্ৰু ॥ নিতম্বযুগ্যং গুহুঞ্চ পাতু তে পুরুষোত্তমঃ। জানুযুগ্যং জানকীশঃ পাতু তে সর্বদা বিভুঃ॥ হস্তযুগ্যং নৃসিংহশ্চ পাতু সর্বত সঙ্কটে। পাদযুগ্মং বরাহশ্চ পাতু বঃ সর্বাদা বিভুঃ॥ উদ্ধে নারারণঃ পাতু অধস্থাং কমলাপতিঃ। পাতু পূর্বে চ গোপালঃ পাতু বছে। দশাস্তহা॥ বনমালী পাতু যাম্যাং বৈকুণ্ঠঃ পাতু নৈশ্বতে। বারুণে বাস্থদেবশ্চ পাতু তে জলজাসনঃ॥ পাতু তে সম্ভতমজো বায়ব্যাং বিষ্টরস্রবাঃ। উত্তরে চ দদা পাতু চানস্তোহনস্তকঃ স্বয়ম্॥ ঐশান্তামীশ্বরঃ পাতু সর্ব্বত্র পাতু শত্রুজিৎ। জলে স্থলে চান্তরীকে নিদ্রায়াং পাতু রাঘবঃ॥

ইত্যেবং কথিতং ব্রহ্মন কবচং পরমান্ততম । কুষ্ণেন কুপয়া দত্তং স্মৃতেনৈব পুরা ময়া॥ শুম্বেন সহ সংগ্রামে নির্লক্ষ্যে ঘোরদারুণে। স্থিতেন গগনে সদ্যঃ প্রাপ্তিমাত্রেণ শক্তিতঃ কবচস্থ প্রভাবেণ ধরণ্যাং পতিতো মৃতঃ। পূৰ্বাং বৰ্ষশতং খে চ কৃত্বা যুদ্ধং ভয়াবহম্॥ মৃতে শুন্তে চ গোবিন্দঃ কুপয়া তু গলে মম। মাল্যঞ্চ কবচং দল্লা গোলোকং স জগাম হ॥ কল্পান্তরস্থ রতান্তং রূপয়া কথিতং মুনে। আভ্যাং ভবভয়ং নাস্তি কবচস্য প্রভাবতঃ ॥ কোটিশঃ কোটিশো নষ্টা ময়া দৃষ্টাশ্চ বেধসঃ। অহঞ্চ হরিণা সার্দ্ধং কল্পে কল্পে স্থিরা সদা॥ ইত্যক্তা কবচং দত্তা সাম্ভর্থানং চকার হ। নিঃশক্ষে। নাভিকমলে তম্থে) স কমলোদ্ভবঃ। সুবর্ণগুটিকায়াম্ভ ক্লমেদং কবচং পরম। कर्छ वा निकरण वारही वजीवाद यः स्थीः नना বিষাগ্নি-সর্প-শক্রভাো ভয়ং তস্ত্র ন বিদাতে। জলে স্থলে চাস্তরীক্ষে নিদ্রায়াং রক্ষতীশ্বরঃ॥ সংগ্রামে বজ্রপাতে চ বিপত্তে প্রাণসন্ধটে। ক বচন্ত বলাদেব সদ্যো নিঃশঙ্কতাং ব্ৰজেৎ॥ বদ্ধেদং কবচং কণ্ঠে শঙ্করন্ত্রিপুরং পুরা। জঘান লীলামাত্রেণ হুরস্তমস্থরেশ্বরম্॥ वाक्रमः कवतः काली व्रक्तवीकः तथान मा। সক্ত্ৰশীৰ্ষা ধড়েদং বিশ্বং ধড়ে তিলং যথা॥

আবাং সনৎকুমারশ্চ ধর্ম্মসাক্ষী চ কর্ম্মণাম্।
কবচস্থু প্রসাদেন সর্বত্র জয়িনো বয়ম্॥
গ্রস্য নন্দশিশোঃ কঠে জগাম কবচং দ্বিজঃ।
আত্মনঃ কবচং কঠে দধার চ স্বয়ং হরিঃ॥
প্রভাবং কথিতং সর্বাং কবচস্থ হরেস্তথা।
অনস্তস্যাচ্যুতস্থৈব প্রভাবমতৃলং মুনে॥
ইতি শ্রীব্রক্ষবৈবর্ত্তে মহাপুরাণে নারায়ণনারদসংবাদে
শ্রীক্ষজন্মখণ্ডে শ্রীক্ষফকবচম॥

নৃসিংহকবচম্।

নারদ উবাচ। —ইন্দ্রাদিদেবরন্দেশ তাতেশ্বর জগৎপতে
মহাবিষ্ণোর্ সিংহস্থ কবচং ক্রহি মে প্রভা।
যস্থ প্রপঠনাদ্বিনান্ ত্রৈল্যেক্যবিজয়ী ভবেৎ॥
ব্রক্ষোবাচ। — শৃণু নারদ বক্ষ্যামি পুত্রশ্রেষ্ঠ তপোধন।
কবচং নরসিংহস্থ ত্রেলোক্যবিজয়াভিধম্॥
যস্থ প্রপঠনাদ্বাগ্রী ত্রেলোক্যবিজয়াভিধম্॥
যস্থ প্রপঠনাদ্বাগ্রী ত্রেলোক্যবিজয়ী ভবেৎ।
শ্রম্ভাহং জগতাং বৎস পঠনাদ্বারণাদ্যতঃ॥
লক্ষ্মীর্জগত্রয়ং পাতি সংহর্তা চ মহেশ্বরঃ।
পঠনাদ্বারণাদ্বেবা বভূবৃক্চ দিগীশ্বরাঃ॥
ব্রহ্মমন্ত্রময়ং বক্ষ্যে ভূতাদিবিনিবারকম্।
যৎপ্রসাদাদ্ধ্রাসাক্তরলোক্যবিজয়ী মুনিঃ।
পঠনাদ্বারণাদ্যস্থ শাস্তা চ ক্রোধ্টভরবঃ॥
ত্রেলোক্যবিজয়স্থাপি কবচস্থ প্রজাপতিঃ।
শ্রম্ভিক্ষক্ষ্ট গায়ত্রী নুসিংহো দেবতা বিভুঃ॥

ক্ষে বীজং মে শিরঃ পাতু চক্রবর্ণো মহামন্তঃ। উগ্রং বীরং মহাবিষ্ণুং জ্বলম্ভং সর্ব্বতোনুখম্ 👢 নৃসিংহং ভীষণং ভদ্রং মৃত্যুমৃত্যুং নমাম্যহম্॥ দাত্রিংশদক্ষরো মন্ত্রো মন্তরাজস্থরক্রমঃ। কণ্ঠং পাতু জ্বং ক্ষ্যেং হন্তগবতে চক্ষ্যী মম ॥ নরসিংহায় জালামালিনে পাতু মস্তকম্। দীপ্তদংস্থায় চ তথাগ্নি-নেত্রায় চ নানিকান্॥ সর্বার সামায় সর্বাস্থৃতবিনাশায় চ। সর্বজনবিনাশায় দহ দহ ফট ফট্॥ রক্ষ রক্ষ সর্বমন্ত্রং স্বাহা পাতৃ মুখং মম। তারাদি রামচক্রায় নমঃ পায়াদৃগুদং মম। ক্লীং পায়াৎ পার্যযুগ্যঞ্চ তারং নমঃ পদং ততঃ॥ नाताय्राय भार्यक चार ही का कि कि है है। ষড়ক্ষরঃ কটাং পাতু ওঁ নমে। ভগবতে পদম্॥ वाञ्चलवाय ह शृष्ट्रः क्री द्वारा छद्भवयम । ক্লী কৃষ্ণায় সদা পাতু জাতুনী চ মনুত্রমঃ॥ ক্রী মৌ ক্রী আমলাক্ষার নমঃ পারাৎ পদবয়ম। (क) ने नविश्वाय (क) कि नक्तिकः (भ ननिवर् ॥ ইতি তে কথিতং বৎস সর্ব্বমন্ত্রোঘবিগ্রহম। তব স্বেহান্ময়াখ্যাতং প্রবক্তব্যং ন কম্মচিৎ ॥ শুরুপূজাং বিধায়াথ গৃহীয়াৎ কবচং ততঃ। সর্ব্বপুণ্যযুতো ভূত্বা সর্ব্বসিদ্ধিযুতো ভবেৎ ॥ শতমষ্টোত্তরকৈব পুরশ্চর্য্যাবিধিঃ স্মৃতঃ। न्द्रनामी म्मारम्न कृषा माधकप्रक्रमः ॥

ততন্ত্র সিদ্ধকবচঃ পুণ্যাত্মা মদনোপমঃ। স্পদ্ধামুদ্ধ য় ভবনে লক্ষীর্কাণীর্বদেওতঃ॥ भूष्णाञ्चमाष्ट्रेकः पदा मृत्यदेनव भर्छ**९ मङ्ग**र । অপি বৰ্ষসহস্ৰাণাং পূজায়াঃ ফলমাপ্ৰ হাৎ ॥ **ज्रुट्ड विनिश्र छनिकाः वर्षश्चाः धात्ररात्वि ।** कर्छ वा मिक्करण वार्टी नत्रिन्रिंटा छरवे स्रम्॥ যোষিশ্বামভূজে চৈব পুরুষো দক্ষিণে করে। বিভূয়াৎ কবচং পুণ্যং সর্ব্বসিদ্ধিযুতো ভবেৎ ॥ কাকবন্ধ্যা চ যা নারী মৃতবৎসা চ যা ভবেৎ। জন্মবন্ধ্যা নম্ভপুত্রা বহুপুত্রবতী ভবেৎ ॥ কবচস্ত প্রসাদেন জীবনুকো ভবেররঃ। ত্রৈলোকাং ক্ষোভয়তোর ত্রৈলোকাবিজয়ী ভবেৎ ॥ ভূতপ্রেতপিশাচাশ্চ রাক্ষসা দানবাশ্চ যে। তः दृष्ट्रे। প্রপনায়স্তে দেশাদেশান্তরং ধ্রুবম্ ॥ যন্মিন গেছে চ কবচং গ্রামে বা যদি তিষ্ঠতি। তং দেশম্ব পরিত্যজ্য প্রয়াম্বি চাতিদূরতঃ॥ ইতি ব্ৰহ্মসংহিতায়াং ত্ৰৈলোক্যবিজয়ং নাম নুসিংহক্বচম্॥

শ্রীরামচন্দ্রস্তোত্রম্।

শ্রীহনুমান্থবাচ। —তিরশ্চামপি রাজেতি সমবায়ং সমীয়ুষাম্।
যথা স্থাবিমুখ্যানাং যন্তমুগ্রং নমাম্যহম্॥
সক্লদেব প্রপন্নায় বিশিষ্টামৈরয়ৎ শ্রিয়ম্।
বিভীষণায়াজিতটে যন্তং বীরং নমাম্যহম্॥

যো মহান্ পূজিতো ব্যাপী মহান্ধেঃ করুণামৃতম্। স্তুতং জটায়ুনা বশ্চ মহাবিষ্ণুং নমাম্যহম্॥ তেজসাপ্যায়িত। यश खनश्चि खननामग्नः । প্রকাশতে স্বতন্ত্রো যন্তং জলন্তং নমাম্যহম্ ॥ সর্বতো মুখতো যেন দীলয়া দর্শিতা রণে। वाकरमध्वरयाक्षानाः তः वत्न मर्वराय्यम् ॥ নৃভাবম্ভ প্রপন্নানাং হিনস্তি চ তথা নৃষু। সিংহः সংৰেষিবোৎকৃষ্টৰং নৃসিংহং ন্যা**ग্যহ**ম ॥ যক্ষাদ্বিভ্যতি বাতার্ক-জননেন্দ্রাঃ সমৃত্যবঃ। ভিয়ং ধিনোতি পাপানাং ভীষণং তং নমাম্যহম ॥ পরস্ত যোগ্যতাপেক্ষা-রহিতো নিত্যমঙ্গলম্। দদাত্যেব নিজোদার্য্যাদ্যস্তং ভদ্রং নমাম্যহম্॥ या मुष्टाः निक्रमानानाः मात्रम्ब्याभित्मक्षेत्र । সর্কসিদ্ধিপ্রদন্তঞ মৃত্যুমৃত্যুং নমাম্যহম্॥ যৎপাদপদ্মপ্রণতো ভবেত্তমপূরুষঃ। ত্রীশং সর্কদেবানাং নমনীয়ং নমাম্যহম ॥ আত্মভাবং সমুৎক্ষিপ্য দাস্তেনৈব রঘুদ্বহম্। ভজেহহং প্রত্যহং রামং স্পীতং স্হলক্ষণম ॥ নিতাং শ্রীরামভদ্রস্থ কিন্ধরা যমকিন্ধরাঃ। भिवमर्या। **पिन्छमा मिक्**यसमा पामिकाः ॥ ইদং হনুমতা প্রোক্তং মন্ত্রাজাত্মকং স্তবম্। পঠেদকুদিনং যস্ত স রামে ভক্তিমান্ ভবেৎ ॥ ইতি হনুমৎকল্পে শ্রীরামচন্দ্রস্তোত্তম ॥

প্রীরামকবচম্।

ধ্যাত্বা নীলোৎপলশুনিং রামং রাজীবলোচনম্।
জানকীলক্ষণোপেতং জটামুক্টমণ্ডিতম্।।
সাসিতৃণধন্ধ্বাণ-পাণিং নক্তঞ্চরাস্তকম্।
স্বলীলয়া জগত্রাতৃমাবিভূতিমজং বিভূম্।
রামরক্ষাং পঠেৎ প্রাক্তঃ পাপন্নীং সর্বকামদাম্।।

ওঁ শিরো মে রাঘবঃ পাতৃ ভালং দশরথাম্মজঃ। কৌশলেয়ো দৃশো পাতৃ বিশামিত্রপ্রিয়ঃ শ্রুতী ।।
দ্রাণং পাতৃ মথত্রাতা মুখং সৌমিত্রিবৎসলঃ।
ক্রিয়োং বিজ্ঞানিধিঃ পাতৃ কণ্ঠং ভরতবন্দিতঃ।।
ক্রিয়ো বিজ্ঞানিধিঃ পাতৃ ক্র্যুণ ভারেশকার্মুকঃ।
করো সীতাপতিঃ পাতৃ হৃদয়ং জামদগ্রাজিৎ।।
বক্ষং পাতৃ কবন্ধারিঃ স্তনো গীর্বাণবন্দিতঃ।
পার্শো ক্লপতিঃ পাতৃ ক্রিমিক্ষ্বাক্রনন্দনঃ।।
মধ্যং পাতৃ বর্ববংসী নাভিং জাম্ববদাশ্রয়ঃ।
স্থ্রাবেশঃ কটিং পাতৃ পৃষ্ঠং পাতৃ ববৃত্তমঃ।।
স্থ্রীবেশঃ কটিং পাতৃ সক্ষিনী হন্তমৎপ্রভূঃ।
উর রঘ্তমঃ পাতৃ রক্ষঃকুলবিনাশরুৎ।।

জাস্থনী সেতৃক্রৎ পাতৃ জব্জে দশমুখাস্তকঃ।
পাদে বিভীষণগ্রীদঃ পাতৃ রামোহধিলং বপুঃ॥

এতাং রামবলোপেতাং রক্ষাং যঃ স্ফুরুতিঃ পঠেৎ। স চিরায়ুঃ সুখী পুত্রী বিজয়ী বিনয়ী ভবেৎ ॥ পাতালভূতলব্যোম-চারিণশ্ছম্মচারিণঃ। ন দ্রষ্ট্রমপি শক্তান্তে রক্ষিতং রামনান্তিঃ । রামেতি রামভদ্রেতি রামচন্দ্রেতি বা স্বরন। নরো ন লিপ্যতে পাপৈতু ক্তিং মুক্তিঞ্চ বিন্দতি॥ জগজ্জৈকৈমন্ত্রেণ রামনায়।ভিরক্ষিতম্। यः करत धात्रसङ्गा कत्रश्राः मर्किमक्राः ॥ ভূৰ্জ্জপত্ৰে স্বিমাং বিস্থাং গন্ধচন্দনচৰ্চ্চিতাম্। কৃতা বৈ ধারয়েদ্যস্ত সোহভীষ্টং ফলমাপ্নুয়াৎ॥ কাকবন্ধ্যা চ যা নারী মৃতবৎসা চ যা ভবেৎ। বহুবপত্যা জীববৎসা সা ভবেন্নাত্র সংশয়ঃ॥ বন্ত্রপঞ্জরনামেদং যো রামকবচং পঠেৎ। অব্যাহতাজ্ঞঃ সর্বত্রে লভতে জয়মঙ্গলম ॥ व्यानिष्ठेतान यथ। त्राय त्रामतकामिमाः इतिः। তথা লিখিতবান প্রাতঃ প্রবুদ্ধো বুধকৌশিকঃ॥ ধরিনো বদ্ধনিস্তিংশো কাকপক্ষধরো শুভো। বীরে মাং পথি রক্ষেতাং তাবুভো রামলক্ষণো॥ তরুণো রপদম্পন্নো স্বরুমারো মহাবলো। পুগুরীকবিশালাকে চীরক্লফাজিনামরো॥ क्नम्नानित्नो मास्त्री ठाभरमो बन्नावित्नो। পুত্রো দশরথস্যেতো ভ্রাতরো রামলক্ষণো॥ শরণ্যে সর্ব্বসন্থানাং শ্রেষ্ঠে সর্ব্বধর্ম্মতাম । রক্ষঃকুলনিহস্তারে) আয়েতাং বে। রঘুত্তমে।॥

वां उनकाशक्साविश्रकाना तकारा उनिधकनिकाना । রক্ষণার হৃম আমলক্ষণাবগ্রতঃ পথি সদৈব গচ্ছতাম।। সরদ্ধঃ কবচী খড়নী চাপবাণধরো যুবা। যচ্ছন্মনোরথঞান্মান্রামঃ পাতু সলন্ধণঃ।। অগ্রতম্ভ নৃসিংহো মে পৃষ্ঠতো গরুড়ধ্বজঃ। পার্বয়োপ্ত ধরুত্মস্তো সশরো রামলক্ষণো।। तारमा नामत्रिशः मृत्ता नक्षनाकृतता वनी । काकू ९ इः शूक्वः शूर्वः (को मत्न (या त्र वृख्यः ॥ বেদাস্তবেন্যো যজেশঃ পুরাণঃ পুরুষোত্তমঃ। জানকীবল্লভঃ শ্রীমানপ্রনেয়পরাক্রমঃ ॥ मिक्रिए नक्तारण भनी वारम ह जानकी खुछा। পুরতো মারুতির্যস্য তং নমামি রবৃত্তমম্।। আপদামপহস্তারং দাতারং সর্বাসম্পদাম। গুণাভিরামং শ্রীরামং ভূয়ো ভূয়ো নমাম্যহম্।। এতানি মম নাথানি মন্তক্তো যা সদা স্বরেৎ। অশ্বমেধাযুতং পুণ্যং স প্রাপ্নোতি ন সংশয়ঃ।। ইতি পদ্মপুরাণে বজ্রপঞ্জরনামাখ্যং শ্রীরামকবচম্ ।।

স্মরারিস্তোত্রম্।

পশ্নাং পতিং পাপনাশং পরেশং,গজেন্দ্রস্য ক্বতিং বসানং বরেণ্যম্।
জটাজ টুমধ্যে ক্রুদগাঙ্গবারিং, মহাদেবমেকঃ স্বরামি স্বরারিম্।।
মহেশং স্বরেশং স্বরারাতিনাশং, বিভূং বিশ্বনাথং বিভূত্যকভূষম্।
বিরূপাক্ষমিশ্বর্কবিছিত্রিনেত্রং, সদানদ্যীড়ে প্রভূং পঞ্চবজ্যু ।।

तित्रीमः गरनमः गरन नीनवर्नः, गरवक्षाधिकाः खनाजीजक्रथम्। ভবং ভাস্করং ভস্মনা ভূষিতাঙ্গং, ভবানীকলত্রং ভক্তে পঞ্চবক্তুম্।। শিবাকান্ত শন্তো শশাক্ষাৰ্দ্ধমৌলে, মহেশান শূলিন্ জটাজ টগারিন্। ত্বমেকো জগদ্ব্যাপকো বিশ্বরূপ, প্রসীদ প্রসীদ প্রভো পূর্ণব্লপ।। পরাত্মানমেকং জগদীজমাদ্যং, নিরীহং নিরাকারমোঙ্কারবেশুম্। যতো জায়তে পাল্যতে যেন বিশ্বং, তমীশং ভজে লীয়তে যত্ৰ বিশ্বম। ন ভূমির্ন চাপো ন বহ্নির্ন বাযুর্ন চাকাশমান্তে ন তল্ঞা ন নিদ্রা। ন গ্রীন্মং ন শীতং ন দেশো ন বেশো,ন যদ্যান্তি মূর্ত্তিন্ত্রিমূর্ত্তিং তমীড়ে। অঙ্গং শাশ্বতং কারণং কারণানাং, শিবং কেবলং ভাসকং ভাসকানাম তুরীয়ং তমঃ পারমাগ্রন্থহীনং, প্রপদ্যে পরং পাবনং দ্বৈতহীনম্।। नमत्त्र नमत्त्र विराज्ञ विश्वभृत्त्वं, नमत्त्र नमत्त्र विमाननम्भृत्त्वं । নমস্তে নমস্তে তপোযোগগম্য, নমস্তে নমস্তে শ্রুতিজ্ঞানগম্য।। প্রভো শূলপাণে বিভো বিশ্বনাথ, মহাদেব শস্তো মহেশ ত্রিনেত্র। শিবাকান্ত শান্ত স্থর।রে পুরারে, ত্দকো বরেণ্যো ন মাত্যো ন গণ্য শস্তো মহেশ করুণাময় শূলপাণে,গোরীপতে পশুপতে পশুপাশনাশিন্ কাৰীপতে করুণয়া জগদেতদেকস্বং হংদি পাদি বিদধাদি মহেশবো্ঠদি তত্তে। জগম্ভবতি দেব ভব স্বরারে, স্বয়েব তিষ্ঠতি জগন্ম ড় বিশ্বনাথ। স্বয়্যের গচ্ছতি লয়ং জগদেতদীশ, লিঙ্গাত্মকে হর চরাচর বিশ্বরূপিন্।

ইতি এমচ্ছেরাচার্য্যবিরচিত-বেদসারাথ্য-স্বরারিস্তোত্রম্।

় রুদ্রুকবচম্।

বক্ষ্যামি রুদ্রকবচমাদ্যং প্রাণস্য রক্ষণম্। অহোরত্রেং মহাদেব রক্ষার্থং দেবনির্দ্মিতম্।

ওঁ রুদ্রো মামগ্রতঃ পাতু পৃষ্ঠতঃ পাতু শঙ্করঃ। কপদী ম্বন্ধিণে পাতৃ বানপার্যে তথা হরঃ॥ শিবঃ শিরো মে চ পাত ললাটে নীলনোহিতঃ। নেত্রয়েক্সকঃ পাতু মুখে পাতু মহেশ্বঃ॥ কর্ণয়োন িসকাথাঞ্চ জিহ্বায়াং শতুরবারঃ। শ্ৰীকণ্ঠস্ব গলে পাতৃ বাহেবাঃ পাতৃ পিনাকর্ক॥ সদয়ং মে মহাদেব ঈশ্বরস্থ তথোদ্রম। নাভো কক্ষো কটিয়ানে পাতু দৰ্দ্ধং প্ৰজাপতিঃ॥ উরু জানু মহাদেবঃ পাদে পাতু মহেশ্বরঃ। দৰ্কাং রক্ষতু ভূতেশঃ দৰ্কগাঞাণি ষড়তঃ ॥ পরভং শূল-अहोक्यः দিব্যান্ত্রং রে দুমেব চ। नमकाताम (मार्यमः तक माः अर्गनीयतः ॥ রক্ষোভ্যে। গ্রহপীড়াভ্যো রোগশোকার্ণবেষু চ। পাপেভো। নরকেভাশ্চ ত্রাহি মাং ভক্তবৎসল। জना मृजुर्জत। त्राधिः कामः (काधः गरमा प्रमः। লোভমোহমদাশ্চাপি ত্যজন্ত ভূবনেশ্বর॥ কং গতিস্থং মতিকৈচব স্থং বৃদ্ধিস্থং পরায়ণঃ। কায়েন মনসা বাচা স্বয়ি ভক্তিদু ঢাস্ত মে।। ইত্যেতজন্তকবচং পঠতঃ পাপনাশনম। মহাদেবপ্রসাদেন হর্কাসংপরিকীর্ত্তিত্য ॥ ন তস্য পাপলেশােহস্তি ভয়ং তস্য ন বিছাতে। প্রাপ্নোতি স্থখমারোগ্যং পুণ্যমাত্মপ্রবন্ধনম।। পুত্রার্থী নভভে পুত্রং ধনার্থী নভতে ধনম। বিদ্বার্থী দভতে বিদ্যাং মোক্ষার্থী মোক্ষমাপুরাৎ।। দেহে চেদং সদি অস্য শিবক্ষাৈ ভবেন্নরঃ।
মূচ্যতে সর্বাপোপেভ্যো রুদ্রলোকং স গচ্ছতি।।
ইতি স্কন্দপুরাণে রুদ্রকবচম্।।

বাণলিঙ্গস্তোত্রম্।

বাণলিক মহাভাগ সংসারাৎ ত্রাহি মাং প্রভো!। নমস্তে চোগ্ররপায় নমস্তেইবাক্তযোনয়ে ।। সংসারকারিণে তৃভ্যং নমস্তে প্রারপপ্তক !। প্রমতায় মহেন্দ্রায় কালরপায় বৈ নমঃ।। দহনায় নমস্বভাং নমস্তে যোগকারিণে। ভোগিনাং ভোগকত্রে চ মোক্ষদাত্রে নমো নমঃ।। नमः कामाजनानाय नमः कवायश्वित्। নমো বিশ্বপ্রদাত্তে চ নমো বিশ্বপ্ররূপিণে।। বাণস্য বরদাত্তে চ রাবণস্য বধায় চ। রামস্যাকুগ্রহার্থায় রাজ্যায় ভরতস্য চ ॥ মুনীনাং গোগদাতে চ রাক্ষসানাং ক্ষয়ায় চ। নমস্বভ্যং নমস্বভ্যং নমস্বভ্যং নমে। নমঃ॥ ঐং দাহিকাশক্তিযুক্তার মহামায়া-প্রিয়ায় চ। ভক্ত-প্রিয়ার সর্কায় বৈরিণাং নিগ্রহায় চ॥ পরিত্রাণায় যোগিনাং কৌলিকানাং প্রিয়ায় চা কুলাঙ্গনানাং নাথায় কুলচাররভায় চ॥ কুল-ভক্তায় যোগায় নমো নারায়ণায় চ। यथुपान अयलाग्न (यारणभाग्न नरमा नयः। কুলনিন্দা-প্রণাশায় কৌলিকানাং সুখায় চ।।

কুলযোগায় নিষ্ঠায় গুদ্ধায় পরমাত্মনে। পরমান্ত-স্বরূপায় লিঙ্গমূলাত্মকায় চ। সর্কেশ্বরায় সর্কায় শিবায় নিগুণায় চ।। ইত্যেতৎ পরমং গুহুং বাণলিঙ্গস্য শঙ্কর। যঃ পঠেৎ সাধকশ্রেষ্ঠো গাণপত্যং লভেত সঃ।। खनगामा अमारमन रंगानी रंगानिक्याभू बाद । রাজ্যার্থিনাং ভবেদ্রাজ্যং ভোগিনাং ভোগ এব চ।। माधूनाः माधनः (एव ! (कोनिकानाः कूनः ভবেৎ। যং যং কাময়তে মন্ত্রী তং তমাপ্লোতি লীলয়।।। বাণালঙ্গপ্রসাদেন সর্বমাপ্নোতি নিশ্চিতম। কিমন্তৎ কথয়ামীহ সর্বং জানাসি শঙ্কর।। মহাভরে সমুৎপনে রাজদারে কুলেশ্ব !। দেশাস্তর ভয়প্রাপ্তে দস্ম্য-চৌরাগ্নিসঙ্কলে। পঠনাৎ স্তবরাজ্যা ন ভয়ং লভতে কচিৎ।। বাণলিঙ্গদ্য মাহাত্ম্যং সংক্ষেপাৎ কথিতং ময়।। অস্য শ্রবণমাত্রেণ নরে। মোক্ষমবাপ্নরাৎ।। वार्गानकः भनावाधाः (याजिनाः (याजिनाधान । (कोनिकानाः कूनाहारत अनुनाः रेवतिनिधरः ॥ (विष्णानाः (विष्णारः (ज्ञानिनाः (ज्ञानमःक्रायः। যো যো নারাধয়েদেনং সবাং তরিক্ষলং ভবেৎ।। ইতি এীযোগসারে সর্বাগমোত্তমে হরপার্বতী-সংবাদে বাণলিশ্বন্তোত্রম্।।

বটুকভৈরবস্থোত্রম্।

ওঁ নমো বটু কভৈরবায়।

रेकनामिश्वामीनः (प्रताप्तरः क्रम् छक्रम्। শঙ্করং পরিপপ্রচ্ছ পার্বতী পরমেশ্বরম্।। শ্রীপার্কাত্যুবাচ।--ভগবন্ সর্কাধর্মজ্ঞ সর্কাশাস্ত্রাগমাদিষু। আপত্দারণং মন্ত্রং সর্বসিদ্ধিপ্রদং নৃণাম ।। সর্কেষাক্ষৈব ভূতানাং হিতার্থং বাঞ্চিতং ময়া। বিশেষতম্ব রাজ্ঞাং বৈ শান্তিপুষ্টিপ্রসাধনম।। অঙ্গক্তাসকরকাদ-বীজকাদসমবিত্য। तकु गईनि (मर्तम यम दर्शनिवर्क्षन ॥ শ্রীভগবান্থবাচ।---শৃণু দেবি মহামন্ত্রমাপত্কারহেতুকম্। भर्त्वद्वःथश्रममनः **भर्तमक**निवर्र्णम् ॥ অপস্মারাদিরোগাণাং জ্বরাদীনাং বিশেষতঃ। নাশনং স্মৃতিমাত্রেণ মন্ত্রাজমিমং প্রিয়ে।। গ্রহরাজভয়ানাঞ্চ নাশনং স্থথবর্দ্ধনম। স্লেহাদ্বন্দ্যামি তে মদ্বং সর্ব্বসারমিমং প্রিয়ে। দৰ্ককামাৰ্থদং মন্ত্ৰং রাজভোগপ্রদং নৃণাম।। আপর্দারণং মন্ত্রং ক্ল্যামীতি বিশেষতঃ। প্রণবং পূর্ব্বমুচ্চার্য্য দেবীপ্রণবমুদ্ধরেৎ ॥ বটুকায়েতি বৈ পশ্চাদাপছদ্ধারণায় চ। কুরুষয়ং ততঃ পশ্চাঘটুকায় পুনঃ ক্ষিপেৎ। (मर्वीर्थनव्यूक, ठा मरत्वाकात्रियः श्रिरत ।।

মন্ত্রোদ্ধারমিমং দেবি ত্রৈলোক্যদ্যাপি হুল ভিম্। অপ্রকাশ্রমিশং মন্তঃ সর্বশক্তিসমবিতম্॥ স্মরণাদেব মন্ত্রস্য ভূতপ্রেতপিশাচকাঃ। বিদ্রবন্তি ভয়ার্তা বৈ কালরুদ্রাদিব প্রজাঃ॥ পঠেষা পাঠয়েম্বাপি পুজয়েম্বাপি পুস্তকম্ i নাগ্নিচৌরভয়ং তম্ম গ্রহরাজভয়ং তথা। ন চ মারীভয়ং তস্য সর্বত্র সুখবান্ ভবেৎ ॥ व्याग्रुतारतागार्रभवर्षाः পুত্রপৌত্রাদিসম্পদঃ। ভবস্তি সততং তদ্য পুস্তকদ্যাপি পৃজনাৎ॥ শ্রীপার্বভূয়বাচ। —য এষ ভৈরবো নাম আপত্নদারকো মতঃ। ত্বয়া চ কথিতো দেব ভৈরবঃ কল্প উত্তমঃ॥ তস্য নামসহস্রাণি অযুতান্তর্ম্বুদানি চ। সারমুদ্ধ,ত্য তেষাং বৈ নামান্তশতকং বদ॥ শ্রীভগবান্তবাচ।---যস্ত সংকীর্ত্তয়েদেতৎ সর্ব্বন্থটিনবর্হণম্। সর্বানু কামানবাপ্নোতি সাধকঃ সিদ্ধিমেব চ। শৃণু দেবি প্রবক্ষ্যামি ভৈরবস্য মহাত্মনঃ। আপত্দারকদ্যেহ নামাষ্টশতমুভ্রমন্॥ সর্বপাপহরং পুণ্যং সর্বাপদ্বিনিবারকম্। সর্ব্বকামার্থদং দেবি সাধকানাং স্থপাবহম ॥ দেহাঙ্গন্তাসনক্ষৈব পূর্বাং কুর্য্যাৎ সমাহিতঃ। ভৈরবং মৃদ্ধি বিশ্বস্য ললাটে ভীমদর্শনম্॥ অক্ষোভূ তাশ্রয়ং গুস্য বদনে তীক্ষদর্শনম্। ক্ষেত্রপং কর্ণয়োর্মধ্যে ক্ষেত্রপালং হৃদি অসেৎ॥ ক্ষেত্রাখ্যং নাভিদেশে তু কট্যাং সর্বাঘনাশনম্।

ত্রিনেত্রমুর্বারিকাস্য জ্বায়ে। রক্তপাণিকম্॥ भानरबाद्धार्ति वर्द्धारमः प्रकारम वर्षे कः ज्ञारमः । এবং ক্রাস্বিধিং কুত্রা তদনস্তরমুত্তমম্॥ নামান্ত্ৰতক্সাপি ছলোহস্থ বুদাঞ্তন্। রহদারণ্যকো নাম ঋষিশ্চ পরিকীর্ত্তিতঃ। দেবতা কথিতা চেহ সম্ভিক্ট কৈ তরবং॥ ভৈরবো ভূতনাথশ্চ ভূতাঝা ভূততাবনঃ। ক্ষেত্রদঃ ক্ষেত্রপালশ্চ ক্ষেত্রজ্ঞঃ ক্ষত্রিয়ো বিরাটু॥ मानानवानी सःमानी थर्पतानी सथा छक्र । রক্তপঃ প্রাণপঃ সিদ্ধঃ সিদ্ধিদঃ সিদ্ধসেবিতঃ ॥ করালঃ কালশমনঃ কলাকাষ্ঠাতকুঃ কবিঃ। ত্রিনেত্রো বহুনেত্রশ্চ তথা পিঙ্গললোচনঃ॥ শূলপাণিঃ খড়গপাণিঃ কন্ধালী ধ্যলোচনঃ। অভীক্লকৈরবো ভীরুভূ তপো যোগিনীপতিঃ। ধনদে। ধনহারী চ ধনপঃ প্রতিভাববান্। নাগহারে। নাগকেশে। ব্যোমকেশঃ কণালভুৎ॥ কালঃ কপালমালী চ কমনীয়ঃ কলানিধিঃ। ত্রিলোচনো জলন্নেত্রস্থিশিখী চ ত্রিলোকপাৎ। ত্রিবৃত্তনয়নো ভিন্তঃ শান্তঃ শান্তজনপ্রিয়ঃ। वर्षे दिन वर्षे दिन्द वर्षात्रकः ॥ ভূতাধ্যক্ষঃ পশুপতির্ভিক্ষুকঃ পরিচারকঃ। ধূর্ত্তো দিগস্বরঃ শৌরহি রিণঃ পাণ্ড্লোচনঃ॥ প্রশান্তঃ শান্তিদঃ শুদ্ধঃ শঙ্করপ্রিয়বান্ধবঃ। बहेम्र्डिनि धीमण छ। निक्र् छ रामगरः ॥

অষ্টাধারঃ কলাধারঃ সর্পযুক্তঃ শুণীশিখঃ। ভূধরো ভূধরাধীশো ভূপতিভূ ধরাত্মকঃ। कक्कानशाती मूखी ह नागय जा भवी ज्वान ॥ জ্ঞুণো মোহনঃ স্তম্ভী মারণঃ ক্ষোভণস্তথা। শুদ্ধনীলাঞ্জনপ্রখ্য-দেহো মুগুবিভূষিতঃ॥ বলিভুগলিভূতাত্মা কামী কামপরাক্রমঃ। সর্বাপতারকো হর্গো হুষ্টভূতনিধেবিতঃ॥ কালঃ কলানিধিঃ কান্তঃ কামিনীবশক্ত্ৰণী। সর্কাসিদ্ধিপ্রদো বৈদ্যঃ প্রভবিষ্ণুঃ প্রভাববান ॥ অষ্টোত্তরশতং নাম তৈরবস্য মহাত্মনঃ। ময়া তে কথিতং দেবি রহস্যং সর্ব্বকামদম্॥ য ইদং পঠতি স্তোত্রং নামাষ্ট্রশতমুক্তমম। ন তস্য ছবিতং কিঞ্চিন্ন রোগেভ্যো ভয়ং তথা॥ ন শক্রভাো ভয়ং কিঞ্চিৎ প্রাপ্নোতি মানবঃ কচিৎ। পাতকানাং ভয়ং নৈব পঠেৎ স্তোত্রমনমুধীঃ॥ মারীভয়ে রাজভয়ে তথা চৌরাগ্নিজে ভয়ে। উৎপাতিকে মহাঘোরে তথা হঃস্বপ্নদর্শনে ॥ বন্ধনে চ মহাঘোরে পঠেৎ স্তোত্রং সমাহিতঃ। সর্ব্বে প্রশমনং যান্তি ভয়াত্তৈরবকীর্ত্তনাৎ।। একাদশসহসৈত্ত পুরশ্চরণমুচ্যতে। ত্রিসন্ধাং যঃ পঠেদেবি সংবৎসর্মতন্ত্রিতঃ॥ न निक्तिः প্রাপ্রাদিষ্টাং ত্র ভামপি মাহুষঃ।। ষগ্মাসান্ ভূমিকামস্ত স জপ্তা লভতে মহীম্। রাজা শক্রবিনাশায় জপেন্সাসাষ্টকং পুনঃ।।

রাত্রো বারত্রয়ঞ্চৈব নাশয়ত্যেব শাত্রবান্। জপেন্সাসত্রয়ং রাত্রো রাজানং বশ্যানয়েৎ।। ধনাৰ্থী চ স্থতাৰ্থী চ দারাৰ্থী যম্ভ মানবঃ। পঠেমারত্রয়ং যথা বারমেকং তথা নিশি।। धनः পুতাংखवा नतान् श्रीभ यात्राताक সংশग्नः ॥ ভীতো ভয়াৎ প্রমুচ্যেত দেবি সত্যাং ন সংশয়ং। যান যান সমীহতে কামান তাংস্তানাপ্লোতি নিশ্চিতম্।। অপ্রকাশ্যমিদং গুহুং ন দেয়ং যস্য কস্যচিৎ। সুকুলীনায় শাস্তায় ঋজবে দম্ভবৰ্জিতে। **प्रमाद रम्राज्यिकः भूगाः मर्खकायकन्यक्रम**्।। धानः वक्तामि (नवमा यथा धाषा পঠেররঃ॥ শুদ্ধক্ষিকসন্ধাশং সহস্রাদিত্যবর্চ্চন্দ্র অষ্টবাহুং ত্রিনয়নং চতুর্বাহুং দিবাহুকুম্।। ভুজঙ্গমেথলং দেবমগ্নিবর্ণ শিরোরুহম্। निगचतः क्यातीमः व**े** काशः यदावनम् ॥ थोष्ट्रियमिश्र गृनदेशव उथा भूनः । ডমরুঞ্চ কপালঞ্চ বরদং ভুজগন্তথা।। নীলজীমৃতসঙ্কাশং নীলাঞ্জনচয়প্রভম্। **षरश्चोकतानवपनः नृश्वतात्र**पनःकूनम् । আত্মবর্ণসমোপেত-সার্মেয়সমন্বিতম্।। ধ্যাত্বা জপেৎ স্থসংস্কৃষ্টিঃ সর্কান্ কামানবাপ্নুয়ার্ব।। এতৎ শ্রন্থা ততো দেবী নামাষ্ট্রশতমুক্তমম্। ভৈরবায় প্রহন্তাভূৎ স্বয়ঞ্চৈব মহেশ্বরী॥ ইতি বিশ্বসারতন্ত্রে আপহ্দারকল্পে বটুকভৈরবস্তবরাজঃ॥

নবগ্রহস্তোত্রম্।

শ্ৰীনবগ্ৰহেত্যো নমঃ।

জবাকুস্থম-সঙ্কাশং কাগুপেয়ং মহান্ত্যতিম্। ধ্বান্তারিং সর্বাপাপন্নং প্রণতোহস্মি দিবাকরম।। দধি-শঙ্খ-তৃষারাভং ক্ষীরোদার্ণব-সম্ভবম। नमामि मिनिश छक्ता मरस्याम् कृष्ठेस्रवम् ॥ ধরণীগর্ভ-সম্ভূতং বিদ্বাৎপুঞ্জ-সমপ্রভম্। কুমারং শক্তিহন্তঞ্চ লোহিতাক্ষং নমাম্যহম্।। প্রিয়ঙ্গু-কলিকা-শ্রামং রূপেণাপ্রতিমং বুধম্। সৌম্যং সর্বগুণোপেতং নমামি শশিনঃ স্থতম্।। দেবতানাং ঋষীণাঞ্চ গুরুং কনক-সন্নিভয়। বন্দ্যভূতং ত্রিলোকেশং তং নমামি বৃহস্পতিম।। হিম-কুন্দ-মুণালাভং দৈত্যানাং পরমং গুরুষ্। দর্বশাস্ত্রপ্রবক্তারং ভার্গবং প্রণমাম্যহম ॥ नौनाञ्चन हम्र अथाः तिरुष्टः महा शहर । ছায়ায়া গর্ভসম্ভূতং বন্দে ভক্ত্যা শনৈশ্চরম ॥ অন্ধকায়ং মহাঘোরং চক্রাদিত্য-বিমন্দকম। निः टिकाग्नाः सूजः (तोजः जः त्राहः अगमामारम् ॥ পলালধুম-সন্ধাশং তারাগ্রহবিমর্দকম্। রৌদ্রং রুদ্রাত্মজং ক্রুরং তং কেতুং প্রণমাম্যহম্ ॥ বাাদেনোক্তমিদং স্তোত্রং যঃ পঠেৎ প্রণতঃ শুচিঃ॥ **मिया या यामि या वाराजी भाश्विक्षमा न मःभग्नः** ॥

ঐশব্যমতৃশঞ্চাপি চারোগ্যং পুষ্টিবৰ্দ্ধনম্ ।
নরনারীপ্রিয়ত্বঞ্চ নিত্যং তদ্যোপজায়তে ্যা
তক্ষকোহমির্যমো বায়ুর্যে চান্তে গ্রহপীড়কাঃ ।
তে সর্ব্যে প্রশমং যান্তি ব্যাদো ক্রয়াল্ল সংশয়ঃ ॥
ইতি শ্রীব্যাসবিরচিতং নবগ্রহন্তোক্রম্ ॥

নবগ্রহক্বচম্।
ব্রেজোবাচ।—শিরো মে পাতৃ মার্ততঃ কপালং রোহিণীপতিঃ।

মুখমঙ্গারকঃ পাতৃ কঠঞ শশিনন্দনঃ।।
বৃদ্ধিং জীবঃ সদা পাতৃ স্কদয়ং ভৃগুনন্দনঃ।

জঠরঞ্চ শনিঃ পাতু জিহ্বাং মে দিতিনন্দনঃ ।।
পাদো কৈতুঃ দদা পাতু বারাঃ সর্বাঙ্গমেব চ ।
তিথয়োহন্তে দিশঃ পাস্ত নক্ষত্রাণি বপুঃ দদা ।
অংসৌ রাশিঃ দদা পাতু যোগাশ্চ হৈর্য্যমেব চ ॥
গুহুং নিকং দদা পাস্ত দর্বে গ্রহাঃ শুভপ্রদাঃ ।
অণিমাদীনি সর্বাণি লভতে যঃ পঠেদ্রুবম্ ।।
এতাং রক্ষাং পঠেদ্যস্ত ভক্ত্যা স্থপ্রতঃ স্থাঃ ।
স চিরায়ঃ স্থা পুত্রী রণে চ বিজয়ী ভবেৎ ॥
অপুত্রো লভতে পুত্রং ধনার্থী ধনমাপ্লয়াৎ ।
দারার্থী লভতে ভার্যাং স্করপাং স্থানোহরাম্ ॥
রোগী রোগাৎ প্রমুচ্যেত বদ্ধো মুচ্যেত বন্ধনাৎ ।
জলে স্থলে চাস্তরীক্ষে কারাগারে বিশেষতঃ ।
য়ঃ করে ধারয়েরিত্যং তস্য ভয়ং ন বিছতে ॥

ব্ৰশ্নহত্যা সুৱাপানং স্তেয়ং গুৰ্বজনাগমঃ।

সর্ক্রপাপেঃ প্রমুচ্যেত কবচস্য চ ধারণাৎ।।
নারী•বামভুজে ধৃত্বা স্থাপের্ধ্যসমন্বিতা।
কাকবন্ধ্যা জন্মবন্ধ্যা মৃতবৎসা চ যা ভবেৎ।
বহবপত্যা জীববৎসা কবচস্য প্রসাদতঃ।।
ইতি গ্রহযামলে উত্তরগতে নবগ্রহকবচম্।।

জগন্বাথস্তোত্রম্।

শ্ৰীজগরাথায় নমঃ। কদাচিৎ কালিন্দীতটবিপিনসঙ্গীতকববো. मूमाञीतीनातीयमनकमनात्रामभधुभः। রমাশস্থ্রক্ষাস্থরপতিগণেশাচিতপদো, জগন্নাথঃ স্বামী নয়নপথগামী ভবতু মে।। ভুজে সব্যে বেণুং শিরসি শিথিপুচ্ছং কটিতটে, ত্বকূলং নেত্রাস্তে সহচর-কটাক্ষং বিদধতে। मना औषष् नावनवम् जिनाम विहरा। জগন্নাথঃ স্বামী নয়নপথগামী ভবতু মে।। महारष्ट्रारश्चीरत कनकक्रित नौनर्भश्दत. বসন প্রাসাদাস্তে সহজবলভদ্রেণ বলিনা। সুভদ্রামধ্যস্থঃ সকলস্থরসেবাবসরদো, জগন্নাথঃ স্বামী নয়নপথগামী ভবতু মে।। কুপাপারাবারঃ সজলজলদশ্রেণিকুচিরো. त्रभावानीत्राभः क्तुत्रम्भन्भरत्रक्षः। সুরেজৈরারাধ্যঃ শ্রুতিগণশিধাগীতচরিতো, জগন্নাথঃ স্বামী নয়নপগগামী ভবত মে।।

রথারঢ়ো গচ্ছন্ পথি মিলিতভূদেবপটলৈঃ, স্তুতিপ্রান্থর্ভাবং প্রতিপদমুপাকর্ণ্য সদয়ঃ 🛊 দয়াসিন্ধর্বন্ধঃ সকলজগতাং সিন্ধস্থতয়া, জগন্নাথঃ স্বামী নয়নপথগামী ভবতু মে।। পরব্রহ্মাপীড়ঃকুবলয়দলোৎফুল্লনয়নো, নিবাসী নীলাক্রে নিহিতচরণোহনস্তশিরসি। রসানন্দো রাধাসরসবপুরালিঙ্গনস্থথো, জগন্নাথঃ স্বামী নয়নপথগামী ভবতু মে।। ন বৈ যাচে রাজাং ন চ কনক্মাণিকাবিভবং, न यारहरूश त्रमार नकनकनकामार वत्रवध्य । সদা কালে কালে প্রমথপতিনা গীতাচরিতো. জগন্নাথঃ স্বামী নয়নপথগামী ভবত মে।। হর তং সংসারং ক্রততর্মসারং সুরপতে. হর জং পাপানাং বিত্তিমপ্রাং যাদ্বপতে। অহো! দীনানাথং নিহিতমচলং নিশ্চিতপদং, জগরাথঃ স্বামী নয়নপথগামী ভবত মে।। জগনাথাপ্তকং পুণ্যং যঃ পঠেৎ প্রয়তঃ শুচিঃ। সর্ব্ব-পাপবিশুদ্ধাত্মা বিষ্ণুলোকং স গচ্ছতি।। ইতি চৈত্যচন্ত্রমুখপদ্মবিনির্গতং জ্রীজগন্নাথস্টকম্॥

ষষ্ঠী-স্তোত্তম্।

স্তোত্রং শৃণু মুনিশ্রেষ্ঠ সর্বকামশুভাবহম্। আজাপ্রদক্ষ সর্বেষাং গুঢ়ং বেদের নারদ।। প্রিয়ত্রত উবাচ।--নমো দেবৈয় মহাদেবৈয় সিইদ্ধ্য শাস্ত্যৈ নমো নমঃ। শুভায়ে দেবদেনায়ে ষষ্ঠে দেবৈয় নমে। নমঃ॥ वत्रमारेश शूलमारेश धनमारेश नरमा नमः। ञ्चथनादेश (याक्रमादेश यक्षीरमदेवा नर्या नयः॥ मंख्लियकारमञ्जूलादेश निकादेश ह नत्या नयः। याशादेश निक्रत्याशिदेश वश्रीतनतेता नत्या नयः ॥ मावादेश मावलादेश ह शावादेश मर्वकाविदेश। वनाधिष्ठां जुर्जित् ह यश्रीरमरेवा नर्भा नमः॥ कन्गानमारेय कन्गारेना कनमारेय ह कर्मानाम । প্রত্যক্ষায়ৈ চ ভক্তানাং ষষ্ঠাদেবৈত্য নমে৷ নমঃ ॥ পৃজ্যারৈ রুক্কাপ্তারৈ সর্বেষাং সর্বকর্মসু। (मन्द्रक्रभक्रांदिरेगा वश्रीतमरेवा नामा नमः॥ **७**कमञ्जूत्र भारेश विक्रिकारेश नृगार मना । हिः मार्काश्व र्ष्टिकारेय येष्ठी रहरेवा नामा नमः॥ ধনং দেহি প্রিয়াং দেহি পুত্রং দেহি স্থরেশ্বরি। धर्याः (प्रवि याना (प्रवि यक्षीरपटेवा नामा नमः॥ দেহি ভূমিং প্ৰজাং দেহি বিঙ্গাং দেহি স্থপূজিতে। कलात्रक जग्न (पृष्टि यही (पृष्टि) नर्भ। नभः॥ ইতি দেবীঞ্চ সংস্কুয় লেভে পুত্রং প্রিয়ব্রতম্। যশস্বিনঞ্চ রাজেন্ত্রং ষষ্ঠীদেবী-প্রসাদতঃ॥ ষষ্ঠীস্তোত্রমিদং ব্রহ্মন যঃ শূণোতি চ বৎসরম। অপুত্রো লভতে পুত্রং বরং স্থৃচিরজীবিনম্॥ বর্ষমেকঞ্চ বা ভক্তনা সংস্তৃত্যেদং শৃণোতি চ।

সর্ব্বপাপ-বিনির্মৃক্তা মহাবন্ধ্যা প্রস্থাতে ॥

বীরং পুত্রঞ্চ গুণিনং বিদ্যাবস্তং যশস্থিনম্।
স্থাচিরায়ুম্মস্থানেব ষদ্ধী-দেবী-প্রসাদতঃ ॥
কাকবন্ধাা চ যা নারী মৃতাপত্যা চ যা ভবেৎ।
বর্ষং শ্রুমা লভেৎ পুত্রং ষদ্ধীদেবী-প্রসাদতঃ ॥
রোগমুক্তে চ বালে চ পিতা মাতা শৃণোতি চেৎ।
মাসঞ্চ মুচ্যতে বালং ষদ্ধীদেবীপ্রসাদতঃ ॥
ইতি শ্রীব্রহ্মবৈবর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ষদ্ধীস্তোত্রম্॥

মনদা-স্তোত্ত্য্।

জরৎকারুর্জগৎগোরী মনসা সিদ্ধযোগিনী।
বৈশ্ববী নাগভগিনী শৈবী নাগেশ্বরী তথা॥
জরৎকারুপ্রিয়াস্তীক-মাতা বিশ্বহরেতি চ।
মহাজ্ঞানযুতা চৈব সা দেবী বিশ্বপৃজিতা॥
শাদশৈতানি নামানি পূজাকালে চ যং পঠেৎ।
তস্য নাগভয়ং নাস্তি তস্য বংশোদ্ভবস্য চ॥
নাগভীতে চ শ্বনে নাগগ্রস্তে চ মন্দিরে।
নাগক্ষতে মহাহুর্গে নাগবেষ্টিতবিগ্রহে।
ইদং স্তোত্রং পঠিষা তু মুচ্যতে নাত্র সংশ্বয়ং॥
নিত্যং পঠেদ্যস্তং দৃষ্ট্রা নাগবর্গং পলায়তে।
দশলক্ষজপেনৈব স্তোত্রসিদ্ধিভবেন্নুগাম্॥
স্তোত্রসিদ্ধিভবেন্যস্য স বিশং ভোক্তু মীশ্বরং।

নাগোঘং ভূষণং ক্লবা স ভবেদ্নাগবাহনঃ। নাগাসনো নাগতল্পো মহাসিদ্ধো ভবেদ্শরঃ॥ ইতি শ্রীব্রহ্মবৈবর্ত্তে মনসাস্তোত্রম্॥

সূর্য্য-স্তোত্তম্।

বশিষ্ঠ উবাচ।—স্থবংস্কত্র ততঃ শাষ্ট্য কুশো ধমনিসম্ভতঃ। রাজন্নামসহত্রেণ সহস্রাংশুং দিবাকরম। খিদ্যমানস্ত তং দৃষ্ট্ৰা সূৰ্য্যঃ ক্লঞাত্মজং তদা। স্বপ্নে তু দর্শনং দক্তা পুনর্ব্বচনমত্রবীৎ॥ শ্ৰীহৰ্ষ্য উবাচ। —শাস্ব শাস্ব মহাবাহো শুণু জান্ববতীস্কৃত। অলং নামসহস্রেণ পঠস্বেমং স্তবং শুভম॥ যানি নামানি গুহানি পবিত্রাণি শুভানি চ। তানি তে কীর্ত্তয়িষ্যামি শ্রুতা বৎসাবধারয় ॥ ওঁ বিকর্ত্তনো বিবস্বাংশ্চ মার্ত্তণে ভাঙ্করো রবিঃ। লোকপ্রকাশকঃ শ্রীমান্ লোকচক্ষুগ্র হৈশবঃ॥ লোকসাক্ষী ত্রিলোকেশঃ কর্তা হর্তা তমিস্রহা। তপ্রস্থাপর্শেচ্ব শুচিঃ সপ্তাশ্ববাহনঃ ॥ গভন্তিহন্তো ব্রহ্মা চ সর্বদেব-নমস্কৃতঃ। একবিংশতিরিতোষঃ স্তব ইষ্টঃ সদা মম।। শ্রীরারোগ্যকরশ্চৈব ধনরদ্বির্যশন্ধরঃ। স্তবরাজ ইতি খ্যাতস্ত্রিয়ু লোকেয়ু বিশ্রুতঃ॥ য এতেন মহাবাহো ছে সন্ধ্যেহস্তমনোদয়ে। স্তোতি মাং প্রণতো ভূতা সর্ব্বপাপেঃ প্রমূচ্যতে॥ কায়িকং বাচিককৈব মানসকৈব হৃষ্কতম্।

একজপ্যেন তৎ সর্বাং প্রণশ্রতি মমাগ্রতাঃ ॥

এব জপ্যশ্চ হোমশ্চ সন্ধ্যোপাসনমেব চ।

বলিমস্ত্রোহর্ষ্যমন্ত্রশ্চ ধৃপমন্ত্রস্তবৈব চ ॥

অন্ধ্রপ্রদানে সানে চ প্রণিপাতে প্রদক্ষিণে।

পৃজিতোহয়ং মহামন্ত্রঃ সর্বাব্যাধিহয়ঃ শুভঃ ॥

এবমুক্ত্রা তু ভগবান্ ভাস্করো জগদীশরঃ।

আমন্ত্রা কৃষ্ণতনয়ং তত্ত্রবাস্তরধীয়ত ॥

শাস্বোহপি স্তবরাজেন স্তব্যা সপ্তাশ্ববাহনম্।

পৃতাত্মা নীক্রজঃ শ্রীমান্ তন্মাদ্রোগাদিমুক্তবান্ ॥

ইতি শ্রীশাম্বপুরাণে রোগাপনয়নে শ্রীহর্ষ্যবক্ত্রবিনির্গত-স্তবরাজঃ।

সূর্য্যকবচম্।

প্রীস্র্য্যায় নমঃ।

শ্রীশিব উবাচ। — প্র্যাস্য কবচং দেবি শ্রয়তাং প্রাণবল্পতে।
ব্যোগমাত্রং ক্ষয়ং যক্ষাৎ কবচাৎ সিদ্ধিরাশয়ঃ ॥
অস্য শ্রীস্ব্যাকবচস্য কর্ণঋষিস্ত্ত্ত্বপূত্দেশা দিনেশো দেবতা
দিনেশকবচপাঠে বিনিয়োগঃ ॥

ওঁ আদিত্যো মে মুখং পাতু শিরঃ পাতু দিবাকরঃ।
বাহু পাতু তমোহস্তা হৃদয়ং পাতু ভায়রঃ॥
পাদৌ পাতু মহাবীজং লিঙ্গং পাতু বধ্মম।
উদরং পাতু হ্রী বীজং মায়াশক্তিন্তথাক্ষিণী॥
ঘুণি হর্যোহি মন্ত্রং মে রক্ষাং কুর্যাচচ সর্বতঃ।
চগুবীজং প্রচণ্ডঞ্চ সততং পাতু মে যশঃ॥

ইক্সবীজং ধরাবীজং বীজং বারুণমেব চ।
জলে ইলে চাস্তরীক্ষে রক্ষাং কুর্যান্ত্র সর্বতঃ ॥
কামো বাণী রমা খ্রামা সর্বাঙ্গং স্থ্য এব চ।
রক্ষাং করোতু মে দেব সর্বতন্তিমিরাপহঃ ॥
ইত্যেতৎ কবচং দেবি স্থ্যস্য প্রিয়কারণম্ ।
সর্বরক্ষাকরং সাক্ষাৎ সর্বরোগপ্রণাশনম্ ॥
রবিবারে শতার্তিং সংক্রোপ্তাং সপ্তমীতিথো ।
জবাপুলোঃ সমভ্যর্চ্য সন্তো রোগাৎ প্রমূচ্যতে ॥
ধারয়েদক্ষিণে হন্তে তস্য রোগো ন জায়তে ।
ইতি শাস্তবতন্ত্রে দেবেশ্বরীসংবাদে শ্রীস্থ্যকবচম্ ॥

রাধাস্তোত্রম্।

স্থোত্রঞ্চ সামবেদোক্তং প্রপঠেন্ডক্তিপূর্ব্বকম্।
রাধা রাসেশ্রী রম্যা পরমা চ পরাত্মনঃ॥
রাসোন্তবা রুক্ষকাস্তা রুক্ষবক্ষঃস্থলস্থিতা।
রুক্ষপ্রাণাধিদেবী চ মহাবিক্ষ্প্রস্থরপি॥
সর্ব্বথা বিক্ষুমারা চ সত্যা নিত্যা সনাতনী।
রক্ষস্বরূপা পরমা নির্লিপ্তা নিস্তর্ণা পরা॥
রক্ষাবনেশা বিজয়া যমুনাতটবাসিনী।
গোলোকবাসিনী গোপী গোপীশা গোপমাত্কা॥
সানন্দা পরমানন্দা নন্দনন্দনকামিনী।
র্বভাকুস্থতা শাস্তা কাস্তা পূর্ণতমস্য চ॥
কাম্যা কলাবতীকস্তা তীর্পপ্তা সতী শুভা।
সপ্রক্রিংশচ্চ নামানি বেদোক্ষানি শুভানি চ।

সারভ্তানি পুণ্যানি সর্বনামস্থ নারদ॥

যঃ পঠেৎ সংযতঃ শুদ্ধো বিষ্ণুভক্তো জিলেন্দ্রিয়ঃ।

ইহ বৈ নিশ্চলাং লক্ষীং লক্ষ্য থাতি হরেঃ পদম্।

হরিভক্তিং হরেদাস্যং লভতে নাত্র সংশয়ঃ॥

ভক্ত্যা লক্ষজপেনৈব স্তোত্রসিদ্ধির্ভবেদ্ধ্রবম্।

স্তোত্রস্থরণমাত্রেণ জীবন্মক্তো ভবেররঃ।

পদে পদেহখনেধস্য লভতে নিশ্চিতং ফলম্॥

কোটিজন্মার্জিতাৎ পাপাৎ ব্রস্থহত্যাশতাদিপ।

স্তোত্রস্থরণমাত্রেণ মূচ্যতে নাত্র সংশয়ঃ॥

মৃতবৎসা কাকবদ্ধ্যা মহাবদ্ধ্যা প্রস্থাতে।

শৃণোতি বর্ষমেকং যা শুদ্ধা রিদ্ধান্নভোজিনী॥

শৃণোতি মাসমেকং মঃ সর্বোভীয়্ঠং লভেররঃ।

সামবেদাক্ত-স্তোত্রঞ্গ প্রোবাচ কমলোন্তবঃ॥

ইতি শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে শ্রীরাধিকান্তোত্রম্॥

রাধাকবচম ।

শ্রীপার্কাত্যবাচ। — কৈলাসবাসিন্ ভগবন্ ভক্তামগ্রহকারক।
রাধিকাকবচং পুণ্যং কথ্যস্থ মম প্রভা ॥
যন্তন্তি করুণা মাধ ত্রাহি মাং চুঃখতো ভরাৎ।
ত্বমেব শরণং নাথ শূলপাণে পিনাকধৃক্ ॥
শ্রীমহাদেব উবাচ। —শৃণুদ্ধ গিরিক্তে তুভ্যং কবচং পূর্বাহুচিতম।
সর্বারকাকরং পুণ্যং সর্বাহত্যাহরং পরম্ ॥
হরিভক্তিপ্রদং সাক্ষাৎ ভুক্তিমুক্তিপ্রসাধনম্।
ব্রালোক্যাকর্বণং দেবি হরিসান্নিগ্রারণম্॥

नर्वत क्यूषः (पित नर्वभक्छ्याभइय । সর্বেষ্মু ঞৈব ভূতানাং মনোরত্তিকরং পরম্॥ **চতुर्का युक्तिकनकः नमानमकदः পর্য।** রাজস্যাশ্বমেধানাং যজ্ঞানাং ফলদায়কম ॥ ইদং কবচমজ্ঞাত্বা রাধামন্ত্রঞ্চ যো জপেৎ। স নাপ্নোতি ফলং তস্য বিল্লস্তস্য পদে পদে॥ ঋষিরস্য মহাদেবোহমুষ্টু প্ ছন্দঃ প্রকীর্ত্তিম্। রাধাস্য দেবতা প্রোক্তা রাং বীজং পরিকীর্ত্তিতম। धर्मार्थकामरमारकम् विनिरम्ना अकीर्छिछः। শ্ৰীরাধা মে শিরঃ পাতু ললাটং রাধিকা তথা। বৃষভারুস্থতা দস্তান্ চিকুরং গোপনন্দিনী॥ চন্দ্রাবলী পাতু গণ্ডং জিহ্বাং কৃষ্ণপ্রিয়া তথা। কণ্ঠং পাতু হরিপ্রাণা হৃদয়ং বিজয়া তথা। वाङ्क (को ठक्कवमना উদরং সুবলস্বসা। কটীং যোগান্বিতা পাতু পাদে সৈভিত্ৰিক। তথা।। नथान हक्ष्यभी পाष्ट्र खन्रको (गाभानवक्षण। মুখং বিধুমুখী পাতু গোপী পদতলং তথা।। শুভপ্রদা পাতৃ পৃষ্ঠং কুক্ষী শ্রীকাস্তবন্ধভা। গুছদেশং জরা পাতু হরিণী পাতু সর্বতঃ॥ বাক্যং বাণী সদা পাতু ধনাগারং ধনেশ্বরী। পূর্বাং দিশং কৃষ্ণরত। কৃষ্ণপ্রাণা চ পশ্চিমাম্॥ উত্তরাং সুমুখী পাতু দক্ষিণাং বৃষভামুজা। চন্দ্রাবলী নৈশমেব দিবা ক্ষেড়িতমেথলা। সৌভাগ্যদা মধ্যদিনে সায়াহে কামরূপিণী।

রৌদ্রী প্রাতঃ পাতু মাং হি গোপিনী রজনীক্ষয়ে॥ হেতৃদা সঙ্গবে পাতৃ কোমলা চ দিবাৰ্দ্ধকে। শেষাপরাত্মসময়ে শমিতা সর্বাসন্ধিরু॥ যোগিনী ভোগসময়ে ব্রতৌ বৃতিপ্রদা সদা। कारमनी को जूरक निजार खारिश त्रकारनी सम ॥ नर्सका नर्सकार्यायु ताधिका कृष्ण्यानना । ইত্যেতৎ কথিতং দেবি কবচং পরমাম্ভূতম্। সর্ব্যক্ষাকরং নাম মহারক্ষাকরং পরম্॥ সর্বার্থসিদ্ধিস্তস্য স্যাৎ যদ্যন্মনসি বর্ততে ॥ রাজম্বারে সভায়াঞ্চ সংগ্রামে শক্রসম্বটে। প্রাণার্থনাশসময়ে यः পঠেৎ প্রয়তো নরঃ। তসা সিদ্ধির্ভবেদেবি ন ভয়ং বিশ্বতে কচিৎ॥ আরাধিতা রাধিকা চ তেন সত্যং ন সংশয়ঃ। भन्नान्नाना रद्रनीय-গ্রহণা य कनः न ७८। তৎ ফলং তস্য ভবতি যঃ পঠেৎ প্রযতঃ শুচিঃ॥ হরিজা-রোচনা-চক্র-মণ্ডিতং হরিচন্দনম্। কুতা লিখিতা ভূজে চ ধারয়েৎ মস্তকে ভূজে॥ कर्छ वा दिवदादिन म इतिनीक मान्यः॥ কবচস্য প্রসাদেন ব্রহ্মা স্বষ্টং স্থিতিং হরিঃ। সংহারঞ্চাহং নিয়তং করোমি কুরুতে তথা। देवस्थवात्र ह खन्नात्र विदाशस्थनीमित्न। দভাৎ কবচমব্যগ্রমন্তথা নাশমাপুরাৎ॥ ইতি শ্রীনারদপঞ্চরাত্রে শ্রীরাধাকবচম্॥

গোপালস্তোত্রম্।

नात्रम खेवाठ । - नवीननीत्रमथामः नीत्नमीवत्रत्नाठनम् । वस्रवीनन्पनः वत्म कृष्ण्यां भागक्राभिगम्॥ স্ফুরম্বর্ছদলোম্বদ্ধ-নীলকুঞ্চিতমুর্দ্ধজম্। কদস্কুসুমোলন্ধ-বন্মালাবিভূষিত্যু॥ গগুমগুলসংসর্গি-চলৎকাঞ্চনকগুলম। স্থুলমুক্তাফলোদার-হারপ্তোতিতবক্ষসম্॥ (रमात्रमञ्जारकाणि-कित्रीरो ज्जनिविधरम्। মন্দমারুতসংক্ষোভ-বল্লিতাম্বরসঞ্চয়ম্॥ क्ितिष्ठियुष्ठेश्रेख-वः मिभधुत्रिक्षितः । লদলোপালিকাচেতো মোহয়স্তং মুভ্রু ভঃ॥ বল্লবীবদনান্তোজ-মধুপানমধুব্রতম্। কোত্য়স্তং মনস্তাসাং সম্বেরাপাঙ্গবীক্ষণৈ: ॥ रयोवरना खिन्नरम् डिः मः मख्ना ভिः भत्रण्यत्र । বিচিত্রহারভূষাভির্গোপনারীভিরারতম্॥ প্রভিন্নাঞ্জনকালিন্দী-জলকেলিকলোৎস্কৃক্য। যোধয়ন্তং কচিদেগাপান ব্যাহরন্তং গবাং গণম ॥ कानिकीकनभःमर्शि-नीठनानिनरमिठम। কদম্বপাদপচ্ছায়ে স্থিতং রন্দাবনে কচিৎ॥ রত্নভূধরসংলগ্ন-রত্নাসনপরিগ্রহম্। কল্পপাদপমধ্যস্থ-হেমমগুপিকাগতম্॥ বসম্ভকুস্থমামোদ-স্থরভীকৃতদিশ্বথে। গোবর্দ্ধনগিরে রম্যে স্থিতং রাসরসোৎসুক্ষ্॥

সব্যহস্ততলন্তস্ত-গিরিবর্য্যাতপত্রকম্।

থণ্ডিতাথগুলোমূক্ত-মুক্তাসারঘনাঘনম্॥

বেণুবাভমহোল্লাস-কৃতহুকারনিঃস্বনৈঃ।

সবৎসৈরুলুথৈঃ শখদ্গোকুলেরভিবীক্ষিতম্ ॥

কৃষ্ণমেবামুগায়ন্তিস্তচ্চেষ্টাবশবর্তিভিঃ।

দশুপাশোভতকরৈর্গোপালৈরুপশোভিতম্ ॥

নারদালৈমুনিশ্রেচির্কেদবেদাঙ্গপারগৈঃ।

প্রীতিস্ক্রমিয়া বাচা স্তুর্মানং পরাৎপরম্ ॥

য এবং চিস্তয়েদেবং ভক্ত্যা সংস্তৌতি মানবঃ।

ত্রিসন্ধ্যং তস্ত তুষ্টোহসৌ দদাতি বর্মীপ্দিতম্ ॥

রাজবল্লভতামেতি ভবেৎ সর্বজনপ্রিয়ঃ।

অচলাং শ্রিয়মাপ্রোতি স বাগ্মী জায়তে গ্রবম্ ॥

ইতি গৌতমীয়ে শ্রীগোপালস্তোত্রম ॥

কুগুলিনীস্তোত্র্য।

ওঁ নমস্তে দেবদেবেশি যোগীশপ্রাণবল্পতে।

সিদ্ধিদে বরদে মাতঃ স্বয়স্ত লিঙ্গবেষ্টিতে ॥

ওঁ প্রস্থপ্রভূজগাকারে সর্ন্ধদা কারণপ্রিয়ে।

কামকলানিতে দেবি মমাভীষ্ঠং কুরুষ চ ॥

অসারে ঘোরসংসারে ভবঘোরাৎ কুলেশ্বরি।

সর্বাদা রক্ষ মাং দেবি জন্মসংসারসাগরাৎ ॥

ইতি কুণ্ডলিনীস্তোত্রং ধ্যাত্বা যঃ প্রপঠেৎ সুধীঃ।

মুচ্যতে সর্ন্বপাপেভ্যো ভবসংসারকৃপকে ॥

ইতি কুণ্ডলিনীস্তোত্র্য ॥

क् छिनि नी क व ह म् ।

শ্রীস্থানন্দতৈরবুদ্ধনাচ। — অথ বক্ষ্যে মহাদেব কুগুলীকবচং শুভম্।
পরমানন্দদং সিদ্ধং সিদ্ধরুন্দনিষেবিতম্ ॥
যদ্ধা যোগিনঃ সর্ব্বে ধর্মাধর্মপ্রদর্শকাঃ।
জানিনাং মানিনো ধৈর্য্যা বিচরস্তি যথামরাঃ॥
সিদ্ধরোহপ্যানিমাত্মান্চ করস্থাঃ সর্বদেবতাঃ।
এতৎ-কবচপাঠেন দেবেন্দ্রো যোগিরাড় ভবেৎ॥
খাবয়ো যোগিনঃ সর্ব্বে জটিলাঃ কুলভৈরবাঃ।
প্রাতঃকালে ত্রিবারঞ্চ মধ্যাছে বারযুগ্যকম্॥
সারাছে বারমেকন্ত পঠেৎ কবচমেব চ।
পাঠাদেব মহাযোগী কুগুলীদর্শনং লভেৎ॥

কুণ্ডলীকবচস্ত ব্ৰহ্মা ঋষির্গায়লীচ্ছন্দঃ কুণ্ডলী দেবতা সর্বাতীষ্ট-সিদ্ধ্যর্থে বিনিয়োগঃ॥

ওঁ ঈশ্বরী জগদ্ধাত্রী ললিতা স্থন্দরী পরা।
কুণ্ডলী কুলরপা তু পাতু মাং কুলচণ্ডিকা॥
শিরো মে ললিতা দেবী পাতৃগ্রাখ্যা কপোলকম্।
ব্রহ্মরদ্ধে প পুটিতং ক্রমধ্যং পাতু মে সদা।
নেত্রত্রেং মহাকালী কালাগ্নিভক্ষিকা শিখাম্॥
দন্তাবলীং বিশালাক্ষী ওঠিমিষ্টারবাসিনী।
কামবীজাত্মিকা বিদ্যা অধরং পাতু মে সদা॥
গগুস্থা তু গগুমুগ্নং মারাবী সা রসপ্রিরা।
ভূবনেশী কর্ণমুগ্নং চিবুকং ক্রোধকালিকা॥
কপিলা মে গলং পাতু সর্কবীজ্বরূপিনী।

মাতৃকাবর্ণপুটিতা কুগুলী কল্পমেব চ। হাদয়ং কালপুত্ৰী চ কন্ধালী পাতৃ মে মুখম্॥ ভুজ্যুগাং চণ্ডহুর্গা চণ্ডদোর্দণ্ডখণ্ডিনী। স্বন্ধ্যুগ্নং পাতু দেবী চিকুরং ক্রোধতৈরবী॥ অঙ্গুলাগ্রং কুলানন্দা প্রীবিষ্ঠা নথমগুলম। क्रांतिका जूरातमानी शृष्ठितमः ननारजू॥ পার্যযুগ্যং মহাবীরা বীরাসনধরাভয়া। পাতু মাং কুলদর্ভস্থা নাভিমুদরমল্লিকা॥ কটিদেশং পৃষ্ঠসংস্থা মহামহিষ্থাতিনী। লিক্স্থানং মহামুদ্রা ভগমালা মহুপ্রিয়া॥ ভগীরথপ্রিয়া ধূমা মূলাধারং গণেশ্বরী। চতুর্দলং কালপূজ্যা দলাগ্রং মে বসুন্ধরা॥ ধীর্ধরা ধারণাখ্যা চ ব্রহ্মাণী পাতু মে গুদম্। ভেদিনী পাতু कमना वाग्रावी शृर्सगः पनम्॥ ছেদিনী দক্ষিণে পার্শ্বে পাতু চণ্ডা মহাবলা। চণ্ডৰটো সদা পাতু যোগিনী বারুণং দলম্॥ উত্তরস্থং দলং পাতু পৃথিবীমিন্দ্রলালিতা। চতুষোণং কামবিতা ব্ৰহ্মবিতাষ্টকোণকম। **अर्ड** मनः मना भाजू मर्खवादनवादना ॥ हर्ज्जू का मना পार्ज छाकिनी कूनहक्षना। মেচ স্থমদনাধারা পাতু মে চারুপক্ষজ্য। স্বয়ন্ত্রলিঙ্গং চার্বঙ্গী কোটরাক্ষী মমাসনম্। কদম্বনগা পাতু কদম্বনবাসিনী ॥ বৈষ্ণবী পরমা মায়া পাতু মে বৈষ্ণবং পদম্।

यष्ट्र मनः त्राकिनी পाতु तकिनी कामवानिनी॥ কামেশ্বরী কামরূপা রুম্ভা মে পীতবাসসম ধমুর্মে অবত্বর্গা চ শঙ্খং মে শঙ্খিনী শিবা॥ ठकः ठक्तभूती পांज क्यनाकी गर्माः यय । পদাং মে পদাগন্ধা চ পদামালা মনোহবা॥ বাদিসাম্ভাক্ষরং পাতৃ লাকিনী লোকপাবনী ষড় দলস্থিতদেবাংশ্চ পাতু কৈলাসবাসিনী। অগ্নিবর্ণা সদা পাতু হনু মে পরমেশ্বরী। মণিপুরং সদা পাতু মণিমালাবিভূষণা॥ দশপত্রং দশবর্ণং কাদিফান্তং ত্রিবিক্রমা। পাতৃ নীলা মহাকালী ভদ্রা ভীমা সরস্বতী॥ व्यायायाचात्रिमी (प्रवी महाशीर्शनिवात्रिमी। বাগ্ভবাছা মহাবিছা কুওলী কালরূপিণী॥ দশচ্চদশতং পাতৃ রুদ্রং রুদ্রাগ্মকং মম। হক্ষা হক্ষতরা পাতৃ হক্ষস্থাননিবাসিনী॥ লাকিনী লোকজননী পাতু কূটাক্ষরারিতা। তেজসং পাতৃ নিয়তং রজকী রাজপূজিতা। বিজয়া কুলবীজন্থা তবৰ্গং তিমিরাপহা। চন্দ্রাত্মিকা মণিগ্রন্থি-ভেদিনী পাতৃ সর্বাদা। ভগমালা ভৃগুসুতা পাতৃ মাং নাভিবাসিনী। নন্দিনী পাতু সকলং কুণ্ডলী কালকল্পিত।। হৃৎপদ্মং পাতু কালাখ্য। ধূমবর্ণা মনোহরা। দলদাদশবর্ণঞ্চ ভাস্করী ভাবসিদ্ধিদা॥ পাত মে পরমা বিদ্যা কবর্গং কামচারিণী।

চবर्गः চারুরসনা ব্যাঘ্রাস্থা টক্ষধারিণী॥ টকারং পাতু রুষ্ণাধ্যা কাকিনীং পাতু কালিকা। ঠকুরাঙ্গী ঠকারং মে বীজভাষা মহোদয়া॥ ् ঈশরং পাতু বিমলা মম হৃৎপদ্মবাসিনী। কালিকাং কালসন্দর্ভা যোগিনী যোগমাতর্ম। ইন্দ্রাণী বারুণী পাতৃ কুলমালা কুলান্তরম। তারিণী শক্তিমাতা চ কণ্ঠবাক্যং সদাবতু॥ বিপ্রচিত্তা মহাগ্রোগ্র-প্রভা দীপ্তা ঘনামাল।। বাকস্তন্ত্রিনী বজ্রদেহা বৈদেহী বুষবাহিনী॥ উন্মত্তানন্দচিতা চ কুলেশী সা ভগাতুরা। মম যোড়শপত্রাণি পাতৃ মে ক্লনিবাসিনী॥ সুরান রক্ষত বেদজা সর্বভাষা চ কালিকাম। ঈশ্বরাদ্ধাসনগতা প্রপায়ারে সদাশিব।॥ गाक छत्री महारयाना गाकिनी পाउ नक्ता। ভবানী ভবমাতা চ পায়ান্মে হৃদি পঞ্জম॥ দিদলং বতকামাখা। অপ্লাঙ্গসিদিদায়িনী। পাত মামথিলাননা মনোরূপা জপপ্রিয়া॥ नकातः नक्षणाकासा मर्वनक्षणनक्षण। ক্ষাজিনধরা দেবী ক্ষকারম্পাত সর্বদা। षिप्रवाहर मर्काप्तरः मना পां वर्षानना। বহুরপা বিশ্বরূপা হাকিনী পাতু চণ্ডিকা॥ হরা পরশিবং পাতু মানসং পাতু পঞ্চমী। यहेठक्य मना পाष्ट्र यहेठककूनवामिनी ॥ অকাবাদি-ক্ষকাবাঝা বিন্দসর্গসমন্বিতা।

মাতৃকাণা সদা পাতৃ কুণ্ডলী জ্ঞানকুণ্ডলী। পূর্ণকালী গতিপ্রেতা পূর্ণগিরিতটং শিব।। উড্ডীয়ার্কনশ্বরী দেবী সকলং পাতু সর্বাদা ॥ কৈলাসপর্বতং পাতু কৈলাসগিরিবাসিনী। ডাকিনী বাকিণী শক্তিলাকিনী কাকিনী কলা।। শাকিনী হাকিনী দেবী ষ্টচক্রাদীন প্রপাত মে। কৈলাসাখ্যং সদা পাতৃ পঞ্চাননতন্ত্ৰবা॥ विवगावर्गा वस्त्रमी हत्त्वर्थााधिलकिनी। সহস্রদলপদাং মে সদা পাতু কুলাকুলা। সহস্রদর্পদান্তং দৈবতং পাতু ভৈরবী।। কালী তারা যোডশাখ্যা মাতঞ্চী পদ্মবাসিনী: শশিকোটিগলদ্রপা পাতু মে সকলাং তনুযু॥ त्रां (चारत करन तिर्वे युक्त वारत भागानरक। সর্বত্তি গমনে জ্ঞানে সদা মাং পাতু শৈলজা॥ পর্বতে বিবিধাবাদে বিনাশে পাতু কুণ্ডলী। পদাদিব্ৰহ্মরন্ধান্তং সর্বাকাশা স্থরেশ্বরী॥ मना পাত সর্কবিকা সর্বজ্ঞানং দল মম। নবলক্ষমহাবিতা দশদিকু প্রপাতু মাম ॥ ইত্যেতৎ কবচং দেবি কুণ্ডলিস্তাঃ প্রসিদ্ধিদ্য । যে পঠন্তি ধ্যানযোগে যোগমার্গব্যবস্থিতাঃ॥ यक्की शास्त्र कुछ निनीः रुक्ष भव्र अका मिनीय । ্ধর্ম্মোদয়াং দয়ারুঢ়াং আকাশস্থানবাসিনীম্॥ অমতানন্দর্দিকাং বিকলাং সকলাং সিতাম। অসিতাং রক্তরহিতাং বিরক্তাং রক্তবিগ্রহাম॥

রক্তনেত্রাং কুলক্ষিপ্তাং জ্ঞানাকুলজলাজ্জলাম্।
বিপ্রকারাং মনোর্নপাং মূলে ধ্যাত্বা প্রপ্রকরেৎ ॥
যো যোগী কুরুতে এবং স সিদ্ধো নাত্র সংগরঃ।
রোগী রোগাৎ প্রমুচ্যেত বদ্ধো মুচ্যেত বন্ধনাৎ ॥
বস্তপ্রিমবাগ্রোতি বস্তহীনঃ পঠেদ্যদি।
পুত্রহীনো লভেৎ পুত্রং যোগহীনো ভবেছলী ॥
কবচং ধারয়েদ্যস্ত শিখায়াং দক্ষিণে ভূজে।
বামা বামকরে ধৃত্বা সর্বাভীষ্টমবাপুয়াৎ ॥
স্বর্গে রৌপ্যে তথা তামে স্থাপয়িত্বা প্রপুজরেৎ।
সর্বাদেশে সর্বাকালে পঠিতা সিদ্ধিমাপুয়াৎ
স ভূয়াৎ কুগুলীপুজো নাত্র কার্য্যা বিচারণা॥
ইতি ক্রপ্রধানে উত্তর্থণ্ডে কন্দবাসিনীকবচম্॥

শীতলাস্তোত্র্য ।

ওঁ নমামি শীতলাং দেবীং রাসভস্থাং দিগম্বরীম্।
মাক্রনীকলসোপেতাং স্পালক্কতমস্তকাম্॥
স্কন্দ উবাচ।—ভগবন্ দেবদেবশ শীতলায়াঃ স্তবং শুভম্।
বক্তুমুর্হস্থাশেষেণ বিক্ষোটকভয়াপহম্॥
স্কার উবাচ।—বন্দেহং শীতলাং দেবীং বিক্ষোটকভয়াপহাম্।
যামাসাম্ম নিবর্ত্তে বিক্ষোটকভয়ং মহৎ॥
শীতলে শীতলে ত্রাহি যো ক্রয়াদাহ পীড়িতঃ।
বিক্ষোটকভয়ং ঘোরং ক্ষিপ্রং তস্ম প্রণশাতি॥
শীতলে জ্বরদগ্ধস্ম প্তিগন্ধগতস্ম চ।
প্রণষ্টচক্ষুষঃ পুংসস্থামান্ত্র্কীবনৌষধম্॥

শাতলে তম্বজান্ রোগ্ধান্ নৃণাং হরসি হস্ত্যজান্।
বিক্ষোটকবিশাণানাং স্বমেকামৃতবর্ষিণী ॥
গলগণ্ডগ্রহা রোগা যে চাত্তে দারুণা নৃণাম্।
সদম্ব্যানমাত্রেণ শীতলে যাস্তি সংক্ষয়ম্ ॥
ন মন্ত্রং নৌষধং তস্তু পাপরোগস্ত বিস্ততে।
স্বমেকা শীতলে ত্রাত্রী নাক্তাং পশ্রামি দেবতাম্ ॥
মৃণালতস্ত্রসদৃশীং নাভিহ্নমধ্যসংস্থিতাম্।
যন্ত্রাং সঞ্চিস্তরেদেবি তস্ত্র মৃত্যুর্ন জায়তে ॥
যন্ত্রাম্দকমধ্যে তু ধ্যাত্মা সংপৃজ্যেররঃ।
বিক্ষোটকভয়ং ঘোরং গৃহে তস্ত্র ন জায়তে ॥
স্বান্তব্যং শীতলাদেব্যা ন দেয়ং যস্ত্র কস্তরিৎ।
দাতব্যং হি সদা তাক্ষে ভক্তিশ্রদাবিতো হি য়ং ॥
ইতি স্বন্ধপুরাণে শীতলাস্থোত্রম ॥

অপরাজিতাস্তোত্রম্।

ওঁ শুদ্ধক্ষটিকসঙ্কাশাং চক্রকোটি-সুশীতলাম্। অভয়-বরদহস্তাং শুক্রবক্তৈরলঙ্কতাম্॥ নানাভরণসংযুক্তাং চক্রবাকৈশ্চ বেষ্টিতাম্। এবং ধ্যায়েৎ সমাসীনো য এতামপরাজিতাম্॥

অপরাজিতা-মন্ত্রস্থানারদ-(দেবব্যাস) ঋষি-রমুষ্ট্রপ্ছন্দঃ এঅপরাজিতা দেবতা লক্ষী বীজং ভুবনেশ্বরীশক্তিম্ম সর্বাভীষ্ট-সিদ্ধার্থং জপে বিনিয়োগঃ॥

মার্কণ্ডের উবাচ। —শৃণুধ্বং মুনরঃ সর্ব্বে সর্ব্বকামার্থসিদ্ধিদাম্। অসিদ্ধসাধিনীং দেবীং বৈষ্ণবীমপরাজিতাম্॥

ওঁ নমো ভগবতে বাস্থদেবায় নমে স্কেনস্তায় সহস্রশীর্ষায় ক্ষীরোদা-র্ণবশায়িনে। শেষভোগপর্যক্ষায় গরুড়বাহনায় অজায় অজিতায় অমিতায় অপরাজিতায় পীতবাসসে বাস্ফুদেব-সঙ্কর্ঘণী-প্রত্যুমানিরুদ্ধ-হয়গ্রীব-মহাবরাহ-নর সিংহ-বামন-ত্রিবিক্রম-রাম-রাম-মৎস্তকর্ম্বর-প্রদ নমোহস্ত তে স্বাহা। ওঁ নমোহস্ত তে স্বর-দৈত্য-দানব-নাগ-গন্ধর্ব-যক্ষ-রাজসভূত-প্রেত-পিশাচ-কুল্মাণ্ড-সিদ্ধ-যোগিনী-ডাকিনী-কল-পুরোগান গ্রহ-নক্ষত্রদোধান গ্রহাংশ্চান্তান হন হন দহ দহ পচ পচ মথ মথ বিধ্বংসয় বিচূর্ণয় বিচূর্ণয় বিদ্রাবয় বিদ্রাবয় শঙ্খেন চক্রেণ বজ্রেণ শ্লেন গদয়। মুষলেন হলেন দামোদর ভত্মীকুরু কুরু স্বাহা। ওঁ সহস্রবাহে সহস্রপ্রহরণায়ুধ জয় জয় বিজয় বিজয় অজিত অজিত অমিত অমিত অপরাজিত অপ্রতিহত সহস্রনেত্রোজ্বলো-জ্জল প্রজ্ঞল প্রজ্ঞল বিরূপ বিশ্বরূপ বছরূপ মধুহদন মহাবরাহাচ্যত নুসিংহ মহাপুরুষ পুরুষোত্তম বৈকুণ্ঠ নারায়ণ পল্মনাভ গোবিন্দ অনি-রুদ্ধ দামোদর ধ্বধীকেশ কেশব বামন পর্বাস্থ্রোৎসাদন সর্বভূত-তয়য়য় সর্বশক্রপ্রশমন সর্বমন্ত্রপ্রভল্পন সর্ববোগপ্রণাশন সর্ব-নাগ-প্রমর্জন সর্বাদেবমহেশর সর্বাবন্ধবিমোক্ষণ সর্বাহিতপ্রমর্জন সর্ব-হিংস্রপ্রদমন সর্বজন্তরপ্রণাশন সর্ব্বগ্রহনিবারণ সর্ব্বপাপপ্রমর্দ্দন সর্ব্ব-হুঃস্বপ্নাশন জনার্দ্দন নমোহস্ত তে স্বাহা। য ইমামপরাজিতাং প্রমবৈষ্ণবীং পঠতি বিভাং স্মর্তি সিদ্ধাং মহাবিভাং জ্পতি পঠতি শূণোতি স্বারয়তি ধারয়তি কীর্ত্তয়তি বাচয়তি বা গৃহীত্বা হস্তে পথি গৃচ্ছতি বা ভক্ত্যা লিখিত্বা গৃহে স্থাপয়তি বা তম্ম নাগ্নি-বায়ু-বজ্ৰো-পলাহশনিভয়ং ন বর্ষভয়ং ন শত্রুভয়ং ন চৌরভয়ং ন সর্পভয়ং ন শ্বাপদভয়ং ন সমুদ্রভয়ং ন রাজভয়ং বা ভবেৎ। ন তস্তু রাত্র্যন্ধ-कात्रञ्जी-ताककुलिरियाभिविष-गत्रमण्डल-विशेकत्रण-विश्वषण-छक्ताचेन-

বধ-বন্ধনভয়ং বা ভবেং। এভির্মম্বৈরুদাঙ্কতিঃ দিদ্ধৈঃ সংসিদ্ধ-পৃজিতৈঃ। তদ্যথা।—ওঁ নমস্তেহস্ত অভয়ে অনংঘ অজিতে অমিতে অপরে অপরাজিতে পঠতি দিন্ধে (বিচ্ছে) স্মরতি দিন্ধে মহাবিছে একানংশে উমে গ্রুবে অরুদ্ধতি সাবিত্রি গায়ত্তি জাতবেদসি মান-স্তোকে সরস্বতি ধমনি ধামনি রমণি রামণি ধরণি ধারণি সৌদা-মিনি অদিতি দিতি বিনতে গৌরি গান্ধারি শ্বরি কিরাতিনি মাতলৈ ক্লেফ যশোদে সত্যবাদিনি ব্ৰহ্মবাদিনি কালি কপালিনি করালিনি করালনেত্রে ভীমনাদিনি বিকরালনেত্রে সজ্যোপচয়কবি মাতঃ সর্ব্ববাচনবরদে শুভদে অর্থদে সাধিনি অপমৃত্যুং নাশয় নাশয় পাপং হর হর জলগতং স্থলগতং অন্তরীক্ষণতং মাং রক্ষ রক্ষ সর্ব্ধ-ভূত-সর্ব্বোপদ্রবেভ্যঃ স্বাহা। যস্তাঃ প্রণশ্ততে পুষ্পং গর্ভো বা পততে যদি। মিয়ন্তে বালকা যস্তাঃ কাকবন্ধ্যা চ যা ভবেৎ। ভূৰ্জ-পত্রে ত্বিমাং বিচ্চাং লিখিয়া ধারয়েৎ সদা। এভিদোধৈর্ন লিপ্যেত সুভগা পুত্রিণী ভবেৎ। ভূর্জপত্রে ক্রুমেন লিখিয়া ধারয়েত্ত যঃ। রণে রাজকুলে দ্যুতে সংগ্রামে রিপুসংকুলে। অগ্নিচৌরভয়ে ঘোরে নিতাং তম্ম জয়ে। ভবেৎ। শস্ত্রঞ্চ বারয়তোষাং সমরে কাগুধারিণী। গুল্ম-শূলাক্ষি-রোগাণাং ক্ষিপ্রং নাশয়তে ব্যথাম্। শিরোরোগ-জরাণাঞ্চ নাশিনীং সর্ব্বদেহিনাম্। তদ্যদা-একাহিক-দ্যাহিক-ত্যাহিক-চাতুর্থিক-মাসিক-দৈমাসিক-ত্রৈমাসিক-চাতুর্যাসিক-যাগ্রা-সিক--মৌহুর্ত্তিক-বাতিক--পৈত্তিক-শ্লৈত্মিক-সান্নিপাতিক-আমজ্ঞর-সতত-জ্ব-বিষমজ্বর-গ্রহনক্ষত্র দোধান গ্রহাংশ্চান্তান। ওঁ হর হর কালি সর সর গৌরি ধম ধম বিজে আলে মালে তালে গদ্ধে (বন্ধে) পচ পচ বিজ্ঞে মথ মথ নাশয় নাশয় পাপং হর হর তুঃস্বপ্নং বিংবংসয় বিন্নবিনাশিনি অরিনাশিনি রজনি সন্ধ্যে হুন্দুভিনাদে মানস্তোকে

মানসবেগে শঙ্খিনি চক্রিণি বজ্রিণি গদিনি শুলিনি অপমৃত্যু-বিনা-শিনি বিশ্বেশ্বরি ক্রাবিড়ি ক্রাবিডি কেশবদয়িতে পশুপতি-সহিতে इः अञ्जर इन्द्रं छिना पिनि जीयमिनि प्रमिन प्रमिन भवति किता-ভিনি মাতঙ্গিনি মহেশ্বরি ইন্দ্রাণি ব্রহ্মাণি বারাহি মাহেলি কৌমারি চণ্ডি চামুণ্ডে নমোহস্ত তে। ওঁ হাঁ হীঁ হুঁ হৈ হঃ তুরু তুরু স্বাহা। যে মাং দিষস্তি প্রত্যক্ষং পরোক্ষং বা তান্ সর্কান্ হন হন দম দম পচ পচ মর্দ্ধর মন্দ্র তাপর তাপর শোষর শোষর উৎসাদয় উৎসাদয ব্রন্ধাণি মাহেশ্বরি বারাহি কৌমারি বৈনায়কি ঐক্তি আগ্রেয়ি চণ্ডি চামুণ্ডে বারুণি বায়ব্যে সর্ব্বকামফলপ্রদে রক্ষ রক্ষ প্রচণ্ড-বিলে ইন্দ্রোপেক্রভগিনি জয়ে বিজয়ে শান্তি-পুষ্টি-তৃষ্টি-কীর্ত্তি-বিবর্দ্ধিনি কামারুশে কামছুছে সর্বকামবরপ্রদে সর্বভূতেরু মাং প্রিয়ং কুরু কুরু স্বাহা। ওঁ হ্রী হু ইঃ। ওঁ আকর্ষিণি আবেশিনি জালামালিনি রুমণি রামণি ধমনি ধামনি তপনি তাপনি মদোনাদিনি সংশোষিণি মহাকালি নীলপতাকে মহারাত্রি মহা-গৌরি মহামায়ে মহাশ্রিয়ে মহাচান্তি মহাশৌরি মহাময়ুরি আদিতার্শি জাহ্ববি যমঘণ্টে। ওঁ আং কিলি কিলি চিস্তামণি সুরভি-সুরোৎপত্নে সর্বকামত্ববে যথাভিল্ববিতং কার্য্যং তল্মে সিদ্ধতু স্বাহা। ওঁ অদিতে স্বাহা, ওঁ অপরাজিতে স্বাহা, ওঁ ভূঃ স্বাহা, ওঁ ভুবঃ স্বাহা, ওঁ স্বঃ স্বাহা, ওঁ ভূভুবিঃ স্বঃ স্লাহা। ওঁ যত এবাগতং পাপং তাত্রৈব প্রতিগচ্ছতু স্বাহা। ওঁ বলে বলে মহাবলে অসিদ্ধসাধিনি স্বাহা ৷

ইতি বিষ্ণুধর্মোন্তরে ত্রৈলোক্য-বিজয়া-অপরাজিতান্তোত্রম্॥

গায়ত্রী-কবচম্।

ওঁ গায়ত্রী পূর্বতঃ পাতু সাবিত্রী পাতু দক্ষিণে। ব্রহ্মসন্ধ্যা তু মে পশ্চাহন্তরে তু সরস্বতী॥ भावकी (म मिनः भाजू भावकी जनमाशिनी। याष्ट्रधानी निभः तत्क् याष्ट्रधानी ভव्रकती॥ পাৰ্মানী দিশং বক্ষেৎ পাপানাঞ্চ বিনাশিনী। नियः (दोष्ट्रो मना পा इ क्ष्मानी क्षमक्रिनी॥ উর্নং ব্রহ্মাণী মে রক্ষেদধস্তাহৈষ্ণবী তথা। এবং দশ দিশো রক্ষেৎ সর্বাঙ্গে ভুবনেশ্বরী ॥ তৎপদং পাতু মে পাদং জঙ্গে মে সবিভূঃ পদম্। ববেণাং কটিদেশস্ত নাভিং ভর্গস্তবৈধ চ ॥ দেবস্থ মে পাতু इদয়ং ধীমহীতি জলস্তথা। ধিয়ো য়ো ইতি মে নেত্ৰং নঃ-পদন্ত ললাটকম। এবং পাদাদিমৃদ্ধান্তং মৃদ্ধানং মে প্রচোদয়াৎ। ইদম্ভ কবচং পুণ্যং হত্যাকোটিবিনাশনম্॥ हजुःवष्टिकना विषा नर्सभाभथनामिनी। জপারন্তে চ গায়ত্রী-জপান্তে কবচং পঠেৎ॥ গোন্ত্ৰীব্ৰশ্ববদাদীনি মিত্ৰজোহাদিপাতকৈঃ। মূচ্যতে সর্ব্বপাপেভ্যঃ পরং ব্রহ্মাধিগচ্ছতি॥

ইতি শ্রীগারজীকবচম্॥

গায়ত্রীশাপোদ্ধারঃ।

ওঁ অস্থ গায়জীশাপবিমোচনমন্ত্রস্থ ব্রহ্ম-ঋষির্গায়জীচ্ছন্দে।
বরুণো দেবতা ব্রহ্মশাপবিমোচনে বিনিয়োগঃ॥
ওঁ যদ্বক্ষেতি ব্রহ্মবিদো বিহ্স্বাং পশুস্তি ধীরাঃ।
স্থানসো বা গায়জি জং ব্রহ্মশাপাৎ বিম্ক্তা ভব ॥
ওঁ বশিষ্ঠশাপবিমোচনমন্ত্রস্থ বশিষ্ঠঝিষ্বশিষ্ঠো দেবতা বশিষ্ঠ-শাপবিমোচনে বিনিয়োগঃ॥

ওঁ অর্কজ্যোতিরহং ব্রহ্মা ব্রহ্মজ্যোতিরহং শিবঃ। শিবজ্যোতিরহং বিষ্ণুবিষ্ণুর্জ্যোতিঃ শিবঃ পরম্॥ গায়ত্রি স্থং বশিষ্ঠশাপাৎ বিষ্কুজা ভব॥

ওঁ বিশ্বমিত্রশাপবিমোচনমন্ত্রস্থ বিশ্বমিত্র-ঋষিরাস্থা দেবতা বিশ্বমিত্রশাপ-বিমোচনে বিনিয়োগঃ॥

> ওঁ অহো দেবি মহাদেবি দিব্যে সম্ব্যে সরস্বতি। অঙ্গরে অমরে চৈব ব্রন্ধযোনি নমোহস্ত তে॥ গায়ত্তি বং বিশ্বামিত্রশাপাৎ বিমুক্তা ভব॥

> > ইতি ঐগায়ত্তীশাপোদারঃ।

পরিশিষ্ট ।

(मवरनवीत धान, अनाम ७ मञ्जानि।

शर्मन ।

ধ্যান—খর্বং স্থুলতমুং গজেন্তবদনং লম্বোদরং স্থুন্দরং,
প্রস্তুন্দর্যক্ষমধুপ-ব্যালোলগগুস্থল্য।
দ্বাঘাত-বিদারিতারিক্রধিরৈঃ সিন্দুরশোভাকরং,
বন্দে শৈলস্থতাস্কৃতং গণপতিং সিদ্ধিপ্রদং কামদম্ ॥
প্রণাম—দেবেন্দ্রমোলিমন্দার-মকরন্দকণারুণাঃ।
বিশ্বং হরম্ভ হেরম্ব-চরণাবৃদ্ধরের্বঃ॥

মন্ত্র--গং।

গায়ত্রী— তৎপুরুষায় বিদাহে বক্রতুণ্ডায় ধীমহি তল্পে দন্তী
প্রচোদয়াৎ ॥

বিষ্ণু।

ধ্যান— ধ্যেরঃ সদা সবিত্মগুলমধ্যবর্তী,
নারায়ণঃ সরসিজাসনসলিবিটঃ।
কেয়ুরবান্ কনককুগুলবান্ কিরীটী,
হারী হিরুলয়বপুর্যতশন্দভক্তঃ॥
প্রণাম—নমো ব্রহ্মণ্যবেশ্বে গোবাহ্মণহিতার চ।

গায়ন্ত্রী—ত্রৈলোক্যমোহনায় বিশ্বহে কামদেবার ধীমহি তথে। বিষ্ণুঃ প্রচোদয়াৎ॥

कृष्ध।

ধ্যান—ওঁ ফুল্লেন্দীবরকাস্তিমিন্দুবদনং বর্হাবতংসপ্রিয়ং, শ্রীবৎসান্ধমুদারকৌস্তভধরং পীতাম্বরং সুন্দরম্। গোপীনাং নয়নোৎপলাচ্চিততন্ত্বং গোগোপসজ্বারতং, গোবিন্দং কলবেণুবাদনপরং দিব্যাঙ্গভূষং ভঙ্কে॥ "

প্রণাম—ক্বঞ্চায় বাস্থ্রদেবার হরয়ে পরমাত্মনে। প্রণতক্ষেশনাশায় গোবিন্দায় নমো নমঃ॥

मह- औँ हौँ कृष्णेय ।

গায়ত্রী— কৃষ্ণায় বিদ্মহে গোপীবল্লভায় ধীমহি তন্নঃ কৃষ্ণ প্রচোদয়াৎ॥

গোপাল।

ধ্যান—ওঁ শ্রীমৎকল্পজনমৃলোল্যতকমললসংকর্ণিকাগংস্থিতো ষ-স্তচ্ছাধালম্বি-পদ্মোদরবিসরদসংখ্যাতরত্বাভিষিক্তঃ। হেমাভঃ স্বপ্রভাভিস্তিভূবনমধিলং ভাসমৃন্ বাস্থদেবঃ, পায়াদঃ পায়সাদোহনবরতনবনীতামৃতানী বদী সঃ॥

वानरभाभान।

ধ্যান—অব্যাদ্যাকোষনীলানুজরুচিররুণাস্ভোজনেত্রোংসুজস্থো, বালো জজ্বাকটীরস্থলকলিতরণৎকিন্ধিণীকো মুকুলঃ। দোর্ভ্যাং হৈয়ঙ্গবীনং দধদতিবিমলং পায়সং বিশ্ববন্দ্যো, গোণোপী গোপবীতো রুকুনধবিলসৎ কণ্ঠভূষশ্চিরং বঃ॥ শস্ত্র --(>) বালবপুৰে ক্ষণায় স্থাহা। (২) গোপালায় স্থাহা। (৩) ক্লীং কৃষণায়।

গায়ত্রী—কৃষ্ণায় বিশ্বহে দামোদরায় ধীমহি তলো বিষ্ণুঃ প্রচোদরাং॥ সূর্য্য।

ধ্যান— রক্তামুজাসনমশেষগুণৈকসিদ্ধং,
ভামুং সমস্তজগতামধিপং ভজামি।
পদ্মধুমাভয়বরান্ দধতং করাক্তিমাণিক্যমৌলিমরুণাঙ্গরুচিং ত্রিনেত্রম॥

প্রণাম—জবাকুসুমদঙ্কাশং কাশ্যপেয়ং মহান্থাতিম্। ধ্বাস্তারিং সর্বপাপন্নং প্রণতোহস্মি দিবাকরম্॥

মন্ত্র— ওঁ ত্বণি স্থ্য আদিত্য।

श्राकाष्या ।

গায়ত্রী—আদিত্যায় বিন্নহে মার্ত্তায় ধীমহি তন্নঃ সূর্য্যঃ প্রচোদয়াৎ॥

রাম।

ধ্যান—কোমলাঙ্গং বিশালাক্ষমিজনীলসমপ্রভন্।
দক্ষিণাংশে দশরথং পুত্রাবেস্টনতৎপরম্ ॥
পৃষ্ঠতো লক্ষাং দেবং সচ্ছত্রং কনকপ্রভন্ ।
পার্শ্বে ভরতশক্রম্মে তালরস্তকরাবৃত্তো ।
অত্যে ব্যগ্রং হন্মস্তং রামাস্থগ্রহকাজ্ফিণম্ ॥
প্রণাম—রামায় রামচন্দ্রায় রামভদ্রায় বেধদে ।
রঘুনাধায় নাধায় সীভায়াঃ প্তয়ে নমঃ ॥
মন্ত্র— রাং রামায় নমঃ ।
গায়্জী—দাশরধায় বিদ্বহে সীভাবল্লভায় ধীমহি তয়ো রামঃ

বাণলিঙ্গ।

ধ্যান—প্রমন্তং শক্তিসংযুক্তং বাণাধ্যক্ষ মহাপ্রভন্ ।
কামবাণাবিতং দেবং সংসারদহনক্ষম ।
শৃঙ্গারাদিরসোলাসং বাণাধ্যং পরমেশ্বরম ॥
প্রণাম—বাণেশ্বরায় নরকার্ণবিতারণায়,জ্ঞানপ্রদায় করুণাময়সাগরায়
কপূর্কুন্দধবলেন্দুজ্টাধ্রায়, দারিদ্রাত্বঃশ্বদহনায় নমঃ শিবায় ॥
গায়ন্ত্রী— তৎপুরুষায় বিদ্মহে মহাদেবায় ধীমহি তল্পো রুদ্রঃ
প্রচোদয়াৎ ॥

অগ্নি।

ধ্যান—পিঙ্গজন্মশ্রকেশাক্ষঃ পীনাঙ্গজঠরোহরুণঃ।
ছাগস্থঃ সাক্ষস্ত্রোহিন্ধঃ সপ্তাক্তিঃ শক্তিধারকঃ॥

মার্কণ্ডেয়।

ধ্যান—দ্বিভূজং জটিলং সৌন্যাং স্থৱদ্ধং চিরজীবিনন্।

মার্কজ্ঞেরং নরো ভক্ত্যা পূজ্ঞারৎ প্রয়তস্তথা।
প্রণান— মার্কজ্ঞের মহাভাগ সপ্তক্ত্রাস্তজীবন।

আয়ুরিষ্টার্শিদ্ধার্থনসাকং বরদো ভব।

বকা।

ধ্যান—ওঁ পদাসনস্থো জটিলো ব্রহ্মা গ্যেম চতুর্ভু জঃ।
অক্ষমালাং ক্রবং বিব্রৎ পুস্তকঞ্চ কমগুলুম্।
বাসঃ ক্রফাজিনং তক্ত পার্থে হংসস্তবৈব চ॥
প্রণাম—বেদাধারার বেস্থার জ্ঞানগম্যার স্বরে।
কমগুলক্ষমালাক্রক-ক্রবহস্তার তে নমঃ॥

বাস্তদেব।

ধ্যান — অরুণিতমণিবর্ণং কুগুলশ্রেষ্ঠকর্ণং,
স্থানিতস্থভগদাম্যং দগুপাণিং স্থবেশম্।
নিধিলজননিবাসং বিশ্ববীজ্যরূপং,
নতজনভয়নাশং বাস্তদেবং ভজামি॥

কাৰ্ত্তিক।

ধ্যান— ওঁ কার্ত্তিকেয়ং মহাভাগং ময়ুরোপরি সংস্থিতম্। তপ্তকাঞ্চনবর্ণাভং শক্তিহস্তং বরপ্রদম্। বিভূকং শক্রহস্তারং নানালক্কারভূবিতম্॥

কুবের।

ধ্যান— ওঁ কুবেরং ধনদং বর্কং দিভূজং পীতবাসসম্। প্রসন্নবদনং দেবং যকগুভৃক্সেবি তম্॥

প্রণাম— তং বন্দে যক্ষরান্ধানং ধনধান্তাদীনাং পতিম্।
শিবস্ত পরমং ভক্তং নিধীনামীশ্বরং বিভূম্॥

हुर्गा।

ধ্যান— প্রচাজ ট্রমাযুক্তামর্কেন্দুরুতশেধরাম্।
লোচনত্রসংযুক্তাং পূর্বেন্দুসদৃশাননাম্॥
অতসীপুপাবর্ণাভাং স্প্রতিষ্ঠাং স্বলোচনাম্।
নবযৌবনসম্পল্লাং সর্কাভরণভূষিতাম্॥
স্বচারুদশনাং তদ্বৎ পীনোল্লতপয়োধরাম্।
ব্রিভঙ্গস্থানসংস্থানাং মহিষাস্থ্রমন্দিনীম্॥
মৃণালায়ভসংস্পর্শ-দশবাহুসমন্বিতাম্।
ব্রিশৃলং দক্ষিণে পাণো ধড়গং চক্রং ক্রমাদধঃ॥

তীক্ষবাণং তথা শক্তিং দক্ষিণে সন্নিবেশরেৎ। (थर्ठेकः পूर्वहाशक शामग्रज्ञम्याय ह ॥ ঘণ্টাং বা পরশুং বাপি বামতঃ সন্নিবেশ্যেৎ। অধস্তান্মহিষং ত্রদ্বিশিরস্কং প্রদর্শয়েৎ ॥ শিরুক্ছেদোদ্ভবং তদ্বদানবং খড়গপাণিনম্। হৃদি শুলেন নিভিন্নং নির্যদন্তবিভূষিতম্ ॥ রক্তরক্তীকৃতাঙ্গঞ্চ রক্তবিশ্বরিতেক্ষণম্। বেষ্টিতং নাগপাশেন ক্রকুটীভীষণানন্য॥ সপাশবামহস্তেন ধৃতকেশঞ্চ হুর্গরা। वमक्षित्रवक्त क (मवााः निःशः अमर्गस्य ॥ দেব্যাস্ত দক্ষিণং পাদং সমং সিংহোপরিস্থিতম্। किकिपूर्कः তথা বামমঙ্গুষ্ঠং মহিষোপরি॥ শক্রক্ষয়করীং দেবীং দৈত্যদানবদর্পহাম্। প্রসন্নবদনাং দেবীং সর্ককামফলপ্রদাম্॥ ন্ত যুমানাঞ্ তদ্রপমমরৈঃ সন্নিবেশয়েৎ॥ উগ্রচণ্ডা প্রচণ্ডা চ চণ্ডোগ্রা চণ্ডনায়িকা। চ্ঞা চণ্ডবতী চৈব চণ্ডব্ৰপাতিচণ্ডিকা॥ আভি: শক্তিভিরষ্টাভিঃ সততং পরিবেষ্টিতাম্। চিন্তয়েজ্জগতাং ধাত্রীং ধর্মকামার্থমোক্ষদাম ॥

প্রণাম—সর্কমঙ্গলমঙ্গল্যে শিবে সর্কার্থসাধিকে।
শরণ্যে ত্রান্ধকে গৌরি মাহেশ্বরি নমোহস্ত তে॥
মন্ত্র—ওঁ ব্রী হুঁ হুর্গায়ৈ নমঃ।
গায়ত্রী— মহাদেবৈয় বিদ্মহে হুর্গায়ে ধীমহি তল্পো দেবী
প্রচোদয়াৎ॥

অন্নপূর্ণা।

ধ্যান— রক্তশং বিচিত্রবসনাং নবচন্দ্রচ্ডাং,
আনপ্রদাননিরতাং গুনভারনমান ।
নৃত্যস্তমিন্দুশকলাভরণং বিলোক্য,
হাষ্টাং ভক্তে ভগবতীং ভবতুঃখহন্ত্রীম্ ॥
মন্ত্র—ওঁ ব্রী নমো ভগবতি মাহেখরি অন্নপূর্ণে স্বাহা ।
গায়জ্ঞী— ভগবতৈয় বিল্লহে মাহেখর্য্যে ধীমহি তন্নোহন্নপূর্ণে
প্রচোদয়াৎ ॥

সরস্বতী।

ধ্যান— তরুণশকলমিন্দোর্বিত্রতী শুব্রকান্তিঃ,
কুচভরনমিতাঙ্গী সন্নিধঃ। সিতাজে ।
নিজকরকমলোগ্যন্নেধনী-পুস্তকশ্রীঃ,
সকলবিভবসিদ্ধ্যৈ পাতু বাগ্দেবতা নঃ ॥
পুশাঞ্জলি—ওঁ ভদ্রকাল্যৈ নমো নিত্যং সরস্বত্যৈ নমো নমঃ ।

বুশাঞ্চাণ—ও ভব্রকালোঁ নৰে। নিভাগ গয়বভাগ নৰে। নৰ-বেদবেদাস্তবেদাঙ্গ-বিন্তাহানেভ্য এব চ॥ এব পুস্পাঞ্চলিঃ ঐং শ্রী সরস্বত্যৈ দেবৈয় নমঃ॥

অথবা—যা কুন্দেন্ত্যারহারধবলা যা খেতপদাসনা,
যা বীণাবরদণ্ডমণ্ডিতভুজা যা ভ্রবস্তার্তা।
যা ব্রন্ধাচ্যতশঙ্করপ্রভৃতিভির্দেবৈঃ সদা বন্দিতা,
সা মাং পাতু সরস্বতী ভগবতী নিঃশেষজাভ্যাপহা॥

অথবা—যা মে বসতু জিহ্বায়াং বীণাপুত্তকধারিণী।
মুরারিবল্লভা দেবী সর্বস্তিক্লা সরস্বতী ॥
এব পুশাঞ্জলিঃ শ্রীসরস্বতৈত্য নমঃ॥

প্রণাম—সরস্বত্যৈ নমো নিত্যং ভদ্রকাল্যৈ নমো নমঃ।

বেদবেদাস্তবেদাস্ক-বিভাস্থানেত্য এব চ ।

সরস্বতি মহাভাগে বিভ্যে কমললোচনে।

বিষরপে বিশালাক্ষি বিভাং দেহি সরস্বতি ॥

গায়প্রী—বাগ্দেব্যৈ বির্দ্মহে কামরাজায় ধীমহি তলো দেবী
প্রচোদয়াৎ ॥

মন্ধ্র—(২) শ্রী হী সরস্বত্যৈ স্বাহা। (২) ঐ সরস্বত্যৈ নমঃ।
(৩) শ্রী হী ঐ সরস্বত্যৈ নমঃ।

ল ক্ষী

ধ্যান—ওঁ পাশাক্ষমালিকান্ডোজ-শৃণিভিধ্যাম্যসেমিয়াঃ।
পদ্মাসনস্থাং ধ্যায়েচ্চ শ্রিয়ং তৈলোক্যমাতরম্।
গৌরবর্ণাং স্করপাঞ্চ সর্বলক রভূষিতাম্।
রৌক্ষপদ্মব্যপ্রকরাং বরদাং দক্ষিণেন তু॥
পুশাঞ্জলিমন্ত ।—ওঁ নমন্তে সর্বভূতানাং বরদাসি হরিপ্রিয়ে।
যা গতিস্বৎপ্রপন্নানাং সামে ভূষাৎ স্বদচ্চনাৎ॥
এব পুশাঞ্জলিঃ শ্রীং লক্ষ্মীদেবৈয় নমঃ॥
প্রণাম—ওঁ বিশ্বরূপস্থ ভার্যাসি পদ্মে পদ্মালয়ে ভভে।
সর্বতঃ পাহি মাং দেবি মহালক্ষ্মি নমোহস্ত ভে॥
গায়গ্রী—মহালক্ষ্যৈ বিদ্মহে মহাশ্রিয়ৈ ধীমহি তন্নঃ শ্রীঃ প্রচোদয়াৎ

मछी ।

ধ্যান—শ্বেতচম্পকবর্ণাভাং রত্নভূবণভূবিতাম। পবিত্ররূপাং পরমাং দেবদেনাং পরাং ভঙ্কে॥
মন্ত্র—ওঁ হ্রী ষষ্টাদেবৈয় বাহা।

প্রণাম—জয় দেবি ধনি গাতর্জগদানন্দকারিণি। প্রসীদ মুম কল্যাণি নমস্তে ইন্টদেবিকে॥

মনদা।

ধ্যান—দেবীমন্বামহীনাং শশধরবদনাং চারুকান্তিং প্রসন্ধাং,
হংসারুদারাং স্থললিতনয়নাং দেবিতাং সিদ্ধিকান্তিঃ।
শেরাস্তাং মণ্ডিতাঙ্গীং কনকমণিগণৈর্নাগরত্বৈরনেকৈবন্দেহহং সাষ্ট্রনাগামুরুক্চমুগলাং ভোগিনীং কামরূপাম্ ॥
প্রণাম—ওঁ আজীকস্ত মুনের্মাতা ভগিনী বাসুকেস্তথা।
করৎকারুমুনেঃ পত্নী মনসাদেবি নমোহস্ত তে॥
মন্ত্র—ওঁ হ্রাঁ প্রাঁ ক্রাঁ প্রাঁ মনসাদেবৈয় স্বাহা।

মঙ্গলচণ্ডী।

ধ্যান — বৈষা ললিতকান্ত্যাধ্যা দেবী মঙ্গলচণ্ডিকা।
বরদাভয়হন্তা চ দিভুজা গৌরদেহিকা॥
রক্তপদ্মাসনস্থা চ মুক্টাঙ্গদমণ্ডিতা।
রক্তকোষেয়বস্ত্রা ভূ স্মিতবক্ত্রা শুভাননা।
নবষৌবনসম্পন্না চার্বক্সী ললিতপ্রভা॥
প্রণাম—ওঁ সর্বমঙ্গলমঙ্গল্যে শিবে সর্বার্ধসাধিকে।
শরণ্যে ত্রাম্বকে দেবি নারায়ণি নমোহন্ত তে॥
মন্ত্র—ওঁ ব্লীক্রী সর্বপ্জ্যে দেবি মঙ্গলচণ্ডিকে ঐঁকুঁকট্ সাহা॥
সাত্র—ওঁ ব্লীক্রী সর্বপ্জ্যে দেবি মঙ্গলচণ্ডিকে ঐঁকুঁকট্ সাহা॥
সাত্র—ওঁ ব্লীক্রী সর্বপ্জ্যে দেবি মঙ্গলচণ্ডিকে ঐঁকুঁকট্ সাহা॥
সাত্র—ওঁ ব্লীক্রী সর্বাপ্জ্যে দেবি মঙ্গলচণ্ডিকে ঐঁকুঁকট্ সাহা॥
সাত্রনাত্রী।

ধ্যান—সিংহস্কাধিসংক্লঢ়াং নানালন্ধারস্থ্যিতাম্।

চতুতু জাং মহাদেবীং নাগযজোপবীতিনীম্॥

শশ্বতক্রথমূর্কাণ লোচন ত্রিতয়ায়িতাম্।
রক্তবন্তপরীধানাং বালার্কসদৃশীতনুম্॥
নারদালৈমুনিগণৈঃ সেবিতাং ভবস্করীম্।
ত্রিবলীবলয়োপেত-নাভিনালমূণালিনীম্॥
রক্তমিপ মহাবীপে সিংহাদনসময়িতে।
প্রক্রকমলারুচাং ধ্যায়েতাং ভবগেহিনীম্॥

व्यनाम-नर्समङ्गमङ्गा है गाहि।

मञ्ज—(`>) डीँ। (२) डीँ इँ।(७) डीँ कर्षे।(४) हैं बारा। (৫) औं बारा।

গায়ত্ত্ৰী—মহিষমৰ্দিতৈ বিদ্নহে হুৰ্গায়ৈ শীমহি তল্পো দেবী প্ৰচোদয়াৎ

গঙ্গা।

ধান— চতুর্ভাং ত্রিনেত্রাঞ্চ স্বর্গবিয়বভ্ষিতাম্।
রত্নকুন্তাং সিতান্ডোজাং বরদামভয়প্রদাম্ ॥
ধ্যেতবন্ত্রপরীধানাং মুক্তামণিবিভূষিতাম্।
ততো ধ্যায়েৎ স্বরূপাঞ্চ চল্রায়্তসমপ্রতাম্ ॥
চামরৈবীজ্যমানান্ত শ্বেতচ্চত্রোপশোভিতাম্।
স্থাসরাং স্বদনাং করুণার্চনিজান্তরাম্ ॥
স্থাপ্লাবিতভূপৃষ্ঠামার্নগন্ধান্তলেপনাম্।
ত্রেলোক্যনমিতাং গলাং দেবাদিভিরভিষ্টুতাম্।
দিব্যরূপবিভূষাঞ্চ দিব্যমাল্যান্তলেপনাম্ ॥

প্রণাম—সন্তঃ পাতকদংহন্ত্রী সন্তোহঃখবিনাশিনী ৷
স্থাদা মোক্ষদা গঙ্গা গঙ্গৈব প্রমা গতিঃ ॥
মন্ত্র—গাং গঙ্গাহৈর বিখামুখ্যাহৈর শিবামৃতাহৈর শান্তিপ্রদায়িত্তৈ
নারায়ইণ্য নমো নমঃ ॥

রাধিকা।

ধ্যান— অমলকমলকান্তিং নীলবন্ত্রাং সুকেনীম্, শশধরসমবজ্ঞাং ধঞ্জনান্দীং মনোজ্ঞাম্।
ভন্তুগগতমুক্তাদামদীপ্তাং কিশোরীম্,
ব্রজপতিস্তকান্তাং রাধিকামাশ্রমেংহম্ ॥
প্রণাম—রাধাং রাদেখরীং রম্যাং স্বর্ণকুভলভূষিতাম্।
ব্যভামুস্থতাং দেবীং নমামি শ্রীহরিপ্রিয়াম্॥
মন্ত্র—ওঁ ব্লাঁ শ্রী রাধিকান্তির স্বাহা॥
গায়জ্ঞী— শ্রীরাধান্তের কৃষ্ণবল্লভান্তির ধীমহি তল্লো রাধা
প্রচোদয়াৎ॥

দীতা।

ধ্যান—নীলাস্তোজদলাভিরামনয়নাং নীলাম্বরালক্কতাম্,
গৌরাঙ্গীং শরদিন্দুস্নরমূখীং বিস্মেরবিম্বাধরাম্।
কারুণ্যামৃত্বর্ষিণীং হরিহরত্রন্ধাদিভির্বন্দিতাম্,
ধ্যায়েৎ সর্বজনেন্সিতার্ধফলদাং রামপ্রিয়াং জানকীম্ ॥
প্রণাম—জনকনন্দিনীং দেবীং শ্রীরামপ্রিয়বল্পতাম্।
তপ্তকাঞ্চনগৌরাঙ্গীং বন্দে সীতাং মনোহরাম্ ॥
মন্ত্র—শ্রী সীতার্মৈ নমঃ।
গায়্মজী— সীতার্মৈ বিশ্বহে রামবল্পত্রি ধীমহি ভন্নঃ সীতা
প্রচোদয়াৎ ॥

जुनमी।

ধ্যান— ধ্যায়েদেবীং নবশশিমুখীং পকবিদ্বাধরোচীন্, বিভোতস্তীং কুচযুগভরানমকলাক্ষাটিন্। ঈবদ্ধাস্থাং ললিতবদনাং চন্দ্রস্থ্যাগ্নিনেত্রাম্, খেতাঙ্গীং তামভয়বরদাং খেতপদ্মাসনস্থাম্ ॥ প্রণাম—বুন্দায়ৈ তুলসীদেব্যৈ প্রিয়ায়ৈ কেশবস্থা চ। বিষ্ণৃতক্তিপ্রদে দেবি সত্যবত্যৈ নমো নমঃ॥ মন্ত্র—শ্রী ব্লী ঐ বুন্দাদেব্যৈ স্বাহা॥

हखी।

ধ্যান— বন্ধুককুসুমাভাসাং পঞ্মুগুধিবাসিনীম্।

স্বচ্চপ্রকলারত্ব-মুকুটাং মুগুমালিনীম্॥

ত্রিনেত্রাং রক্তবসনাং পীনোরত্বনস্তনীম্।

পুস্তকঞ্চাক্ষমালাঞ্চ বর্ঞাভয়কং ক্রমাৎ।

দধতীং সংশ্বেরিত্যমুক্তরামায়মানিতাম্॥

শীতল।।

ধ্যান—হর্পালক্ষারমন্তকাং স্থরগণৈঃ সংস্কৃষমানাং মুদা,
বামে কুন্তধরাং পয়োদবদনাং বন্দে ধরস্থাং সদা।
দিগাসামুকহাসস্থলরম্ধীং সংমার্জনীং দক্ষিণে,
পাণো তাং দধতীং ভবার্তিশমনীং সংসারবিদ্যাবণীম্॥
প্রণাম—ওঁ নমামি শীতলাং দেবীং রাসভস্থাং দিগন্ধরীম্।
মার্জনীকলসোপেতাং হর্পালক্ষারমন্তকাম্॥
মন্ত্র-ত্রী ক্রী শীতলাদেবৈয় নমঃ॥

मिक्निका ।

ধ্যান—মেঘাঙ্গীং বিগতাম্বরাং শ্বশিবার্কাং ত্রিনেত্রাং প্রাম্, কর্ণালম্বিতবালযুগাত্মদাং মুগুস্তকাং মালিনীম্। বানাগোর্ধকরামুজে নরশিরঃ থড়গঞ্চ সব্যেতরে,
দানাতীতিবিমুক্তকেশনিচয়াং বন্দে সদা কালিকান্॥
মন্ত্র—ক্রী ক্রী ক্রী হুঁ হুঁ হ্রী হ্রী দক্ষিণে কালিকে ক্রী ক্রী ক্রী ক্রী
হুঁ হুঁ হ্রী হ্রী সাহা।

গায়ত্রী—কালিকায়ৈ বিশ্বহে শ্বশানবাদিকৈ ধীমহি তল্পে খোরে প্রচোদায়াৎ ॥

তারা।

ংগ্যান—প্রত্যালী দুপদার্পিতা জিবু শবহৃদ্ঘোরা ট্রংসা পরা,
খড়েগন্দীবর কর্ত্বর্পরভূজা হঙ্কারবী জোদ্ভবা।
ধর্বা নীলবিশালপিঙ্গল জটা জ্টেকনা গৈযু তা,
জাড্যং অস্ত কপালকে ত্রিজগতাং হস্ক্যগ্রতারা স্বয়ন্॥
শত্ত-শ্রী ত্রী হুঁ ফট্।

গায়ত্ত্রী—তারারৈ বিদ্মহে মহোগ্রারে ধীমহি তলে৷ দেবী প্রচোদয়াৎ ॥ -

ষোড়শী।

ধ্যান—বালার্কমণ্ডলাভাসাং চতুর্কাহুং ত্রিলোচনাম্। পাশাস্কুশশ্রাংশ্চাপং ধারম্বন্তীং শিবাং শ্রমে॥

मह—ि औं हो ँ हो ँ थे ँ तो ँ ওঁ हो ँ औं क এ ঈ न हो ँ र न क न हो ँ न क न हो ँ तो ँ थे ँ हो ँ औ ँ औ ँ ॥

গায়ত্রী—সর্বসংমোহিতৈ বিশ্বহে বোড়ণীরপারে ধীমহি তন্ত্রঃ
শক্তিঃ প্রচোদয়াৎ ॥

ज्रवानश्रती।

ধ্যান—উন্তদিনকর্ত্যতিমিলুকিরীটাং তৃঙ্গকুচাং নয়নত্রয়যুক্তান্। স্বের্মুধীং বরারুলপাশাভীতিকরাং প্রভ্রেদ্ভুবনেশীন্॥ প্রণাম---

যামাত্রাভাং প্রকৃতিং মুনীক্রাঃ, পদাং ত্রিশক্তিং জ্ঞানমন্নপূর্ণাম্। নিত্যাঞ্চ হুর্গাং ঘরিতাং তথাভাম,ভঙ্গামি নিত্যং ভুবনেশ্বরীং তাম্॥*

मञ्ज—(२) होँ। (२) खेँ होँ खेँ। (৪) खार होँ दर्जों।

গায়জ্ঞী— নারায়ণ্যৈ বিদ্মহে ভূবনেশ্বর্ধ্যৈ ধীমহি তল্পো দেবী প্রচোদয়াৎ ॥

ভৈরবী।

ধ্যান — উদ্যদ্ভামুদহত্রকান্তিমরুণকোমাং শিরোমালিকাম্, রক্তালিপ্তপয়োধরাং জপবটীং বিদ্যামভীতিং বরম্। হস্তাজৈর্দধতীং ত্রিনেত্রবিলদক্রজারবিন্দশ্রিয়ম্, দেবীং বদ্ধহিমাংশুর্ত্বমুক্টাং বন্দে সমন্দশ্বিতাম্॥ মন্ধ—হসবৈং হসকলবীং হসবোঃ।

পায়ত্রী—ত্রিপুরায়ৈ বিদ্মহে তৈরবৈয় ধীমহি তল্পো দেবী প্রচোদয়াৎ॥

🖖 ছিন্নসন্তা।

ধ্যান—প্রত্যালী চপদাং সদৈব দণতীং ছিল্লং শিরঃ কর্তৃকাম্,
দিগন্তাং স্বকবন্ধশোণিত সুধাধারাং পিবস্তীং মুদা।
নাগাবদ্ধশিরোমণিং ত্রিনয়নাং স্বভাৎপলালম্বতাম্,
রত্যাসক্তমনোভবোপরিদৃঢ়াং ধ্যায়েজ্ববাসলিভাম্।
দক্ষে চাতিসিতা বিমৃক্তিকুরা কর্ত্রীং তথা খপরন্,
হস্তাভাাং দণতী রজোগুণভবা নায়াপি সা বর্ণিনী।

🛊 "প্ৰক্ষকলমকলে।" ইত্যাদি মন্ত্ৰেও দুৰুমহাবিদ্যার প্ৰণাম করা যায়।

(मर्गान्धिक्षकरक्षणः প्रक्षप्रधाताः भिरखी मूना,
नागायकुनिद्रतामनिर्मक्षरिना (सामा जना ना स्टेंद्रः ॥
यास्य क्ष्मञ्चलखेर्यय नथजी थ्रजाः ज्या थर्नतम्,
প্রত্যালীদৃপদা কবন্ধবিগলজক্তং পিবল্তী मूना ।
टेंन्या या প্রলয়ে সমস্তভ্বনং ভোক্তেং ক্ষমা তামসী,
निक्षः সাপি পরাৎপরা ভগবতী নামা পরা ডাকিনী ॥

>> প্রী কী কি কি ব্যাহ্বর্থেক্য নীয়ে ক ক ক্ষ্মি ব্যাহ্ব

- মন্ত্র—(১) প্রী ক্লী ব্রী ঐ বন্ধাবৈরোচনীয়ে হুঁ হুঁ ফট্ স্বাহা।
 - (२) क्रौँ औँ द्रौँ विक्षरेवरत्राव्नीरत्र हैं हैं कि सारा।
- (৩) রী শ্রী ক্রা ঐ বজ্রবৈরোচনীয়ে হুঁ হুঁ ফুট্ স্বাহা। গায়প্রী—বৈরোচকৈ বিশ্বহে ছিন্নমস্তায়ৈ ধীমহি তন্নো দেবী প্রচোদয়াৎ॥

ধুমাবতী।

ধ্যান
 বিবর্ণা চঞ্চলা রুষ্টা দীর্ঘা চ মলিনাম্বরা।
 বিমুক্তকুম্বলা রুক্ষা বিধবা বিরলম্বিজা ॥
 কাকথবজরথারটা বিলম্বিতপয়োধরা।
 হর্পহস্তাতিরুক্ষাক্ষা ধুতহস্তা বরান্বিতা ॥
 প্রস্কম্বোণা তু ভূশং কুটিলা কুটিলেক্ষণা।
 ক্সুৎপিপাদার্দ্দিতা নিত্যং ভ্রদা কলহপ্রিয়া॥

মন্ত্ৰ, ধুঁ ধুমাবতী স্বাহা।
ব্যালা

वगलाभूथी।

ধ্যান — মধ্যে সুধান্ধিমণিমগুপরত্ববেদীসিংহাসনোপরিগতাং পরিপীতবর্ণাম্।
পীতান্ধরাতরণমাল্যবিভূষিতান্ধীম্,
দেবীং স্মরামি ধৃতমুদগর-বৈরিজিহ্বাম্॥

জিহ্বাগ্রমাদায় করেণ দেবীম্, বামেন শত্রুন্ পরিপীড়য়স্তীম্। গদাভিঘাতেন চ দক্ষিণেন, পীতাস্বরাঢ্যাং দিভুজাং নমামি॥

মন্ত্র—ওঁ হলী বগলামূখি সর্ব্বত্নতানাং বাচং মুবং শুন্তর জিহ্বাং কীলয় কীলয় বুদ্ধিং নাশয় হলী ওঁ স্বাহা।

মাতঙ্গী।

ধ্যান-—ভামাঙ্গীং শশিশেধরাং ত্রিনরনাং রত্নসিংহাসনস্থিতাম্। বেদৈর্কাভ্দিভৈরসিধেটকপাশারুশধরাম্॥

।মন্ত্ৰ—ওঁ ব্ৰীঁ ক্লীঁ হুঁ মাতক্ষ্যৈ ফট্ স্বাহা।

কমল।।

ধ্যান — কাস্ত্যা কাঞ্চনদন্ধিতাং হিমণিরিপ্রথৈয় চতুর্ভির্গলৈ ভ হস্তোৎক্ষিপ্তহিরগ্নয়ামৃত ঘটেরাসিচ্যমানাং শ্রিয়ম্। বিভ্রাণাং বরমজয়ুগ্রমভয়ং হস্তৈঃ কিরীটোজ্জলাম্, ক্ষোমাবদ্ধনিতস্ববিশ্বলিতাং বন্দেহরবিলম্থিতাম্॥

মন্ত্র-ভঁ ঐ ব্রী শ্রী ক্রোঁ ছে দোঃ জগৎপ্রস্থত্যৈ নমঃ। গায়ত্রী—মহালক্ষ্যৈ বিশ্বহে মহাশ্রিকৈ ধীমহি তক্কঃ শ্রীঃ প্রচোদয়াৎ॥ হনুমান্।

ধ্যান— মহালৈলং সমুৎপাট্য ধাবন্তং রাবণং প্রতি।
তিষ্ঠ তিষ্ঠ রণে হৃষ্ট খোররাবং সমুৎস্ঞন্।
লাক্ষারসারুণং রৌদ্রং কালান্তক্যমোপমন্।
জ্ঞলদগ্মিলসন্মেত্রং স্থ্যকোটিসমপ্রভন্।
স্প্রদানেদ্যম্হাবীরৈর্বেষ্টিত: রুদ্ররূপিণম্॥

মন্ত্র—হং হনুমতে রুদ্রাত্মকায় হুঁ ফট্।

रेखा।

ধ্যান— পীত্রবর্ণং সহস্রাক্ষং বদ্ধপদ্মকরং বিভূম্। সর্কালকারসংযুক্তং নৌমীল্রং দিক্পতীশ্বরম্॥ মন্ত্র—ইং ইন্দ্রায় নমঃ। গায়ন্ত্রী—ইন্দায় বিদ্নহে বন্ত্রধরায় ধীমহি তন্ন ইন্দ্রঃ প্রচোদয়াৎ॥

গরুড়।

ধ্যান—বর্ষাম্বর্কহির্থাক্ষরকমলগতং পঞ্চত্তাভবর্ণন্,
ক স্থাকল্পং কণীজৈরভয়বরকরং পয়নেত্রং স্থবক মৃ।
ছন্তাহিচ্ছেদিতুওং ক্ষরদখিলবিষপ্রোষণং প্রাণভূতম্,
প্রাণশ্রেণ্যাং ত্রিবেদীতকুমমৃতময়ং পক্ষিরাজং ভজেইহম্॥
মন্ত্র—ক্ষিপ ওঁ কাহা।
গায়্রী—গরুড়ায় বিদ্মাহে স্থপণায় ধীমহি তল্লো গরুড়ঃ প্রচোদয়াৎ॥

বিবিধ বিষয়।

সাগরসঙ্গমসান।

যথাবিধি আচমন প্র্কক নিম্নলিধিত মন্ত্রে সকল্প করিবে। যথা—
"বিষ্ণুরোম্ (শুদ্র ও স্ত্রী বিষ্ণুর্নমঃ বলিবে) তৎসদন্ত অমুকে
মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতিথা অমুকগোত্রঃ শ্রী—অমুকদেবশর্মা
(স্ত্রী—অমুকীদেবী, শুদ্র—অমুকদাসঃ, শুদ্রা অমুকীদাসী) শ্রীবিষ্ণুপ্রীতিকামঃ (স্ত্রী হইলে—কামা) গঙ্গাসাগরসঙ্কমে স্পানমহং
করিয়ে।"

সম্বন্ধান্তে সানবিধির নিয়মে সান করিয়া করপুটে এই মন্ত্র পাঠ করিবে। যথা—

> "বং দেব সরিতাং নাথ বং দেবি সরিতাং বরে। উভয়োঃ সঙ্গমে সাথা মুঞ্চামি ত্রিতানি বৈ॥" বন্ধপুত্রসান।

সানবিধির নিয়মেই সান করিবে, কেবল সঙ্কল্পবাক্য ও সঙ্ক-লান্তে করপুটে পাঠ্যমন্ত্র ফ্লা—

সম্ব্রাক্য।—বিষ্ণুরোম্ তৎসদত অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতিথো অমুকণোত্রঃ প্রীঅমুকদেবশর্মা (স্ত্রী—অমুকীদেবী; শৃদ্র—অমুকদাসঃ, শৃদ্রা—অমুকীদাসী) মোক্ষপ্রাপ্তিকামঃ ব্রহ্মপুত্রনদে সান্মহং করিত্তে। *

সঙ্গলান্তে পাঠ্যমন্ত্র—ওঁ ব্রহ্মপুত্র মহাভাগ শাস্তনোঃ কুলনন্দন।
অমোঘাগর্ভসন্তুত পাপং লোহিত্য মে হর ॥
নন্দায়ান।

প্রতিপদ, ষষ্ঠী ও একাদশীকে নন্দাতিথি করে। মহাপুণ্য-ফলোপার্জনার্থ নন্দাতিথিতে স্নান করিতে হইলে নিম্নলিখিত বাক্যে সঙ্কল্প করিয়া সানবিধির নিয়মে স্নান করিবে। যথা—

"বিক্রোয্ তৎসদত্য অমুকে মাসি অমুকপক্ষেৎমুকতিথোঁ
অমুকগোত্তঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা সপ্তজনাবচ্ছিন্ন-পতিতারভোজনপতিতসংসর্গক্ত--পাপ--পঞ্চ--মহাপাতকানির্বাচনীয়পাপক্ষয়--রজবলা-স্পৃষ্টান্নভোজন-সততাসত্য-কথন -স্বর্ণমণিরত্বাপহরণ--সামান্তসকলবন্ধপহরণ--স্বিধ্যিত্রহিংসাদিজনিত--মহারৌরবাল্তনবরত-

কেছ কেছ "দৰ্মণাপক্ষপূৰ্মক-দৰ্মতাৰ্থসানল নিত-সমকলপ্ৰাপ্তিকামঃ"
 উচ্চারণ করেন।

যমকিষ্ণরতাড়ন-প্রশমন-জন্মকোমারাদি-দশপাতকক্ষয়-ব্রহ্মলোকা-ধিকরণক-পরম-বংসাবলোকন-পুরঃসর-বাসাধীতচতুর্ব্বেদ--ব্রাহ্মণ-সম্প্রদানক--কপিলা-ধেমু--লক্ষদান-জনিতফল-জ্রীমন্নারায়ণ-দক্ষিণ-করবাসতত্ত্তরমর্ত্ত্য-লোকীয়-জন্মগুণাশ্রয়ত্ব-সর্বস্থাভোগয়শঃপ্রাপ্তি-কামো নন্দায়াং (গলাহইলে গলায়াং নন্দায়াং) স্নানমহং করিয়ে।"

বাকুণীস্থান।

বারুণীমানে নিয়লিধিত বাক্যে সক্তন্ত করিয়া স্নানবিধির নিয়মে স্নান করিবে। যথা—

"বিষ্ণুরোম্ তৎসদভামুকে মান্তমুকে পক্ষেৎমুক্তিথে অমুক-গোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা বহুশ তত্ত্ব্যগ্রহণকালীন-গঙ্গামান-জনিত-ফল-সম-ফলপ্রাপ্তিকামঃ স্নানমহং (গঙ্গায় হইলে গঙ্গায়াং স্নানমহং) করিয়ে।"

দশহরা-সাম।

দক্ষরবাক্য।—বিষ্ণুরোম্ তৎসদগ্য জ্যৈষ্ঠে মাসি শুক্রে পক্ষেদম্মাং তিথে অমুকগোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা দশবিধপাপক্ষয়-কামঃ গঙ্গায়াং সান্মহং করিয়ে। †

^{*} বারণীদিনে শতভিষানকত্র ও ওভযোগসংযুক্ত শনিবার হইলে মহামহাবারণী বলা যায়। দেই দিন "শনিবারাধিকরণক ওভযোগ-শতভিষানকত্রযুক্তত্রয়োদখাং তিখে মহামহাবারণাং অমুক্লোত্ত: শুলমুক্দেরশর্মা ত্রিকোটিকুলোদ্ধারণকাম:" এইরপ বাক্য বলিতে হয়। যদি কেবলমাত্র শনিবার হয়,
ওভযোগ বা শতভিষা না থাকে, তাহা হইলে ভাহার নাম মহাবারণী। ঐ
দিনে "শনিবারাধিকরণক-শতভিষানকত্রযুক্তত্ররোদখাং তিথো মহাবারণাাং
অমুক্পোত্তঃ শুলমুক্দেরশর্মা বহুকোটিস্ব্।গ্রহণকালীন-প্রসাম্বানক্ষ্যসমক্ষ্যপ্রাপ্তিকাম:" এইরপ উচ্চারণ করিবে।

[†] मण्डबामित्म इन्तानकळ इटेटन "इन्तानकळाथि उपन्यार जिट्यी

সক্ষান্তে নিয়্রলিথিত মন্ত্র পড়িয়া স্থান করিবে। যথা—
ওঁ অদন্তানামুপাদানং হিংসা চৈবাবিধানতঃ।
পরদারোপসেবা চ কায়িকং ত্রিবিধং স্মৃত্যু ॥
পারুগ্যমন্ত্রঞৈব পৈশুলুঞ্চাপি সর্ব্ধশঃ।
অসম্বন্ধপ্রলাপশ্চ বাদ্ময়ং স্থাৎ চতুর্বিধম্ ॥
পরক্রব্যেঘভিধ্যানং মনসানিষ্টচিস্তনম্।
বিতথাভিনিবেশশ্চ ত্রিবিধং কর্ম্ম মানসম্ ॥
এতানি দশপাপানি প্রশমং যান্ত জাহ্বব।
স্থাতস্থ মম তে দেবি জলে বিষ্ণুপদোদ্ভবে॥

এই মন্ত্রপাঠান্তে বিধানে ন্নান করিয়া "ওঁ সন্তঃ পাতকসংহন্ত্রী" ইত্যাদি মন্ত্রে গঙ্গাকে প্রণাম করিবে।

নিয়লিখিত বাক্যে সক্ষম করিয়া সানবিধির নিয়মে সান করিতে হয়। যথা—

"বিফ্রোম্ তৎসদত অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতিথে রাহুগ্রন্থদিবাকরে (চন্দ্রগ্রহণ হইলে, 'রাহুগ্রন্থনিশাকরে') অমুক-গোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা দশকোটিগুণ-গঙ্গানানজন্ত-সমফল-প্রাপ্তিকামঃ (চন্দ্রগ্রহণ হইলে, 'বহুশতচন্দ্রগ্রহণকালীনগঙ্গান্ধান-জন্তু-সমফলপ্রাপ্তিকামঃ)' গঙ্গায়াং স্নানমহং করিছে।" *

দশব্দমার্ক্তিদশবিধপাপক্ষকামঃ" এবং ঐ দিনে কুজবার ও হন্তানক্ষত্র এই উভয়ের যোগ হইলে "কুজবারাধিকরণকহন্তানক্ষত্রাধিতদশমাাং ভিথে দশ-জন্মার্ক্তিভ-দশবিধপাপক্ষ-শতগুণাব্দেধ-দশশতক্সনিতপুণ্যসমপুণ্য-প্রাপ্তি-কামঃ" উচ্চারণ করিবে।

গ্রহণসময়ে বা গ্রহণমৃত্তিদময়ে বে কোন জ্বলাশয়েই মান করা যায়।
 গরা ভির জ্বল জ্বলাশয়ের জলে মান করিতে ইইলে "য়ৢয়য়ৄড়দেবশয়া

গ্রহণমূক্তির পর একবার অমন্ত্রক নানান্তে করযোড়ে নিম্ন-লিখিত মন্ত্রটি পাঠ করিবে। যথা—

> ওঁ উত্তিষ্ঠ গম্যতাং রাহে। ত্যজ্যতাং স্থ্যস**দমঃ**। * কর্মচাণ্ডালযোগোখং কুরু পাপক্ষয়ং মম ॥

व्यक्तामग्रसाम ।

পৌষ অথবা মাঘমাদের অমাবস্থার দিবাভাগে রবিবার, শ্রবণানক্ষত্র ও ব্যতীপাত্যোগ হইলে তাহার নাম অর্দ্ধোদয়যোগ। ঐ দিন সমস্ত জলাশয়ের জলই গঙ্গাজলতুল্য হইয়া থাকে। ঐ দিন স্থান করিতে হইলে নিম্নলিখিত বাক্যে সক্ষত্র করিবে। যথা—

"বিষ্ণুরোম্ তৎসদন্ত অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক্তিথোঁ
অমুকগোত্তঃ প্রীঅমুকদেবশর্মা রবিবারাধিকরণকব্যতীপাত্যোগশ্রবণানক্ষত্রাবিতায়ামাবাস্থায়াং তিথোঁ অর্দ্ধোদয়ে কোটিস্ব্যগ্রহণকালীন-গঙ্গামানজন্ত-ফল-সমফলপ্রাপ্তিকামঃ অন্মিন্ জলে (গঙ্গায়
হইলে, গঙ্গায়াং) স্থানমহং ক্রিয়ে ।"

মাকরী-সপ্তমী-সান।

নিয়ে সঙ্কল্পবাক্য ও সানমন্ত্র লিখিত হইল। সঙ্কলাস্তে সাতটি আকন্দপত্র ও সাতটি কুলপত্র মস্তকে রাধিয়া সানমন্ত্রপাঠাস্তে সান করিবে। যথা—

সকল ।—বিকুরোন্ তৎসদদত্য মাঘে মাসি শুক্লে পক্ষে মা করীগলামানজভ্যকলসমকল-প্রাপ্তিকানঃ অমিন্ জলে মানমহং করিবাঃ" এইরপ
ৰাক্য উচ্চারন করিবে। যদি রবিবারে স্ব্যাগ্রহণ ও সোমবারে চক্তগ্রহণ
হয়, তাহা হইলে তাহার নাম চূড়ামণিযোগ। তৎকালে সকল করিতে হইলে
"বহুকোটিস্ব্য-(চক্তগ্রহণ হইলে 'বহুকোটিচক্র')" গ্রহণকালীনগলাজল-জন্তুজনস্তকলকামঃ" উচ্চারণ করিবে।

ठळाळू २ इट्रेंटल "ठळ्नक्यः" गाठ क्तिए इस ।

সপ্তম্যাং তিপো অরুণোদরবেলারাং অমুকগোত্র: এ অমুকদেবদর্মা বহুশতস্থ্যগ্রহণকালীন-গঙ্গামান-জন্মফলসমফলপ্রাম্থিকাম অমিন্ জলে (গঙ্গায় হইলে, গঙ্গায়াং) স্থানমহং করিছে। স্থানমন্ত্র।—ও বদ্ধজন্মকুতং পাপং ময়া সপ্তস্কু জন্মসু

তন্মে রোগঞ্চ শোকঞ্চ মাকরী হস্ত সপ্তমী॥

মানান্তে "ওঁ নমো বিবস্বতে ব্ৰহ্মন্" ইত্যাদি মন্ত্ৰে স্থাৰ্য্য দিয়া "ওঁ জবাকুসুমসকা শং" ইত্যাদি মন্ত্ৰে প্ৰণাম করত করপুটে নিম্নলিখিত মন্ত্ৰ হুইটি পাঠ করিবে। * যথা —

ওঁ জননি সর্বভূতানাং সপ্তমি সপ্তসপ্তিকে।
সপ্তব্যাহাতিকে দেবি নমস্তে রবিমণ্ডলে॥ ১॥
ওঁ সপ্তসপ্তিবহ প্রীত সপ্তলোকপ্রদীপন।
সপ্তম্যাং হি নমস্তভ্যং নমোহনস্তায় বেধ্সে॥ ২॥
কার্তিক্যাসীয়-প্রাতঃস্থান।

সমস্ত প্রণালী সাধারণ-সানপদ্ধতিবৎ, কেবল স্নানের পূর্বে নিম্নলিখিত মন্ত্রটি পাঠ করিয়া ডুব দিবে। যথা— ওঁ কার্ত্তিকেইহং করিয়ামি প্রাতঃমানং জনার্দন। প্রীতার্থং তব দেবেশ দামোদর ময়া সহ॥

যাথ্যাগীয়-প্রাতঃস্নান।

অরুণোদয় হইতে অর্দ্ধ-সুর্য্যোদর পর্য্যন্ত চারিদণ্ডই মাঘমাসীয় প্রাতঃস্নানের উপযুক্ত কাল। তিনরূপ মাসেই মাঘমান হইতে

^{*} তারপাত্তে সাতটি আকলপত্ত, সাতটি কুলপত্ত, দুর্বন, রক্তজ্বা ও আতপত্তপুল স্থাপন পূর্বক এই অর্থ্য সাজাইতে হয়। কেহ কেহ সাতটি কুলও দিয়া থাকেন। সামবেনীয়েরা "ইদমর্থাং শ্রীস্থ্যায় নমঃ" এবং যজু-র্বেদীয় ও খ্যেনীয়প্শত্বোহ্র্যাঃ শ্রীস্থ্যায় নমঃ" বলিয়া অর্থ্য প্রদান ক্রিবে।

পারে। সৌরমানীয় মাসিক সন্ধরে "বিষ্ণুরোন্" ইত্যাদি বলিয়া "অমুকতিথিমারভূয় মকরস্থরবিং যাবৎ অমুকপোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবলর্মা শ্রীবিষ্ণুপ্রীতিকামঃ প্রত্যহং (গলায় হইলে গলায়াং) প্রাতঃলানমহং করিয়ে" এইরপ বলিবে। চান্দ্রনানে, "প্রতিপত্তিথিমারভ্য মাথমানং যাবৎ" ইত্যাদি বলিতে হয়। মেবলান সৌরে,
কার্তিকলান সৌর ও মুখ্যচান্দ্রে আর দৈনিক সন্ধরে চান্দ্রমাস উল্লেখ হইবে। সন্ধ্রান্তে লানবিধির নিয়মে সকল কার্য্য
করিয়া নিম্নলিধিত বিশেষ মন্ত্রক্যটি পাঠ পূর্ব্বক লান করিবে।
যথা—

ওঁ মাঘমাদমিমং পুণাং স্নাম্যহং দেব মাধব।
তীর্বস্থাস্থ জলে নিত্যং প্রদীদ ভগবন্ হরে॥
ওঁ হুঃখদারিজ্যনাশায় শ্রীবিফোন্ডোষণায় চ।
প্রাতঃস্নানং করোম্যত্থ মাদে পাপবিনাশনম্॥
ওঁ মকরন্থে রবৌ মাদে গোবিন্দাচ্যুত মাধব।
স্নানেনানেন মে দেব যথোক্তফলদো ভব॥
ওঁ দিবাকর জগন্নাথ প্রভাকর নমোহস্ত তে।
পরিপূর্ণং কুরুদ্দেদং মাদ্যানং মহাব্রতম্॥

এই চারিটি মন্ত্রের মধ্যস্থ "মকরস্থে রবো" মন্ত্রটি চাক্তর্সানে অক্তমাদে পরিত্যজ্য। মাঘসানাস্তে রুষ্ণ, প্রীধব, হরি, বাস্থদেব ইহাঁদিগকে স্মরণ করিতে হয়।

শিবারাত্রি-কুভ্য।

শিবরাত্রিতে পার্থিবশিবলিঙ্গপৃজাবিণানেই সমস্ত কার্য্য করিবে; কেবল প্রভেদ এই যে, শিবরাত্রিদিনে রাত্রিকালে চারি প্রহরে চারিবার শিবপূজা করিবে এবং প্রতি প্রহরে পৃথক্ পূথক্ মন্ত্রে শিবলান করাইবে ও পৃথক্ পৃথক্ মন্ত্রে চারিপ্রহরে চারিবার অর্থাদান করিবে। যথা—

প্রথমপ্রহরে সানমন্ত ।—"হৌ ঈশানায় নমঃ" মদ্রে ছ্গ ছারা সান করাইয়া তৎপরে জল ছারা সান করাইবে।

প্রথমপ্রহরে অর্ঘ্য।—বিশেষার্য্যপ্রণালীর নিয়মে অর্ঘ্যস্থাপন পূর্বাক নিয়লিখিত মন্ত্রে অর্ঘ্য দিতে হয়। যথা—

> "শিবরাত্তিত্রতং দেব পৃদ্ধান্ধপপরায়ণঃ। করোমি বিধিবদ্দতং গুহাণার্ঘ্যং মহেশ্বর॥"

এই মন্ত্রপাঠান্তে "ইদমর্ঘ্যং হোঁ ঈশানায় নমঃ" বলিয়া অর্ঘ্য দান করিবে।

বিতীয়প্রহরে সানমন্ত।—"হোঁ অঘোরায় নমঃ" মন্ত্রে দধি বার। শিবলিঙ্গ সান করাইয়া তৎপরে জল বারা সান করাইবে।

দ্বিতীয়প্রহরে অর্যা। নিম্নলিধিত মন্ত্রপাঠ পূর্বক "ইনমর্য্যং ক্রো অবোরায় নমঃ" বলিয়া অর্যা প্রদান করিবে, যথা—

> "নমঃ শিবায় শাস্তায় সর্ব্বপাপহরায় চ। শিবরাক্তো দলাম্যর্য্যং প্রসীদ উময়া সহ॥

তৃতীয়প্রহরে সানমন্ত্র।—"হোঁ বামদেবায় নমঃ" মন্ত্রে দ্বত দ্বায়া সান করাইয়া তৎপরে জল দ্বারা সান করাইবে।

তৃতীয়প্রহরে অর্য। — নিয়লিথিত মন্ত্রপাঠ পূর্বক "ইদমর্ঘ্যং হোঁ বামদেবায় নমঃ" বলিয়া অর্ঘ্য দিতে হয়, য়থা —

"ত্ঃথদারিদ্র্যশোকেন দম্বোহহং পার্ক্তীশ্বর।

শিবরাত্রো দদাম্যর্ঘ্যং উমাকাস্ত গৃহাণ মে॥"

চতুর্বপ্রহরে নানমন্ত। – "হোঁ সভোজাতায় নমঃ" মন্ত্রে মধু দারা নান করাইয়া তৎপরে জল দারা নান করাইবে।

চতুর্পপ্রহরে অর্য।—নিমলিখিত মন্ত্রপাঠ পূর্বক "ইদমর্য্যং হোঁ সভোজাতারু নমঃ" বলিয়া অর্ঘ্য দিতে হয়। যথা—

, "মগ্না কৃতান্তনেকানি পাপানি হর শঙ্কর ।

শিবরাত্রো দদাম্যর্থ্যং উমাকান্ত গৃহাণ মে॥"

শিবরাত্রির পরদিন নিম্নলিখিত মন্ত্রপাঠ পূর্বক জলপানান্তে আহারাদি করিতে হয়। যথা—

"ওঁ সংসারক্লেশদগ্ধস্য প্রতেনানেন শক্ষর। প্রসীদ স্মৃধো নাথ জ্ঞানদৃষ্টিপ্রদো ভব॥" মিতু-(ইঁতু)পুঞা। ◆

অগ্রহায়ণমাদের বিষ্ণুপদী সংক্রান্তিতে আরম্ভ করিয়া সমগ্র মার্গনীর্বের প্রতি রবিবারে হর্ষ্যের পূজা করিবে। ইহারই নাম মিতু বা ইতুপূজা। পৌষের ষড়নীতি সংক্রান্তিতে পূজা সমাপ্ত হয়।

ভাত্বিতীয়ায় অনুদানের হন্ত।

প্রাত্ধিতীয়াদিনে অর্থাৎ কার্ত্তিক মাসের শুক্রপক্ষের দ্বিতীয়াতে প্রাতা ভগিনীর হস্তে অন্নভোজন করিবে। নিরামিব ভোজনই বিধি। নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়িয়া ভগিনী প্রাতাকে অন্ন দিবে,যথা—

> ত্রাতস্তবাগ্রন্ধাতাহং ভূজ্জ ভক্তমিদং শুভন্। প্রীতয়ে যমরাজস্ত যমুনায়া বিশেষতঃ॥ †

श्रुष्णठभ्रनविधि।

প্রাতঃকালে তর্পণাদি সমাপনের পর দক্ষিণ-হস্ত দারা পুষ্পচয়ন করিবে। স্বয়ং পুষ্প আহরণ করাই কর্ত্তব্য। মূল্য দিয়া ক্রয়

কুর্ব্যের একনাম 'মিঅ"। মিঅ শব্দের অপঅংশ মিতৃ; ক্রমে মিতৃ
 ইউতে চলিত কথার "ইতৃ" শব্দ পরিণত ইইয়াছে।

किन्छा छित्रनी इंडेल 'खाउंखवाङ्काछाइः" विमादा ।

করিতে হইলে একদরে ক্রম্ন করিবে। বামহস্তে পুপাচয়ন করিবে না। বৃস্ত সহ পুপাচয়ন করিবে। কোন আধারু ব্যতীত কেবল হস্তোপরি পুপা রাখিবে না।

निविक शूष्म।

উত্রগন্ধ, নির্গন্ধ, মস্তকোপরি বা পরিধেয় বস্ত্রে ধৃত, শুদ্ধ, পর্যুষিত, কটিযুক্ত, দেবালয়স্থ এবং বকুল ও শেফালিকা ব্যতীত ভূপতিত অন্ত কোন পুষ্প চয়ন করিতে নাই। জলঙ্গ পুষ্প, চম্পক, কুন্দ, বক, বকুল এবং অন্ত যে সকল পুষ্পের কলিকা তুলিলেও প্রফ্টিত হয়, সেই সমস্ত পুষ্প পর্যুষিত হইলেও পূজায় প্রশস্ত।

তৃলসীচয়ন-মন্ত্র।

তুলস্তম্তনামাসি সদা বং কেশবপ্রিয়া। কেশবার্থে চিনোমি বাং বরদা ভব শোভনে॥

जूनमोठग्रन-खगानी।

মন্ত্রপাঠ সহকারে নোঁটার সহিত এক একটি করিয়া তুলদী চয়ন করিতে হয়। শাখার সহিত তুলদীচয়ন করিবে না। বাম-হস্তে বা স্ত্রীজাতির পক্ষে চয়ন নিধিদ্ধ।

जूनगीवग्रत निविक्त पिन।

দ্বাদনী, পূর্ণিমা, অমাবস্থা, সংক্রান্তি, মধ্যাহ্নকাল, সায়ংকাল ও রাত্রিকালে তুলসীচয়ন করিতে নাই।

বিৰপত্ৰ-চয়ন-মন্ত্ৰ।

পুণ্যবৃক্ষ মহাভাগ মালুর শ্রীফল প্রভো। মহেশপৃন্ধনার্থায় ত্তৎপত্রাণি চিনোম্যহম্॥

निवन्जिह्यन-धनामी।

মন্ত্রপাঠ সহকারে রক্ষের শাখা ভগ না হয়,এরপভাবে দক্ষিণ-

হস্ত ছারা এক একটি করিয়া পত্র চয়ন করিবে। বিশ্বপত্র ত্রিপত্তা-যিত, বৃস্তযুক্ত, নিশ্ছিত্র ও চক্রহীন প্রশস্ত।

े বিশ্বপত্ৰচয়নে নিবিদ্ধ দিন।

ষাদশী, পূর্ণিমা, অমাবস্থা, মধ্যাহ্নকাল, সায়ংকাল ও রাত্রিতে বিশ্বপত্র চয়ন করিবে না।

पृर्वाठग्रन अवानी।

প্রাতঃকালে পবিত্রস্থান হইতে দুর্বনা চয়ন করিবে। শ্রাদ্ধে ও শিবপূজায় দূর্বনার গর্ভ(কোঁক)ফেলিয়া দিয়া ত্রিপত্রান্বিত করিবে।

তুলদীরুকে জল দিবার মন্ত্র।

গোবিন্দবল্লভাং দেবীং ভক্তুটেতগুকারিণীম্। স্নাপয়ামি জগদ্ধাত্রীং হরিভক্তিপ্রদায়িনীম্॥

অখথবুকে জলদানমন্ত্র।

চক্ষুঃম্পানং ভূজম্পানং তথা হঃস্বপ্নদর্শনম্। শত্রুণাঞ্চ সমুখানং অখথ নাশয়াশু মে। অখথরূপী ভগবানু প্রীয়তাং মে জনার্দন॥ *

বিষ্ণুরচরণামুভধারণমন্ত্র।

অকালমৃত্যুহরণং সর্বব্যাধিবিনাশনম্।

विकु भारतात्रकः शीजा भित्रमा शात्रामग्रहम्॥ .

विश्रापामकशात्रवा ।

বিপ্রপাদোদকং পীতা যাবন্তির্গতি মেদিনী। তাবৎ পুষ্করপাত্রেণ পিবন্তি পিতরোদকম্॥

ক্তাক্ষ্যংস্কারবিধি।

প্রথমতঃ পঞ্চগব্য ও পঞ্চামৃত দারা রুদ্রাক্ষগুলি প্রকালন পূর্ব্বক

^{*} কেহ কেহ ''নমো নারায়ণায়" মত্রে অধথবৃক্তে জল দিয়া ''চক্কু:ম্পন্দং" ইত্যাদি মত্রে প্রণাম করিয়া থাকেন।

তত্পরি "নমঃ শিবায়" মন্ত্র পঞ্চবার পাঠ ক্রিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্র দশ্বা উচ্চারণ ক্রিবে। যথা---

> ওঁ ত্রাম্বকং যজামহে সুগন্ধিং পুষ্টিবর্দ্ধনম্। উর্বাক্তকমিব বন্ধনান,ত্যোর্ফ্লীয়মাম্তাৎ॥ *

একমুখ রুপ্রাক্ষ হইলে "ওঁ ঐ" মন্ত্র, विমুখ হইলে, "ওঁ ঐ", जिसूथ হইলে "ওঁ গ্রং গ্রং", চতুর্পুথ হইলে "ওঁ গ্রাঁ হঃ", পঞ্চমুখ হইলে "ওঁ গ্রাঁ", মধাুখ হইলে "ওঁ গ্রাঁ", সপ্তমুখ হইলে "ওঁ গ্রাঁ", দশমুখ হইলে "ওঁ গ্রাঁ", দশমুখ হইলে "ওঁ গ্রাঁ", দশমুখ হইলে "ওঁ গ্রাঁ", একাদশমুখ হইলে "ওঁ শ্রী," দাদশমুখ হইলে "ওঁ গ্রাঁ", অন্যোদশমুখ হইলে "ওঁ শ্রোং নমঃ" চতুর্দশমুখ রুপ্রাক্ষ হটলে "ওঁ তমাং" এই মন্ত্র উচ্চারণ পূর্বক ধারণ করিবে।

বক্ষঃস্থলে অস্টোত্তরশত, শিখায় একটি, বাছদ্বয়ের প্রত্যেকে বোড়শ, প্রতি হস্তে দ্বাদশ, প্রতি কর্ণে ছয়, মস্তকে দ্বাবিংশতি এবং কণ্ঠদেশে দ্বাত্রিংশৎসংখ্য রুদ্রাক্ষ ধারণ করিবে।

जूनगौगानामः यात्र।

প্রথমতঃ মালাগুলি পঞ্চাব্য দারা প্রক্ষালন পূর্বক তত্পরি মূলমন্ত্র ও গায়ন্ত্রী আট আটবার ব্লপ করিলেই তুলদীমালা-শোধন হয়। শোধনান্তে দেবতাকে নিবেদন পূর্বক ধারণ করিবে।

মভান্তয়ে এরপ লিবিত আছে বে, মালামব্যে বে কয়েকটি রুজাক

বাকিবে, প্রভাকটির উপর "ওঁ ছঁ নমঃ" এই মন্ত্র অট্রোভরশতবার জপ
করিয়া শিবচরণায়ত বারা প্রকালন করিলেই ইহার সংকার হয়।

नीबाबन अपानी।

নীরান্ধনের অপর নাম আরাত্রিক,চলিত কথায় আরতি বলে। দীপ, জলপূর্ণ শৃষ্টা, ধৌতবস্ত্র, পল্লব (চূতপল্লব বা বিল্পাঞ্জাদি) ও প্রধাম এই পঞ্চবিধ দ্রব্য দারা আরাত্রিক সম্পাদন করিবে। *

প্রথমতঃ কোশার বামদিকে ভ্তলে ত্রিকোণমণ্ডল অন্ধন পূর্ব্বক তত্পরি দীপ (পঞ্চপ্রদীপাদি) রাথিয়া তিনবার "এতবৈ আরাত্রিকদীপায় নমঃ" মন্ত্রে জলাভ্যুক্ষণ করিবে। তদনস্তর তত্ত্ব-পরি দেবতার (যে দেবতার আরতি হইতেছে) মন্ত্র দশধা জপাস্তে বামপদ ভ্তলে ও দক্ষিণপদ আসনপ্রাস্তে স্থাপন পূর্বক বামকরে ঘণ্টাধ্বনি করিতে করিতে আরতি করিবে। দেবতার পদসমীপে চারিবার, নাভিদেশে একবার, মুখপ্রদেশে তিনবার এবং সর্বাঙ্গে সপ্তবার ব্রাইতে হয়। শভা ঘারা আরাত্রিককালে প্রত্যেক অঙ্কের আরতির পর শভা হইতে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ জল ভূতলে ফেলিবে।

আর, মিষ্টার, হৃধ্ব, নৈবেল্প প্রভৃতি কোন কিছু দেবতাকে
নিবেদন করিতে হইলে, জলপ্রোক্ষিত স্থলে চতুকোণমণ্ডল অঙ্কন
পূর্ব্বক তহুপরি স্থাপন করিবে। ভোগনিবেদনের সময় প্রথমতঃ
"এতকৈ নোপকরণারায় নমঃ" মন্ত্রে আরাদির উপর তিনবার জলের

ছিটা দিবে। তদনস্তর (যে দেবতাকে নিবেদন করিবে, সেই)

* দীপ—পঞ্জদীপ ও কপুর বারা আরাত্রিক। শগু—শথ্রের অভাবে কুশি ব্যবহার্য্য। শিব ও স্থ্যপুঞ্জার শগু নিবিদ্ধ; জ্ঞলপুর্ণ কুশি বারা আরাত্রিক করিবে। শগু বারা আরাত্রিকের পর দর্পণ-প্রদর্শনের এবং পরব বারা আরাত্রিকের পর চামহাদি বারা বীজন করিবারও বিধি আছে; তৎকালেই প্রদক্ষণ করিব্যু হয়।

एनवजात मञ्च ज्व्निति हम्मेश क्ष्म कितिशा "हेनः मानकत्रनातः उ व्यम्करामवजारेत्र नमः" मरा व्यमानित्य वक्ष्मेत किक्षिः कन-প্রক্ষেপ করিবে। পরে "ওঁ व्यम्राजाপন্তরণমিন স্বাহা" मरा किक्षिः कन ফেলিয়া দিয়া বামকর উত্তান (চিং) করত গ্রাস ত্বাবার আকারে প্রাণাদি পঞ্চমুদ্রা প্রদর্শন পূর্বক "ওঁ প্রাণায় স্বাহা, ওঁ অপানায় স্বাহা, ওঁ সমানায় স্বাহা, ওঁ উদানায় স্বাহা, ওঁ ব্যানায় স্বাহা" এই পঞ্চ মন্ত্র পাঠ করিবে। তদনন্তর "ওঁ অমৃতাপিধানমিন স্বাহা" মন্ত্র কিঞ্চিং জল ভূতলে নিক্ষেপ পূর্বক "ইদং পানার্থোদকং ও অমুকদেবতায়ে নমঃ, ইদমাচমনীয়ং ওঁ সমুকদেবতায়ে নমঃ, ইদং তামূলং ওঁ অমুকদেবতায়ে নমঃ" এই কয়েকটি মন্ত্রে পানার্থজন, আচমনীয় ও তামূলের উপর কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ জলের ছিটা দিবে।

সন্ধ্যাকালে আরতির পর শীতলও * এই নিয়মে দিবে। কেবল "সোপকরণার" শব্দের পরিবর্ত্তে নিবেছ তত্তৎদ্রব্যের নাম উচ্চারণ করিতে হয়। কোন বস্তুর সংস্কৃত নাম জানা না থাকিলে "নৈবেছ" বলিয়া দেওয়াই ব্যবস্থা।

উপচার।

পূজাদিতে বহুবিধ উপচারপ্রদানের বিধি আছে ; সাধারণতঃ
নিত্যপূজায় যোড়শ, দশ ও পঞ্চ এই ত্রিবিধ উপচারই আবশুক।

বোড়শোপচার।

স্থা বা বৌপ্যনিশ্মিত আসন, স্বাগত (দেবতাকে শুভাগমন-প্রশ্ন), পান্ত, অর্থ্য, আচমনীয়, মধুপর্ক, পুনরাচমনীয়, স্বানীয়

[#] রাত্রিকালীন নিবেল জবাসামগ্রী।

(সানার্থ জল), বস্ত্র, আভরণ, গন্ধ, পুল্পবিশ্বপত্র, ধূপ, দীপ, নৈবেছ (পানার্থোদক, পুনরাচমনীয় ও তাম্বূল) এবং চন্দন।

দশোগনার।

পান্ত (পাদক্ষালনার্থ জল,) অর্ঘ্য (গন্ধ, পুষ্প, দুর্বা, অক্ষত, জল,) আচমনীয় (আচমনার্থ জল), মধুপর্ক, পুনরাচমনীয়, গন্ধ (খেতচন্দন), পুষ্পবিস্থপত্র,গুপ, দীপ, নৈবেল্প (অক্ষত, রম্ভাদি)।

পक्षां भहां व ।

গন্ধ, পুষ্পবিশ্বপত্ৰ, ধৃপ, দীপ ও নৈবেছ।

যজ্যেপৰীতগ্ৰন্থিপ্ৰণালী।

প্রাতঃসন্ধ্যার পর পূর্কান্ত হইয়া হাঁটুদ্বয় উত্তোলন পূর্বক এক হস্তপরিমাণ বিস্তার করিয়া বসিবে। অনস্তর যজ্ঞহত্ত্রের এক প্রাস্ত বামকরের তর্জনীতে জড়াইয়া বামাবর্ত্তে (বামদিক্ দিয়া) হাঁটুদ্বয় বেষ্টন করত তিন ফের ঘূরাইয়া আনিতে হয়। তদনস্তর হত্ত্রের খুঁট ছ্ইটি একত্র করত একটি পেঁচ দিয়া তাহার দক্ষিণে বামান্দুর্চ রাখিয়া অপর খুঁটিট ঐ অন্তর্ত্তর উপর দিয়া টানিয়া লইবে এবং দক্ষিণ হাঁটুর নিকট গুঁজিয়া রাখিবে। তৎপরে প্রথম খুঁটিট দারা উপরি-উক্ত অন্তর্ত্তর দক্ষিণে ঐ চারিতার হত্তকে নিজ শ্বির উবর * উল্লেখ সহকারে তিন ফের জড়াইবে এবং অপর খুঁটের নিম্মভাগ দিয়া ঐ খুঁটিটকে তিনবার হত্ত্বের যে কোন

^{*} প্রবর — শান্তিলাগোত্তের "শান্তিল্যাসিতদেবলপ্রবরঃ" ;কাষ্ট্রপগোত্তের "কাশ্যপাপসার-নৈয়প্রব-প্রবরঃ"; ভরষাজ্পোত্তের "ভরষাজ্ঞাসিলরস্বার্হস্পত্য-প্রবরঃ" এবং বাৎস্থ ও সাবনিপোত্তের "উর্ম্বচ্যবন ভাগবিজ্ঞামদগ্রাপ্পুর্বৎপ্রবরঃ" উচ্চায়ন করিবে। পরের জন্ম গ্রন্থি দিতে হইলে "প্রবরষ্ঠ" বানিবে।

তারের মধ্য দিয়া লইয়া অঙ্কৃষ্ঠটি বহির্গত করত সেই স্থানে পূর্বমুবে প্রবেশ করাইবে। পরে দিতীয় খুঁটটি ধরিয়া টান দিলেই
প্রস্থি পড়িয়া যাইবে। ঐ সময় "বিষ্ণুরোম্ অমুকগোত্রঃ
শ্রীক্ষম্কদেবশর্মা যজ্ঞোপবীতার্থযজ্ঞস্ত্রগ্রন্থিমহং করিয়ো", * এই
বাক্য পাঠ পূর্বক গায়জ্ঞীপাঠ করিয়া "এতৎ যজ্ঞোপবীতস্ত্রং
ওঁ শ্রীকৃষ্ণায় অর্পণমস্ত্র" বলিয়া ভূতলে রাধিবে।

यटकाशवीख्याद्रगविधि

অনস্তর যজ্ঞোপবীত দক্ষিণহস্তে লইয়। পঞ্চধা গায়ঞ্জীজ্ঞপ, শতধা প্রণবজ্ঞপ এবং পুনরায় একবার গায়ত্রী জপ করিয়া নিম্ন-লিখিত মন্ত্র পাঠ পূর্বকি বামস্কল্পে ধারণ করিবৈ। যথা—

"ওঁ যজ্ঞোপবীতং পরমং পবিত্রম্, বৃহস্পতের্যৎ সহজং পুরস্তাৎ। আয়ুস্তমগ্র্যাং প্রতিমুক্ত শুভ্রম্, যজ্গেপবীতং বলমস্ত তেজঃ॥" †

প্রাতে অভুক্ত অবস্থায় যজ্ঞোপবীতধারণ করাই বিধি। অন্ত-ধৃত যজ্ঞোপবীতধারণ নিষিদ্ধ। মলত্যাগাদি নির্দিষ্টকাল ভিন্ন যজ্ঞোপবীত স্থানভ্রষ্ট করিবে না এবং কটিদেশে গুঁজিয়া বা মাল্যবং গলদেশে রাখিবে না।

যজ্যোপবীতপ্রমাণ।

সামবেদীয়েরা দক্ষিণহস্ত সরলভাবে প্রসারণ পূর্বক গ্রীবার মধ্যস্থল হইতে উক্ত হস্তের অঙ্গুষ্ঠ পর্য্যস্ত,ঝগ্বেদীয়েরা কণ্ঠ হইতে নাভি পর্যান্ত এবং যজ্বেদীয়েরা বাহুমূল হইতে পূর্বোক্তরূপ দক্ষিণহস্তের অঙ্গুষ্ঠ পর্যান্ত পরিমিত যজ্ঞত্ত্র ধারণ করিবে।

^{*} অত্যের অতা বজ্ঞোপবীতএন্থি দিলে "অমুকদেবশর্মা" ছলে "অমুক-দেবশর্মাণ্ড" এবং "করিবে)" ছলে "করিব্যামি" বলিবে।

[†] মড়ান্তরে নিমলিধিত মন্ত্র পড়িয়াও বারণ করিতে পারেন। বংগা— ও যক্তোপনীতম্সি বজন্ত ছা উপনীতেনেংগ্নেহামি।

যজ্জত ন্যুনতঃ দ্বিদণ্ডি ধারণ করিবে; কিন্তু ত্রিদণ্ডি ধারণ করিলে উত্তরীয়বস্ত্রের প্রয়োজন থাকে না।

বেলের আঠা, মৃত, দধি, ত্থা, সর্বপতৈল ও তপুলচ্র্ন, এই সকলের একতম দারা যজ্ঞোপবীত মার্জন করিতে পারে।

যজ্ঞোপবীত্যার্জনপ্রবালী।

যজ্ঞসূত্র বামস্কন্ধ হইতে উত্তোলন পূর্বক বামান্স্ঠে জড়াইয়া উপরিলিখিত মার্জনদ্রব্যের একতম দ্বারা মার্জন করিবে।
দেবপ্রদক্ষিপপ্রধারী।

প্রদক্ষিণসময়ে দেবতাকে স্বীয় দক্ষিণভাগে রাখিয়া বামকরে ঘণ্টাবাদন,দক্ষিণকরে অর্থ্য সহ শঙ্খধারণ ও মুখে স্তব পাঠ করিবে।
দেবতাভেদে প্রদক্ষিণের প্রকারভেদ।

হুর্য্যকে সাতবার, চণ্ডীকে একবার, শিবকে অর্দ্ধবার এবং অক্সান্ত দেবতাকে তিনবার প্রদক্ষিণ করিবে। *

নইচন্দ্র দর্শনে স্কলপান।

ভাদ্রমাপের শুক্ল ও রুঞ্চপক্ষীয় চতুর্গীতিথিতে সমুদিত চক্তের নাম নষ্টচন্দ্র। ঐ চন্দ্র দর্শনে নিম্নলিখিত মন্ত্র পড়িয়া জলপান করিলে নষ্টচন্দ্রদর্শনজনিত পাপ দূর হয়। যথা—

> দিংহঃ প্রদেনমবধীৎ দিংহো জাম্ববতা হতঃ। সুকুমারক মা রোদীস্তব ছেব স্থমস্তকঃ॥

শিবপ্রদক্ষিণ করিতে হইলে অর্দ্রচক্রাকারে প্রদক্ষিণ করিতে হয়
অর্থাৎ বামদিক্ হইতে দক্ষিণদিকে পমন করিবে; কিন্তু সোমস্ত্র (জলনিঃসরণপথ) লজ্ঞন করিবে না। শাস্ত্রে প্রমাণ আছে। যথা— .

निर्वेशक्ति मञ्जी व्यक्षिकस्य । त्रद्यात्रवाकः स्टेनर द्यासम्बद्धः । नक्षासः ॥

শান্তি।

আত্রপল্লব বা কুশাদি ধারা জল গ্রহণ পূর্বক মন্তকে বিন্দু বিন্দু
নিক্ষেপ করিতে করিতে নিম্নলিখিত মন্তক্ষটি পার্চ করিবে। যথা—
কয়া নশ্চিত্র ইত্যস্ত ঋক্ত্রয়স্ত মহাবামদেব্য-ঋষিবিরাড়গায়গ্রীচ্ছন্দো ইল্রো দেবতা শান্তিকর্মণি বিনিয়োগঃ ॥
ওঁ কয়া নশ্চিত্র আ ভূব দূতী সদার্ধঃ, সথা কয়া সচীষ্টয়া ধৃতা ॥
ওঁ কয়া নশ্চিত্র আ ভূব দূতী সদার্ধঃ, স্থা কয়া সচীষ্টয়া ধৃতা ॥
ওঁ কয়া সত্যো মদানাং মংহিছো মৎসদস্কসঃ, দৃঢ়া চিদারুজে বসু ॥
ওঁ অভীযুণঃ সধীনামবিতা জরিত্বাং শতং ভবাস্যতয়ে ॥
ওঁ অভি ন ইল্রো বৃদ্ধশ্রোং বন্তি নঃ পৃষা বিশ্ববেদাঃ ।
অতি নন্তাক্ষের্যাহরিষ্টনেমিঃ, স্বস্তি নো বৃহস্পতির্দধাতু ॥

ওঁ ত্যোঃ শাস্তিঃ, অন্তরীক্ষং শান্তিঃ, পৃথিবী শান্তিঃ, আপঃ শান্তিঃ, ওবধয়ঃ শান্তিঃ, বনম্পতয়ঃ, শান্তিঃ, বিখেদেবাঃ শান্তিঃ, ব্ৰহ্ম শাস্তিঃ, শান্তিরেব শাস্তিঃ।

> যত এবাগতং পাপং তবৈত্রব প্রতিগচ্ছতু॥ শাস্তিঃ শাস্তিঃ শাস্তিঃ॥

স্বস্ত্যয়ন।

(তুলগী দেওয়া।)

প্রথমতঃ যথাবিধি আচমন, বিষ্ণুম্মরণ ও নারায়ণাদির পূজা করিয়া সঙ্কল্প করিবে অর্থাৎ কোশান্থিত জলে কুশ, হরীতকী ও তিল প্রদান পূর্বাক বামকরযুক্ত দক্ষিণহন্তের মধ্যমা বা কুশদারা সেই জল স্পর্শ করত নিম্নলিখিত বাক্য উচ্চারণ করিবে। যথা—

"বিষ্বোন্ তৎসদত্ত অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতিথো অমুকগোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা অমুকগোত্রত্ত শ্রীঅমুকদেবশর্মণঃ শ্রীবিষ্ণুপ্রীতিপূর্বক-সর্বাপচ্ছান্তিকামঃ ওঁ নমন্তে বহুরূপায় বিষ্ণবে পরমান্মনে স্বাহেতিমন্ত্রেণ প্রত্যেকপঠিতেন বিষ্ণুসম্প্রদানকং অষ্ট্রো-তুরশত-(অথবা অষ্টবিংশতি) সংখ্যক-সচন্দনতুলসীপত্রপ্রদান-কর্মাহং করিয়ামি।" *

তদনস্তর সামান্তার্য্য, জলগুদ্ধি, আসনগুদ্ধি, পুলাগুদ্ধি, গন্ধাদির ও গণেশাদি পঞ্চদেবতার অর্জনা করিয়া বোড়শোপচারে বা দশোপচারে বিষ্ণুর পূজা করিবে। তৎপরে নির্দিষ্টসংখ্য তুলসীপত্র চন্দনপ্রোক্ষিত করিয়া একটি পাত্রে স্থাপন পূর্ব্বক "বং এতেভ্যঃ সচন্দনতুলসীপত্রেভ্যো নমঃ" মন্ত্রে তাহার পূজা করত "এতৎ সচন্দনতুলসীপত্রং ওঁ নমস্তে বহুরূপায় বিষ্ণবে পরমান্মনে স্বাহা" মত্রে এক একটি করিয়া শালগ্রামশিলোপরি দিবে। † তদনস্তর জপ ও প্রশাম করিয়া নিয়লিখিত নিয়মে দক্ষিণা দিবে।

"এতকৈ কাঞ্চনমূল্যার নমঃ" মন্ত্রে দক্ষিণাদ্রব্যটির পূজা করিয়া বামহস্তমূক্ত দক্ষিণহন্তের মধ্যমা বা কৃশ দারাকোশাস্থিত জল স্পর্শ করত নিম্নলিখিত বাক্যে দক্ষিণাদ্রব্যে জলের ছিটা দিবে। যথা—

"বিফ্রোম্ তৎসদত্য অমুকে মাসি অমুকপক্ষে অমুকতিথে অমুকগোত্রঃ ঐ অমুকদেবশর্মা অমুকগোত্রত্য ঐ অমুকদেবশর্মণঃ ঐ বিফ্প্রীতিপূর্বকসর্বাপচ্ছান্তিকামনয়া ক্রতৈতৎস্বস্তায়নকর্মণঃ সাঙ্গতার্থং দাক্ষিণামেতৎ (দক্ষিণাদ্রব্য উপস্থিত না থাকিলে 'দক্ষিণাং তৎ' বলিবে) কাঞ্চনমূল্যং (শুদ্র হইলে 'যৎকিঞ্ছিৎ-

^{*} নিজের জন্ম সন্তায়ন করিলে "অমুকগোত্রস্থ শ্রীঅমুকদেবশর্মণঃ" উচ্চারণ করিবে না এবং "করিষ্যামি" পদের পরিবর্তে "করিবেয়" বলিবে।

[†] এক একটি তুলনী শালগ্রামশিলার উপর হইতে সরাইয়া হতু খৌতৃ করণান্তে অক্ত তুলনী দিবে।

কাঞ্চন্মূল্যং') ঐবিফুলৈবতং যথাসন্তবগোত্তনামে ত্রান্ধণায়াহং দলানি।"

তৎপরে পূর্ববৎ জলস্পর্শ করিয়া নিম্নলিখিত বাক্যে বৈগুণ্য-সমাধান (অঙ্গহানিসমাধান) করিবে। যথা—

"বিষ্ণুরোম্ তৎসদত্ত অমুকে মাসি অমুকপক্ষে অমুকতিথো অমুকগোঁত্তঃ প্রীঅমুকদেবশর্মা ক্তেহিমিন্ কর্মণি যদ্বৈগুণ্যং জাতং তদোষপ্রশমনায় প্রীবিষ্ণুস্মরণমহং করিয়ে।"

তদনস্তর "ওঁ তদিকোঃ পরমং পদং" ইত্যাদি পাঠাস্তে দশধা "ওঁ বিষ্ণু" জপ করিয়া এক গণ্ডুব জল গ্রহণ পূর্ধক নিম্নলিবিত মন্ত্রপাঠ সহকারে ভূতলে ফেলিয়া দিবে। যথা—

> ওঁ প্রীয়তাং পুগুরীকাক্ষঃ সর্বযজ্জেশ্বরো হরিঃ। তব্মিন্ তৃষ্টে জগৎ তৃষ্টং প্রীণিতে প্রীণিতং জগৎ। এতৎ কর্ম্ম শ্রীকৃষ্ণায় অর্পণমস্ত। হরির নৃট প্রদান।

যথাবিধি আচমনান্তে বিফুসরণ পূর্বক নিয়লিখিত নিয়মে সকল করিবে। যথা—

"বিষ্ণুরোম্ তৎসদন্ত অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতিথে অমুকগোত্রঃ প্রীঅমুকদেবশর্মা (পরের জন্ত হইলে অধিকন্ত 'অমুক গোত্রন্ত প্রীঅমুকদেবশর্মণঃ' উচ্চার্য্য) অভীষ্টসিদ্ধার্থং মানসিকহরিপুজনমহং করিয়ে (পরার্থে 'করিয়ামি')।"

সম্বল্পান্তে ভোগদানের নিরমে মিষ্টান্নের পূজা করিয়া নিবেদন করিবে। পরে হরিধ্বনি সহকারে মিষ্টান্নের কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ

শিক্ষের জ্বল্য অন্ত্রেয়ন হইলে "অমুক্পোত্রত আজমুক্দেংশর্মণঃ"
 উচ্চারণ করিবে না এবং 'দদানি' ছলে 'দদে' 'বলিবে।

তিনবার ছড়াইয়া দিয়া "ওঁ নমো ব্রহ্মণ্যদেবায়" ইতাদি মন্ত্রে প্রণাম করিবে।

আকাশপ্ৰদীপদানমন্ত্ৰ।

দামোদরায় নভিদ তুলারাং লোলরা সহ। প্রদীপং তে প্রযুক্তামি নমোহনস্তায় বেধদে॥

উল্কাদান।

দীপান্বিতা অমাবস্থার প্রদোবে উন্ধাদান করিতে হয়। পাকাটী অথবা নারিকেলপত্রাদি দারা মশালবৎ উন্ধা প্রস্তুত করিয়া নিম্নলিথিত মন্ত্রপাঠ পূর্ব্বক উহা গ্রহণ করিবে। যথা—

ওঁ শস্ত্রাশস্ত্রহতানাঞ্চ ভূতানাং ভূতদর্শরোঃ।

উজ্জলজ্যোতিষা দেহং দহেয়ং ব্যোমবহ্হিনা॥

অনস্তর নিম্নলিখিত মন্ত্রে ভূতলে উল্লা স্থাপন করিবে, যথা—

ওঁ অগ্নিদগ্ধাশ্চ যে জীবা যে২প্যদগ্ধাঃ কুলে মম।

উজ্জ্বলজ্যোতিষা দগ্ধান্তে যান্ত পরমাং গতিম্॥

তৎপরে ঐ উক্ষা ভেলায় তুলিয়া নিয়লিথিত মন্ত্রপাঠ পূর্ব্বক

জলে ভাসাইয়া দিবে, যথা –

ওঁ যমলোকং পরিত্যজ্য আগতা যে মমালয়ে। উজ্জ্বজ্যোতিষা বয়্বপ্রপশুস্তো ব্রজস্তু তে॥

ভূতচতুর্দশী।

যমচতুর্দণীতে অর্থাৎ কার্ত্তিকী ক্লফাচতুর্দণী তিথিতে সন্ধ্যা-কালে মান, ধর্মরাঙ্গের পূজা, তর্পণ, কুমারী ও ব্রাহ্মণপূজা, দেব-গৃহাদিতে চতুর্দ্দণ দীপদান, চতুর্দ্দশ শাকভোজন এবং মস্তকোপরি অপামার্গ (আপাঙ্) ভ্রামিত করিবে। (পরস্তু অধুনা অমদেশে কেবলমাত্র চতুর্দশদীপদান ও চতুর্দশশাকভোজনের প্রথা প্রচলিত আছে।) নিয়লিখিত ময়ে অপামার্গলামণ করিতে হয়, যথা— শীতলোঞ্চসমাযুক্ত সকণ্টকদলায়িত। হর পাপমপামার্গ ভাম্যমাণঃ পুনঃ পুনঃ॥

চতুর্দশ শাক।—ওল, কেমুক (কেউ), বান্ত ক (বেতো),সর্থপ, কালশাক, নিম্ব, জয়ন্তী, শালিঞ্চা (শাঞ্চে), হিলমোচিকা (হিঞ্চা), পটুক (পল্তা), শুল্ফা, গুড়ূচী, ভন্টাকী (বেগুণ) ও শুষ্ণী। অশোক্ষিয়তে অশোক্কলিকাপান্যর।

অশোকাষ্টমীতে অর্থাৎ চৈত্রমাদের শুক্লাষ্টমীতে সজল অশোক-কলিকাষ্টক পান করিলে জন্মজনাস্তরে শোক পাইতে হয় না। পানমন্ত্র।—ত্বমশোক হরাভীষ্ট মধুমাদসমূত্তব। পিবামি শোকসভপ্তো মামশোকং দদা কুরু॥

ঘটোৎদর্গপদ্ধতি।

আচমনাদি সমাপনান্তে বামকরে ঘটধারণ পূর্বক "ওঁ স্ববোপকরণজ্বপূরিত-(গঙ্গাজল হইলে—গঙ্গাজলপূরিত বলিবে) ঘটায়
(অথবা কুন্তায়) নমঃ" এই মন্ত্রে বারত্রয় জলাভ্যুক্ষণ করত নিম্নলিখিত মন্ত্রে একটি সচন্দ্রন পুলা প্রদান করিবে। যথা—

"এতে গন্ধপুপো ওঁ স্ববোপকরণজনপুরিত্ঘটায় নমঃ, এতে গন্ধপুপো এতদধিপত্তায় ওঁ শ্রীবিষ্ণবে নমঃ, এতে গন্ধপুপো এতৎ-সম্প্রাদানায় ওঁ ব্রাহ্মণায় নমঃ।"

ভৎপরে কোশাস্থ জলে দক্ষিণ হস্ত স্থাপন পূর্বক নিয়লিখিত বাক্য উচ্চারণ করিবে, যথা—

"বিকুরোম্ তৎসদত্ত অমুকে মাসি অমুকপক্ষে অমুথতিথো অমুকগোত্র: শ্রীঅমুকদেবশর্মা শ্রীবিকৃথীতিকামঃ (ইউদেবতার উদ্দেশে হইলে মনে মনে তরাম স্মরণ পূর্বক প্রীতিকামঃ' বলিবে) ইমং স্যবোপকরণজ্ঞলপুরিত্বটমচ্চিতং প্রীবিষ্ণুদৈবতং যথাসম্ভব-গোত্রনায়ে ত্রাহ্মণীয় অহং দদে (অধবা বিষ্ণবে তুভ্যমহং সম্প্রদদে)।

(পিত্রাদির উদ্দেশে ঘটোৎসর্গ করিতে হইলে "অন্তেত্যাদি অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুকতিথে অমুকগোত্রস্থ পিছুর-মুক্দেবশর্মণোহক্ষয়স্বর্গকামঃ" ইত্যাদি বলিয়া সর্বশেষে "দদানি" বলিবে। একটি কুন্ত মাতাপিতাকে একত্র প্রদান করিতে হইলে "পিত্রোর্ভবানীপ্রসাদদেবশর্ম-স্করবালাদেব্যোরক্ষয়স্বর্গকামঃ" ইত্যাদির রপ; খণ্ডর-শাশুড়ীকে একত্র দিলে "খণ্ডরয়োরমুক্দেবশর্ম-অমুকীদেব্যোরক্ষয়স্বর্গকামঃ" ইত্যাদির প; ত্রী পুরুষ উত্তরকে দিতে হইলে "অমুক্দেবশর্ম-অমুকীদেব্যোরক্ষয়স্বর্গকাম" ইত্যাদির রপ; একটি কুন্ত অনেককে দিতে হইলে "অমুক্দোবাণাং পিতৃ-পিতামহ-প্রপিতামহানাং অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্ম-অমুক্দেবশর্মণান্ম" ইত্যাদির প এবং একটি কুন্ত বহুপুরুষ ও বহু ত্রীকে দিতে হইলে পুরুষগণের নামান্তে দেবশর্ম বলিয়া পরে "অমুকী-দেবীনাং" উচ্চারণ করিবে। ব্যজন, ছত্র, পাছকা প্রভৃতিও এই নিয়মে উৎসর্গ করিতে হয়)।

উক্তরূপ বাক্যে ঘটোৎদর্গ করিয়া ঘটধারণ পূর্বক নিয়-লিখিত মন্ত্র পাঠ করিবে। যথা—

এষ ধর্মঘটো দত্তো ত্রদ্ধবিকৃশিবাত্মকঃ।
অক্ত প্রদানাৎ সফলা মম সম্ভ মনোরথাঃ॥
তৎপরে ঘটে চন্দন দিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ করিবে, যথা—
পানীয়ং প্রাণিনাং প্রাণাঃ পানীয়ং পাবনং মহৎ।
পানীর্মন্ত প্রদানেন প্রীয়তাং মে জনার্দ্দন॥

তৎপরে যথাবিধি দক্ষিণাপ্রদান পূর্ব্বক পিতৃপ্রণাম করিবে, যথা—
পিতা স্বর্গ: পিতা ধর্ম: পিতা হি পর্মং তপঃ।
পিতরি প্রতিমাপরে প্রীয়ম্মে সর্বদেবতার ॥

(ভোজ্যোৎসর্গও এই নিয়মে করিবে, কেবল "দন্বতদোপ-করণামান্নভোজ্যায় নমঃ" উচ্চারণ পূর্ব্বক কার্য্য করিবে, এই-মাত্র প্রভেদ)।

যবাদিক্রব্যের অভাবে প্রতিনিধি।

ষবাভাবে গম, মধু অভাবে গুড়, ত্বত অভাবে সর্ধপতৈল এবং কুশ অভাবে কেশে ব্যবহার্য্য।

(मन्यूकाय व्यावाहनाभित्र निरम्पविधि।

শালগ্রামে, বাণলিঙ্গে, প্রতিষ্ঠিত দেবমূর্ত্তিতে, জলে ও বহিতে পূজাকালে দেবতার আবাহন, প্রতিষ্ঠা ও বিসর্জন নাই।

অম্বাচীতে নিষিদ্ধকর্ম।

অমুবাচীতে কাম্যপূজাদি, ব্রতারস্তাদি, ভূমিখনন, অধ্যয়ন ও প্রকানাদিভক্ষণ নিষিদ্ধ।

সধবার পক্ষে কুশ ও ভিল ব্যবহারের নিষিদ্ধতা।

সধবা স্ত্রী কুশ বা কেশের পরিবর্ত্তে দুর্কা ব্যবহার করিবে, কুশাসনে বসিবে না এবং তিল-ব্যবহারও নিধিদ্ধ। তিলের পরি-বর্ত্তে প্রায়শঃ যব ব্যবহার্য্য।

পন্ম বিভ কুশ ও শিবমৃত্তিকা এহণের নিবিদ্ধ দিন। হরিশয়নে কুশ ও শিবমৃত্তিকা বাদী অব্যবহার্য্য। শ্রাবণী অমাবস্থায় কুশ তুলিলে তাহা বাদী গ্রহণ করিতে পারে।

প্রণামবিধি।

প্রণাম চতুর্বিধ; -- অভিবাদন, অষ্টাঙ্গ, পঞ্চাঙ্গ ও করশিরঃ-

সংযোগাধ্য। স্বীয় নাম উক্তারণ পূর্বক প্রণম্যের পাদম্পর্শ করাকে অভিবাদন কহে। পদন্বয়, হস্তব্য়, জামুদ্বয়, বক্ষঃস্থল, মস্তক, দৃষ্টি (প্রক্রম্যের প্রতি স্থিরনেত্রপাত), বাক্য (তরামোচচারণ) ও মন (তৎপ্রতি একাগ্রচিত্ততা) এই অস্টাঙ্গ দারা দণ্ড-বৎ প্রণামের নাম অস্টাঙ্গ প্রণাম; জামুদ্বয়, করদ্বয়, মস্তক, বাক্য ও মন এই পঞ্চাঙ্গ দারা প্রণামের নাম পঞ্চাঙ্গ প্রণাম এবং মস্তকে অপ্রলিবন্ধন পূর্বক প্রণামকে করশিরঃসংযোগ প্রণাম কহে।

শিব ও স্ত্রীদেবতাকে দক্ষিণে এবং তন্তির সকলকে বামদিকে রাখিয়া প্রণাম করিবে।

ত্রাহ্মণে ব্রাহ্মণকে প্রণাম করিলে "বিষ্ণবে নমঃ" বলিয়া প্রতিনমস্কার করিবে। ব্রাহ্মণের অঙ্গে ব্রাহ্মণের পদস্পর্শ হইলে উভয়েই "বিষ্ণবে নমঃ" উচ্চারণ পূর্ব্বক প্রণাম করিবেন। হীনবর্ণেরা প্রণাম করিলে ব্রাহ্মণগণ "স্বস্তাস্ত্র", "ধর্মে মতিরস্ত্র", "কল্যাণমস্ত্র" অথবা "জয়োহস্ত্র" বলিয়া আশীর্বাদ করিবেন। আশীর্বাদের সময় উত্তান দক্ষিণহস্ত অধ্যপ্রসারণ পূর্ব্বক র্দ্ধান্ত্রলী ধারা অনামিকার মূলপর্ব্ব স্পর্শ করিয়া বরমুদ্রা প্রদর্শন করিবে।

প্রথম্যা স্ত্রীলোকের অঙ্গে স্ত্রীলোকের পদম্পর্শ হইলে "ক্ষমস্ব" অর্থাৎ "ক্ষমা করুন্" বলিয়া প্রণাম করিতে হয়। প্রণম্যা স্ত্রীও "জীবৎপতিকা ভব" অর্থাৎ "চির-আয়তী হও" বলিয়া আশীর্কাদ করিবেন।

अगाप निस्तविधि।

· গুরুজনের হত্তে অন্নব্যঞ্জনাদি, কুশ, বহ্নি, জল, পুষ্প বা যৃত্তিকা থাকিলে, তাঁহারা অশুচি অবস্থায় থাকিলে, ভোজনে নিরত থাকিলে, অশুমনা থাকিলে, দেবপূজাদিতে অভিনিবিষ্ট থাকিলে অথবা তাঁহারা কোন স্থানে গমন করিতেছেন, এরপ সময়ে প্রণাম করিতে নাই। দেবতা কিংবা গুরুজন, কাহাকেও একহন্তে প্রণাম করিবে না। প্রমান যথা—

> "একহন্তপ্রণামশ্চ একং বাপি প্রদক্ষিণম্। অকালে দর্শনং বিফোইন্তি পুণ্যং পুরাকৃতম্॥" বাদশদানের ক্রব্য।

(>) সভূমি ধান্ত, (২) আসন, (৩) জলপাত্র, (৪) অন্নপাত্র, (৫) বস্ত্র, (৬) তাম্বূলপাত্র, (৭) ফলপাত্র, (৮) চন্দনপাত্র, (৯) ছত্র, (১০) পাত্ত্কা, (১১) শ্যা, (১২) কড়ি এক কাহন।

(वाज्नेनात्नत स्वा।

ছাদশ দানের দ্রব্য এবং তৈজসাধার সহ দীপ, তৈজসাধার সহ মাল্য, স্বর্ণ ও রৌপ্য।

বজ্রভয়শাস্তি-মন্ত্র।

নিম্ননিধিত মন্ত্র পাঠ করিলে বজ্রভয় দূর হয়। যথা— রামং স্কলং হন্মস্তং বৈনতেয়ং রকোদরম্। যে স্মরস্তি বিরূপাক্ষং ন তেষাং বিহাতো ভয়ম্॥ মধুণক।

কাংস্থপাত্রে দধি, ঘৃত, জল, মধু ও চিনি একত্র করিয়া মধুপর্ক করিতে হয়। ত্রুধ্যে দধি, ঘৃত ও চিনি সমভাগ, জল অত্যন্ত্র এবং সমবেত সর্বদ্রব্যাপেক্ষা অধিক মধু দিবে।

মতাস্তরে ঘৃত, দধি ও মধু একত্র মিশ্রিত করিলেও মধুপর্ক হয়। পঞ্গরা।

গোময়, গোমুত্র, মৃত, হুশ্ধ ও দবি একত্র করিলেই পঞ্চণব্য

হয়। গোময়ের দিগুণ গোম্ত্র, গোম্ত্রের চতুগুণ দ্বত, দ্বতের অষ্টগুণ হ্র্ম এবং হ্র্মের অষ্টগুণ দণি মিশ্রিত করিবে।

পৃঞ্চব্যশোধন-মন্ত্র।

গোময়শোধন।—ওঁ গন্ধবারাং ত্রাধর্বাং নিত্যপৃষ্টিং করীবিণীম্। ঈশ্বরীং সর্বভূতানাং তামিহোপহুরয়ে শ্রিয়ম্॥

গোমুত্তশোধন।—গায়ত্রীপাঠ দারা শোধন হয়।
দধিশোধন।—দধি ক্রাব্যোহকার্যং জিফোরশ্বস্থ বাজিনঃ,সুরভিণো
মুখাকরোৎ প্রণতায়ুংবি তার্যৎ ॥

হৃষশোধন।—আপ্যায়স্থ সমৈতু তে বিশ্বতঃ সোম বিশ্বং ভবা-বাজস্থ সঙ্গতে।

ত্বতশোধন।—ওঁ তেজোহসি শুক্রমশুমৃতম্সি ধামনামাসি প্রিয়ং দেবানামনাগৃষ্টং দেব্যজনম্সি।

পঞ্চাযুত।

দধি, হুগ্ধ, ঘুত, মধু ও চিনি এই পঞ্চ দ্রব্য একত্ত করিলেই পঞ্চাস্ত হয়। তন্মধ্যে দধি, হুগ্ধ ও ঘৃতশোধন-মন্ত্র উপরে লিখিত হইয়াছে; মধু ও শর্করাশোধন-মন্ত্র নিয়ে লিখিত হইল, যথা—

মধুশোধন মন্ত্র। — মধু বাতা ঋতারতে মধু ক্ষরন্ত সিন্ধবঃ মাধবীর্নঃ
সংস্থোষধীঃ। মধু নক্তমুতোধদো মধু ছোরস্ত নঃ পিতা মধুমান্
নো বনস্পতিঃ মধুমান্ অস্ত হুর্য্যো মাধবীর্গাবো ভবন্ত নঃ॥

চিনিশোধন-মন্ত্র। -- গায়ত্রীপাঠ।

পঞ্চৰৰ্ণ গুঁড়ি।

হরিদ্রাচ্ণ পীতবর্ণ, তণ্ডুলচ্ণ খেতবর্ণ, কুসুমফলচ্র্ণ অরুণ, চিতিধানপোড়াচুর্ণ রুঞ এবং বিল্লাদিপত্রচূর্ণ ভামল।

পঞ্চপল্ল ।

আম, জমু, কপিথ, দাড়িম্ব ও বিল্প। মতান্তরে অশ্বথ, বট, আম, প্লক্ষ বা অশোক ও যজ্জোড়ুম্বর। তন্ত্রমতে—কাঁঠাল, আম, বট, অশ্বথ ও বকুল।

नक्षम् ।

ধান্ত, মুগ, তিল, যব ও খেতসর্ধপ। কেহ কেহ খেতসর্ধপের পরিবর্ত্তে মাধকলায় ব্যবহার করেন।

१क्षेत्र ।

কাঞ্চন, হীরক, মুক্তা, পদ্মরাগমণি ও নীলকাস্তমণি।

পঞ্কবায়।

षयू, भावानी, तना, तक्न, तपत ।

সর্কৌষধি।

মুরা, জটামাংগী, বচ, কুড়, শৈলজ, হরিদ্রা, কুরুম, শঠী, চম্পক ও মুথা।

मदशेयथि।

পৃশ্লিপর্ণী, চাকুলিয়া, খ্যানালতা, ভ্রন্তাজ, শতাবরী, গুলঞ্চ, সহদেবী।

इविशान ।

গব্যদ্ধি, গব্যন্থত (অভাবে মাহিষ্মৃত), আতপতপুল, ইক্ষু-চিনি, বেতোশাক, থৈ, ইক্ষু, হরীতকী, মটর,যব, তিল, কাচামুগ, সৈন্ধবলবণ, হিঞা, কাটাল, কদলী, আমলকী, লতাদির মূল, তেঁতুল, আম্র, জীরক, গব্য হৃষ্ণ (অভাবে মাহিষ্ড্য্ম), লবলী (নোড়)।*

^{*} আঙা, পে পে, তরমুজ, ভাব বা নারিকেল, ফুটা, কড়াই ওঁটা, বরবটা, বাদাম, ডালিম, লাক্ষা (কিস্মিস্), পর্জুর প্রভৃতি লবাও দেশভেদে লৌকিকাচারনতে হবিধ্যার বলিয়া পরিগণিত।

অক্ষের পকে উপবাদে অন্তক্র।

উপবাদদিনে উপবাদ করিতে অক্ষম হইলে ফল, মূল, ঘৃত,
হৃষ ও জল সেবন করিবে। যদি তাহা সেবন করিরাও উপবাদ
করিতে না পারে, তাহা হইলে ব্রাহ্মণের আজা গ্রহণ পূর্বক
সমস্ত দিবা উপবাদী থাকিয়া রাত্রিকালে হরিয়ার ভক্ষণ করিবে।

ব্দপরহস্ত ।

নির্জ্জনে জপ করাই কর্ত্তব্য। ফল কথা, যেখানে চিন্তপ্রসাদ জন্মে, তাহাই জপের উপযুক্ত স্থান। জপ ত্রিবিং;—মানসিক, উপাংশু ও বাচনিক। মনে মনে মন্ত্রজপ করাকে মানসিক জপ কহে; যে জপের শব্দ নিজের শ্রুতিগোচর হয়, কিন্তু অন্তে শুনিতে পায় না, তাহাকে উপাংশু জপ বলে আর যে জপের শব্দ উচ্চৈঃঅরে উচ্চারিত হর, তাহাকে বাচনিক জপ বলা যায়। বাচনিক অপেকা উপাংশু এবং উপাংশু অপেকা মানসিক জপ শ্রেষ্ঠ।

মন্ত্রজপের আদিতে অঙ্গতাদ, করতাদ, ঋতাদিতাদ, মূলমন্ত্র দারা প্রাণায়াম ও গুরুপংক্তিনমস্কার করিয়া জপশেষে পুনর্কার প্রাণায়াম করত জপবিদর্জন করিবে। পরস্তু গায়লীজপ সম্বন্ধে ইহার কিছুই করিবার আবশুক নাই।

প্রভাতে হৃদয়দমীপে উত্তানহস্তে, মধ্যাহ্নে হৃদয়ভিমুখহস্তে
এবং সন্ধ্যাকালে অধামুখ হস্তে জপ করিবে। জপকালে হস্ত বস্ত্রাভ্যন্তরে রাখিবে। হৃদয়কমলে পূজিত দেবতাকে ধ্যান পূর্বক মস্তকস্থিত শুরু ও মন্ত্র সহ দেবতার ঐক্য ভাবনা করিয়া জপ করিতে হয়। মন্ত্র স্পষ্ট ও অনতিক্রতভাবে উচ্চারণ করিবে এবং অধিক বিলম্ব করিয়া উচ্চারণ করিবে না। অক্ষমালাতে জপই প্রশক্ত, তাহার অভাবে অনামার মূলপর্বহন্ন, কনিষ্ঠার পর্বজন্ধ, खनामा ७ मधामात खार्थ भर्तवत ७ ठ छन्नीत भर्तवत वहे ममभर्त्त कमायात खम्र्रित खार्थ वाता छभ कितर । खीरम् कृण हरेल ठ छन्नीत भर्तवत अधि ममनात हरेल छक्ततभ अधामीर वामराख्य भर्त्त वक्तात हरेल । वहें अकारत वामराख ममनात भूर्व हरेल हें मठ मश्मा भ्र्व हरेल व्यवित । खें सम्मनात वा वक्षा व खाँ वित्र मण्तात छभ कितर । खें सम्मनात वा वक्षा व खाँ वित्र हमनात छभ कितर ।

জপসংখ্যাদ্রব্যের দ্বারা * সংখ্যা রাখিয়া জপ করিতে হয়।
দক্ষিণ হস্তে দশবার জপ হইলে বামহস্তের অঙ্গুলীসমূহের এক
একটি পর্বা ধরিবে। এইরূপে বামহস্তের দশপর্বা শেষ হইলেই
শতবার জপ হয়। প্রতি শতবার জপের পর সংখ্যাদ্রব্যের দ্বারা
সংখ্যানিরূপণ করিবে। সংখ্যা না রাখিয়া জপ করিলে জপ
নিক্ষল হয়। জপকালে এরূপ ভাবে জপ করিবে যেন, অঙ্গুঠের
অগ্রভাগ অঙ্গুলীর পর্বারেখায় পতিত না হয়। দৈবাৎ পড়িলে
পুনরায় প্রথম হইতে জপ আরম্ভ করিবে।

জপকালে অঙ্গপ্রত্যঙ্গাদি স্পন্দন, দম্ভবিকাশ, বাক্যোচ্চারণ ও হাস্ত প্রভৃতি নিষিদ্ধ।

কৌরকর্ম।

জন্মনাসে ক্ষোরকর্ম সম্পাদন করিলে রোগ ও ধনপুত্র নাশ পায়। নাপিতের গৃহে গিয়া ক্ষোরকর্ম সম্পাদন করিলে শ্রীহীন

শ সিন্দুর, পোময়, লাক্ষা, রক্তচন্দন ইহার একত্ম দারা গুটিকা প্রস্তুত কয়ত অপসংখ্যা রাধিতে হয়।

হইতে হয়। রবিবারে কোর-কর্ম করিলে ছঃখ, সোমবারে স্থা, মঙ্গলে মৃত্যু, বুধে ধনলাভ, রহস্পতিতে মানহানি, শুক্রবারে শুক্রক্ষয় এবং শনিবারে সর্বপ্রকার দোবের কারণ হয়। প্রথমে শাশ্র-কেশাদি কর্ত্তন করিয়া পরে নথকর্ত্তন করিবে। রোহিশী, বিশাখা, উত্তরভাত্রপদ, উত্তরফল্পনী, উত্তরাঘাঢ়ী, মখা, ক্রন্তিকা, এই সকল নক্ষত্রে ক্লোরবর্জন করিবে। মৈথুনান্তে ক্লোরনিষিত্ব। ক্লোরকার্য্যকালে কেশব, দিতি ও অদিতি এই কয়-জনকে এবং পাটলিপুল্র,মহীক্ষত্রা ও আনর্তপুর এই তিন নগরকে অরণ করিলে মঙ্গল হইয়া থাকে। দেবকার্য্যে, পিতৃশ্রাদ্ধে, জন্মন্মানে, জন্মনক্ষত্রে ও রবির অংশক্ষয়ে ক্লোরকর্ম্ম বর্জনীয়। পূর্বাশ্র বা উত্তরাশ্র হইয়া ক্লোরকর্ম্ম করণীয়। সানান্তে, সন্ধ্যাকালে ও রাত্রিতে ক্লোরকর্ম্ম করিবে না।

মুমূর্কৃত্য।

(বৈভরণী)

দেহত্যাগের পূর্ব্বেই বৈতরণী করা কর্ত্তব্য। বৈতরণী করিলে নরকভয়ের আশঙ্কা থাকে না। অপবিত্রে থাকিলেও বৈতরণী করিতে পারে। বয়ং অশক্ত হইলে অহ্য কোন পবিত্রে ব্যক্তি দারা উহা সম্পাদন করাইবে। বৈতরণীক্রিয়ায় সবৎসা-ধেমুদানই বিধি, অসমর্থ হইলে একটিমাত্র ক্ষণা ধেমু দিবে। * তাহাতেও অক্ষম হইলে গোমূল্য এককাহন বরাটক (কড়ি) উৎ-

শ্বর্ণ করিয়া বেফু দান করাই ব্যবস্থা।

্ষর্গ করিতে হয়। নিম্নলিখিত প্রণালীতে বৈতরণী করিবে

ত গিবিকুরোন্ তৎসদত্ত অমুকে মাসি অমুকে পক্ষে অমুক্তির্থে অমুক্গোত্তঃ প্রীঅমুক্দেবশর্মা যমধারস্থিতবৈতরণীনদীস্থসন্তরণ-কামঃ (অথবা তথাবৈতরণীনদীস্থসন্তরণকামঃ) ইমাং সালম্বারাং স্বস্ত্রাং ক্ষণাং গাং (অথবা বৈতরণীং গাং) গদ্ধ্যাত্তিতাং প্রীবিষ্ণৃ-দৈবতাং যথাস্ত্রবগোত্রনায়ে ব্রাহ্মণায় অহং সংপ্রদদে।" *

এই প্রকার বাক্য উচ্চারণ পূর্বক উৎপর্গ করিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্র পাঠ করিবে, যথা—

ওঁ যমঘারে মহাঘোরে তপ্তা বৈতরণী নদী।
তাঞ্চ তর্ত্ত্বং দদাম্যেনাং রুষ্ণাং বৈতরণীঞ্চ গাম্।
তৎপরে নিয়লিখিত বাক্যে দক্ষিণা প্রদান করিবে। যথা—

"বিষ্ণুরোম্ তৎসদত অমুকে মাসি অমুকপক্ষে অমুকতিথে
অমুকগোত্রঃ প্রীঅমুকদেবশর্মা যমদারাবস্থিততপ্তাবৈতরণীনদীস্থসম্তরণকামনয়া ক্তৈতৎ-সালক্ষারা-সবস্ত্রা-কৃষ্ণা-বৈতরণী-গোদানকর্মণাঃ (গোদানে অসমর্থ হইয়া মূল্য প্রদান করিলে 'কৃষ্ণা-বৈতরণী-গোদানকর্মণাঃ' ইহার পরিবর্ত্তে 'কৃষ্ণাগোমূল্যদানকর্মণাঃ'
বিলবে) সাক্ষতার্থং দক্ষিণামিদং কাঞ্চনমূল্যং যথাসম্ভবগোত্রনায়ে
বাক্ষণায়াহং সংপ্রদদে।"

বৈতরণীর সময় ভোজ্যার, বস্ত্র, জল ইত্যাদি দানও বিধেয়। মৃত্যুর পূর্বাক্ষণে বৈতরণী নাহইলে আগুলাদ্ধের প্রথমেই করিবে।

^{*} বেহুদানে অক্ষনন্থলে পোম্ল্য প্রদান করিলে "কুখসন্তরণকামঃ" এই পদের পর "ক্ফাগোম্ল্যান্ এককার্যপেণবরাটকান্ প্রীবিষ্ণুদৈবতান্ আক্ষণে-ভ্যোহতং সংপ্রদদে" এইরূপ বাক্য উচ্চারণ করিবে।

অন্ত্যেষ্টক্রিয়াপদ্ধতি।

মৃতব্যক্তির •শহাধিকারী স্বয়ং স্নানান্তে মৃতব্যক্তিকে স্নান করাইবে। পরে তাহার সর্বাঙ্গ বস্ত্রার্ত করত দক্ষিণশিরা করাইয়া কুশোপরি শয়ন করাইবে। তদনস্তর তাহার সর্বাঙ্গ স্থতাক্ত করিয়া নিম্নলিখিত মন্ত্রে পুনরায় স্নান করাইবে। যথা—

ওঁ গয়াদীনি চ তীর্ধানি যে চ পুণ্যাঃ শিলোচ্চয়াঃ।
কুরুক্তেজ্ঞ গঙ্গাঞ্চ যমুনাঞ্চ সরিদ্বরাম্।
কৌশিকীং চন্দ্রভাগাঞ্চ সর্ব্বপাপপ্রণাশিনীম্।
ভদ্রাবকাশাং সরমুং পনসং গগুকীং তথা॥
বৈণবঞ্চ বরাহঞ্চ তীর্ধং পিগুারকং তথা।
পৃথিব্যাং যানি তীর্ধানি সরিতঃ সাগরাস্তথা॥

তৎপরে নৃতনবন্ত্র পরিধান করাইয়া উত্তরীয়, যজোপবীত ও
চন্দনাদি ধারা শবদেহ ভূষিত করত তদীয় চক্দুধয়, কর্ণয়য়,নাসারদ্ধয়য় ও মুখ এই সপ্তরদ্ধে সপ্তথণ্ড স্থবর্গ (অভাবে কাংশ্রখণ্ড)
প্রদান করিবে। পরে আমপাত্রে (কাঁচামৄয়য়পাত্রে) তভূলগ্রহণ
করত পথিমধ্যে তাহা ছড়াইতে ছড়াইতে শববহনপূর্ব্ধক শানানে
উপস্থিত হইবে। উক্ত তভূলের অর্জাংশ ছড়াইয়া অবশিষ্টার্জ
পিগুপাকার্থ রাখিয়া দিবে। ঐ তভূল দারা শানানে অরপাক
কবিবে। শানানের যে স্থানে বিসয়া পিগুদান করিবে, সেই স্থান
গোময় ধারা লেপন করত বিপরীতোপবীতী হইয়া বামজাক্ম
পাতন পূর্ব্বক উপবিষ্ট হইবে। পরে "ওঁ অপহতামুরা রক্ষাংসি
বেদী সদঃ" এই মন্ত্রে ভূতলে একটি চতুকোণ রেখা অন্ধিত করিয়া
তহুপরি কুশাচ্ছাদন করত "ওঁ এহি প্রেত সৌম্য গন্তীরেভিঃ

পথিভিঃ পূর্ব্বেণেভিঃ দেহস্মভ্যং দ্রবিণেহ ভদ্রং রয়িঞ্চ নঃ দর্ব-বীরং নিষচ্ছ" এই মন্ত্রে প্রেতের আবাহন করিবে। *

অনস্তর আন্তর্গিক্শোপরি তিলনিক্ষেপ পূর্ক বামহন্তে কুশমূল লইয়া দক্ষিণহন্তে সতিল জলগভূষ গ্রহণ করত "ওঁ অমুকগোত্র প্রেত অমুকদেবশর্মারবনেনিক্" এই মন্ত্রে কুশোপরি সেই জল প্রদান করিবে। পরে দক্ষিণ-হন্তে পিণ্ড ও বামহন্তে আমপাত্রে সতিল জল লইয়া "ওঁ অমুকগোত্র প্রেত অমুকদেবশর্মন্ এতত্তেহন্নমুপতিষ্ঠতান্" † বলিয়া আন্তীর্ণ-কুশোপরি পিণ্ডপ্রদান করিবে।
পরে পিণ্ডপাত্রপ্রক্ষালনজল পিণ্ডোপবি দিবে।

তৎপরে ক্রিয়াধিকারী স্নানান্তে কাষ্ঠ দারা চিতারচনা করিয়া তত্পরি ত্ইখানি নববস্ত্রসহ শবকে শয়ন করাইবে। পুরুষ মরিলে দক্ষিণশিরা ও উবুড় করিয়া এবং স্ত্রীলোক মরিলে দক্ষিণশিরা ও চিৎ করিয়া শয়ন করাইতে হয়। ‡ তদুনস্তর "দেবাশ্চাগ্রিম্থা এনং দহস্ত" এই মন্ত্রে প্রজ্ঞালত বহি গ্রহণ পূর্ব্বক নিম্নলিখিত মন্ত্রপাঠ করিতে করিতে সাতবার চিতা প্রদক্ষিণ করিবে। যথা—

· ওঁ রুত্বা তু তৃষ্করং কর্ম জানতা বাপ্যজানতা।
মৃত্যুকালবশং প্রাপ্য নরং পঞ্জমাগত্য্॥
ধর্মাধর্মসমাযুক্তং লোভমোহসমারত্য্।
দহেয়ং সর্কগাত্রাণি দিব্যান্ লোকান্ স গচ্ছতু॥ §

माग्रतिमा छिन्न अग्रादिमा अभि आवाहन कि दिव ना ।

[†] স্ত্রীকোক মরিলে জলদান ও পিওদানের মন্ত্রে "অমুক্গোত্রে প্রেতে আমুক্দিদেবি" উচ্চারণ করিতে হয়।

[‡] যজুর্বেদীয় ও ঋষেণীয়গণ কি স্ত্রী, কি পুরুষ, সকলকেই উত্তরশিরা ক্রিয়া শয়ন করাইবে।

[§] च्चीटलाक बितिटल "नदः शक्यमाग्राज्यः" इटल "नादीः शक्यमाग्रायः",

প্রদক্ষিণাত্তে দক্ষিণমুধ হইয়া শিরঃস্থলে বা মুধে অগ্নিসংযোগ করিবে। দাহাত্তে বাদশাকূলপরিমিত সাতটি কান্তিকা (কাঠি) লইয়া সাতবার চিতা প্রক্রিশ করিতে করিতে এক একটি করিয়া ঐ কাঠি চিতাগ্নিমধ্যে নিক্ষেপ করিবে। তৎপরে "ক্রব্যাদায় নমস্তভ্যং" মন্ত্রে কুঠার ঘারা চিতাস্থ অলপ্ত কার্চের উপর আঘাত করত অগ্নিকে বামে রাখিয়া নুআদি জলাশয়ে স্নার্থ গমন করিবে; পুনরায় চিতার দিকে দৃষ্টি করিবে না।

দেশভেদে এইরূপ প্রথা আছে যে, দাহাধিকারী চিতার সপ্তকলস এবং অকান্ত ব্যক্তিরা এক এক কলস জল সেচন করে এবং
চিতার উপর পূর্ণকৃষ্ণ স্থাপন করত কুঠার দ্বারা আঘাত করিয়া
মানার্থ গমন করিয়া থাকে। শবসম্বন্ধীয় বস্তাদি শ্মশানবাসী
চণ্ডালকে দান করিবে। ঋতুমতী বা স্থতিকা স্ত্রীর মৃত্যু হইলে
পূর্ণকৃষ্ণে সভিল পঞ্চগব্য নিক্ষেপ পূর্বক "আপো হি ঠা ময়ো
ভ্বস্তা ন উর্জ্জে দধাত নঃ মহে রুণায় চক্ষুষে" এই মন্ত্র এবং "মহাবামদেব্য" ইত্যাদি শান্তিমন্ত্র পাঠ করত দাহ করিবে। গর্ভবতী
স্ত্রীর মৃত্যু হইলে গর্ভস্থ শিশুকে নিক্রামিত করিয়াভূগর্ভে প্রোথিত
করক প্রস্তিকে দাহ করিবে।

দাহান্তে স্নানার্থ নি জাদি জলাশরে গিরা দাহকারীর শুলিকের (অভাবে অন্তান্ত ব্যক্তির) নিকট "উদকং করিয়ামঃ" এই বাক্যে অফুজ্ঞা প্রার্থনা করিবে। তাঁহারাও "কুরুধ্বং" বাক্যে অফুজ্ঞা দিবেন। পরে স্থানান্তে বস্তাদিধারণ পূর্বক দক্ষিণাস্তে বামহন্তে জল

[&]quot;ধর্মঃধর্মসমাযুক্তং" স্থলে "ধর্মাধর্মসমাযুক্তাং," "লোভমোহসমাবৃক্তং" স্থলে "লোভমোহসমাবৃক্তাং" এবং "স পক্ষতু" স্থলে "দা পচ্ছতু" বলিবে।

লইয়া বামহন্তের অনামা দারা দর্যণ পূর্ব্বক "আপোনঃ শুশোচদদং" এই বাক্য উচ্চারণ করিবে। অনস্তর একবল্তে পুনরায় স্থান ও আন্তমনান্তে নিম্নলিখিত মন্ত্রে তিনবার তর্পণ ক্রুম্যেবে। যথা—

"অমুকগোত্রং প্রেতং অমুকদেবশর্মাণং তর্পয়ামি।" *

তদনস্তর গৃহে প্রতিগমন করিতে হয়। দেশভেদে এই প্রকার প্রথা আছে যে, দিবাভাগে দাহ হইলে রাত্রিতে এবং রাত্রিতে দাহ হইলে তৎপরদিন দিবাভাগে গৃহে যাইবে। কোন কোন দেশে দিবাভাগে দাহ হইলে তৎপরদিবস দিবাভাগে এবং রাত্রিতে দাহ হইলে তৎপরদিন রাত্রে গৃহে গমন করে।

দাহান্তে গৃহে যাইয়া বাটার বহিদারিস্থিত নিম্নপত্র, থেঁসারী ডাইল, স্বত, বহি ও তওুল দল্তে কাটিয়া গৃহে প্রবেশ পূর্বাথ কিঞ্চিৎ মিষ্টান্ন ভোজন করিবে। অপরাপর বাটার কেহ দাহ কারীর সহিত আশানে গমন করিলে তিনিও ঐক্লপে দাহকারী গৃহে গিয়া তথায় কিঞ্চিৎ মিষ্টান্ন ভোজন পূর্বাক পরে নিজগৃত প্রত্যাগমন করিবেন।

গঙ্গাজলে অন্থিপ্ৰকেপ।

দ্রদেশে মৃতব্যক্তির অস্থি গঙ্গাঞ্জলে নিক্ষেপ করিতে হইলে উত্তরাস্থে আচমনান্তে কুশজল গ্রহণ পূর্বকি সম্বন্ধ করিয়া অস্থিকে পঞ্চগব্যে অভিষিক্ত করিবে। তদনস্তর স্বর্ণ, মধু, ঘৃতও তিল-সংষুক্ত মৃত্তিকা বা গোময় দ্বারা আরত করিয়া দক্ষিণদিকে দৃষ্টি-

^{*} স্ত্রীলোক মরিলে "অমুকপোত্রাং প্রেডাং অমুকিদেবীং তর্পয়ামি"
বলিতে হয়। বজুর্বেদীয় ও খংগদীয়েরা পুরুষ মরিলে "অমুকপোত্র প্রেড
অমুকদেবশর্মন্ এতভিলোদকং তৃপাঘ" এংং স্ত্রীলোক মরিলে "অমুকগোত্রে
প্রেডে অমুকিদেবি এতভিলোদকং তৃপাঘ" বলিয়া তর্পন করিবে।

পাত করতঃ "নমো ধর্মরাজায়" বলিয়া জলে অবতরণ করিবে। তৎপরে "দ মে প্রীতো ভবতু" বাক্যে অস্থিধণ্ড দূরজলে নিক্ষেপ করিতে হয়। • বুদ্ধরাকায় যথা—

"বিষ্ণুরোম্ তৎপদত অমুকে মাসি অমুকপক্ষে অমুকতিথো অমুকগোত্রস্থ শ্রী অমুকদেবশর্মণঃ এতদন্তিসমসংখ্যক-বর্ষসহস্রা-বিছন্ন-স্বর্গাধিকরণকমহায়ানত্বকামঃ অমুকগোত্রস্থ অমুকদেবশর্মণঃ এতানি অস্থিভানি সঙ্গায়াং প্রক্ষিপামি।"

অন্থি জলে প্রক্ষেপান্তে স্থান পূর্বক স্থ্যদর্শন করিয়া দক্ষিণা প্রদান করিতে হয়।

क्नपुखनिमार।

মৃতদেহ দাহ করা না হয়, অস্থি প্রাপ্ত হওয়াও না য়য়,
এঁরপ স্থলে কুশপুতলিদাহন কর্ত্তবা। কোন ব্যক্তি নিরুদেশ
হইলে ঘাদশবর্ষ পরে য়য়ানিয়মে কুশপুতলিদাহন করিয়া শ্রাদ্ধ
করিবে। শরপত্র ঘারা একটি পুতলি নির্মাণ পূর্বক তদীয়
মস্তকে ৪০টি, গলদেশে ১০টি, বক্ষে ৩০টি, উদরে ২০টি, বাহুতে
১০০টি, অস্থলীতে ১০টি, অগুকোষে ৬টি, উপস্থে ৪টি, উরুদেশে
১০০টি, জামুজআয় ৩০টি এবং পাদাল্লীতে ১০টি পলাশপত্র
দিয়া মেষরোমের হত্র ঘারা বেইন করত য়বপিষ্ট ঘারা লেপন
করিবে এবং পুত্রলির শিরোদেশে একটি তরুণ রক্তবর্ণ নারিকেল
প্রদান করিবে। এইরূপে পুত্রলি নির্মাণ করিয়া দাহ করিতে হয়।

মতান্তরে এইরূপ নির্দিষ্ট আছে যে, অপদাতে মৃত্যু হইলেও একবর্ষ পরে উপরিলিখিত নিয়মে কুশপুত্তলিদাহন করিতে হয়। কেহু কেহু একবর্ষমধ্যেও কুশপুত্তলিদাহনের ব্যবস্থা দেন।

সপিগুদি-বিচার।

আপনা হইতে চারি পুরুষ পিওভাগী ও তিন পুরুষ লেপভাগী, এই সপ্তম পুরুষ পর্যাপ্তকেই সপিও বলা যায়। অর্থাৎ পিতা, পিতামহ, প্রপিতামহ, এই তিন পুরুষ পিওভাগী আর ব্রদ্ধপ্রপিতামহ ও অত্যতিব্রদ্ধপ্রপিতামহ এই পুরুষত্রয় লেপভাগী এবং স্বয়ং পিওল। পিওলানাস্তে যাহা হস্তে লং থাকে, তাহারই নাম লেপ। সপিওের অনস্তর যে তিন পুরু তাহাদিগকে এবং "এই বংশে অমুক জন্মগ্রহণ করিয়াছিল এইরূপ নামস্থতি যাবৎকে সমানোদক বলা যায়। কোন কো ব্যক্তি চতুর্দ্ধশ পুরুষ যাবৎকে সমানোদক বলিয়ানির্ণয় করে এবং তৎপরে গোত্রজ্বসম্বন্ধমাত্র নির্দ্দেশ করিয়া থাকেন। বিবাহ বিষয়ে অবিবাহিতা কলার সপিওতা সাত পুরুষ নির্দিষ্ট আছে কিন্তু বিবাহাস্তে পতিকুলে সপিওতা হইয়া থাকে। ভর্তুসপিও স্ত্রীজাতির সপিও। অবিবাহিতা কলার পিতৃকুলে তিন পুরুষ যাবৎ সপিওত্ব থাকে, কিন্তু তাহা অশৌচবিষয়ে জানিবে।

সপিণ্ডাছ্যশৌচ।

কি জননে, কি মরণে, স্পিণ্ডব্যক্তির সম্পূর্ণ অশৌচ হয় 'অর্থাৎ দশদিন অশৌচ থাকে আর সকুল্যের তিন রাত্রি এবং গোত্রজ ব্যক্তি স্নান্মাত্রে শুদ্ধ হয়। স্মানোদকের নির্তিভাবে অর্থাৎ নামশ্বরণ পর্যান্তকেই সকুল্য কহে। *

এখানে রাহ্মণের পক্ষে ব্যবস্থাই লিখিত হইল। ক্ষপ্রিয় প্রভৃতির ম বআত্যক্ত শৌচের বিভাগমতে ব্যবস্থা হইবে।

চাতুর্বর্ণাশেচ।

বিপ্রের পক্ষে দশ্দিন, ক্ষল্রিয়ের ঘাদশাহ, বৈশ্রের এক পক্ষ এবং শুদ্রের পক্ষিত্রকাস পূর্ণাশোচ নিরূপিত আছে। * বিদেশে মৃত্যু বা জন্ম হইলে যে দিন সংবাদ পাওয়া যায়, জ্ঞাতিগণ সেই দিন হইতে আরম্ভ করিয়া অশোচের অবশিষ্ট কয় দিন অশোচ-রহণ করিবে। জননাশোচ অতীত হইবার পর সংবাদ পাইলে বার অশোচগ্রহণের আবশুক নাই। কিন্তু স্বীয় পুল্রজন্মসংবাদ শোচান্তে পাইলে রতবন্ত্র সহ অবগাহন লান করিয়া শুদ্ধ হইবে। পশুব্যক্তির মৃত্যুসংবাদ অশোচান্তে শুনিলে তিন রাত্রি অশোচ-গে করিবে অর্থাৎ অশোচান্তে এক বৎসরের মধ্যে সপিণ্ডের মৃত্যু-রাদ পাইলে তিন রাত্রি অশোচগ্রহণ করিবে আর এক বৎসর র শুনিলে স্ম্যুংশাচগ্রহণ ব্যবস্থেয়। কিন্তু মহাশুরু অর্থাৎ তা, মাতা অথবা পতির মৃত্যুসংবাদ এক বৎসরের পর শুনি-তের রাত্রি অশোচগ্রহণ কর্তব্য।

नादीविषयकाळाट्यीह

ত্ব বর্ষের ন্যুনবয়স্বা বালিকার মৃত্যু হইলে.সভঃশৌচ ব্যবস্থা।

াাগ্দতা কলার মৃত্যু হইলে এক রাত্রি অশৌচ হয়। বাগ্দান

বিদ্ধি হইবার পর বিবাহ যাবৎ সময়ের মধ্যে মৃত্যু ঘটিলে পিতৃকুল

তিকুল উভয়কুলেই ত্রিরাত্র অশৌচগ্রহণ ব্যবস্থেয়। † বিবাহান্তে
মৃত্যু হইলে পতিকুলে পূর্ণাশৌচ গ্রহণীয়। বিবাহিতা কলা
পিতৃগ্রহে থাকিয়া মরিলে বা প্রস্থতা হইলে পিতামাতার ত্রিরাত্রি

^{*} স্থ্যোদয়ের পূর্বে অশৌচ হইলে পূর্বদিন হইতে গণনা করিতে হয়; গারণ, অশৌচের দিন নির্ণয় না হইলে অশৌচগ্রহণ অকর্ত্তব্য।

[†] विवार्ट्य পूर्वक्ष पर्गास्टरके वाग्नानकाल करह।

এবং প্রাতৃগণের একরাত্রি অশোচ হয়। অজাতদন্তা কন্তা মরিলে তৎসহোদর একরাত্রি অশোচগ্রহণ করিবে। * বিবাহের পর মরিলে আর ভ্রাতার অশোচ হয় না, তর্ধন কেবল পতি কুলেরই পূর্ণাশোচ হইয়া থাকে।

পুত্র বা কন্সা জন্মিলে বিপ্রাণী, ক্ষত্রিয়া, বৈষ্ঠা ইহাদিগের পক্ষে দশাহ যাবৎ আর শুক্রাণীর ত্রয়োদশদিন অকাম্পুত্র থাকে।

পুত্র জন্মিলে দশদিন যাবৎ মাতার অঙ্গাম্পৃশুত্ব থাকে এবং পিতার পক্ষে ঐ অঙ্গাম্পৃশুত্ব স্নানের পূর্বকণ পর্যান্ত জানিবে।

ব্রাহ্মণী, ক্ষত্রিয়া বা বৈশ্বা পুত্রপ্রস্ববাস্তে বিংশতি দিনের পর এবং ক্যাপ্রস্ববাস্তে একমাসের পর স্নান করিয়া সর্বাকর্মে অধি- কারিণী হইবে। † শূদ্রাণীর পক্ষে পুত্রকন্তার জাতাশোচ একমাস এবং অঙ্গাম্পুশুত্ব ত্রয়োদশ দিন।

वालकामियद्वशाटमीह।

নবম বা দশম মাসে বালক জনিয়া সেই জননাশোচের মধ্যেই মরিলে পিতামাতার অস্পৃগুত্তজাতাশোচ, এবং সপিও বর্গের সভঃশোচ হয়। জননাশোচাস্তে মরিলে সহোদর ভ্রাতার একাহ অশোচ হইয়া থাকে।

গর্ভমধ্যে মৃত হইয়া পুত্র বা কন্তা ভূমিষ্ঠ হইলে স্কলের? পূর্ণাশৌচ হইবে।

^{े *} ইহার ভাৎপর্য্য এই যে, চূড়াকরণ বাবৎ একরাত্তি অশৌচ।

[†] ইতিপূর্বে ত্রাহ্মণীর পক্ষে দশ দিন অশৌচের বিধি বলিয়া আব বিংশতিদিনের উরেব করাতে এই বুঝাইল যে, পূর্বে যাহা বলা হইয়া উহা অফাস্প শুত্বিবয়ক আর এই বিংশতিদিন অশৌচ্বিবয়ক।

জননাশৌচের পর যাবৎ দস্ত না জব্মে, তৎকালের মধ্যে মরিলে পিতামাতার এক রাত্রি অশৌচ আর দকোলামের পর কুত্র হইলে তিন রাত্রি অশৌচ হইয়া থাকে। জাতদস্ত বালক মরিলে সপিগুব্যক্তির একদিন অশৌচ এবং চূড়াকরণাস্তে মরিলে তন রাত্রি অশৌচ ব্যবস্থেয়।

' অমুপনীত ব্রাহ্মণবালক মরিলে তিন রাত্রি অশৌচ গ্রহণীয়, কিন্তু পঞ্চবর্ধবয়দে উপনয়ন হইয়া মৃত্যু ঘটিলে পূর্ণাশৌচ হয়।

অপূর্ণ ব্যাদ্যবিধ্য শূদ্রশিশু মরিলে তাহার পিতা-মাতা ও দপিওবর্গ ত্রিরাত্রি অশৌচ গ্রহণ করিবে।

मधः स्नोह ।

ছর্ভিক্ষে, রাজবিপ্লবে, রাজশৃত যুদ্ধে, বিহ্যুদগ্নিতে ও শাপাদি যারা মৃত্যু ঘটিলে সপিগুব্যক্তিরা সঞ্চংশৌচ গ্রহণ করিবে।

রাজার রাজকার্য্যে, ত্রতীর ত্রতে, যাজ্ঞিকের যজে, শিল্পীর শিল্পকর্মে, রাজাজাকারীর রাজার ইচ্ছাতে, দেবপ্রতিষ্ঠা ও বিবাহকালে, পূর্ব্ধসন্ধল্লিত কোন ত্রতকালে, চিকিৎসকের চিকিৎসাতে, শাসদাসীর দাস্তকরণকালে সপিণ্ডের মৃত্যু হইলে স্বশৌচ হয় না। কোন কোন মতে স্থাংশীচের বিধি আছে।

উপসর্গবশতঃ মরিলে স্থাংশীচ হয়। আপদে মৃত্যু ঘটিলে কংবা বহু যন্ত্রণাতে মরিলেও স্থাংশীচ গ্রহণীয়।

পৰ্জনাবাৰোচ।

গর্ভস্রাবের কাল অষ্ট্রমমাণ পর্যস্ত নির্দিষ্ট আছে। ছয়মান-ধ্যে গর্ভস্রাব হইলে যতমাস গর্ভ হইয়াছে, ততদিন সেই নারীর শৌচ হর। ছয়মাসাস্তে আটমাসমধ্যে গর্ভস্রাব হইলে সেই স্ত্রী ক্ষ নিজ জাত্যুক্ত পূর্ণাশৌচ গ্রহণ করিবে এবং স্পিশুবর্ণের পক্ষঃশোচ, নিশুণের একদিন এবং যথেচ্ছাচারীর ত্রিরাটি অশোচ ব্যবস্থেয়।

বিতীয় মাসে, তৃতীয় মাসে, চতুর্থ মাসে, পঞ্চম শাসে কিংব বর্চ মাসে গর্ভপ্রাব হইলে যে কয়মাস গর্ভ হইয়াছে, তৎসক্ষুধ্ দিন অশোচগ্রহণের পরেও ব্রাক্ষণীর একদিন, ক্ষপ্রিয়ার তৃই দিন বৈখ্যার তিন দিন এবং শ্রাণীর ছয় দিন অতিরিক্ত থাকে অর্থা তন্তদিনের পর সে দৈব ও পৈত্রক্রিয়ায় অধিকারিণী হয়, কি লৌকিককার্য্যে কোন বাধা নাই।

সপ্তম বা অন্তম মাদে শিশু গর্ভে মৃত হইয়া ভূমিষ্ঠ হইলে সকল।
কেই পূর্ণাশৌচ গ্রহণ করিতে হয়। নবম-দশম-মাদেও ঐ বিধি
অধাস্পৃত্যবাহনোট।

পূর্ণাশৌচন্থলে ত্রাহ্মণের পক্ষে অঙ্গাস্থাত্ত তিন দিন, ক্ষতি । সের ছয় দিন, বৈখ্যের অন্তাহ এবং শ্দের দশ দিন থাকে।

পণ্ডাশোচন্থলে অশোচদিনকে তিন ভাগ করিয়া এক ্ষ্লারে য়ত স্ময় হয়, ততকাল অঙ্গাম্পৃখ্যত গ্রহণীয়। অশোচকাল অতী হইলে সানান্তেই শুদ্ধ হুওঙ্গা যায়।

বালক বা বালিকা জন্মিলে যদি তৎপিতা বা বিমাতা স্তিৰ স্পৰ্শ করে, তাহা হইলে মাতার তুল্য অঙ্গাস্প শুত্ব হয়; কি অপরের হয় না।

পুত্রকন্তা জন্মিলে কেবল পিজ্ব মাতারই আলাপ্রাত্তর হা স্পিগুগণের হয় না।

ৰতাশেচ।

যদি মাতৃল, শিশু, পুরোহিত ও আত্মবান্ধব ুইহালিশে



